भूमिका ।

सब को कबीर साहेबकी बानी विदितही है उसमें मुख्य ग्रंथ बीजक है । कबीर पंथी रामरहस साहेब वडे महात्मा गयाजाम हो गये हैं उन्होने बनाई हुई ये बीजककी टीकारूप पंचग्रंथी है । इसीमें बुरहानपुरमें पूर्ण विख्यात बीजककी टीका प्रकाशित किये हुये महात्मा पूर्ण साहेबकृत "निर्णयसार तथा वैराग्य शतक," फतुवामें एक संत गुरुदयालदासजी साहेबकृत "कबीर परचय साखी तथा ग्यारह शब्द," बुरहानपुरमें दश बारह बरस पीछे प्रख्यात हुये महंत रामदास साहेबकृत "एकईस प्रश्न" और कोई एक संत महात्माका बनाया हुवा छोटा ग्रंथ "पारख विचार" इतने ग्रंथ ज्यादा जोडे हैं । कबीर साहेबका मुख्य सिद्धांत जीव चैतन्य जनैया मुख्य जमा है और ब्रह्म, आत्मा, ईश्वर, देव, सिद्ध आदि जीवके प्रभुताके नाम पडे हैं । सो सब पद जड चैतन्य मिश्रित बनवत् व्यापकरूपसे सब महात्माओंने सिद्ध किये हैं । और इसी ग्रंथमें जीवको मनुष्यबुद्धिकी शुद्ध रहनी, निर्णय रूप विवेक अथवा पारख दृष्टि खोलके दरसाई है और जीवन्मुक्त दशा वर्णन है । जीवको स्वयं प्रकाशी अलिप्त सर्वका साक्षी, परन्तु व्यापक नहीं, ऐसी हमेशा प्रलय वा महाप्रलयमें न नष्ट होनेवाली अचल स्थिति गुरुपदपर कायम किये हैं । मुख्य कबीर पंथी साधु तथा सेवक और सर्व जिज्ञासु जन गुरुद्वारा इसीका रहस्य जानके अपना मनुष्य जन्म सुफल करेंगे ये आशा है । इसीमें सब मत मतांतरका सिद्धांत और कसर धोखा उत्तम प्रकारसे दरसाया है । ये ग्रंथ बहुतही अशुद्ध देखिके वडी मेहनतसे एक कबीर पंथी साधु काशीदासजी द्वारा शुद्ध प्रति सब शब्द अलग २ ऐसी प्राप्त होनेसे हमने छपाई है, देखनेसेही जानोगे याते सर्वजनोंने मंगावनेकी जलदी करना ।

प्रकाशक.

सूचीपत्र.
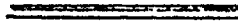
सत गुरवे नमः ।

दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्रंथ ॥

पंचग्रंथी ।

प्रथमें अनुभौर परख विलास ।

पंचकोश.

साखी—सांचा शब्द बताइया, सांचा दिया मुकाम ॥
तातें बंदत हौं तव चरण, सांच गुरू सतनाम ॥ १ ॥

छन्द—अन्नमय अरु प्राणमय, तीजे मनोमय जानिये ॥
ज्ञानमय विज्ञानमय, सोई पंच कोश बखानिये ॥
तत् त्वं असि त्रिविधि बानि, सबै पहिचानिये ॥
कठिन सो त्रिदोष कारण, परम पद किमि मानिये ॥ १ ॥

दोहा—पशुवा लोक अरु वेदके, मोह अंध संसार ॥
वह लादै खेदै आपको, यह अपनी चहत उबार ॥ २ ॥

अन्नमय कोश वर्णन ।

चौकडी ।

अन्नमय कोशको सुनो विस्तार। देह स्थूल आश्रम ब्रह्मचार ॥
चिह्न अचार प्रलयता नित्त। दशा बाल अवस्था जागृत्त ॥
साधन श्रवण सुननको जान। मुक्ति सालोक विश्व अभिमान ॥
दीक्षा कोहं विषया नंद। क्षर अकार देव शिवनंद ॥
क्रिया शक्ति जठराग्नि जान। पाद प्रथम खेचरी मुद्रा मान ॥

वाचा वैखरी मात्रा अकार । रजोगुण ब्रह्मा नेत्रके द्वार ॥
साढेतीन हाथकी देह । तारक सुखथल त्रिकुटीनेह॥
पूरबदिशा इंद्र सो देव ।सिर्जन कर्म अर्ध शून्य भेव॥
पीत बरण उच्चार हरस्व । ऋग सो वेद पृथिवी तत्त्व ॥
औउपदिशा ईशान बखान ।शिव अभिमानी ताकोजान॥
तंती स्वर अपान सो वायु ।घटाकाश अधो शून्य पायु॥
पीत रक्त कमल को रंग ।मारग पपिल कहै परसंग ॥
अद्वै जाति ऋचा गनि लेहु।ऊर्मी कला ताहिको देहु ॥
सत्य लोकको भोग विलास।सन्मुखी मुद्रा जहांप्रकास ॥
झीनी वायु किंकिरा होय ।अहं विकार स्थूलको सोय॥
भूमिका छिप्रा प्रध्वंसाभाव ।भोगस्थूल विषयको चाव॥
पांच तत्त्व त्रिगुण में जान ।और प्रकृति पचीस बखान॥
ज्ञान कर्म इंद्री समुदाय ।पांचों अंतःकरण मिलाय॥३॥
छन्द–थाने चतुर्दश देव तिनके, भिन्न भिन्न विचारिये ॥
नाना अनंग तरंग कौतुक, कला अनंत सुधारिये ॥
व्यवहार त्रिविधि विचार नाना, पिंड खंड प्रमाण सो॥
भूले अनेकन मध्य भवके, जगत भक्त अमानसो॥४॥
दोहा–काल शब्द औ संधिमें, अन्नमय कोश प्रचंड ॥
परखि तासु गुरुगम लहै, भास मिटै तब पिंड ॥५॥

॥ इति अन्नमय कोश संपूर्ण ॥

अथ प्राणमय कोश वर्णन ।

छन्द–प्राण धारी जीव जेते, मनोमय बासा किये ॥
त्रयखानि साधन युक्तिजे नर, योग खानिअनुमयलिये।
संयम नेम समाधि प्राणायाम, कष्ट तनको किये ॥
ब्रह्मांड बासा खं विलासा, बुद्धि मन तेहि थल दिये १॥
दोहा–सूक्षम देह जानि निजु, करहिं क्रिया बहु मूढ ॥
भटकहिं भवकी धारमँह, मानि कहहिं यह गूढ ॥२॥

चौकडी ।

कोश प्राणमय सूक्षम देह । आश्रम गृहचार गुन नेह ॥
गुरुमय चिह्न प्रलय नैमित्य। दशापिशाचकी जानहुसत्य॥
अवस्था स्वप्न समान बखान।समीप्य मुक्तितैजसअभिमान
दीक्षा सोहं योगानंद । अक्षर मात्रा वेदको छन्द ॥
द्रव्य शक्ति देव मार्तंड । कामाग्नि पद दुतिया खंड ॥
भूचरी मुद्रा वाचा मध्यमा । मात्रा उकार विष्णुसतगुणा॥
देह प्रमाण अंगुष्ठाकार । कंठ स्थान थूल सो विचार
दंडक्र नाम जिह्वा सो द्वार । खान पान सो करत अहार ॥
श्रीहट स्थान दिशापश्चिम। वरुण देवता ताके सूक्षम ॥
पालन कर्म ऊर्ध्व शून्य निवास।श्वेत वर्णकोकहिये भास॥
दीर्घ उचार यजुर सो वेद । जलतत्त्व समानकरैपरस्वेद॥
उपदिशा नैऋत्य बखान । नैऋत्य देव तहां पहिचान ॥
वायु प्राण शंखको नाद । मठाकाशजहां है अनाहाद॥
श्याम रक्त रँग कमल प्रकास।मार्ग विहंगमभक्तितनदास ॥
घूर्मी कला लोक वैकुंठ । ऋचा वामदेव आकुंठ ॥

सूक्ष्म विषय भोग तहां जान। बहिरमुद्राउन्मीलनिमान ॥
मौनी नाग वायु अनुरूप । मनमन्तव्य संकल्प स्वरूप॥
भूमि गतागत प्राग अभाव।सूक्ष्म देहके कहै स्वभाव॥३॥
छन्द—ज्ञान इंद्री पांच औ, अंतःकरण मन आदि दै ॥
सूक्ष्म पांचों तत्त्व औ, प्रकृति सबै देवादि दै ॥
व्यवहार देवनि सूक्ष्म कीन्हा, देखु हृदयविचारिकै ॥
यम जाल खानि कलेशहै,प्रेतादि योनि सँचारिकै४॥
दोहा—स्थूल सो सूक्ष्म अंग हैं, उलटि पलटि अरुझाय ॥
शब्द कला होय परखिले, नहिं तो यमपुर जाय॥५॥

इति प्राणमय कोश संपूर्ण ।

अथ मनोमय कोश वर्णन ।

छन्द-कोश मनोमय रंग बहुत, तरंग मुनि व्याकुल भये॥
जग जीव पामरखानि, तीनोंकोशतिन गिनतीकिये ॥
ब्रह्मादि शिवको चित्त क्षोभ्यो, आदि कारण चाहहीं॥
सोखानि कष्ट कलेशमें, आशा धरै पछतावहीं ॥ १॥
दोहा—मनोमय कोश विस्तार बहु, कहैं मुनीश्वर वेद ॥
कारण देह आशा बँधे, प्रत्यक्ष मनको भेद ॥ २ ॥

चौकडी ।

कोश मनोमय कारण देह। आश्रम वानप्रस्थका येह॥
जंगम आतमलिंग बसंत्व । विश्वप्रलय दशाउन्मत्त ॥
अवस्था सुषुप्ति मुक्तिसारूप।तहांअभिमानीप्राज्ञरूप॥
दीक्षा तहाँ शिवोहं जान । अद्वैत आनंद बखान ॥

निजध्यास साधन पहिचान।क्षेत्रज्ञनिर्णय शक्तिहैज्ञान।
देव रुद्र तहांके होय । मंदाग्नि औ तमोगुण सोय ॥
तृतीय पाद गायत्री जान।चाचरी मुद्रा रुद्र गुण खान॥
वाचा पश्यंती मात्रा मकार।स्थानबास हृदय सो द्वार॥
अर्ध अंगुष्ट देहको भास । ब्रह्म कहै कुंडल्या जास ॥
गोल्हाट हृदय अस्थान । दक्षिण दिशा देव यम मान॥
मध्यशून्य औ प्रलय क्रिया।लाल वर्ण मात्राकल्पत्या॥
तेजतत्त्ववेदहैअथर्वण।उपदिशाअग्नेयआग्निदेवसोनाम
बाजा झांझ वायु उदान ।महदाकाश मार्ग कपि जान ॥
कमल वर्ण रक्त अरु श्वेत । ऋचा तहां सत्पुरुष समेत॥
ज्योतिकला लोककैलास।आनंदमयतहां भोगविलास
शांभवी तहां मुद्रा झीनि । कूर्म वायु सूक्ष्म परबीनि ॥
बुद्धि बोधव्य तहां व्यवहार।सौलेप्तता भूमि कहैपरचार
भाव अनन्य जानहु तीन।मनके कोश कहै परबीन ३॥
छन्द–मनोमय कोश कारण देह याके,चारु अंतःकरणयं ॥
तहां सूक्ष्म तत्त्व प्रकृति संयुत,एकते बहुविधि भयं ॥
गन यक्ष योनि निवास कीन्हों, चौरासी कारण अयं॥
संधिक दशा आशासो झांई,मनोमय वर्णन अयं॥४॥
सोरठा–इन्ह अंगन संयुक्त, मनमय कारण देह यह ॥
बंधन त्रिगुण युक्त, ब्रह्म निष्टामें जीव बंधे ॥ ५ ॥

इति मनोमय कोश संपूर्ण ।

॥ अथ ज्ञानमय कोश वर्णन ॥

छन्द–ज्ञानमय यह कोश जानो, महाकारण देहको ॥
उत्पत्ति खानि विकार पूरण, ब्रह्मवर्ण अदेहको ॥
देवादि इच्छा करें ताकी; ज्योतिरूप प्रत्यक्ष है ॥
साक्षी त्रिगुणको आदि कारण,गुप्त राखै स्वच्छसो॥ १॥

दोहा–ज्ञानमये यह कोशमें, भटके बहु अज्ञान ॥
गुरु पारख पाये बिना, मानि मानि भरमान ॥ २ ॥

॥ चौकडी ॥

ज्ञानमयकोश महाकारणरूप।आश्रम चौथ संन्यास स्वरूप
महा प्रलय शिव लिंग बखान । दशा मौन तुर्या पद मान ॥
मुक्ति सायुज्य बखानैं वेद । अभिमानी प्रत्यगात्माभेद॥
सोहं दीक्षा विदेहानंद । साधन साक्षात्कार . आनंद ॥
निर्णयआत्मारूद्र सो देव । इच्छा शक्ति ॐ पद भेव ॥
वडवाग्नि मुद्राअगोचरी । मात्रा इकार वाचा परा परी ॥
शुद्धसत्त्व गुण ईश्वर देव । तहां स्थान मूर्धनी सेव ॥
मसूर प्रमाण काया बखान । ब्रह्म अर्ध चंद्र अनुमान ॥
पुण्यगिरी अउठपीठ स्थान।उत्तर दिशा कुवेर बखान ॥
क्रिया सूर्य प्रत्यक्ष तहांजान । हरा वर्ण सर्वशून्य मान ॥
उच्चार अर्धमात्रा सो होय।वेद साम तहां जानहु सोय ॥
तत्त्व बायु तहां वायु समान।बाजा तहां मृदंग बखान ॥
वायव्य उपदिशा वायु सो देव।चिदाकाश अकाश गनेव॥
वर्ण कमल श्याम शुद्ध पीत । मारग मीन ज्ञान सूचीत॥
ऋचा ईशान कला सो जोय।ज्वाला लोक अधर तहां होय।

ईश्वरमय तहां भोग विलास । आतमभावनी मुद्रा तास ॥
देवदत्त सूक्ष्म तहां बाय । चित्तको स्वभाव चैतन्यबताय॥
भूमि सुलीन भाव अत्यंत । ज्ञान प्रकाश निर्णय सम्यंत ॥
छन्द—इमि ज्ञानकोश बखानवेद, प्रमाण महाकारणकह्यो॥
अभिन्न है चिद खानि उतपति, जीव तेहि परबशरह्यो॥
साक्षी विकल्प समाधि पूरण, निर्विकल्प इच्छा धरे ॥
बहु कलेश देश अनामयं, सेवंत जे पिस आदरे॥४॥
सोरठा—ऐसो निर्मल ज्ञान—खानि कलेशको बीज है ॥
जोपै संत सुजान, परख बुद्धि तेहि ना गहैं ॥ ५ ॥

॥ इति ज्ञानमय कोश संपूर्ण ॥

॥ अथ विज्ञानमय कोश वर्णन ॥

छन्द—अब सुनहु संत समान चित, विज्ञानमय पूरणअयं ॥
कैवल्य देह सो ब्रह्म अद्वै, अनामय अव्यक्त स्वयं॥
जो परात्पर निर्वचन सबपर, वेद अमल भनंत जे ॥
ते लखहु सज्जन परखि गुरुमुख, देख सत्त भासंतजे १
दोहा—परमहंस मत प्रगट यह, झांई प्रथम विकार ॥
यह अनुरागी जीवकह, खानी कलेश अधिकार॥२॥
विज्ञान कोशको सुनो विस्तार।जाते खानी कलेश अपार॥
विज्ञान कोश देह कैवल्य । आश्रम परम हंस निश्चल्य ॥
प्रसाद चिह्न प्रलय एकांत । दशा सुजड जानो बिभ्रांत॥
उन्मनि वाचा सहजारूप । निर्गुणमय भुक्तिता भूप ॥
तहां निरंजन आप अभिमान । दीक्षा अनामयोहैं जान ॥

ब्रह्मानंद मगनता पाय । साधन ज्योति स्वरूपकहाय ॥
कूटस्थ निर्विकल्पता मान । निर्णय देवतहां शक्ति बखान॥
शक्ति परा है सबकी खान । ब्रह्माग्नि पदारथ पद मान ॥
सर्वसाक्षी मुद्रा ताके लक्ष । वाचा परात्पर अहै प्रत्यक्ष॥
आम्नाय निर्गुण गुण तहां । शिवदेव गुण के है जहां ॥
अस्थल शिखा ब्रह्ममय बिंदु। नील वर्ण तहां क्रिया है इंदु॥
स्थान सूक्ष्म ब्रह्मरंध्र जान । भ्रमरगुफा ताको परवान ॥
दिशा ऊर्ध ब्रह्म तहां देव । महाशून्य अचार समेव ॥
सुसंवेद तहां तत्त्व अकाश । उपदिशा अधो विष्णुकोवास॥
वंशी नाद वायु तहां व्यान। निजाकाश माकाश बखान ॥
पद्मरंग पीत औ श्वेत । मारग शेष सब परके हेत ॥
ऋचा अघोर लोक निराधार।कलातीत जानहु निराकार॥
ब्रह्ममई तहां भोग बखान । पूर्ण बोधनी मुद्रा मान ॥
धनंजय झीनी वायु गनाय । अंतः निर्विकल्पता पाय ॥
तहां अभाव भूमिका जान ॥ भावातीत भाव पहिचान ॥
है विज्ञान कोश वर्णन येह ॥ कहबे मात्रित कहिये देह॥३॥

छन्द–है नहिं कछु तहां नहिं संभव, वर्णन वेद बखानहीं॥
निर्वचन परे परात्पर सो, ब्रह्म कैवल्य मानहीं ॥
जहां नहिं कछु सब भये कहांसे, कहहु सत्य विचारिके॥
झांई संभव प्रथम गांसी, वेदाकार देखु निहारिके ॥४॥

दोहा–पंच कोश मत प्रगट यह, वेद कहै सत सोय ॥
परख दृष्टि बल तेहिसो, गुरूकृपा जब होय ॥ ५ ॥

झांई मूल विकार है, जाते भये अनेक ॥
गुरुगम परख प्रकाश लहु, करहु विचार विवेक ॥६॥
काल संधि औ झाँई, तीनिउ पंच समान ॥
पांच कोश परपंच रचि, भोरे सकल जहान ॥७॥
तत्त्वमसि अरु सोहं, वोहं ब्रह्म स्वरूप ॥
काल संधि अरु झांई, यहीं विविधि स्वरूप ॥८॥
आदि सोई सोइ मध्य है, अंत सोई परमान ॥
त्रिविधि घात यम जाल है, किये जीव हैरान ॥९॥
जीव दुखी चाहै छुटन, बहु विधि करै उपाय ॥
रक्षक जानि शरण गहै, भोंदू तेहि भरमाय ॥१०॥
नाना मति निज कल्पि करि, फंदा रचै बनाय ॥
सेवक ताहि बनायके, स्वामी आप कहाय ॥११॥
विन गुरु पारखके लहै, काल जाल न लखाय ॥
विना लखे यह जालके, सकलों सेवहिं आय ॥१२॥
बंदीखान कलेशके, परे त्रिविधि सो जीव ॥
एकहिं एक पुकारहीं, गोहरावहिं को पीव ॥ १३ ॥
सुखको लेस दिखायके; जीवहिं रखै भुलाय ॥
बंदीछोर विनु कौन हैं, जीवहि लेहि छुडाय ॥१४॥

इति पंचकोश रामरहस साहेब कृत गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

समष्टिसार ।

दया गुरुकी ॥ अथ समष्टिसार ग्रंथ लिख्यते ।

साखी—वारों तन मन धन सबै, पद परखावनहार ॥
युग अनंत जो पचि मरैं, विन गुरु नहिं निस्तार॥ १॥
संसारी पारख विना, कैसे पावै ठौर ॥
विविध युक्ति अनमिल सबै, भोगवहिं औरकी और२
पेड संधि संदेहके, मताधीश सब डार ॥
अनबनि पत्र भौंचक्र हैः फूलै फलै जँजार ॥ ३ ॥
बास मतावै रस चखै, ये बहु करहिं गोहार ॥
अंधा तेही तजे नहीं, गहै सो बारंबार ॥ ४ ॥

चौकडी ।

रामरहस पूरण संसार । परखै कौतुक परखनहार ॥
संशयरूप जगत परचार । दूसरी संशय ब्रह्म विचार ॥
ब्रह्म विचारके ऐसा भेव । विन पारख सो लावै सेव ॥
अज हरि हर मुनिवर प्रचंड। सनकादिक जीव जे ब्रह्मंड ॥
बडे कहाये तत्त्व विचार । मत समस्त ऐसे निरुवार ॥
प्रगट बखाने चारिउ वेद । पंचीकरण है ताके भेद ॥
छोमें वेद वेदांत है जेठ । और अठारह जगतके पेठ ॥
सार निवारिके करै बखान । गीता भागवत है परमान ॥
अधिष्ठाता जे बानी वेद । वेद अपक्ष जानै भेद ॥
वेदकी उतपति प्रलय होय । अधिष्ठाता ज्योंका त्योंसोय॥
निराकार निर्लेप बखान । वानी छोडि ऐसो अनुमान ॥

सोहं ब्रह्म सनातन एक। निज स्वभावते भये अनेक ॥
सो है युक्ति विदित विस्तार। ऐसे लखै असारहि सार५॥
साखी—भरमिक भरम उदबेगते, संतत करैं विचार ॥
दुगदुग मिटै न जीवकी, कहैं असारहु सार ॥ ६ ॥
संधि आये माकाशके, रोग सभाविक मान ॥
उपजै खपै उपाधि सो, तेहिके करैं बखान ॥ ७ ॥

चौकडी।

प्रथमहि सूक्षम भया अहं। सोई कहावे एकोहं ॥
बहुस्याम प्रजाय विलास।तेहि मिलि तीनि एकहि अका-
स॥घटाकाश प्रणव बहुस्याम। मठाकाश एकोहं राम ॥
अधिष्ठाता सोई माकाश। ताके यों कहते दृढ भास ॥
घटाकाश तत्त्व इंद्रिय भास।मठाकाश मन करे विलास॥
चिदाकाश माकाश बखान। सदा अलेप सोई परवान ॥
चौथे भेद बुद्धि उठि जाय।निर्वचनी कछु कहे न कहाय॥
प्रथम दुतिया तृतिया चार। सर्व कला आपै निरधार ॥
ब्रह्मांड हिरण्यगर्भअव्याकृति।भौ चहुं शरीरते मूलप्रकृति।
उतपति पालन औ संहार। सर्वसाक्षिणी अवस्था चार॥
भूर्भुवः स्वः जपे जो तीन। प्रणव मूल पूरण परबीन ॥
क्लीं ह्रीं ए सो सेव। श्रीं सो बीज निरंजन देव ॥ ८ ॥
साखी—आपु निरंजन कर्ता, दुतिया इच्छा नार ॥
त्रिगुण नाना भांतिके, महाजाल विस्तार ॥ ९ ॥

चौकडी।

जहांलों त्रिपुटीके हैं जाल।त्रिगुण तीनि लोक तिहुं काल॥
वर्षा शिशिर धूप निहार। शशि औ सूर्य राहु परचार॥

रेखा अकार उकार मकार । क्षर अक्षर निःअक्षर सार ॥
अव्यक्त व्यक्तहै बानी तीनि।इंगला पिंगला सुषुम्नाकीनि॥
वोहँ सोहँ रं अमान । सत्त सादृश मध्य जो भान ॥
दैहिक दैविक भौतिक ताप । वर्णन मोक्ष पुण्य औ पाप॥
देव तीनि नाम गुण रूप । कर्ता क्रिया कर्म स्वरूप ॥
इंद्री इंद्रीय कर्म विचार । इंद्री देव सोई अनुहार ॥
ज्ञान भक्ति कर्मके भेव । प्रयागराज त्रिवेणी सेव ॥
कारण कारज परगट होय । यथार्थ परमार्थ स्वार्थ सोय॥
शब्द ब्रह्म ब्रह्माके भेव । सगुण ब्रह्म हरी सो देव ॥
शंकर निर्गुण आपै आप । भेद उठै तिहुं होय मिलाप ॥
बात पित्त कफ नाडी तीन ।सन्निपात शून्य लौलीन १०॥
साखी—मृतुक सनेही तीनि गुण, चौथे शून्य सो जान ॥
भेद उठावै चहुं कला, तुर्यातीत विज्ञान ॥ ११ ॥

चौकडी ।

तुर्यातीत नहिं मान अमान ।ज्यों का त्यों सोई परमान ॥
है विज्ञान सोइ तुर्यातीत । भेद अवस्था उठै परतीत ॥
तुर्यातीत निरंजन राय । आनंद भास अव्यक्त कहाय ॥
ऋग सो वेद बखाने भेव । अलेप अमान निरंजन देव ॥
दूजे सुषुप्ति मन अकाश । वेद अथर्वण शून्य विलास ॥
तीजे विकल्पश्वास परमान। शून्यआनरूपयजुरपरधान॥
चौथे जागृति शब्द विलास । पांच पचीसोंअनन्यभास॥
सामवेद पूरण परकास । चारि वेदका सोइ बिलास ॥
युग जो चार चार पन होय।जहांलों चार चार है सोय॥

प्रथम है कारण सो एक । उलटि विचार चतुर्थ विवेक ॥
दुतिया द्वंद्ज कारण होय।जड चेतन दुख सुख गुण सोय॥
दिन औ रैन पुण्य औ पाप। स्वर्ग नर्क नर नारी थाप ॥
गुण औ दोष है साधु असाधु। देवता दानव द्वैत बियाधु॥
हेतु दुबिधा कारज बहु होय।द्वंद्ज द्वैत कहावै सोय॥ १२॥
साखी–द्वैत अद्वैत न भेद कछु, एकै भाव अनेक ॥
आदि अंत पूरण तेई, माया मध्य विवेक ॥ १३ ॥

चौकंडी ।

आदि अंत सोइ आपै आप । जगत मध्य माया संताप॥
प्रणव सो पूरण जग भेव । जो दृढ गहै सो सोहँ देव ॥
सोहँ देवका इहै विचार । लिखि मेटै मानै निरधार ॥
अनुस्वार आपै माकास । अर्धचंद्र सो शक्ति विलास॥
द्रव्य कर्म इच्छा अरु ज्ञान। चारों चरण शक्तिके मान ॥
द्रव्य स्थूल कर्म सो स्थूल । इच्छा कारण ज्ञान है मूल॥
ज्ञानी आपै स्वतः प्रकास ।ज्ञान अज्ञानसोशक्तिविलास
विद्या अविद्या मायारूप । अधिष्ठाता पद स्वतःअनूप॥
ज्ञानतें उतपति हृदय होय ।अंक तीनि तीहूँ गुणमें सोय॥
अज अकार है हरी उकार । हर सो तहां भये मकार ॥
अंक तीनि अर्धके मांह । अर्ध रहै शून्यकी छांह ॥
पांच कला प्रणवके विचार । अज हरि हर माया अनुसार
मूल प्रकृति कला सो सांच ।तेहिते भये तत्त्व सो पांच ॥
शून्याशून्य भास अकास । तेहिसों प्रगटी अर्धबतास ॥
पूरण पवन थीर सो भेव । तासों प्रगट भये सो देव ॥

चंचल पवन सो हरिके रूप । उठै तरंग अनेक अनुरूप ॥
कोटि उनचास पवन परमान । गिनती वेद सो करै बखान
कारण शोषक पवनके माँह। जल कारण पुनि तेहि दर्शांह॥
पवन आकर्षण अनल उपाय। हरिके कला सोई प्रगटाय॥
चमके बिजुली पवन समाय । पाये वेग नीर निरमाय ॥
घटा होय देखलाई देय । उतपति जलकी प्रगटै सोय ॥
अधिकारी जो अनल थमाय। पूरण जल तेहिते प्रगटाय ॥
कारण आदि एक सो होय । कार्य्य अनेक दिखावैं सोय॥
जो जल शोपक उठै बतास। तुरितहिं तहां घटाको नास॥
सोई नीर है अजके रूप । पुनि त्रिगुणमें तीहुं स्वरूप ॥
तेहि नीरते पृथिवी होय।तेज अरु पवन सहायकसोय १४
साखी-थीर पवन अरु अनल जल, मिलि पृथिवीपरमान॥
अस्थूलरूप माया भई, पुरुष नीर परधान ॥ १५ ॥

चौकडी ।

नीर बीज पृथिवी रज मान । अद्भुत कला मध्यप्रगटान॥
रज औ वीर्य सो मैं उपाय । वैसे उलटी जाय समाय ॥
कसर कला कोई जो होय । जाय विलाय रहै ना कोय ॥
पृथिवी लीन होय जलमाँहि। जलको तेज प्रत्यक्षहि खाँहि
तेज पवनमें जाय विलाय । पवन सो जाय अकाश समाय
आकाश लीन शब्दमें होय। वर्णन प्रणव ताहि कहै सोय॥
शब्द अकाशके मध्य विलाय। अकार उकार लै होयजाय
सो धून नाम मकारके मांहि। श्वासा अर्धचंद्रके पांहि॥
अर्धचंद्र मिटि शून्या रहै । महाकाल महाप्रलय कहै ॥

द्रव्य नसाय कर्मके साथ । नासे कर्म इच्छाके साथ ॥
इच्छा ज्ञानमें होवै लीन । ज्ञानी आपु ब्रह्म परवीन ॥
एकांतिक प्रलय कहावै सोय । पुनि सो इच्छा परगट होय॥
पुरुप प्रकृति सनातन जान । संतत स्वतः स्वभाव समान॥
स्वतःस्वभाव नहिंमिटैमिटाय।संततजोईसोईप्रगटाय १६
साखी—स्वतःस्वभाव प्रपंच जो, छूटै कौन उपाय ॥
दुख सुख सम अनुमानके, सहज रहा जहँडाय॥१७
प्रलय चारचहुँ कहोंबुझाय।नित्य प्रलयनितनितहिनसाय
जागृतमें जेता उतपात । उपजहिं पिंड ब्रह्मांड नसात ॥
शयनअस्थूलभोगमिटिजाय।कारण रहै पुनिपुनिप्रगटाय॥
सोइ नित्यप्रलय कहत है वेद। प्रलय मरणजलामय भेद॥
पांच तत्व पिंड ब्रह्मांड । प्रलय पिंड जलामय अंड ॥
नाडी तीनि एक वरहोय । सन्निपात गुण नाशक सोय॥
जलमा सोई सीतंग उपाय । श्वासा उलटिगगन समाय ॥
उलटि पांचों जाय बिलाय ।सूक्ष्म देह सो थूल रहाय ॥
मन आदि इंद्रीके विलास।स्वर्ग नर्क दुख सुख परकास॥
पुनि सूक्षम अस्थूल सो होय।प्रथमअनुहार दृढावै सोय॥
तीनि नाडि तिहुंसमय प्रचंड । होय एकत्रजलामयअंड॥
पांच तत्त्व सो जायनसाय । सूक्ष्मग्रह आदिकसोरहाय॥
पुनिउपजै पुनि जायविलाय।ब्रह्मांडजलामयसोईकहाय॥
स्थूल नशाय सुषुप्तिभोग । धुंधाकार दुहुँ भास वियोग॥
कारणसबछिपि रहैतेहिमांह ।स्थूलअस्थूलबहुरिप्रगटाह॥
सो कारण नाशै ब्रह्मज्ञान । ज्ञान नसाय आपु अमान ॥

पिंड भाव ब्रह्मांड अनुमान। प्रलयचार सो वेद परमान॥
भाव चार सोई सद्दिदान। प्राग प्रध्वंसा अनन्य जान॥
अत्यंता नहिं मान अमान। अनन्य कहिये आपुअमान॥
प्रागभाव कारणके जान। प्रध्वंसा परलय पहिचान॥
चारों भाव स्वरूपी राम। सोहं वोहँ राम अकाम॥ १८॥
साखी—कोइ उलट कोइ पलटै, सोहँ वोहँ राम॥
दुहुँ भांति जब थिति नहीं, आपु सकाम अकाम॥ १९॥

चौकडी।

स्वतः स्वभाव सनातन देव। कैल पिंडके कहते भेव॥
जेहि प्रकार भया ब्रह्मांड। सोई कला विचार जो पिंड॥
पांच तत्व मिलि नाना रूप। खंड ब्रह्मांडअनेक स्वरूप॥
पिंड ब्रह्मांड बहुत कराल। इंद्री प्रकृति अनेकन्हिजाल॥
पांच स्थूल तत्व ब्रह्मांड। सोई देखिये प्रगटै पिंड॥
पांचों तत्व पांच समान। अधिकारीप्रति नाम बखान॥
पोलसंधि सोई आकाश। श्वासा पूरण वायु विलास॥
जठर अग्नि है जल सोअनंग। तासों पृथिवी प्रगटे संग॥
उभय अकाश नहिंकछुआस। अंतःकरण भया सो भास॥
तासोंप्रगटै थीर बतास। पंच कला तामें परकास॥
धनंजय सो अकाश अनुरूप। सोईनिरंजन लियेस्वरूप॥
देवदत्त शक्ति परवान। जेहि आश्रित सब कर्म उपान॥
वायु कूर्म नैनके दाव। नाग वायु उदगार स्वभाव॥
चमकावन कृकराके जान। झीनी पांचों पै निरमान॥
रेचक पूरक कुंभक तीन। त्रिगुणा नाडी तहांसों कीन्ह॥

खैंचै गहै चढावै श्वास । अंगिकार पूरकके गांस ॥
छाडै उतारै डारै जोय । प्रतीकार रेचकके होय ॥
कुंभक छिपावै मिटावै श्वास।भास अभास सो करैविलास।
चारिकला तेहि मांह देखाय।संमतद्वादश वाक्य उपाय२०

साखी—चहुं कला किये तिह अंगमें,द्वादश वाक्य पहिचान
संवत बारह मास सो, तीनक समय प्रमान ॥ २१ ॥
कारण तजि कला भया, धनंजयादि समुदाय ॥
विकल्प भाव इंद्री बहिर, झीनी चाल उपाय ॥२२॥

चौकडी ।

सोई कला ले इन्द्री होय।हँचित बुद्धि मन जानहु सोय॥
वायुअकाशमिलिचितअनुसंधान।तेजअकाशहंकारकरतूतजान
आकाश नीर ले मन अनुहरे।संकल्प विकल्प जानहु करे॥
होवै गगन पृथिवीके संग । निश्चय कर्म बुद्धिके अंग ॥
धनंजय सो गगन स्वरूप । देवदत्त पृथिवी अनुरूप ॥
वायु किंकिरा कूर्म सो आग।नीर अनुरूप बखानै नाग॥
बाहर इन्द्री कारण प्रतिकूल । सूक्ष्म देह आवै सो मूल ॥
देवदत्त कर्म अभिमान । धनंजय सो विशेष विज्ञान ॥
वायु किंकिरा ज्ञान स्वरूप । कूर्म आग उपासना रूप ॥
नाग वायु योग बल ठान । तासों पवन श्वास निरमान॥
पाँचों भये प्रत्यक्ष विशेष । श्वासा बीच कला औ रेष ॥
इंगलादिक नाडी तीन । झीनी नाडी परगट कीन ॥
सो अस्थूल भया परचंड । और पांच सो प्रगटै पिंड ॥

प्राण अपान व्यान समान। और उदान उतपति पहिचान ॥
वायु अकाश व्यान सो होय। सर्व शरीर व्यापै सोय ॥
नाभि समान वायु जुग जान। तेजआकाश मिलिकंठ उदान
जल वायु मिलि हृदया प्राण। मृत्तिका वायु गुदा अपान
तेहिते ज्ञान इन्द्री समुदाय। कर्म इन्द्री पाछे प्रगटाय ॥
श्रवण रसना नैन बखान। त्वचा नसिका उतपति मान
तेज अकाश मिलि श्रवण होय। विना तेज सुनते नहिं कोय
वायु तेज त्वचा परचंड। इन्द्री सो स्पर्श प्रगटै पिंड ॥
तेज तेज मिलि चक्षु उपाय। तेज नीर रसना प्रगटाय ॥
तेज पृथिवी जुग नासा होय। पांचों पांच विषयरस सोय॥
साखी--अपनी अपनी विषयको, कारण ग्राही होय ॥
षड संपुट औ त्रिपुटी, राम प्रकासिक सोय ॥२४ ॥

चौकडी।

ज्ञान इन्द्रीको इहै विचार। कर्म इन्द्री उतपति निरुवार॥
जल औ गगन जहां मिलाय। वाक्य इंद्री सो तहां दृढाय॥
नीर वायु दोनों परसंग। इन्द्री हाथ कर्मके अंग ॥
आप अरु तेज पाद उतपान। नीरहि नीर शिश्न परवान
जल क्षिति गुदा बखानै सोय। पांचों कर्म इंद्री हैं जोय॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंध। पांचों विषय उतपति प्रतिबंध
पृथिवी गगन ले शब्द उपाय। स्पर्श वायु पृथिवी दृढाय॥
पृथिवी तेज रूप दृढ भास। पृथिवी जल रस करैविलास॥
पृथिवी पृथिवी गंध सो होय। पांचों विषय कहावै सोय॥
पांच स्थान सो तहां विशेष। भिन्न भिन्न लेखा सो लेख॥

शून्य ब्रह्मांड अनहदका भोग। नाभि पवन गंध उतयोग॥
तेज क्षुधा है पीत मुकाम। द्वारा नैन रूपसो काम॥
बासा नीर विशेष लिलाट। मैथुन भोग जुग खुलै कपाट॥
पृथिवी कलेजा मुख जेहि द्वार। खान पान सो करतअहार
पांच तत्वसों भये पचीस। अंश पिंड ब्रह्मांड सो ईस॥
लोभ काम क्रोधऔ मोह। भय मिलि पंच गगन महँ सोह॥
शून्यहि शून्य उत्पति है लोभ। वायु शून्य कामके क्षोभ॥
तेज अकाश क्रोध तेहि होय। कारण मोह गगन जलसोय
पृथिवी अकाश मिलिभय मान। शून्य प्रकृति पांचपरवान
चलन बोलन पसारन जोय। सिकोरन धावन वायुतेहोय॥
वायु अकाशते पसारन होय। वायु वायुमिलि धावनसोय॥
वायु तेज मिलि बोलनजान। वायु जल सिकोरन परवान॥
वायु पृथिवीसे चलन होय। पांच प्रकृति पवनके सोय॥
निद्रा मैथुन आलस जान। तृषा क्षुधा, अनल पहिचान॥
तेज अकाशते निद्रा होय। तेज वायुते मैथुन सोय॥
तेज तेज मिलि आलस जान। तेज नीरते तृषा मान॥
तेज पृथिवी ते क्षुधा बखान। पांच प्रकृति तेजके जान॥
लार रक्त पसीना बनाय। मल मूत्र पांचो जलतेउपाय॥
जल अकाशते लार होय। जल वायु ते रक्त है सोय॥
जल औ तेजते पसीना जान। जल जलते मूत्र पहिचान॥
जल पृथिवीसों मल उतपान। पांच प्रकृति नीर परधान॥
रोम नाडी मांस त्वचा अस्थि। पृथिवीप्रकृति पचीससमस्ति
पृथिवी अकाश रोम उतपान। छिति वायुते नाडीपरधान

पृथिवी तेज मिलि त्वचा सो होय। छिति जल ते मांस प्रगटै सोय
पृथिवी पृथिवी मिलि अस्थि उपाय। सोई पचीस प्रकृति कहाय
साखी-पांच तत्त्व पचीस होय, प्रगट भये सो पिंड ॥
नाडी तीनि नौ रूप धरी, रची जाल परचंड ॥२६॥

चौकडी ।

नाडी श्वासाके जो तीन । त्रिविध कला ताहि महँ कीन्ह॥
तीनि तीया नौ द्वारा जान । दशयें रुधिर रज वीर्य मान
नाडी तीनि बात पित्त शीत। तेहि नौ चाल चिकित्सा रीत॥
बीचमें नौका अंक सो गांस। एक पर शून्या दशयें नास ॥
चांद सूर्य राहू घर तीनि । नौ ग्रह कला दशम परबीन ॥
दशद्वारा दश दिग सो होय । तहां तिहुं समय लखावै सोय
पुनि तीहु मांह नौ चाल समान। दशयें शून्य प्रगट तहां आन
सोई कला धरती नौ खंड । तीर्थराज नाडी परचंड ॥
दशयें जलामय गर्बडी होय। शून्याशून्य दिखावै सोय॥
नौ नाथ होय बैठी नारि । शक्ति सिद्ध चौरासी झारि ॥
पांच पांच जेते होय प्रकास । पंचकोशके पूर विलास ॥
तीनि अंश नाडी परमान । तिनि अंशके षट परधान॥
सो षट अंशी जग पहिचान। षट शास्त्र षट कर्म अमान॥
षट दर्शनके सोई भास । पंडौ छठयें कर्म बिलास ॥
सतयें सत्त वर्तमान । विद्या अविद्या मूल निधान ॥
कहूँ पंच कन्या पंच पचीस। चारि तीन दो विध कहुं ईस॥
कहूँ षटकला देखावै अनेक । कहूं सात सत्त ॐ एक ॥
सात स्वर्ग सो कारण होय । अपवर्ग आठ आप्त है सोय॥

धरती सात एक शीस सुमेर । मस्तक अष्टम अंग निबेर ॥
सात कमल एक श्वासा भोग।सायर सात नीर प्रतियोग
वार सात यह भांति उपान । अष्टम अष्टंगी पहिचान ॥
अष्टभुजी अष्टवर्ग बिलास । षोडश नर नारी जुग भास॥
सात भूमिका आपु अमान।सोरह कला पूर पहिचान ॥
अष्टांग योग वखानै वेद । सोरह आना सोरह भेद ॥
आठौ नवौं पुनि अंक बिलाय।शून्यालहतएकदहलाय२७
साखी--एक शून्य संग्रह किये, परखै नहीं सो संध ॥
अनेक जाल भौ अंकमें, परे जीव सब बंध ॥२८॥

चौकडी ।

स्वासा भेद स्वरोदय जान । नाडी स्वभाव चिकित्सामान
ग्रह चाल बुद्धि जोतिष होय।समय स्वभावकिसानी सोय
नाना मत ताके व्यवहार ।अरुझै जहां तहां अरुझनहार ॥
नष्टरूप जे जगके जाल । सोहँ देव कहै ब्रह्म जाल ॥
एक एक अंग कोई बलवान।कहूं सर्वज्ञ पूर्ण परवान ॥
जथा प्रयोगमें रहै तमान।अधिक भये वह सुख अनुमान॥
जगत समाय रहा ब्रह्मज्ञान। सूर्य कलामहँ रैनि समान॥
कहुँ सुख स्वभाव देखाई देय।कहूं अधिकै दुख मानै तेय ॥
सायर वारि स्वभाव सो आग।अपने स्वभाव चलै सोभाग
भागत अनलअधिकलहराय।अपने स्वभाववारि हुलसाय
सो दुख देखि भये जब थीर।सुखअनुमान मिटावहु पीर ॥
भावना मिटिरही सो समाय। बारम्बार वारि अकुलाय ॥
पानी खासा औ मलहीन । सार मता सोई दृढ कीन ॥

पूर्ण कलाके अनमिल दाव।जोई सहाय सोई सो नसाव॥
रक्षक भक्षक हर्ष विलाप।दुतिया नहिं कछु आपै आप॥२९॥
साखी--अंधधूंदमें पगि रहा, दुखिया चहै विलास ॥
बिनु शरणागत पारखी, बिलटै निज उस्वास॥३०॥

चौकडी ।

योग युक्ति जे कमल विहार।कहै प्रचार स्वर्ग अनुहार ॥
कमल सहस्र दलसोईगौलोक।शब्द विलास अनहद भोग॥
सकल गोपिकाकृष्णविलास।अद्भुत शोभा लीला रास॥
सायर शुद्ध अमीके खान । योगी चहही सोइ परवान ॥
सहस्र श्वास ताहीके भोग । कारा रंग गगन संजोग ॥
महा वैकुंठ दुइदल सो ज्योत।सहस्र श्वास भोग तेहि होत ॥
सायर घृत तहां परवान । लाल वर्ण झलकारी जान ॥
सत्त लोक दल षोडश होय।सती शारदा बासा सोय ॥
श्वेत रंग दधि सायर जान।भोग सहस्र स्वासा अनुमान॥
सोरह स्वर ऊपजै ताहि । अक्षर बानी प्रगटी जाहि ॥
द्वादश दल कैलास बखान।अनहद चक्र हरके अस्थान॥
मदिरा मस्त करै अचेत । भोग सहस्र छौ रंग है श्वेत ॥
दशदल विष्णु लोक परवान।क्षीर समुद्र हरिके परधान ॥
श्याम वर्ण षटसहस्र विलास।प्रगट कहै सो विष्णु निवास॥
अष्ट दल ब्रह्मलोक परचार । बासा अजके करहिं विचार॥
मीठा सायर भोग विलास।षट सहस्र श्वासा परकास ॥
पीत वर्ण भू पृथिवी जान । सो तहां प्रजापती अनुमान॥
देवलोक है दल सो चार । गणनायक शूर मूलद्वार ॥

मूत्र सायर लोनसो जान ।छौसै श्वासा लालपहिचान ॥
छ्यानवेकोटि श्वासाकेभोग।सोप्रतिबंध मनुष्यउतजोग॥
सहस्र एकईस छौसै दिनरात।पलषटश्वासागिनतिगिनात
पुनि थिति नहीं जीयरे होय।मृत्यु अकाल बतावे सोय ॥
प्रेत योनी भुगतावे भोग । सो योनि अस कहै संजोग ॥
सूक्ष्म शरीर श्वासाके साथ । वाको भोग भुगतावे नाथ॥
हाथ अतल है हरिके भेव । छाति वितल ब्रह्मा सो देव ॥
तल सो पीठ शंभु सहिदान । पेट सुतल सावित्री स्थान॥
शंकर पूत सो रहैं पताल । तलातल लक्ष्मी पद प्रतिपाल॥
रसातल पेडु अद्याारूप । कहुँ लिंग कहुँ भगचक्र अनूप३१

साखी–चिह्न चक्रनरनारीके, चिदाभास विलास ॥
उपजै अनबनी मोहमें, खानी कलेश निवास ॥३२॥

चौंकडी ।

चारि देव रेखा सो चार । चारि देहका करहिं विचार ॥
महाकारण कारण औ थूल । पिंड विराजै सो अस्थूल ॥
तुर्या सुषुप्ति स्वप्नविलास ।चौथी अवस्था जागृति भास ॥
प्रत्यज्ञप्राज्ञ तैजसअभिमान।विश्व अभिमान चारपहिचान
ऋग अथर्वण यजुर औ साम।चारों वर्ण चहूं मुकाम ॥
मूर्धनी हृदय कंठ औ नैन । चारि अवस्था बखानै बैन॥
आनंदाभास आनंदापोत अस्थूल विलासभोगचहुँहोत॥
रज सत तम गुण तीनिउजोय।चौथे शुद्ध सतोगुण होय॥
छिप्रा गतागतदूजीमान ।सौलेष्टता सुलीन भूमिकाजान॥

मुक्ति सालोक्यसामीप्य सारूप । चौथेहै सायुज्यअनूप॥
जेते चारि चारि परसंग । सबका देखहु एकै रंग॥३३
साखी—चारि अवस्था चारि चहू, सोई चारि शरीर ॥
महा शून्य औ शून्यमें, लहै सदा बहुपीर ॥ ३४ ॥

चौकडी ।

इंद्री कर्म इंद्रीके भेव । जहां जेहि कला इंद्रीके देव ॥
सो सुनि लेहु करहु विचार । त्रिगुण तत्वमसि सब सार ॥
निर्गुण मत शंकरके होय । शब्द ब्रह्म ब्रह्मा है सोय ॥
हरि सो सगुण ब्रह्मपरवान । गुण औ नाम रूप पहिचान॥
अंतस निर्विकल्प अदभूत । महा विष्णु देव मजबूत ॥
मन इंद्री मंतव्य व्यवहार । शशि अस्राधि देव परचार॥
बुद्धि अध्यात्म निश्चय भास । ब्रह्मा देवता संग विलास॥
चित्त अध्यात्म चिंतन करै । तासु देवता हरि अनुहरै ॥
अहंकार अध्यात्म करणी अहँ । रुद्र देवता एकोहँ ॥
श्रवण तेहि सुनान अदभूत । दिग अस्राधी देव मजबूत ॥
त्वचा इंद्री स्पर्श व्यवहार । वायु अस्राधी देव अनुहार ॥
चक्षु अध्यात्मदृष्टव्य सो भेव।सूर्य अस्राधी ताहिके देव॥
जिभ्या रस वरुण सो देव । घ्राण गंध अश्विनी सेव ॥
वाक्य सोई वक्तव्य विचार।अग्नि अस्राधी देव निरुवार॥
पाणीअध्यात्म ग्रहणसो भेव ।इंद्रअस्राधी कहावै देव ॥
पाद अध्यात्म चलना होय । उपेंद्र अस्राधीदेवतासोय ॥
शिश्नअध्यात्म मैथुन भोग।प्रजापति अस्राधी देवता योग
गुदा विसर्जनि सोई जान । यम अस्राधी देवता मान ॥
सोई अस्थूल पिंड ब्रह्मांड । प्रगटै कला अनेक प्रचंड३५

साखी--महा जाल जंजाल है, आस ओस संभार ॥
झांई संधि सो परखिले, गुरुमुख शब्द विचार॥३६॥

चौकडी।

दहिने नर बायें सो नार। शून्य अंग निरजन सार ॥
कारा श्याम गोरा औ पीत। चारों रंग कला तेहि रीत ॥
बवना नाटा और मझोल। लंबा चौथे करै कलोल ॥
कर्म धर्म मत त्रिगुण राज। शम दम दंड विभेद समाज॥
शमसमानदम निग्रह जान।विराग विचार साधनपहिचान
कर्म समाधि अजके होय।धर्म समाधि विष्णु है सोय ॥
सहज समाधि शिवके भेव। तीनिउ कला विराजै देव ॥
षटका षट मुनि करैं विचार। जुगतावैं बिंदु ह्रय सार ॥
मीमांसा कर्महीं परधान। वैशेषिक सो समय बखान ॥
न्याय एक कर्ता लालीन। पतांजल योग कला परवीन॥
नित्यानित्य सो सांख्य दृढाय। पूरण कहै वेदांतबुझाय॥
सतयें भक्ति अनन्य अकाम। सांच समान विशेषी नाम
जगत कला जो है विस्तार।गाय गाय सो कहै विचार ॥
अस्थूल पांच तत्वको जान। अष्टम मता इहै परधान ॥
व्यापक एक एकहि मान। भिन्न भिन्न कोइ करै बखान॥
पृथिवी सनातन काहु बिचार।स्वयं शिला ताहि अनुहार॥
काहू नीर बीज परवान।अनल ज्योति कोइ लावैध्यान॥
कोई लखावै ख्याल बतास।शून्य धूंध कोई लावै श्वास॥
वैयाकरण शब्द परचंड। ग्रह आदिक जोतिष ब्रह्मंड ॥
कोई अस्थूल करै विश्वास।कोई स्वतः पद थीर बतास॥

कोई स्वर्गादिक निश्चय करै । सातों सात भांति अनुहरै॥
कोई सम्रुझै निश्चय ज्ञान । पचीस समस्त मता पहिचान॥
ताके शाखा भये अनेक । अद्‌बुदपंथ सब करें विवेक२७॥

साखी--पचीस डार परपंच है, समस्त मूल सो एक ॥
अदबुद रंग तरंग है, पंथिक पत्र अनेक ॥ २८ ॥

चौकडी ।

संधि अव्यक्त अंडपरकास।परकासिक परकाश विलास॥
दुतिया द्वैत इच्छा सो नार ।तीन अंक अज हरि हर सार
सनकादिक चारिउ चहुंरूप । भ्राता चारि चतुर्भुज भूप॥
शंख चक्र गदादिक चार । पांचों पंडौ पांच विचार ॥
चतुरानन पंचानन भेव । पटमुख कार्तिक नाना देव ॥
छौ चकवे छौ मुनि परवान । सत्त ऋषि सो सात्त गुमान॥
अठयें कुंभज करे विलास । नवें नाथ नौ अंक नेवास ॥
दश अवतार एकादश नार।वाक्य द्वादश तिलक अनुहार
निश्चय सोई द्वादश अस्कंध । चतुष्ट श्लोकी सोई संध ॥
संवत सब द्वादश अस्थूल । तेरह आपै सबनके मूल ॥
मनु चौदह सोई विद्या जान । गांठ अनंत कला परधान॥
पंद्रह तिथि पक्ष अनुहार । सोरह सोरह कला विचार ॥
सत्रह जाल भागवत सार । हरी पुराण अठारह भार ॥
सत्त श्लोकी गीता होय । अध्याय अठारह जानों सोय॥
एकईस ब्रह्मांड विचार । तत्व सोई चौबीस अवतार ॥
चौतीस अक्षर बावन रूप । दानी तीनि लोक बलि भूप॥

सभै कला अवतार औ रेख ।लोभ मोह कहुं क्रोध विशेष
कहुं कामी कहुं भय परचार।कहुं वक्ता कहुं जड अवतार ३९
साखी--अस्मदादि जीव जगतके, विशेष सोई अवतार॥
अधिक कला सब तासुके, ब्रह्मज्ञान परचार ॥४०॥

चौकडी ।

पनिहारी सब नदिया एक । बानी विविधि घाट अनेक॥
अलफ एक अल्लाह बखान । बे बंदा दूजा परमान ॥
जात सिफात सोई पहिचान ।दुबिधा द्वैत चाल बिगरान
कादिर कुदरत जामें हक्क । सभै मुकैयद खूद मुतलक्क ॥
जबराईल वक्ता अज होय।मिकाईल हरि गुण गावै सोय ॥
इजराईल शंकर संघार । तीहुं फिरस्तनमें सरदार ॥
नासूत मलकूत जबरूत बखान।लाहूत चौथे हाहूत अमान
जंबूत तौरेत इंजील फुर्कान।कुतुब चार चहुं यार गुमान ॥
अबूबकर उमर उसमान अली।चारों यार मुक्कामी बली॥
पंचयें महम्मद खतम नवी।पंज तन पाक अजीदगवी ॥
शारियत तरिकत हकीकत होय।मारफत चारों चाल हैं सोय
शेख सय्यद मिर्जा खान । चारों वर्ण कहैं अनुमान ॥
बारह इमान चौदह मासूम । तेहिते बहुत फरीक अमूम॥
अठासी सहस्र नवी परवान।ताके पंथ अदभुद पहिचान॥
ईशा इंगलीस बारह ग्रंथ । समस्त विचार अवैवी पंथ ॥
इसारा कुन हूकम मुतलक्क।मसाईन स्वभाविक हक्क ॥
जोगई संगालएक अनुमान ।वचन फेर बहु पंथ उपान ॥
जेहिजो भावै करै विचार। आस्तिक नास्तिक मतअनुहार

त्रिगुण चाल सोहं सो देव । परखै परखनहारा भेव ॥
परखहु रामरहस विचार । समष्टिसार सोई संसार ॥४१॥
साखी--रामरहस पारख करै, जो शब्द विवेकी होय ॥
लखै संधि संदेहका, झांई रहै न कोय ॥ ४२ ॥
नदी उतरै नाला उतरै, समुद्रहु ऊतर जाय ॥
खाई अंगुल चारकी, तामें गोता खाय ॥ ४३ ॥
इति समष्टिसार रामरहस साहेबकृत गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

मानुष विचार ।

दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्रंथ मानुष विचार ॥
साखी--बना बनाया मानवा, बिना बुद्धि बेतूल ॥
कहा लाल ले कीजिये, बिना बासका फूल ॥ १ ॥

चौपाई ।

मानुष मानुष सबै कहावे। मानुष बुद्धि कोई विरला पावे॥
छाजन भोजन मैथुन कर्मा । भय निद्रा मोह षट धर्मा॥
पशु पंछी सबहिनको व्यापै। निशि वासर सो दावा दापै॥
इन्ह षट धर्म निपुण सब भांती। चतुर मूढ मानुष पशु जाती
निर्णय करि देखो मनमाहीं। पशु मानुषते भिन्न कछु नाहीं
मानुष बुद्धि न देखै जोई। कपट भेष नाना विधि सोई॥२॥
मसला—गदहा चलै स्वर्गको । छार लगाय लगाय ॥३॥

चौपाई ।

कपटवनौरीबहुविधिकीन्हा। अरुझिअरुझिजीवनिथ्यादीन्हा
कपट स्वांग विद्या बहुभांती। दिनदिनसंशय सोगउतपाती

आपुगये औरन ले नासी। बाट चलाय डारै गर फांसी॥
जो काहू मानुष बुद्धि आवै। कहै औरते और बनावै॥
चाहत सुख पडे ठग हाथा। भरम भूत भयो ठगसाथा४॥
साखी–मानुष होयके ना मुवा, मुवा सो डांगर ढोर॥
एकौ जीव ठौर नहिं लागा, भया सो हाथी घोर॥५॥
रामहि सुमिरै रन भिरै, फिरै औरकी गैल॥
मानुष केरी खोलरी, ओढै फिरत हैं बैल॥ ६॥

चौपाई।

मानुष बुद्धि दुर्लभ संसारा। कोई जानै जाननहारा॥
विन जानै कोई ठौर न पावै। भरम भूत होयके पछतावै॥
मानुष जन्म दुर्लभ संसारा। जाते आवागवन निवारा॥
विचार शील दया है बेरा। चारि रीति हैं मानुष केरा॥
जो चारिउ विधि पूरा होई। सबहीं बात सुधारै सोई॥
प्रथमे पशुवत् कर्म सुधारै। जो बर्तै सो भली संभारै॥
छाजन सो मतलब है संगा। करै सुसंग छाडि मतिभंगा॥
संगतिभली भली बुद्धिहोई। ओछी संगत मूलहु खोई७॥
साखी–संगति कीजे साधुकी, हरे औरकी व्याध॥
ओछी संगति कूरकी, आठों पहर उपाध॥ ८॥

चौपाई।

दूजे भोजन कर्म सुधारै। अंकुरज भछे जीव प्रतिपालै॥
जीव अजीवहि करै विचारा। जड चेतन जो है संसारा॥
जहांजीव तहां चेतन होई। दुख सुखसब विधिजानैसोई॥
जैसे उष्ण अनलको कर्मा। सदा शीत है जलको धर्मा॥

सूर प्रकाश भिन्न नहिं दोई । वैसे जीव धर्म चिद होई ॥
जलथलपावकपवनअकासा।सो सब स्वर्गजीवकोवासा॥
सकल पसारा जडको होई । पांचों तत्व कहावैं सोई ॥
जैसे केस उधमज है देहा । ऐसे अंकुरज पृथिवी नेहा ॥
शून्यसुषुप्ति आस्तिसमाना।तेहि आश्रितअंकुरजउतपाना
पूरण आस्ति पिंड ब्रह्मण्डा।भेद अवस्था खंड औ पिंडा।
जागृति स्वप्न जहां व्यवहारा ।नहीं तहां अंकुरज पैसारा॥
हरै सूखै जो शंका होई । ताकर भेद तुम लेहु बिलोई॥
चिखुर बढाये बहुविधि बाढ़ै ।अनलजरायछिनमों डारै॥
अनल दीपको तेल अधारा । पवनथीरमें करत विहारा॥
पवन झकोरते जाय बुझाई । अधार पाय पुनि देर रहाई ॥
लाहु चर्म हैं चिखुर अधारा।जलपृथिवी अंकुरजकोसारा॥
पांच तत्वको उधमजआहीं । इनके भछे दोप कुछ नाहीं ॥
नाना रूप जीवकृमि होई । जल थल अंकुरज रहा समोई॥
दुख दियेते बड अपराधा ।दया विचारमें होवै बाधा॥
साखी–अंकुरज भछै सो मानवा, मांस भछै सो श्वान ॥
जीव वधै सो काल है, सदा नर्क परवान ॥ १० ॥
जीयत जीव मुदाकरै, कर्महि भया कसाय ॥
मरी खाय चमरा भया, अधम कर्मके दाय ॥ ११ ॥

चौपाई ।

तीसर मैथुन कर्म विचारै । हानी लाभको भले निहारै ॥
छिन एक घसतघसावत भावै । पाछे नानादुख दिखलावै॥
काम खलित दोऊकी हानी ।ज्ञान रहा सो ताहिसमानी॥

जात पांत हुरमतके गाहक। तिनकी डर पैठी उर नाहक॥
बडी देख भाई सो डाहै। ओछी परीतो नाहिं निबाहै॥
पुत्र न होय तो अति बड़ सोगी। कुहकत जहां तहांजस रोगी
जो होय पुत्र अधिक सो मोहू। छिन एक चैन न आवै वोहू॥
छतिस पवनियां रहैं लौलाई। अपनी अपनी चाह सुनाई॥
उतसव बडा बधावा बाजा। संपति बडी निछावर छाजा
मरिगया पुत्र भया हहाकारा। चली अपरबल मोहकी धारा
हित परिवार बुझावन आवै। गुण सो देखि दुहुं बिधिकुहुकावै
अशौच्य कर्म लगावै ताही। हित बंधू ऐसे जगमांही॥
जो जीवै नाना जंजाला। जग धंदामें सदा बेहाला॥
धंदा सोच सदा रहै घेरा। निसु दिन चैन नहीं संसारा॥
कनक संचवन बहुविधि करहीं। मोरी हुरमत कैसे निवही॥
जेहि जंजाल फँसे पितु माता। पुत्र फँसावे, कहै कुशलाता॥
धूर्त सपूत महा जंजाली। सांचा सुधा भक्ति कुलघाली॥
निज हित हेतु भक्तिजो करही। कलह कल्पना देखिसो डरही
जीवत मरत दोउ विधि लूटै। बिना विचार न यमसे छूटै॥
निर्णय करि देखो सो फंदा। परवश कुंवा परा है अंधा १२

साखी--कनक कामिनी देखिके, तू मति भूल सुरंग॥
मिलन बिछुरन दुहेलरा, जस केंचुली तजत भुजंग १३

चौपाई।

चौथे भयको करे विचारा। बिना विचार को पावै पारा॥
निसुदिन चहहु शरीरबचावा। ताको छिन छिनहोतचलावा।
जासु मोह सब जीव ड़ेराई। सो एको छिन नहिं ठहराई॥

दशों द्वार नर्ककी खानी । तहां जीव चाहत अवादानी ॥
सोऊ संग न काहुके लागे।मिथ्यापचि पचिमरहिंअभागे॥
पशुके समान पोपै तन सोई।विषय विवश गये आपुविगोई
उत्तम नरकी देह जो लागे।भूलिगये सो अधम अभागे ॥
करहु विचार सुधारहु अपना।नहिं तो काल विवशहैकलपना
नरकी देह जो होवै विचारा।तो हित पोषण उचितअचारा
धन्य सो जीव तारण तरणा।अभय अशंकत्रास नहिमरणा
मृतक शरीर नास सब भांती।तेहि अपनाय कौन कुशलाती
मानुष होय देह भय त्यागै।अपने कारज सो मन लागै १४॥
साखी--जो पद एकौ थीर नहीं । सो भय मानुष नाहिं॥
सम्रुझहु बादर गगनके । उपजहिं तुरित बिलाहिं १५॥

चौपाई ।

पंचयें निद्राको निरुवारे । जहां सुषुप्ति स्वप्न विडारे ॥
जागृति स्वप्न सुषुप्ति तुरिया।सो सब जुइनी यमकीकुरिया
सत्य असत्यके वर्तै जोई । धोखामें जिव जाय बिगोई॥
अस्थूल त्याग कोई झांई सोना।झांई स्वर्ग नर्ककी होना ॥
स्वर्ग नर्कका सपना चीन्हा।सुषुप्ति शून्य महल घर कीन्हा
तुर्या शुद्ध प्रकाश बखाना। साक्षी तीनि अवस्था जाना॥
सर्व साक्षिनी धोखा ज्ञाना॥सर्वहिमांहि नास्ति विज्ञाना॥
आदि संधि नहिं सूझे ताही ।भरमहि सदा ताहिकेमांही ॥
पुनि पुनि जाय मरै संसारा।समता कराहिं बुडहिं भौधारा
जागृत पृथिवी सपना स्वासा।सुषुप्ति शून्यतुर्या परकासा॥
चारि अवस्था भले विचारे । एक एककै सबै सुधारे ॥

बिना सुधारे भरम न जाई। यमके फंदा रहै अरुझाई ॥
सूझि नपरेदिनोंदिन अंधा।पचिपचि मरैन छूटै गंधा१६॥

साखी—खाया पीया अघायकै, सोवै पांव पसार।
भोंदू कछु जानै नहीं, को हम को संसार ॥ १७ ॥

चौपाई।

छठयें मोह माया परचंडा। कुल परिवारको नाना दंडा॥
सो परिवार स्वप्नको साथी। झूठा नेह देह कुल जाती॥
तासों नेह नहीं दृढ कीजे। जीव है एक कहां कहां दीजे॥
दिना कईकके संगीकहिये। तेहि कारण नानादुखसहिये ॥
पुनि सो इनकी मोह बहोरी। चौरासी राखहिं बरजोरी ॥
बहुत कष्टकै दाम कमावै। सो सब विषयके फंद उडावै ॥
कृपिण कनकबहु भांतिजोगावै।सर्पहोय निजजन्मगमावै॥
ममता मोह सदा दुखकारी।पशु नहिं चीन्है कर्मविकारी॥
सो सब पशुवत कर्म सुधारै।कसर खोट सबहीं खोयडारै॥
हृदया सांच सांच मुखभाखै।कपटखोट एकौ नहिं राखै॥
कोई बात कहैनहिंकाची। बोल अडोल भाखेसोसाँची॥
भव बंधन जाते होय रूढा। ऐसी बात कहै सो मूढा ॥
जेहि विधि कार्य जीवको होई।निर्णयवाक्य उचारै सोई॥

साखी—सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ॥
जाके हृदया सांच है, ताके हृदया आप ॥ १९ ॥
बोल तो अमोल है, जो कोइ बोले जान ॥
हिये तराजू तौलके, तब मुख बाहर आन ॥ २० ॥

शब्द संभारे बोलिये, शब्दके हाथ न पांव ॥
एक शब्द औषधि करै, एक शब्द करै घाव ॥ २१ ॥

चौपाई ।

दूसरशील विचारकोअंगा । सब अस्थूल अंग होयभंगा॥
बुरे कर्म सो लज्जा करै । बिना विचारके पशु नहिं धरै ॥
जो काहूके होय उपकारा ।मन वचकर्म करिलियेविचारा॥
मानुष भरसक चूकै नाहीं ।आखिर होय दोष नहिंताही॥
पशुवाहोयसो आंखि छिपावै।मानुष बुद्धिसपनेनहिंपावै ॥
जिन्हकी आंखिशील नहिंहोई।काल स्वरूप जानियेसोई॥
बिना शील बेपीर कठोरा । लंपट विषयी झूठा चोरा ॥
मानुषके गुणही अधिकारा । मुयेभछैजेहि श्वान सियारा॥
अग्नि जरै माटी गलिजाई । हाडचामकी यही बडाई ॥
जो ना भावभक्तिबनिआवै । बिनगुरुभवते कौन छुडावै॥
भक्तिहीन नर पशु है सोई । गुणवंता तै देखु बिलोई२२॥

साखी—मानुष केरा गुण वडा, मास न आवै काज ॥
हाड न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज ॥२३॥

चौपाई ।

तीसर दया मानुष व्यवहारा। निर्दया क्या करै विचारा॥
दया धर्म हृदया जेहि नाहीं ।भुक्ते नर्कसो यमपुर माहीं ॥
अपनी ओर छोह जीव करहीं । भावै वैसे आपुहि मरहीं।
यह संसार मृतकको थाना । भरम भूत जग रहाभुलाना॥
उपजै बिनसै भवका फंदा । बिन गुरु राह न पावै गंदा ॥
घात परस्पर लावै दोऊ । कष्ट बहू विधि पावै सोऊ ॥

एक दुखी सब यह संसारा। दुःख दिये तेहि कौन विचारा॥
निर्वैरी वर्तै जगमाहीं। मन वच कर्म घात कोउ नाहीं॥
सकभरि काहू सो नहिं मुरई। भूखा नंगा तिर्पित करई॥
गुरुके शब्द रहै लौलाई। जाते फंदा काल नसाई॥
गुरु साँचा साँची सो बानी। झूंठेके संग मूलहु हानी॥
मूल दया जो आप सँवारे। संवरे और जीव को तारे॥
सो बिन गुरुकी दया न होई। गुरु साँचा जग बिरला कोई
साँचा साहेब सेवा कीजे। भली प्रकार सबै जचलीजै२४॥

साखी–जो तू आया जगतमें, तो ऐसा करि लेहु॥
कर साहेबकी बंदकी, भूखेको कछु देहु॥ २५॥

चौपाई।

चौथे बीर व्यवहार विचारै। पक्का होयके सबै सुधारै॥
पक्का जो कछु करै विचारा। तासों कबहुं टरै नहिं टारा॥
जो जीव भगजुगनी समतूला। छिन चमकै छिन धुंध बेसूला॥
चमकै रात अँधियारी मांही। दिनके जोतभगमांहिसमाही॥
कछुवा लोमरी जानहु सोई। छिन चमकै छिन भीतरहोई॥
मानुष बिना विचार न करई। जो कछु करै सो नाहींटरई॥
जो कछु बुरा कर्म बनिआवै। परखत ताही तुरत बहावै॥
मन वच कर्म सांचके संगी। छाडै संग जीव बहुरंगी॥
आंधारि गुप्त न भावै कोई। बिन देखे परतीत न होई॥
जोलों देखिये न अपने नैना। तौलों मानिये न गुरुकेबैना॥
गुरु उपदेश समुझावन हेतू। मुये कहां समुझाव अचेतू२६॥

साखी-साधू होना चाहिये, पक्का होयके खेल ॥
कच्चा सरसों पेरिके, खरी भया नहिं तेल ॥ २७ ॥
साचा सौदा कीजिये, अपने मनमो जान ॥
सांचे हीरा पाइये, झूठे मूलहु हान ॥ २८ ॥

चौपाई ।

जेहिमानुषबुद्धिसबविधिआवै।अपना कारज सोइ बनावै॥
कपट कुटिलता काल नसाई। सत्य विचार रहै लौलाई ॥
जौनि भांति जीव कारज होई।लाज मिटाय करै दृढसोई
लोकलाज कुल कानके मारे।भँवरि भँवरि भव रहहिंविचारे
जेहि यम फंदा छूटे सो करना।नाहकमेंक्यों पचि पचिमरना
भली भांति सो लेहुविचारी।सकलअचरजयमआपसुधारी
खरा खोटा जो परखा नाहीं।अंधा धोखा मूल नसाहीं॥
प्रथम विचारहु औषध रोगा।केहि विधिशब्द हरै सबसोगा
देखो शब्द प्रकाश विचारी।जाते सकल होय उजियारी॥
गुरु एक सो कौन कहावै । जाते आवागवन नसावै ॥
सेवा अनेक करिये केहिकेरा।बिन जानै सब धुंध अंधेरा॥
गुरुमत मन्मत करै विचारा।तबसो जीव करै निरुवारा२९
साखी-बिन देखे वह देशकी, बात कहै सो कूर ॥
आपुहि खारी खात है, बेचत फिरै कपूर ॥ ३० ॥

चौपाई ।

औषध पांच राह सब करहीं । औषध बिना न कोईसरहीं
शब्द स्पर्श रूप रस गंधा।द्वारा पांच औषधके संधा ॥
सबहीं द्वारा बूझ रहाई । बिन बूझे नहिं कोइ ठहराई ॥

कहिं झीना कहिं मोटा द्वारा। तैसा तास भिन्न व्यवहारा॥
झीना शब्द है पवन स्वरूपा। तासों मोटा अनलको रूपा।
अनलहूते जल मोटा होई। जलते मोटा पृथ्वी सोई॥
पुनि प्रकाश एकते एका। थिर होय देखे कर विवेका॥
पृथिवी मोटा गंध प्रकाशा। तासों मध्यम दृष्टि प्रवेशा॥
पृथिवीसों जल झीना होई। भीतर जो है दीसै सोई॥
जलसों झीना तेज प्रकाशा। जामें दीस धरति अकाशा॥
रूपसों अधिक शब्द उजियारा। दृष्टिमें आवे सब संसारा॥
भूत भविष्य जोहै वर्तमाना। शब्दके भीतर सब समाना।
बूझ शब्दमें पैठे जाई। शब्दके भीतर अनल रहाई॥
अनल मध्य होयकै जल देखा। जलके भीतर पृथिवीपेख३१
साखी--रैन समानी भानमें, भान अकाशहि माहिं॥
अकाश समाना शब्दमें, शब्द रहा कछु नाहिं॥३२॥

चौपाई।

पांचों औषध करै बिचारा। मोटा झीना है व्यवहारा॥
औषध अन्न जल पेट समाहीं। जाते क्षुधा अरु प्यासनसाहीं
बहु प्रकार लादके रोगू। सो सब जाय भोजन संजोगू॥
गंध कपाल पहुँचे जाई। गुण आगुण सब अंग समाई॥
लेपै गुण सबले पहुंचावै। गुण आगुण सबमांहिसमावै॥
आंखिकी राह रूप गहि लेई। शीति ऊष्ण अगम देई॥
शब्द औषधी कानके द्वारा। बूझ समाय करै निरुवारा॥
हर्ष विषाद यंत्र औ मंत्रा। व्यापै सब कोइ कोइ स्वतंत्रा।
मर्म सबै द्वाराको बूझै। बिना शब्द निर्णय नहिं सूझै॥

स्पर्श रूप इत्यादिक चारी। सो सब मोटा स्थूल अधिकारी
पुनि अस्थूल सो थीर न रहाई। तैसे औषध ताहि समाई ॥
अंग अंगको देश है जैसा । अल्प गहिये औषध तैसा ॥
शब्द अति झीना बूझ विचारा। जाते होय सकल निरुवारा
शब्द बिना कोइ पार न पावै। बिन गुरु कौन सो दावलखावै
सर्व देश स्वल्पज्ञ है सोई। बिनु तेहि कारज सधै न कोई ३३॥
साखी–शब्द बिना सुरति आंधरी, कहो कहांको जाय॥
द्वार न पावै शब्दका, फिर फिर भटका खाय॥ ३४॥
गुरू गुरूमें भेद है, गुरू गुरूमें भाव ॥
गुरू सदा सो बंदियें, जो शब्द बतावै दाव ॥ ३५ ॥
फेर परा नहिं अंगमें, नहिं इंद्रीयन माहिं ॥
फेर परा कछु बूझमें, सो निरुवारेहु नाहिं ॥ ३६ ॥

चौपाई ।

यह संसार बहु वैद्य बिराजै। नाना भांति औषधी छाजै ॥
सांच एक झूठ बहुतेरा । बिना सांच नहिं होय निबेरा॥
एक असलपर नकल अनेका। अनेक नकल नहिं पावै एका
बहु विधि ठग सब करैं ठगाई । यमके फंदा रहै अरुझाई ॥
बूझि समुझिके औषधकीजे। मिथ्यामें जीव काहेको दीजे ३७
मसला–गुरु कीजिये जान । पानी पीजिये छान ॥३८॥

चौपाई ।

वेद पुराण किताब कुराना । दोहा साखी छन्द प्रमाना ॥
अनंत भांतिका शब्द पसारा। बिन जाने नहिं होयसुधारा ॥
सो सब औषध बहु विधि जाँचै। यम फंदासे तबहीं बांचै॥

पक्ष बानीको मन्मत कहिये। जाते दुंद सबै घर लहिये॥
निर्णय बानी गुरुमत होई। जाते पछापच्छ सब खोई॥
जब निर्णयकी बानी आवै। झूठा खोटा आपु लजावै॥
निर्णय सो सबके हितकारी। जेहि परसे जीव होयसुखारी॥
सार शब्द निर्णयको नामा। जाते होय जीवको कामा॥
गुरु एक जो निर्णय करई। झगरा कबहुं परै न परई॥
जोकोइनिर्णयआश्रितभयऊ।सेवाकरिनिज कारज कियऊ
सो सब सेवा शिष्य कहावै।मन्मत सो जोऔर बनावै॥
जगबुधि कहैमम गुरु एका। जेहि तेहिसेवा करै अनेका॥
पुनि जाको इन गुरु ठहराई। ताको दूसर गुरू सहाई॥
जेहिकी सेवा करै लौलाई। सो सेवा पद कैसे कहाई॥
टहलकरै टहलुवा कहावै। तासो कैसे पदसेवाबनिआवै॥
सोई सेवक जो सेवा करई। बिना विचार बूझि ना परई॥
अपनी अपनी गुरुमत जानै। और सबै मन्मत अनुमानै॥
बिना निर्णयसोदुंदनजाई। पचिपचिमरहिंकरहिंलराई॥
जहां झगरा तहांगुरुमतनाहीं।जहां गुरुमततहां दुंदनसाहीं॥

साखी—पछापछीके कारने, सब जग रहा भुलान॥
निर्पछ होयके हरि भजै, सोई संत सुजान॥ ४०॥
शब्द शब्द बहु अंतरे, सार शब्द मथि लीजै॥
कहहिं कबीर जहां सारशब्दनहीं, धृग जीवनसोजीजे॥

चौपाई।

खरा खोटा परखहु बहुभांती।तबहीं होय जीव कुशलाती॥
जहि गुरु ज्ञान न छूटनकेरा।बहु अनुमान भरम बौडेरा॥

भव सागर दुस्तर कठिनाई। नौका नाम तहां सत्यदृढाई॥
बूडे भवकी धार न सूझै। मुये मुक्त ऐसो दृढ बूझै॥
जहांसे उपजै तहां समानै। कसर विकार मूल नहिंजानै॥
भरमे आप जीवन भरमावै। नाटकचाटक सुयश बढावै॥
करामात करतूत बखानै। नास्ति ज्ञान सोइसत्यकै मानै॥
ऋद्धिसिद्धि सब जातनसाई। नास्ति ज्ञान नहीं कुशलाई॥
सब ऐश्वर्य नास्तिहि माहीं। जाके पाछे जीव बौराहीं॥
आपुगये ऋजमानहुखोये। भांति भांतिके फंदाअरुझाये॥
रोगी वैद्य दोनों एक ठांऊं। औषध केहि कल्याणके गांऊं॥
जेहि कारण नर साई देवै। सो सौदा जांचि काहे नलेवै॥
ठग भरमावै बहुविधि लूटै। जग धंधासे कबहुं न छूटै॥
मोटी अविद्या छुडावन लागै। झीनी महा अविद्या पागै॥
झीनी मोटीदोउकष्टस्वरूपा। कारण नास्ति परै तेहिकूपा॥
पूरा धनी पूरा सो सौदा। परखत मेटै कालके फंदा॥
संधिलखावहिं कारण रोगा। मेटहिंसब विधि संधिकसोगा॥
नहिं संदेह न यमको त्रासा। सदा सुखारीपरखविलासा॥
धन्य सोबूझिसमुझिपगधरहीं। अंधरनभटकिरभवपरहीं४२
साखी—बलिहारी तेहि पुरुषकी, जो परचितपरखनिहार॥
साई दीन्हों खांडको, खारी बूझै गंवार॥ ४३॥
कर बंदगी विवेककी, भेष धरे सब कोय॥
सो बंदगी बहि जान दे, जहां शब्द विवेकनहोय ४४॥
मानुषजन्म नर पायके, चूकै अबकी घात॥
जाय परै भवचक्रमें, सहै घनेरी लात॥ ४५॥

समाचार पराईत मसला।

अपनी देखी दूर कर। भले अदमीका कहाकर ॥४६॥

चौपाई।

गुरु कामीको कृष्णहि जानै। क्रोधी होय नरसिंघ बखानै॥
लोभी बावनरूप अनुमानै। मोही रामचंद्र मन मानै॥
बुरा कर्म जो गुरुमें होई। यहि विधि शिष्य सुधारै सोई॥
देखी कुकर्म शंका जो आनै। चौरासीको भोगन जानै॥
एक बार नारद पै कहिया। तेहिंकारण नाना दुखसहिया॥
गुरु पाथरको ठाकुर कहिये। शिष्य चतुरा होय सोगहिये॥
काहु मच्छा काहु भैसाद्दढाई। निश्चय होय अपनीगतिपाई
शिष्य पूराहोय गुरुको तारै। निशिदिनाबिरहअग्नितनजारै
पतिबर्तासम करै स्वभाऊ। सो शिष्य जगमें पूरकहाऊ॥
जो पति कुष्ट नपुंसक होई। पतिबर्ता मन भावै सोई॥
जोपतिछाडहोयव्यभिचारी। वेश्याभजैपरपुरुषछिनारी॥४७

साखी–गुरु गुंगा गुरु बावरा, गुरु देवनका देव॥
जो तू चेला चतुर है, तो करो गुरूकी सेव ॥४८॥

निर्णय मसला।

गुरुवा तो सरते भये, कौडी अर्थ पचास॥
पनें तनकी सुधि नहीं, शिष्य करनकी आस॥४९॥

चौपाई।

सांचा साहेब सेवा लावै। ठग झूठेके संग नहिं जावै॥
कामी क्रोधी लोभी मोही। दुष्ट जीव जग जानहु सोही॥

जो अपने नहिं तिर्पित होई । तासों तिर्पित कैसे कोई ॥
जोजलसांचपियास नसाई।ध्यानअनुमान भरमअधिकाई
आपै रोगी वैद्य विचारा।तासों कौन होय निरुवारा॥
कनक लोभ बहु भेष बनाई ।झूठा बहु विधि करै ठगाई॥
नाता नारि पुरुषका लावै।जगत जाल कहिके समुझावै॥
आपहु नारी शिष्यहु नारी।दोउकामिर्नी शुद्ध व्यभिचारी
एक पुरुषका सुमिरन करई । इष्ट विचार विरहते मरई॥
अधम कला पाखंड पसारा ।मिथ्या पचहीं मूढ गंवारा॥
नाम बढावै पंथ चलावै । आप नसाने और नसावै ॥
समी समी पचि पचि मरहीं।साचा निर्णय चित्त नहिंधरहीं
बहु पाथर पारस नहिं भाई।सांच बिरले काहु ठहराई॥९०॥
साखी—शब्द कहै सो कीजिये, गुरवा बडे लबार ॥
अपने अपने काजको, ठौर ठौर बटपार ॥
गुरु तो ऐसा चाहिये, ज्यों शिकलीगर होय ॥
जन्म जन्मका मूरचा, गुरु पलमें डारै खोय ॥९१॥

समाचार मसला पराईत ।

राम नाम सार है, और सब लबार है ॥ ९२ ॥

चौपाई ।

संध्या तर्पण नित नित कीजे।राम कृष्ण सुमिरन चितदीजे
नाहिं तो पारब्रह्म मन लावै । कर्म भरम सब दूरि बहावै॥
बूझि विचारकहांलगिकरना।भजन करो जाते है तरना॥
वाक्यज्ञान कोई पारन पावै।आपैआप अनुभव बनिआवै
ताकी आस रहो लौलाई । अनेक जन्म सिद्धि तिनपाई॥

तीरथ वर्त करो चितलाई। पाप कटै पुण्य होय सहाई॥
भजहु सदा लीला अवतारा। यह पद दुर्लभ है संसारा॥
सोई तुम्हार मुक्तिको मूला। मुक्तिहु नाहिं ताहिसम तूला।
निशिदिनपाठकरहुममगाया।रामका अंतकाहू नहिं पाया।
ब्रह्मादिक जेहि पार न पाई।रामकी माया अपरबलभाई॥
रसना राम कृष्ण रटलइये।जाते चार पदारथ पइये॥५३॥
साखी—ब्रह्महीको स्वरूप है, माया ब्रह्म दोउ एक॥
सीताराम सुमिर लेहु, भजनका करहु विवेक॥ ५४॥

निर्णय मसला।

कबीरका गाया गावैगा। अजगैबका धक्का पावैगा॥
कबीरका गाया बूझैगा।तो तीन लोक सब सूझैगा५५
साखी—गावै कथै विचारै नाहीं, अनजानेका दोहा॥
कहहिंकबीर पारसपरसेबिना, जस पाहन भीतर लोहा५६

चौपाई।

सुरति समानी सब संसारा।उत्पति परलय भरम अपारा॥
बिना शब्द सो दीसत नाहीं। दिनदिनसंशयअधिकसमाहीं
तासु हेत बहु शब्द उचारा। जाते होय जीव निरुवारा॥
सो जो बूझि परै नहिंअबहीं।अंधरी गुष्ट न भावै कबहीं॥
जेहिसो आजु तेहिसो काला।बिन बूझै सो सदा बेहाला॥
करो विचार भरम मिटि जाई।भरम मिटै तो होय भलाई
आंधर दर्पण सूझत नाहीं। ऐसो शब्द भरमको आहीं॥
शुद्धवचन सांचाके होई। जामें देख परै सब कोई॥५७॥

साखी—मानुष बिचारा क्या करै, जाके कहे न खूलै कपाट
सोनहा चौक बैठायके, फिर फिर ऐपन चाट ॥ ५८॥
रामहि राम पुकारते, जिभ्या परि गौ रोस ॥
सूधा जल पीवै नहीं, खोद पीवनकी हौस ॥ ५९ ॥
अहिरहु तजी खसमहु तजी, बिना दादकी ढोर ॥
मुक्तिपरे बिललात है, वृन्दावनकी खोर ॥ ६० ॥
अनहद अनुभव आसमें, बूडे बहुत अचेत ॥
अचरज एक देखो हो संतो, बेरहि खाया खेत ॥ ६१॥

समाचार कृष्ण पांडवका ।

चौपाई ।

राम कृष्ण अहिरके बालक । ब्रजवधू कौरव कुल घालक॥
सोरह कला जाने बहु भांती। छली अनेक कामिनी उतपाती
सो सखियनसों रहै अनकूला । वेद वेदांत कथै बहु मूला॥
कपटी झूठा बात लबारी । अनेक राजा छलसों मारी ॥
सो अवतार गुसांई भाखा । सुजस बहुत पोथी लिख राखा॥
ब्रह्मज्ञान कथै ब्रह्म कहावै । नाम हेतु बहु पंथ बढावै ॥
पांचों पंडौ मन कर्म बानी । ताकी सेवा रहै लपटानी ॥
अर्जुनको ब्रह्मज्ञान दृढाई । संशय गांठि न अंते जाई ॥
विराटरूप माया दिखलाया। भांति भांतिका त्रास बताया॥
दुर्योधनसों युद्ध कराई । कुल परिवारको मार ढहाई ॥
पुनि सो कहा भया अपराधा। अश्वमेधकरो जेहिंमिटेउपाधा
जो जो कहा सो सब कछु कीन्हा। कोई बातसों चूक न लीन्हा

वंधे बरिष अश्वमेधको लागी।मोचनपापलायउ नआंगी॥
अंतकाल चहिये कल्याना। गले हिवारे जायअथाना ६२
साखी—कृष्ण समीपी पांडवा, गले हिवारे जाय ॥
लोहाको पारस मिलै, तो काहेको काई खाय ॥ ६३॥

समाचार भजन औराधन जगबुद्धि ।

चौकडी ।

जगमें जेते बलधारी । महिमा एक अनेक संवारी ॥
मच्छ कच्छ सूकर वपु धारा । जो जो कर्म किया संसारा॥
नरहरि बावन छल अधिकारी।परशुरामछत्री जिनमारी ॥
बहु महिमा लीला रघुराई । बाल्मीक शंकर गुण गाई ॥
केकईसौतसंशय उरआनी । दशरथ छली कामबसजानी॥
दशरथ वचन रामबन गवना।सीताहरणकियोतहांरावना॥
तासु मोह विकल भयेभारी । कपिदल साजरावणामारी॥
राजकर्ममें भयेउ पुनीता । निश्वर निकर अपर्बलजीता ॥
कल्याण हेतु संशय उरआई। मुनिवशिष्ठ ब्रह्मज्ञानदृढाई॥
अंतस ब्रह्मज्ञान अभिमानी । पूजा पाठ बहुत उनठानी॥
लीलाकृष्ण बरनि बहु भांती । धरध्यान दिवस औराती॥
कामिनी छली रूप अधिकाई । अबला मोहैबांसबजाई॥
तिनके संग क्रीडा बहु करई । कामातुरसों पायन परई॥
विषय वासनानिशिदिन धावै । ब्रह्म अच्युतानंदकहावै ॥
राज काज सबै अधिकारी । बिरह व्याकुल ब्रजकीनारी॥
गोपिनविरह अनल तन जारी।तासुलोकगौलोकविचारी॥
सोइ२ पाट करहिं लौलाई।संशयमोहदिनदिनअधिकाई॥

जगत जाल नाना दुख पावै।मुक्ति हेतु सो लीला गावै ॥
चाहै भवसागरसों तरना । पुनि सो भव जलफेरनगहना॥
जगन्नाथ प्रतिमा बनाई । कृष्ण पिंड गाड़ा तहां जाई ॥
बुद्धगया जो बौद्ध अवतारा । जाके पंथ जनी संचारा ॥
दत्तात्रेयव्यासकवि नाना।गिनती चौबिसकरहिंबखाना ॥
एक आस आगे लौलावै । कलि विपहरन कलंकी गावै॥
सनकादिक शुकनारदज्ञानी।सहस्रअठासीमुनिवरखानी ॥
आप आप सब ब्रह्म कहावै । खोजिरकछु अंत न पावै ॥
आप गये औरनभरमावै । पुनिसो ब्रह्म एक भिन्नकहावै ॥
अशी सहस्र पैगंमर होई । कुदरत खोजतिनहुंनहिंपाई॥
आदमआदहोयअल्लाहपठाना।नामखलीलकीबानीठाना॥
नुह सीलेमान ईसा मूसा । नाम महम्मद कहै संदेसा ॥
अपनी उक्ती कुरान बनाई । रोजा हज फर्ज फुरमाई ॥
निमाज हज सिजदेमें जाई ।भरम जाल जग रहाभुलाई॥
खतमानबी कल्माजगआना।तेहिपाछेजगभयादिवाना ॥
खोजि खोजिकछुअंतनपावै। अनलहक्क तब आप कहावै॥
निज पहिचानहेत जबकियेऊ।पीर पैगम्बर औलियाभयेऊ
प्रथम अज्ञान न चीन्है आपू।मध्यमें जात विविधसंतापू॥
अंत पैगंबर जीव बखानै । मार फनाका निजमुख गानै॥
आदि अंत मध्य चीन्हनजाई। खुद खुदाय रहा जहंडाई॥
कते कहै जनकूं दसीहदीशा। काहिसोछीपाऔरकोदीसा॥
भरमिक भरम संधि बौआई। बिनगुरु संततरहा जहंडाई॥
जामेंमुनिवर पचि पचि हारे । हबीनबी सब भयेबिचारे॥

सोई सोई कीर्ति निशुदिन गावै।अकबतको बेर खैर बतावै
मुये मुक्ति सबहिनकी होई।संधि मृत्यु नहिं चीन्है कोई६४
साखी-सेतहि सेत सीतंग भौ, सैन बाढु अधिकाय ॥
जो सन्निपात रोगियन मारै, सो साधू पार न पाय॥६५॥

इतिहास हरिभोंगपुरका।

चौपाई।

हरिभोंगनगरजहांचौपटराजा।भाजी टके टके शेरखाजा॥
खांड छार गनै एकसारा।हरिभोंगनगरकेचालनिन्यारा॥
एक वस्तु बिक्री जो जाई। तहां नौ नेगी दुंद मचाई॥
आपु आपुको खैंचे सबहीं। घटी होय नफा नहिं कबहीं॥
ताहि नगर अंधेरी राता। चलै चोर चोरीके घाता॥
दीन्ही सेंध महल कोइ साहू। तहां न भई मनोरथ लाहू॥
पैठत सेंध मरै दबि चोरा। देर भई चोरटी सुधकेरा॥
खोजत खोजत पहुंची तहंवाँ। तस्कर दबी मुवा है जहंवाँ
करत विलाप गई ढिग राजा।जहांके भोंदू सकल समाजा॥
कहा दाद मोहि दीजे राऊ।नहिं तो परजा बसै न गाऊ॥
चोर गये चोरीके हेता। सो दबि मुवा साहुके भीता॥
साहु बुलाइके फांसी दीजे। यही न्याव देर मति कीजे॥
राजा साहू पकरि बुलावा। फांसी देन तुरित फुरमावा॥
साहु उजुर किया प्रभु मेरा। ई खोरी सुतिहारन केरा॥
घर कांचा उन काहे उठाई। देत सेंध चोर दबिजाई॥
राजा पंकरि मंगावा सोई। दोष तुम्हारा फांसी होई॥
उजुर किया बहुविधि सुतिहारा।दोष मजूरन नाहिं हमारा

गिलावा कसर मजूरन केरी । ताते भीत गिरी भौ ढेरी
मजुरा पकरि बुलावा जबहीं।बहु विधि उज्जुर सुनाया तबहीं
मजुरा कहै सुनो हो राऊ।हमपर दोष तुम काहे लगाऊ॥
पुत्री काजी चढी अटारी ।नूपुर शब्द भया झनकारी॥
नाना भांतिसों पायल बाजै ।कोटि भान शोभा सो लाजै
सुनत देखत हम सबै भुलाना।खोरि तासु हम नहीं अयाना
पुत्री काजी पकरि बुलाई।काहेको अटारी चढी भुलाई॥
पुत्री काजी कहै पुकारी । दोष न दीजे राव हमारी ॥
बादशाहकी खडी असवारी।शोभा देखन चढी अटारी ॥
बादशाहको पकरि मंगावो।हमपर दोष तुम काहे लगावो
लस्कर पकरन ताहि हठाई। नहिं पाई लस्करफिरिआई॥
मौजहिं हाथ परा पछतावा।चोरटी न्याव न बनत बनावा
तेहि अवसर मंत्री उपदेशा । राजा काहे करहु अंदेशा॥
बादशाह औरो दरवेशा ।दोऊ समतुल अस कहैं संदेशा॥
मोटा होय तेहि फांसी दीजे।अपजसन्यावमेंकाहेकोलीजे॥
तेहि नगर दोउ रहे फकीरा।संत सुखी बहु मोट गंभीरा॥
हुकुम किया सो पकरि मंगाये।फांसी देन तुरित फुरमाये॥
दोऊ विचार करे मनमांहीं। यह हरिभोग बचावा नाहीं॥
एक कहै मोहि फांसी दीजे। दूसर कहै खैंचि मोहिलीजै॥
रार परस्पर देखी राऊ । अचरज पूछहिं भेद बताऊ ॥
मंत्री तहां निर्णय अनुमाना।मर्म फकीरा हम पहिचाना ॥
कहा लगन उत्तम यह होई । ऐसी लगन न पावै कोई ॥
चार चरण चारों परवाना।ताका मर्म कोइ बिरले जाना॥

पहिली लगन जो फांसी परई। अचल राज त्रैलोकके करई ॥
दूसरलगन फांसी व्रत ठानी। अक्षय वजीरी निश्चय जानी ॥
तीसर लगन मुसाहिब होई। चौथी लस्कर जानहु सोई॥
सुनत राव दरवेश निकारी। फांसी अपने गरे संवारी ॥
दूसर फांसी मंत्री लीन्हा। तीसर लगन मुसाहिब दीन्हा
चौथी लगन सकल हरिभोगू। फांसी परहि बडे संयोगू ६६॥
साखी—ऊपरकी दोऊ गईं, हियेहुकी गईं हिराय ॥
कहहिं कबीर जाकी चारों गईं, ताको काह उपाय॥ ६७॥

चौपाई।

सब घट एक ब्रह्म सम लेखै। सोई टके शेर बिक्री पेखै ॥
नौ नाडीमें जीव अरुझाना। नौ नैंगीको सोइ निसाना ॥
तस्कर लोभ मोहकी राती। जीव साहु घर चलै निवाती
पदार्थ अर्थ इत्यादिक चारी। जप तप साधन सेंध संवारी
पैठत सेंध मरै दबि लोभा। जो किये चारि पदारथ शोभा ॥
निःकामी होय जप तप साधी। तहां पदारथ चाहे उपाधी॥
चोरटी अविद्या कीन्ह बिलापा। संशय सोग सोई उरव्यापा
इंद्रिनपर है मनुवा राजा। जाकी अटपट सकल समाजा
नालिश करी साहु जीव घेरी। साहु कहै नहिं खोरी मेरी ॥
महल शरीर ब्रह्म सुतिहारा। जाकी रची सकल संसारा
मिथ्या कांची भीत उठाई। तासु हेतु चोर दबिजाई ॥
सो सुतिहार कहै परचारा। दोष कर्म नाना परकारा ॥
जैसा कर्म गिलावा कीन्हा। तैसा महल उठाई दीन्हा ॥
कर्म कहैं हम नहीं अयाना। काजी पंडित पुत्रि पुराना॥

जाके शब्द कर्म अरुझाई । कसर खोट बहु विधि रहिजाई
पुत्री काजी कहै बहूरी । बादशाहकी निश्चय खोरी ॥
बादशाह अवतार अनेका । पूरण ब्रह्म कोई करै विवेका ॥
तासु चरित्र भये वेद पुराना।दोहा छंद किताब कुराना॥
बादशाहको पकरि न पावै । वेचून वेअंत कहिके पछतावें
मन बुद्धितहां कछु पहुंचत नाहीं।धोखाधार मन गोता खाई
मंत्री बुद्धि तहां निर्णय कीन्हा।बदला साह दरवेशहि लीन्हा
विवेक वैराग्य दोउ दरवेशा।संत सुखी नहिं दुःखकरलेशा॥
फांसी देनको पकरे जबहीं । रार परस्पर लाये तबहीं ॥
बिना वैराग्य विवेक न होई।बिना विवेक वैराग्यन कोई॥
दोउ विधि देखि राव अकुलाना।पूछा तहां मंत्री अनुमाना
उत्तम लगन मनुज अवतारा। फांसी मान वनोरी सारा॥
चारिचरणका किया विचारा।किया भिन्नभिन्न निरुवारा॥
स्वतःप्रकाश प्रथम अनुमानी। फांसी परे भये ब्रह्मज्ञानी॥
दूजे दुतिया दास कहावै । भक्ति वजीरी युग युग पावै ॥
तीजे लगन योगके होई । साधे सिद्ध कहावै सोई ॥
चौथे तीरथ बर्त अचारा । लोक बासका किया विचारा॥
चार मुक्ति सोई अनुमानी।सायुज्य सामीप्य सारूप्यबखानी
चौथे सो सालोक्य बताई। जेहि पाछे सब जग भरमाई॥
सो हरिभोंग नगर संसारा।जाकी शोभा अगम अपारा ६८

साखी—यह निरणय हरिभोंग पुर, भोंदू सकल समाज ॥
मानुष बुद्धिबिन पशुसबै,भये सो राज बिराज॥६९॥

इतिहास दूसरी।

चौपाई।

हरिभोंगपुर पट्टन संसारा। बहु बिपरीत जेहि वार न पारा॥
गन्धादेश विकारकी खानी। गन्धीपवन सो गजबज पानी॥
नष्टरूप पूरण सो गाऊं। महाराज भोंदू तेहि नाऊं॥
तेहि दुखदुखित नपरै पहिचाना। एकअनन्तसोई जहँडाना॥
जथा जमां जब गौ छितराई। सोई हरिभोंग नगर बसाई॥
सब चाहैं सुख पावैं न मर्मा। बाढै दुःख करै जो कर्मा॥
बहु विस्तार छोरि न जाई। विवश दुखी समष्टि ठहराई॥
भरम कर्म अनेकन भांती। राज काज चाहैं कुशलाती॥
जहां समष्टि जथा विस्तारा। ज्ञान कला सो ईश विचारा॥
सर्बसाक्षिणी ज्ञान कहावै। बहु प्रकार मर्म ठहरावै॥
निर्वचनी सो ब्रह्ममहाराजा। वचनविलासजगतसबसाजा॥
शब्दातीत शब्द परकासा। बिन दुख दर्द कैसे भासा॥
कुहकत एकोहँ भये ज्ञानी। राजकला सोई ठहरानी॥
बहुस्यामि विस्तार अनेका। रैयत त्रिगुण राज विवेका॥
त्रिगुण तीनों लोक विराजै। देवता दानव मनुज होय गाजै॥
चारों खानि योनि चौरासी। चौदह भुवन जीव जंतु बासी॥
जीव सृष्टि महंतो त्रिदेवा। अविद्या शक्ति सबै उपेवा॥
कहुं तामस राजस अधिकारी। कहुं सात्विक देव विचारी॥
ईश्वरी मायाके गुण गावै। महंतों त्रिदेवा समुझावै॥
चौथे ईश्वर ज्ञान स्वरूपा। अंग प्रकाश प्रकाशक भूपा॥
ज्ञान अज्ञानको पंचयें मूला। अक्षरातीत ब्रह्म अनुकूला॥

दुखिया त्रिविधि सृष्टि बनाई।ब्रह्म ईश्वर जीव रहा जहंडाई
अटल राज नहिं कलह कल्पना।नष्टबुद्धि नहिं सूझै मरना।
पुरबासी रहैं रोग बेहाला।निशि दिन शोक व्यथाजंजाला
आंखिन सूझै पीडाभारी । मोह अमल माते संसारी ॥
दृशा परस्पर लेहिं निहारी । वर्तें सब सन्तोष विचारी॥
जो हरिभोंग नगरसे न्यारा।परम परख परखा टकसारा॥
महा अगम सम्भव दुखनासी।शरण गये सो सुख भौबासी॥
सोनिज और दया प्रभुकीन्हा।महा कष्ट छुडावन लीन्हा॥
इन्हमें जे बैराग्य समाना।नहिंथिति बिनु कल्याणअपाना॥
छल प्रपंच एको नहिं भावै।चाहत मर्म भरम लखि आवै॥
परखअधिकारिशुद्धतेहिजानी।परखप्रकाशशरणनिजठानी
लहत प्रकाश तिमिर नसाना।सब हरिभोंग चाल पहिचाना
दया स्वभाव परख प्रकाशी।अभयअशंक सदा सुखराशी॥
निज पद जानि सो दीनदयाला।लागेछोडावनजीवबेहाला
परख परखाय अनेक सुधारे।परम वैद्य निजनाम प्रचारे ॥
महंतों गांव रहै खिसियाई।पुरबासी कहां जाय पराई ॥
पावै न भेद बहुत अकुलाई।ममताराज लाग खिसियाई॥
अनबनि भांति लराई ठाना।हारि हारि मनमें पछताना॥
भोंदू राजाके ढिग जाई । समाचार हरिभोंग सुनाई ॥
परम वैद्य एक पट्टन आवा।बहु हरिभोंगिनको अपनावा
गांव ठांव सो जानि न जाई।परजा तेहि दिश जाय पराई
बहु प्रकार लरेऊं तेहि संगा । होवै न ताके एको भंगा ॥
सब हथियार मम खाली परहीं।तुम्हरे डरसों नाहीं डरहीं

राजहेतु महाराज अकुलाना। विविधि भांति लराई ठाना॥
हारि देखि सकुचाने राजा। घेरा निज पट्टन महाराजा॥
सब परजाको कहा प्रचारी। अमलबाहर मतिजावहमारी॥
मम पट्टनसे भिन्नजे चाहै। महादंडकी राह निबाहै॥
परजन भोंदू कहा बहोरी। तुम्हरे राज कष्ट बहुतेरी॥
कष्ट दूर जो होय हमारा। काहेको अंते भाग विचारा॥
महंतन राजा कहा बुझाई। वैदक तीनो हम देब बताई॥
तीनिउ चाल न्यारा न्यारा। नहिं भागे ते प्रजा हमारा॥
एक संदेह सागर परवाना। दूजे सोग पोख परधाना॥
तीजे शंकाके नाम बताई। अनबनि विधि ततबीर दृढाई॥
राजडंडसो औषध कीन्हा। डर औ लोभ चौकी तेहिदीन्हा
आदि अंत मुचलिका राखी। त्रिविधि अनादि वैदकसाखी
दीन्हदृढाय महंतो बहुभांती। शहर ढिंढोरा कहै कुशलाती
कुशल चहहु वैदक अनुसरहू। हाकिम हुकमशीसपरधरहू॥
इन्ह तीनो छोरि अंतेजो जाई। सोमम दुष्ट बहुत पछिताई
ऐसा ढिंढोरा शहर फिराई। त्रिविधि वैदक चाल चलाई॥
जो अकुलाय राज इनकेरा। वैद्य जानि जाई तेहि घेरा॥
मन वच कर्म वैद्यढिग जाई। व्यथा पीडा सब कहिकेसुनाई
विहँसि वैद्य कहा मुख वानी। भली प्रकार हम औषधजानी
पशु पंछी सब सन्मुखआवै। परसत जडीसो रोग नसावै
बूटी नाम सुने जो पावै। छिनमें कष्ट सब दूर बहावै॥
महिमा जडीकी जाय न वरणी। धन्यनाम भवसागरतरणी
सुनत वचन रोगी हरखाई। वैद्यप्रसाद रोग अब जाई७०॥

साखी–ज्योंज्यों महिमासुनावहीं,त्यों त्यों होयअभिलाप।
जो चाहै सो औषधी, गुप्त रखै नहिं भाप॥ ७१॥

चौपाई।

लगन सोधि तोहि औषध देहों।तोहरे रासकी गुरीवनैहों।
पूछे परजा वैद्यजी कहहू।रास लगन चाहे चितचहहू॥
जो जल सत्य अनल प्रभु मेरे।सबदिनशीतल तपननिवेरे।
जेहिऔषधिमहिमाअतिभाखब।लगनआधिनकाहेकराखब।
कहै वैद्य तुम भेद न पावा। समय पायके जड़ी उपावा॥
जाहिसमयजोवस्तुअधिकारी।बहुविधिबलसोवस्तुनिहारी।
गरमी समय अनल परचंडा।समय शीत जलशीतलपिंडा।
परजा पूछे कहो समुझाई। गरमी दिन जो गरमी पाई॥
तहां तृषा बहु धूपके मारे। जल पाये सुख होय हमारे॥
जाहि शीतअमल अधिकारी।तहांअनलजीवकरतसुखारी।
जो जेहि समय वस्तु बलदाई।तेहि संयोग कष्ट अधिकाई।
एक समय है काल स्वरूपा।तेहिबसकीन्ह कल्याणअनूपा।
वैद्य कहै तुम बाद बखानो।हम वैदकके विधिवत मानो॥
तुम्हरे बुद्धिका क्या परवाना। वैद्य कहै सोई परधाना॥
प्रथम मुचलिका लिखो प्रचारी।पांचोंऔषधकरोविचारी।
रोग दूर होय की नाहीं।और औषधिके ढिग नहिं जांहीं।
जो जाऊं तो कैद मोहि कीजे।नाना भांतिके सासत दीजे।
सुनतहि परजा उठै चिहाई। दूसर और वैद्य को भाई॥
कहै वैद्य कोई दूसर नाहीं।विधिवत वैदक सब विधिचाहीं।
महिमा औषधके बहुतेरा।तो काहे लिखो मुचलिकामेरा॥

वैद्य कहै हुज्जत मत करहू । बैदक कहै सोई निर्बहहू ॥
बहु विधि कौल करार दृढाई । फंदा बैदक गया जहंडाई
कोई दिन बिते लगन बहु सोधा। चौका बैठि नाम एक बोधा
शंखन फेरी झांझ बजाई । फुस फुस कान लगे गुरु आई॥
कहा वैद्य गुरु मंतर आही । निशदिन जपो कहोमति काही
पूछै शिष्य गुरुजी कहिये। महिमा बहुत एकौ नहिं लहिये
कौन जडीको नाम यह आही। ठौर ठिकाना देहु बताही॥
सो है परम बैद्यको नामा । जाते होय तुम्हारो कामा ॥
बैद्यराज हम आहि तुम्हारो । पशुपंछी जत रोग बिचारो॥
हमका बैद्यई पूजा पूजो । परमबैद्यको ध्यानमें खोजो ॥
तीरथ ब्रत जप तप कीजै । नाना भांति अनुपायन लीजै॥
स्वासा सोहँ करो बिलछानी। ज्योति स्वरूप अनहद बानी
स्वासा उलटि निःअक्षरध्यावो। मूल ठिकाना सूर्ति समावो
पांचों मुद्रा करो विचारा । योग अष्टांग करो पसारा ॥
रकार अकार रहो लौलाई । वोहँ सोहँ जो मन भाई ॥
प्राणायाम स्वासा जुक्तावो। अमर शरीर करिके तुम पावो
नाम निःअक्षर करो अध्यासा। ऋद्धिसिद्धिके बहुतविलासा
ज्ञानस्वरोदयअभयअरुध्याना। कालपरीक्षा होयपहिचाना
देवी देवताको अपनावो । परम बैद्यका नित गुण गावो॥
बैदकऔषधनाना भांती। सबमिलि सुनो होयकुशलाती७२

साखी—बहु विधि औषध सुनिके, केतेहि रहैं भुलाय ॥
अपनी अपनी भावना, लीन्ही शीश चढाय ॥ ७३॥

कोइ कोइ पूछै वैद्यसों, परम वैद्य बतलाव ॥
इन्ह कर्मन कल्याण नहीं, काहे मोहि जहंडाव॥७४॥

चौपाई ।

सुनो शिष्य मैं कहौं समुझाई।वह सबजगत कला दिखलाई
परम बैद्यकी अद्भुत शोभा।ध्यान धरत जेहि मनुवालोभा
कोई एक रूप गहो मन मानी।निःकामी होहु तुम ध्यानी॥
रोग दूरको इच्छा कैसा । धरो ध्यान लहो वर तैसा ॥
परम वैद्य जब परगट होई । रोग सोग दुख सवही खोई॥
सबसों न्यारा सब घटमाँही।निश्चय होय तुरत प्रगटाही॥
यह उपदेश वैद्य जो कीन्हा।सो रोगिन माथे गहि लीन्हा
औषधपाय बहु भरम भुलाने।इनमें जो कोइ कोई अकुलाने
कहा बैद्य सो व्यथा बहोरी।जेहि विधिजाय करोजनिखोरी
परम बैद्य खोजा बहु भांती।ध्यान अनुमान रोगनहिंजाती
बोलै बैद्य सुनहु शिष्य मोरा।उत्तम शिष्यहमजानव तोरा॥
प्रथम उन्हे जो कहा पुकारी । तामें भूलि रहा संसारी ॥
तुम्हें निपुण हम औषध देहौं।अपयश बैदक काहेको लेहौं
परम बैद्यको निर्गुण ध्यावो। अगम अगोचरके गुणगावो॥
मन बुद्धि बानी न जाने भेदा।नेति नेति गुण गावत वेद
अलख निःअक्षर है निर्बाना।सोई स्वरूपको धरिये ध्याना
शीत उष्ण समान सो करहू। वीतराग पद चित्तमें धरहू॥
खाक लगावो बनमें जावो।ठाडेश्वरी दिगम्बर मौनीहोवो
काया कष्ट करो मन लाई । ऊर्धमुख धूम्रपान फुरमाई ॥
पंच अग्नि गरमीके काला।शीत समय जल शयनसोहाला

जो दृढ होहु कहा सो करहू। महाकष्ट सरिताते तरहू॥
जलथल पूरण हैसबमांही।निश्चयनहिंकेहिविधिप्रगटाही॥
जोमिलनानिश्चयकजानो।निजजीवनममतामतिआनो॥
जलसिज्याअनलसिज्याकीजे।जीयतसमाधिधरतीमेंलीजे
स्वासा साधि मस्तक तरकावो।जीवन्मुक्तिप्रत्यक्षहिपावो॥
जो कछु औषधरोगिनदीन्हा।बहुप्रकारशिष्यसबकीन्हा॥
राज दंडको पंथ पसारा। बिनुपारसपचि मरहिंगंवारा॥
जोकछु दंडजानिबिलगाना।वैद्यकसंगसोंकलेशबखाना॥
जो मन बुद्धिमें आवत नाहीं। तासो कैसे रोग नसाहीं॥
नष्ट भये कल्याण न होई। मेरें मन दृढ भासे सोई॥
जल थल जड नहिं चेतन दीसे।तासो कैसे रोगसबखीसे॥
तुमहो वैद्य रोग पहिचानो।जेहिविधि जायउपायसोठानो॥
बिहँसेवैद्ययहभकुवासंसारा।हम जो कहा सो नाहिंविचारा
यह परम वैद्यजोकहिया।बहुविधिसगुण अगुणकजहिया॥
सोतो तुम्हीं कहूं निरुवारा। आपै रामरमा संसारा॥
परम वैद्य कोइ दुतिया नाहीं।जासों रोग तुम्हारो जाही॥
दिसेदेह सो सगुण बखानी।निर्गुण आतम स्वतःकैमानी॥
यह मत शिष्य तुम निश्चय करहू।हमाराकहाशीसपरधरहू॥
पूछे शिष्य प्रभु कहो बुझाई।परमवैद्य जो हमहिंकहाई॥
तोहम रोगीकाहेको भयऊ।कुहकत निशिबासर ममगयऊ॥
बोलै वैद्य भरम यह तेरा। शोक मोहते सबै अंधेरा॥
अबयह जानि नसंशय कीजै।आत्माआपसापरचयलीजै॥
जब निजरूप परे पहिचानी। सकलरोग तबहोवे हानी॥

शिष्य सिखापन ऐसे पाई । केतेक तहां रहे सिथलाई ॥
इनमेंजोकोइ रहैसयाना।बैद्यसोंपुनि निजव्यथाबखाना ॥
परम वैद्य प्रभुहमका कीन्हा।रोगव्यथा नहिंआवत चीन्हा
सूझ न परै पीडा अधिकाई । परम वैद्य प्रभु कैसेकहाई ॥
जौन दीसै सो दूसर होई । निज स्वरूप किमिजानै सोई॥
कहै वैद्य सुनु शिष्य सयाना । वे सब भोंदू परमअयाना॥
जो हमकही सोई सोईमानी। और औषधकोमर्मनजानी ॥
तुम पूछे हो परम विवेकी । तुमसे छिपाय न राखोंएकी॥
करहु विचाररोगाऔरोगी । रोगिमें रोग कीरोगमें रोगी ॥
रोगी भिन्न रोग है भीन्ना। यह औषध कोई विरलेचीन्हा॥
सोइ विचारनिशिबासर करहू।महामोह भव सरितातरहू॥
सब रोगी मिलिकरहुविचारा। हम कछु औररोगकछुऔरा
इनमें जो कोइ रहैं प्रबीना । बोले वचन वैद्यसो दीना ॥
रोगी रोग एक नहिं होई । सो तो बिदितजानेसबकोई ॥
कुहकोकाहे रोग जो न्यारा।तुम उपदेशभलकीन्हविचारा॥
सुनहुशिष्यआतमसुधिजानो। बुद्धिसेपरेनिःकल्पअनुमानो
भास बुद्धि रोग भ्रम भाई । बुद्धिसे परे तुम ब्रह्म सुखदाई॥
बोलैं शिष्य सुनो प्रभु मेरा ।बुद्धि भ्रष्ट भई कारणकेरा॥
बुद्धि भ्रष्टके कारण कौना । सो समुझाय कहोप्रभुतौना॥
कहै वैद्य तुम भली बिचारी । तुम्हरेबुद्धिनतुलै अनारी ॥
औषध एक कहौंप्रनठानी ।शोकमोहकी रहै न निसानी॥
नहिं कछुरोग नहींकछुरोगी।नहिंकछु भोगनहींकछुभोगी॥
ज्योंका त्योंही ब्रह्म बिराजै। एक अनंत सबै भ्रम भाजै॥

जो कछु होयतो द्रष्टा कहिये।दृष्ट अदृष्ट न एकौ लहिये॥
नहिं कछु हुवा न होवनहारा।शब्द विलास भया संसारा॥
अध्यारोप कहाँलों कीजे।वचन रचन होय मन चित दीजे
आगे जो पूछे सो भर्मा । रोग अवस्था पिंडके धर्मा ॥
शब्द उद्वेगते संशय होई । जो जाने निर्बचनी सोई ॥
सुनिके वचन सीतल भये रोगी।खुटका विवशरहा सबसोगी
घिचपिच समुझि परे नहिं कोई । जापर बीते जाने सोई ॥
पुनि कोई इनमें पूछे जाई ।बैद्य कृपाकरि होहु सहाई ॥
नहिं रोग नहिं रोगी कहते । अनल रोग सदा हम दहते॥
बिना दर्द किमि कुहको भाई।कुहक विलास जगतदिखलाई
जथा जमा क्यों फूटा प्रभुकेरा। कारण कौन लगा यह केरा
जो कहहु फूटा नहिं सोई । एक अनंत कहांते होई ॥
एक वैद्य एक रोगी कहहू।परम बैद्य एक भिन्न अनुसरहू॥
पुनि घिचपिच सब एकबतावो।नहिंरोगीकहिकेसमुझावो
जो है सत्य वैद्य तुम नाऊं।वैदक आनंद सत्य दरसाऊं॥
तो पहिचान करहु प्रभु मेरा।कैसा रोग भया हम केरा ॥
कैसे रोग दूरहो होई। वैसी औषधि देहु बताई ॥
एक रोग नाना जंजाला । दूसर औषध कीन्ह बेहाला ॥
औहध सो जो रोग नसाई । नहिं चाहत हम ब्रह्म कहाई॥
वैद्य तू निंदक अहही । इन्ह लोगन कह फांती चहही ॥
जो हम कहा सो मानत नाहीं।औषधऔरसोंमांगत जाहीं
यह हरिभोंग सनातन ऐसा।रोग स्वभाविक छूटै कैसा॥
पांच तत्व अनादि हैं भाई। स्वतःसदा ऐसेहि समुझाई॥

संयोग पाय बहु रूप उपाई। वियोग होत सो जात नसाई
वचन बोधते संशय होई। तेहि पाछे मति जाहु विगोई ॥
शङ्का कारज कहिये सुनिये। बंधनमोक्ष भरममों लहिये
मिथ्यावादी बैद्य कहीजे। वचन प्रमाण कौने विधि कीजे
पांचतत्त्व जड आपुहिआपा। किमि संयोगलहहि प्रतापा॥
अनबनरूपकिमिजडकीरचना। पुनिवियोगकिमिकारणरचना
निज स्वभाव कैसे सुखमानो। सुखकी चाह कहिके पहिचाने
बैद्य प्रपंची झूठा खोटा । भोरे सकल कुशलके ओटा ॥
अब कहा कुशल कहा गुरुवाई। वैदकझूठा बैद्य अन्याई ॥
सुनत वचन बैठ खिसियाने। अनल क्रोध बहुते झुलसाने
बैठ गये ढिग भोंदू राऊ । कहा राउ तुम करहू न्याऊ ॥
बहु विधि औषधरोगिनदीन्हा। पोथी कहे तेहिचूकनकीन्हा
तबहुं कहै रोग नहिं जाई । ऐसी परजा भई अन्याई ॥
ताहि पकारिके फांसी दीजे । पोथी कहै सोई प्रभु कीजे॥
राजा रोगिन पकारि मंगावा। बहु प्रकार सासतदिखलावा
कहा परजा सुनहु तुम मेरा । चहहु उजारन पट्टनकेरा ॥
तुमरे कछु रोग न होई । वैदक अनुहार करेगा सोई ॥
सदा रोग जो शिरपर धरहू । फुसफुस बहु भांतिसे करहू॥
लिखोमुचलिकाचाहोनकाजा। सोतुम रानीअटलहमराजा
तुमकामिनीहमपुरुषतुम्हारा। कौतुक राज अचार हमारा
जस हम तस तुम भेदनकोई। राज विलास नरनारी सोई
कामरूप भ्रम जग उपजाया । सदा स्वभाविक मोरीमाया
अब यह जानि रहहु हरिभोगू। चारी मुक्ति लहहु संजोगू॥

नाचो नाना रूप बनाई । बिरह विकल चित्तममतिताई
त्रिविधि सृष्टिविलास हमारा हमरे सुखमेंसूखतुम्हारा ॥
जिन यह मानि सोइममरानी।निःकामी सेवा सो ठानी ॥
कहो प्रचारि ढिंढोरा देई । नहिं मानै सो दुष्ट मम होई॥
वचनसुनतबहुचितठहराना।राजअनुशासनमेंबिलखाना॥
कोइकोईउजुरकियामहाराजा।तुमसुखरूपकष्टकेहिसाजा ॥
जो दुखरहैफुलकुसके लागी।बैदक कौन अर्थअनुरागी ॥
राजा कहै जगत मम सपना।झूठा सार तुम्हार कल्पना॥
हमरे हुकुम सपने तुम देखा।कौतुक खेलसोजानहुलेखा॥
हमरे ढिग जागृत है तेरा।सपनाभरम विवश है तुम्हारा॥
महाराजाजी कहो समुझाई । प्रथम कैसे रहे दुचिताई ॥
जागतनींदकौने विधिकीन्हा।त्रिधासृष्टि उपजाई लीन्ह ॥
नर नारीकेहि भांति उपाई। सकल भेद मोहिंकहोबुझाई ॥
सत चिद् आनंद रूप हमारा।तेहिविलास जगत विस्तारा॥
चिद स्वरूपमें पुरुषअमाना।आनंद नारी अंगबिलगाना॥
सदा शब्द एक अंग हमारा। ताके मोह नींद विस्तारा ॥
पूछे परजा सब संदेहा । जथा जमा फूटा केहि नेहा ॥
फूटा अँड कहहु केहि भांती ।सतचिदआनंदकैसेकहाती॥
तीनि अंक तुम कहेउ विचारी । एक शुद्धएककरैखुवारी॥
कहहु केहिकारणतुमजहंडाने।एकअनंतत्रिधाहोयबिहंडाने
सुनतरावव्याकुल तब भयऊ । हमरे राज दुष्टयहठयऊ ॥
ऐसेहि परजा जाय पराई । भेद लहों तो करों प्रभुताई ॥
फांसी दिया किया बरजोरा । फेरा सारा शहर ढिंडोरा॥

जो कोई पोथी कहा न मानै।यही हाल सो आपनजानै॥
झूठहि बैद्य कहै सो सांचा । झूठा सो जो चाहै जाचा ॥
जेहि जो औषध बैद्य बताई। सोइ सोइ चालचलेसमुझाई॥
नानाचालचलीहै हरिभोंगू।विविधिकष्टकेलहहिंसंजोगू७८

साखी—तीनि लोक मुवाकौवायके, पूजिन काहुकीआस॥
एकै अंधरे जग खदिया,सबका भया निपात॥ ७६ ॥
जाका गुरु है आंधरा, चेला काह कराय ॥
अंधे अंधा पेलिया, दोऊ कूप पराय ॥ ७७ ॥

चौपाई ।

बहुत कोलाहल ऐसो देशा । मानत कौन सत उपदेशा ॥
गाडी चौकी फिरत दिन राती । घर घर भौरा जाइतपाती॥
गोठ गोठ जो चहुंदिशहेरा। लहत परख सब कष्टनिवेरा॥
जाल फांस राजाके खोई। अभय अंशक सदासुखदाई ॥
देखा चौकीदार बहु रीसे । कला न लहैहाथ सब मीसे ॥
सब हरिभोंग करें कौवारा । हम लोगनसे भयायहन्यारा॥
नहिं डर महंतों न राजा मानै।नाजानोयहक्याव्रत ठानै॥
यहिविधियुगनयुगनचलिआई। दयादयालकालअन्याई॥
सतयुग सतसुकृत गुरु आई । त्रेता मुनिंद्र बहुजीवचेताई॥
द्वापर करुणामय सुखदाई। कलियुग कबीर जीवमुक्ताई॥
बन्दीछोर बिन नहिं छुटकारा।खानीकष्टहरिभोंगअपारा॥
दयानिधानएकयुक्ति संवारी । जाते फांस कटैभवभारी ॥
जोजेहि फांस जीवअरुझाया।सोसमेटिके बीजकबनाया॥
जाते सूझि परै यमफंदा । परख पाय जिवहोयआनंदा॥

भयबसिजीव न सकैप्रभुवचना। फांसेफांसविविधियमरचना
तासु हेतु प्रभु दीनदयाला । बाना भेषकी राह संभाला॥
राजतिलक ब्रह्माको लीन्हा। दया उर माल विष्णुकीचीन्हा
यतिके लंगोट शंभुके मारी। अजादि बाना कफनिगरेडारी
साहनसाही टोपी दीन्हा। सत्त रहनी सत्त भेषतबकीन्हा
नष्ट अमंगल भेष दुराई । दुर्मति सबकी दीन्ह लखाई॥
तब यम आपना दाव पसारा। लहै न एकौ मूढ पचिहारा
दयासागर अस युक्ति बनाई । बहु जीवनकी फांस छुडाई
पुनि यम आपन फंदपसारा। नगर हारिसोंग दुंद प्रचारा॥
साहेबओट निज नामधराई। बहु मति दुविधा जीरहढाई
नाना बानीअनमिल सबहीं। एकन एक मिलेनहिं कबहीं॥
कहूँ वोहँ कहुं सोहं जापा। कहुं अकार कहुंनिःअक्षरथापा
कहुं ररा कहुं नाम दृढाई । कहुंकहुं आतमज्ञान बताई ॥
स्वासा उलटि काहुभटकाना। सतगुरु शब्द सोईगुरुध्याना
प्रथम उत्पति जैहि वेदककेरा। सोइ सोइ जालरचा बहुतेरा
विविधि पंथ साहेबके नामा। माया जालहै यमको कामा
कहूँ मूल वीज दरसावै । विषयविकारमों गोता खावै ॥
कपट भेप माया सो होई। पारख होय तब जानेसोई७८॥
साखी—कपट भेष परपंच रची, भोरे सकल जहान ॥
विना प्रकाश प्रभु परखके,केहि विधिहोयपहिचान ७९

चौपाई ।

जहां जेहि निष्टा बीजककेरा । अपनी पराई करै निबेरा॥
परख प्रकाश लहत भ्रमभाजा। निश्चय होय जीवको काजा।

नाह अनुमान न मुये मुक्ता ।परख विलाससदासुखभुक्ता॥
रहनी गहनी बहुविधिफरियाई । मायाजाल नहींभरमाई॥
सब परपंच छूटै भ्रमजाला । सदा सुखी सो शरण दयाला
फंद फरफंद न एकौ राखै । निर्णय वचनसत्य सोइभाखै॥
वचनतासु जो सुनै चितलाई। ठहरिके समुझै छोडिकदराई
सदा सुखारी परखके पाये।फंदा यमके तुरत बहाये॥८०॥

साखी–जहां आपा तहां आपदा, जहां संशय तहां सोग॥
सज्जन सोई सराहिये, जो काटै यमका योग ॥८१॥
उतते अंधा आवही, इतते अंधा जाय ॥
अंधेको अंधा मिला, कौन बतावै राह ॥ ८२ ॥
बंधेको बंधा मिला, छूटै कौन उपाय ॥
कर सेवा निर्बंधकी, जो पलमें लेहि छुडाय ॥ ८३ ॥
साधू सोई सराहिये, जो चौडे कहै वजाय ॥
की छूटै की फूटै, बिन कहे भर्म न जाय ॥ ८४ ॥
हरि हीरा जन जौहरी, सबन पसारी हाट ॥
जब आवै कोई जौहरी, तब हीरोंकी साट ॥ ८५ ॥

इति मानुष विचार ग्रंथ गुरुकी दयासे संपूर्ण ।

अथ षट दर्शन वर्णन ।

साखी–योगी जंगम सेवडा, संन्यासी दर्वेश ॥
छठवा कहिये ब्राह्मण, छौ घर छौ उपदेश ॥ १ ॥

जाप षट दर्शनका ।

चौपाई ।

ॐकार ब्राह्मण उपासी । सोहं ब्रह्म इष्ट संन्यासी ॥
हू अल्लाहू सुफी अधारा । महींनाद योगी विस्तारा ॥
तत्वनाम सेवडा परवाना ।नाम निरंजन जंगम ध्याना॥
षटदर्शन षट अंग उपासी।राम नाम भक्ता अविनासी॥२॥

सिद्धान्त षट दर्शनका ।

अदेव मूल श्रवणको कहिये । अहं ब्रह्म संन्यासी लहिये ॥
वायु शेख योगी सो धरणी।शशी अमीरस जाने जैनी ॥
महाअकाश जंगमके होई । षट सिद्धांत जानहु सोई ॥
पुरुष रामसबनारिस्वरूपा।यहसिद्धांतहै भक्तिअनूपा॥३॥

षट आश्रम वर्णन ।

चौपाई ।

गृही वानप्रस्थ संन्यासी । ब्रह्मचर्य षट कर्म विलासी ॥
सिया मुनि षट इष्ट होई ।अच्युत गोत्री सतयें सोई॥४॥

छानवे पाखंड ।

साखी—दश संन्यासी बारह योगी, चौदह शेख बखान॥
ब्राह्मण अठारह अठारह जंगम, चौबीससेवडापरवान॥५॥

चार मुक्ति वर्णन ।

चौपाई ।

सालोक्यसामीप्यसारूप्यसायूज।चारप्रकारकीमुक्तिमनूज
मुक्ति कहिये छूटेको नामा । तहां अनेक पावै विश्रामा ॥

सालोक्यसोईजोस्वर्गनिवासा।देव योनिमों करतविलासा
सामीप्य हजुरी दास कहावै।भक्ति वजीरी युग युगपावै॥
भृंगी रंग कीट जो पावै । मुक्ति सारूप्य सोई कहावै॥
सायुज्य ज्योतिमें ज्योतिमिलिजाई।मायारूप रहा जहंडाई
मुक्ति चार सो जोइन जानो।निश्चय यमके फंदामानो॥६

सलोने शब्द लिख्यते ।

अंधा धोबी औघट घाट। नहिं कछु साबुन पानी पाट॥
लोक बासमें धोवावन जाय । निर्मल तबहीं फटे फटाय॥
रोख मजूरी भट्टीकी आंच । बिरहा गावै सोई सांच ॥
धोबियाअपार बसै कौवार।यहि विधि कबीराभयेखुवार१
कौवा बाप पूत सो हंस । नाती बकुला बाढो बंस ॥
कोय कोय करि कौवा मरै । हंसा छीर नीर निरुवारै ॥
बकुला तरै लाये बकु ध्यान।औगुण गर्भ करै अभिमान॥
कहहिं कबीर अंधी है गाय। मुरदा खाल देखीपन्हायर२॥
चंचल राजा दहुं दिश धाय।परजाकी तहां फिर लेजाय॥
जो नहि परजा पावै दाम । राजहि पकरि करावे काम ॥
व्याकुल राजा कल नहि परै। कुहके लाख एकौ नहिसरै
कहहि कबीर ओंडूके गांव । लाल बुझक्कर बूझैनांव॥३॥
साखी—कबीर धूरको यों कहैं, मसहफकी सम्बाद ॥
मारे तेरे ना मुवा, डोलै खैराबाद ॥ १ ॥
इति मानुष विचार ग्रंथ रामरहस्य साहब कृत
गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

गुरुबोध.

॥ दयागुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्रंथ गुरुबोध ।

दोहा—नमों नमों गुरुदेवजू । साध स्वरूपी देव ॥
आदि अंत गुण कालके, जाननहारे भेव ॥ १ ॥
सोरठ—मेटेउ कालको जाल, याते गुरु तव नाम यह ॥
बन्दीछोर दयाल, असरन शरण उदार अति ॥ २ ॥

गुरु शतक सार नाम ।

चौपाई ।

दीनबन्धु करुणामय सागर । हंस उद्धारण तारण आगर ॥
दीनानाथ शरण सुखदाई । अभय तासु पद गुरु समराई ॥
बन्दीछोर बिरद अति तासू । हंसरूप परगट जग जासू ॥
अधम उधारण तारण स्वामी । परवर दिगारमालिकअनुगामी
कालजालके मेटनहारे । बिरद लाज राखन पति प्यारे ॥
धीरज दया तत्त्व संयुक्ता । राम भूमिका बासक युक्ता ॥
चिंता रहित अचिंत गुसांई । परमरूप परकाशक सांई ॥
अखिल ब्रह्मांडके जाननहारे । कर्ता नाम प्रगट विस्तारे ॥
निःकामी माया परचंडा । ताको नाशक पूरण ब्रह्मंडा ॥
मंगलरूप गोसांई आपू । जगत विदित पूरण परतापू ॥
साहेब निर्भय पद दातारा । कर्ता पुरुष सबके पारा ॥
महामोह दल नाशक स्वामी । हंसन नाह अपार अगामी
आनंद सिंधु अहंतातीता । रामरूपमय परम पुनीता ॥
सत्य जथारथ अति प्रिय साधू । मन मायाको मेटेउ ब्याधू ॥

पूंजनिये अनुमान बिनाशिक। सत्य सुकृतप्रकाश प्रकाशिक
नाम मुनिंद्र सबन सुखदाई । बारम्बार कहौं गोहराई ॥
सत्यसिंधु प्रभु दीनदयाला। नाशक अनुमय सहज कृपाला
आधु जीव निःकर्म निधाना। शब्दी अजर अकालसमजाना
साधुरूप पूरण परमाना। गरीब निवाज गहहु गुरुज्ञाना ॥
झांई शब्द परखावनहारे । तारण तरण विगत संभारे ॥
मन अनुमानगुमान विनासिक। सोद प्रत्यक्षदाननिजदासिक
वेद कुरान बुझावै जथारथ। मन क्रम बचन साधुमेंस्वारथ
इमि शत नाम गुरु गनियाई। सब वृत्तांत गुरुमुख जोबुझाई
साधु गुरु कबीर गोसांई । बन्दीछोर नाम जपु गाई॥ ३॥
दोहा—गुरुके अमृतमय वचन सुनि, शिष्य श्रवण मन देय
झांई संधि औ काल गुण, तुरित मिटे नहिं लेय ॥ ४॥
सोरठ—ऐसे गरिब निवाज, दीन उद्धारण गुरु सही ॥
शिष्य देखि समिजाज, प्रश्न करी निज बोध हित ५॥

शिष्य प्रश्न ।

छन्द—हौं कौन कौन यह देह पंच, बखानि उत्तरदीजिये॥
जन जानि अपनो दयाकरि प्रभु, बांह गहिके लीजिये
केहि विधि भयो एकते सो, अनंत कारण जग ठयो॥
जब एक होय सुख दुख, केहि भांति आस्थिरतालह्यो ६॥

गुरु उत्तर ।

चौकड़ी ।

तू कहिबे मात्र सच्चिदानंद । तू हंस स्वतः आनंद ॥
देह पंचमें ब्रह्म विकार । उपजै खपै न अस्थिर सार ॥

रहटघडी इमि ब्रह्मअरु जीव।जीव कल्पना ब्रह्म अरु पीव॥
एकब्रह्म जग मन अरुमाया।माया रहित सो ब्रह्म निकाया॥
ब्रह्मभये नहि मिटिया जन्मा।देख विचार शिष्यइमिभरमा।
जग चौरासी भरमहि है।हंस स्वतः पद आनंद लहै॥७॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—ऐसे सुनि गुरुके वचन,कीन्ही शंका शिष्य ॥
ब्रह्मभये थिति क्यों नहीं,वेद कहैं बहु ऋष्य ॥ ८ ॥

गुरु उत्तर ।

सोरठा—हे शिष्य हृदय विचार,ब्रह्म पदारथ प्रथमपद ॥
जगको कारण सार,ब्रह्म जहां तहां भरमियां ॥ ९ ॥
इच्छा मन विस्तार, माया मिलि जग निर्मयो ॥
सब मिटि ब्रह्म मंझार, रहट ब्रह्म थिति है नहीं॥ १०॥

झूलना ।

पांच तत्त्व तीन गुण चतुर्दश देवता ।
दशों इंद्री अहै जगत बहु विस्तरा ॥
मन माया सोइ ब्रह्म कारण खडा ।
अखिल ब्रह्मांड पंच देह मध्ये निस्तरा ॥
ब्रह्मही सर्व में सर्व ते न्यारा है ।
याहि मत वेद ऋषि शास्त्र प्रगट करा ॥
जीव अनुमान यह ब्रह्म सृष्टि अहै ।
शिष्य यह परखि ले फंद माया भरा ॥११॥

सोरठा—माया ब्रह्म समाय, जगत कियो विस्तार सब ॥
फूले ब्रह्म कहाय, श्रवण मनन साक्षात मत ॥ १२ ॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

श्रवणमनन साक्षातहुं जाना।मन मायासो भौ विलगाना॥
विलगे ब्रह्म सनातन स्वामी।सो किमि चौरासी अनुगामी
चौरासी मिटि ब्रह्म जो होई । ब्रह्मभये सुख पूरण सोई ॥
सोकेहिभांति दीनप्रतिपाला।ब्रह्मभये चौरासी काला १३॥

गुरु उत्तर ।

दोहा-ब्रह्मकी इच्छा माया, माया मनकृत भास ॥
माया मन निरसन भयो, एक ब्रह्म परकास ॥ १४ ॥
सोरठा-यह मत सबन प्रमाण, वेद ऋपीश्वर मुनि मनुज
दैत्यनहूं यह जान, सत्य शौच्य दाया रहित ॥१५॥
ब्रह्म मिलै सुख चैन,ऐसे प्रगट बखानहीं॥
देखे बिन नहिं चैन,देखहि ताहि अनुमानते ॥ १६ ॥
दोहा-ब्रह्म भये पुनि इच्छा, मन मायाकृत भास॥
कैसे चौरासी मिटै,सुन शिष्य सुबुद्धि निवास ॥१७॥

चौपाई ।

उपजन विनसन रहटकि खानी।ब्रह्मभयेनहिंकुशलबखानी
इमि सो ब्रह्म संकल्प जगता।ब्रह्म मुक्तजग भरमअसकता
ताते शिष्य पदारथ ब्रह्म । परखो झांई संधिक भर्म ॥
काल संधि झांई मत आहीं।गुरुमुख कहा रमैनिनं माहीं
नास्ति लखै सो भौ अनुमान।जथा आस्तिमें रहै समान
परखैशब्दजथाटकसार।सुन शिष्यताकोजो ब्यौहार१८॥

शिष्य प्रश्न।

दोहा—परख कौन टकसारकी, साहेब देहु बताय ॥
जेहि अनुरागे जीयरा, बसै हंसपद आय ॥ १९ ॥
ताकी देही कौनती, कौनते तत्व प्रकृत्ति ॥
गुण कौन संबंधते, रहत सदा निर्भ्रांति ॥ २० ॥
अंड मांहि रचना जेती, सोतो बंधन आहिं ॥
मन मायाकृत जो भयो, सो सब ब्रह्महि माहिं २१ ॥

गुरु उत्तर।

दोहा—अंडै निरंजन ब्रह्मका, मन माया परकाश ॥
जीव चारि खानी परे, बिकल त्रसित तेहि आस२२॥

सत्य शब्द टकसार।

साखी— एक अंड ॐकारते, सब जग भया पसार ॥
कहहिंकबीर सबनारिरामकी,अविचलपुरुषभ्रतार२३॥
दोहा—जथा अनेकन लहरिते, जल थीरता नहिं पाय ॥
थीर जहां:तहां बडवा। नीरहि सोष कराय ॥ २४ ॥
दुहुं प्रकार थीरता नहीं। ब्रह्महु जगत पर्यंत ॥
जीवहि दुख दुसह अति, त्राहि त्राहिबिलखंत॥२५॥
शुद्ध होय दाया द्रवित, प्रेम सांचनिज पाय ॥
स्वतःनेत्र मूंदे खुले, निज अनुमान दिखाय ॥ २६॥
सो अनुमान प्रचंड अस, कीन्हों ब्रह्माकार ॥
व्याप नास्ति जब ब्रह्मभये,तब जीवभये खुवार॥२७॥
निज झांई संभव लखै, सो अनुमान मिटाय ॥

जीव ब्रह्म माया सनहिं देखु परख थिति पाय ॥२८॥
निरपच्छिक जे जीयरा, ते तारण भौ सेत ॥
ब्रह्म महा निधि मन लहर, माया रतन अपोत ॥२९॥
हंस स्वतः आनंद पद, सोई पद है जीव ॥
सोई पदारथ सोई तन, लहै कुशल निज कीव ॥३०॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

स्वतः जीवकैसे होते स्वामी। काहे भयउ जगतअनुगामी॥
झांई संधि कालका फेरा । काहे परैसो करो निवेरा ॥
पुनि कैसे सो निज पद पावा । कैसे मनमायाभरमावा ॥
एक एक निर्णय कहिदीजे । निःसंदेह बुद्धि मम कीजे॥
निः संदेह होय जब येहा । झांई संभव मिटै संदेहा ॥
निजपद निजदेही बल सारा।पैठैगुरु मुख करै बिचारा३१॥

गुरु उत्तर ।

दोहा—ऐसे सुनि शिष्यकेवचन, विनय सहितश्रुतिप्रीति ॥
बिहँसिके असरन शरण गुरु,कही यथारथ नीति ३२॥
हे शिष्य उत्तम प्रश्न यह, कीन्हेउ सब सुखदैन ॥
मन वच कर्म अनुमानको, नाम सुलभ सुख चैन३३॥
जीव ब्रह्म दोउ सृष्टिको, कल्पित माया हँ ॥
अहंब्रह्म यह कल्पना, अखिल सृष्टि आरंभ ॥ ३४॥
ब्रह्म सृष्टिमा जीयरा, वायस जैसे जहाज ॥
थितिनहीं वार पार नहीं, हेर फेर रहैं जहाज ॥ ३५॥

जीव कल्पना ब्रह्म भौ, ब्रह्म सृष्टि इमि गूढ ॥
जीव परे तेहि सृष्टिके, पंच देहिमा मूढ ॥ ३६ ॥
पंचै पंचौ पंचधा, पाये पांचन पांच ॥
जीव प्रपंचे पंचके, कहूं न पावै बांच ॥ ३७ ॥
पंचाइत गुरुमुख लखै, पांच पचीसों त्याग ॥
गुरु पंचाइत न्याव बिनु, यह प्रपंच अनुराग ॥ ३८ ॥

चौकडी।

जीव कल्पना एकोहँ । सोई कहावै सच्चिदब्रह्म ॥
आनंद अहंकार सो माया । ब्रह्म वाच मातै सब जाया ॥
सूक्ष्म अहँ धुनि ते ॐकार । सोई सोहँ वोहँ ब्रह्मास्मिसार ॥
ॐकार ते निरंजन रूप । पांचों देहि प्रथम अनुरूप ॥
ताते माया मन उपजाय । पांच खानि जगकी निर्माय ॥
अद्भुद सृष्टि भया विस्तार । अरुझैसबै जहां तहां कोइ डार
माया जनित त्रिगुण तत्व पांच । प्रकृति सहित पांचतन जांच
पंच कोशमें भौ यह जीव । अरुझै सबै ब्रह्म गहि पीव ॥
ऐसो संतत भयो प्रचंड । पिंड खंड ब्रह्मांड सो अंड ॥
अंड सो पिंड ब्रह्मांड उपाय । पिंड ब्रह्मांड सो अंड समाय
रूप निरंजन अंड प्रमान । उपजै खपै अंड निर्मान ॥
अंड अकाश सनातन सोय । अंडसे उपजै अंडमें होय ३९ ॥

दोहा—ब्रह्मईश माया मनहीं, कल्पित नाना रूप ॥
जग चहुं खानि लोक त्रय, गुणन सहित अनरूप ४० ॥
जीव रहटमा सो परे, सूक्षम बहु छिरियाय ॥
जहां नास्ति पावै तहां, निश्चय प्रेम लगाय ॥ ४१ ॥

चौपाई ।

इमि अबोध बहुते दिन बीता। दुखहि सुखकारि सबै गनीता।
दुखको मर्म न जानै मूढा। दुख भुगतै तेहि सुखकारि गूढा॥
छितरी समेटि पुनि छितरी अरुझा। अबूझहु बूझे बूझसों अबूझा।
इमि अंधधुंध भयो परचंडा। जीवहि बिकल नहिं चैन ब्रह्मंडा।
ब्रह्माकार माहिं नित रहै। परख जथारथ नाहीं गहै॥
बिनु परखै यह आदि कहानी। ब्रह्मजीव माया सहिदानी॥
बहुत कष्ट जीवहि जब भयऊ। तब सो ब्रह्म पद बोधित ठयऊ।
ब्रह्म भये थिति कल्पित पाई। कल्पित सृष्टि कहां थिर भाई॥
अनुभव करहिं पडहिं तेहि गाढा। ईशब्रह्म पद कारिकारि ठाढा।
इमि अनुमान बहुत दिनबीता। दुख दुख दुख दुसह नौनीता।
एकदिना अतिशय अकुलाना। सरधा होय बहुत बिलखाना।
असरन शरण बिरद संभारी। साँचा होय प्रेम जिवधारी॥
प्रेम गोहार शब्द मन थीरं। गुरु सोइ कल्पित मिटै समीरं॥
देखु दृष्टि निज कल्पित जाला। निज पद द्रष्टा भयेनिहाला।
सोई दृष्टि निजबोधहि पाई। गुरु पारख निज प्रगटजनाई॥
सार शब्द निर्णय जथारथ। गुरुमुख सब सुख लहै अनारथ।
सोइ गुरु प्रथम शिष्य मत येहा। परख प्रताप मगन संदेहा॥
बन्दीछोर ताहिको नामा। भेष साधु मंगल गुणधामा॥
ज्ञान सोई जो यह मत जानै। भक्ति सोई गुरु साधुहि मानै।
थिरपद गुरुमुख साधुजहाना। ताकेरहस चरित्र विधिनाना।
तत्त्व प्रकृति कहब विस्तारा। यह देहीको जो व्यवहारा॥
निर्गुण सगुण उधमज दोई। परखजथारथ मिथ्या सोई॥४२॥

दोहा—ॐ अंड कलिपत सोई,सो सब प्रगट लखाव ॥
याकी तत्व प्रकृति अब,कहब जथारथ भाव ॥ ४३ ॥
शुद्ध सांच सो प्रथम पद, हंस जीव कहि ताहि ॥
सांच१धीरता२दयालता३,शील४विचार५समाहि४४
ई पांचों हैं तत्त्व सो, संगी हंसा केर ॥
साधु गुरुमत गहन मन, कलिपत सृष्टि हेर ॥ ४५ ॥
इहै कल्पना परखकी, त्रिगुण सुनहु परचार ॥
विवेक१वैराग्य२औगुरुभक्ति३,साधुभाव३रधार ४६॥
अब प्रकृति पचीसको, कहौं सुनो परसंग ॥
पांच पांच ते पांच भौ,जेहिविधि बाढो अंग ॥४७॥
सांच तत्व है प्रथमता,ताके जाये पांच ॥
निर्णय१निर्बिंद२प्रकाश३थीर४,छिमा५पांचवेंसांच४८
धीरज दूजे तत्वकी,प्रकृति सुनहु मन देह ॥
मिथ्या त्यागन१गहन मत२,निःसंदेह३समेह ॥४९॥
चौथे सेवन साधुके४.निरसन हंता ५ भाय ॥
पांच प्रकृति यह धीरता,दूजे कही गनाय ॥ ५० ॥
दया तत्व तीजे सुनहू, तिनके पांचों जूत ॥
अद्रोही१मम२मित्रजीव३,अभय४नैन अद्भूत५॥५१॥
चौथे शील प्रकारके, पांच तत्व गनिलेहु ॥
क्षुधा निवारण१प्रिय वचन२,शांत बुद्धि३रहु येहु ५२
परख प्रत्यक्ष४सब सुख प्रगट५,प्रथमा कही बखान ॥
अब पंचमकी पंचधा, सुनहु जथारथ मान ॥ ५३ ॥

अहै विचार सो पांचवां, ताते भये यह पांच॥
आस्तिनास्तिपदबिलगान१,अहैजथारथसांच२॥५४
व्यवहारै शुद्धता गहन३,परख यथा टकसार ४॥
वेद आदि बानी सबै, बोध हेतु उरधार ५ ॥५५॥
इमि पांचोंकी पंचधा, भेद प्रकृति पचीस ॥
ई देहकी तत्व प्रकृति, बूझो बिस्वाबीस ॥ ५६ ॥
तीनों गुण अचरण शुभ, कहेउं बहुत प्रकार ॥
जो विवेक ताके गुनन, जो जानै निर्धार ॥ ५७ ॥
विराग हंता त्यागको, भक्ति सत्य गुरु नेम ॥
साधु भाव त्रिगुण सहित, हंसनके यह क्षेम ॥ ५८ ॥

सत्य शब्द टकसार ।

साखी–साधु भया तो क्या भया, बोलै नाहिं विचार ॥
हतै पराई आतमा,जीभ बांधि तरवार ॥ ५९ ॥

चौपाई ।

ऐसेनि संगति त्यजहु सबेरा।गहहु शरण गुरुपरखउजेरा ॥
असरन शरण ताहिको नामा।भेष साधु मंगल गुणधामा ॥
बन्दीछोर सबन सुखदायक । दीनबन्धु हंसनके नायक॥
परखप्रत्यक्षकालकोफंदा।दीनदयालकीशरणआनंदा६०॥

शिष्य प्रश्न ।

सोरठा–बन्दीछोर सुजान, अब चीन्हा शुभरूप तव ॥
मंगल धाम निधान,किंचित शंका उदय चित॥६१॥
दोहा–जमा एककी अपर बहू, सो प्रसंग समुझाव ॥
शुद्ध भये यह तन लहै, प्रथम कौन यह आह ॥६२॥

गुरु उत्तर।

दोहा—जमा एक पद बहु भया, कारण हंता पाय ॥
हंता बासी जीयरा, सोई ब्रह्म कहाय ॥ ६३ ॥
गुरु सम्बधी जीयरा, इमि देहि शुभ धार ॥
वसै भूमिका रामपर, साधुरूप सुप्रकार ॥ ६४ ॥
एकता भयो भेद बहु, निरख एक अव नाहिं ॥
काल दयालहि भेद बहु, समझहु परखहु ताहि॥६५॥
उपजावन औ नासन, ये गुण काल अहंत ॥
दयाल दीन उद्धारण, स्वतः हंसस्वलहंत ॥ ६६ ॥
ऐसे काल दयाल गुण, एकता कैसे होय ॥
ताते शिष्य विचारिये, शुद्ध हंसपद जोय ॥ ६७ ॥
काल अनेकन रूपते, जीवहि रखे भुलाय ॥
दयाल एकहि रूपते, साधु गुरू कहाय ॥ ६८ ॥

सत्य शब्द टकसार।

साखी--साधु बतावै गुरुको, गुरू कहैं साधु पूज्य ॥
अर्स पर्सके खेलमें, भई अगमकी सूझ ॥ ६९ ॥
दोहा—एक रूप गुरु साधुका, दूजा कालको फंद ॥
असरन शरण दयाल गुरु, साधु सदा स्वच्छंद॥७०॥
बन्दीछोर कृपाल गुरु, मर्दन काल कलेश ॥
काल अनेकन रूपते, जीवहि देत विदेश ॥ ७१ ॥
ताते हे शिष्य एकता, कैसे काल दयाल ॥
बंधन गुण हैं कालके, बन्दीछोर दयाल ॥ ७२ ॥

जमा एक जीव स्वतः पद, बुद्धि भ्रांतिसे काल ॥
बुद्धि भ्रांति परखाय मेटै, सो गुरु दीन दयाल ॥७३॥
रोगी वैद्य कलेशते, छूटै भये निदान ॥
जो कलेशमें पगिरहै, सोई रोगी जान ॥ ७४ ॥
रोगी एकता ब्रह्म पद; सृष्टि रोग विलास ॥
सो भासो पद जीवको, रोगिन संग विलास ॥ ७५॥
एकता और अनेक पद, इहै रोग को मूल ॥
रहट खानिमों जीयरा, परै न सूझे भूल ॥ ७६ ॥
सूझै भूल जो जीयरहि, शरण आवै तजि :मान॥
परखि काल गुण बिलगि रहै ,एक अनेक अनुमान७७॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

हंसा ठहरि देखु थिति बाट ।काहे भटको औघट घाट॥
जहां जहां जाहु तहां तहां दूजा । तूहि काल उपराजा ॥
कियो कल्पना जगकी आपै । चौरासीको साजा ॥
भये अनेक दुख बहु पाये । पुनि सो ब्रह्म कहावै ॥
ब्रह्म भये थिति कतहुं न पावै। जग इच्छा रहि जावै ॥
ब्रह्म जगत दोउ धोखा जीयरा । कल्पित तेरो होई ॥
देखु दृष्टि गुरु बुद्धि परख पद । तू है को यह कोई ॥
आतमराम स्वतः पद पूरण । गुरु पारख ठहराई ॥
अहहि कबीर ठहर पद अपने । दूजा काल कसाई॥७८॥

शिष्य प्रश्न ।

सोरठा—हे गुरु दीन दयाल, हंस स्वतः दातार पद ॥
मेटन यमको जाल, मंगलरूप गुरु साधु हो ॥ ७९ ॥
शंका रही चित एक, सो पूछत अति सकुच मोही ॥
कहिये जथा विवेक, कैसे काल दयाल भौ ॥ ८० ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

कल्पित इच्छा ब्रह्म कहावा । ब्रह्मकी इच्छा माया गावा॥
ताते त्रिगुण भये मन भाई । मन मानै चौरासी जाई ॥
कल्पित सृष्टिभयो विस्तारा । परे जीव सब ब्रह्मकिधारा ॥
दुखितसुखिततेहिपदअनुरागी।जगैनमोहजनितबुद्धिलागी
सुख मानै चौरासी खानी । भुगतै कष्ट न परैपहिचानी ॥
ऐसेहि बहुत दिवस गै बीती । एकै जमा अनेकन रीती ॥
देखिअनेकरीतिअकुलाना।निजशोधनतबकियोसुजाना ॥
सत्य विचार धीरता पाई । दया शील उर बसो सहाई ॥
प्रेम गोहार स्वतः पद देखा। इन्हकेलहतसबमिटैअलेखा॥
ठहरिजथारथ पारखकीन्हा।लहत प्रकाश स्वतःपदचीन्हा॥
स्वतः दृष्टि जब जेहि भइभाई । सोई गुरुपद ठहर परखाई
पारखमें ठहरे बुद्धिवंता । देखो दशा निज नाहिन हंता ॥
मन मायाकृतजेजेजाला ।जीवहि दृष्टिनिजदीनदयाला॥
ताते नाम दयाल कहाये । जीवहिंनिजुपदआपुलखाये ॥
लखैवचनताके जोजीऊ । सो गुरु सोशिष्यसाधुसोपीऊ॥

हंसन नाह साहेब गुरुदेवा । बन्दीछोर कालको भेवा ॥
असरन शरण ताहिको बाना । दीन उद्धारण हंससुजाना
उग्र प्रत्यक्ष गुरु गंभीरा । सुनु शिष्यसोंदयालपदभीरा ॥
सुनु गुरुवचनठहरे पदजोई।सोशिष्य स्थिरनिजपदमेंहोई॥
परख परखावन जीवनकेरा।यह व्यवहार यथार्थ निबेरा॥
सुनु शिष्य यह पद आहिदयाला।नाशकनष्टमंईगुणकाला
परखजथारथ ज्योंलोंनआवै । तौलोंकस दयालपदपावै॥
कालकलाग्रंथनबहु गाया । सत्य शब्द गहि गुरुबताया॥
परखहुकालकलायहजीया । परखिमेटोतासुगुणकीया८१

दोहा—काल दयालके उभय गुण,कहेउं यथार्थ प्रसंग ॥
अब जो शंका रही चित, पूछहु शिष्य निःशंक८२॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

काल दयाल उभयगुणस्वामी । बर्णेहु जानेउं अंतरजामी॥
काल जालको बहुविस्तारा ।तवमुखलखेउंयथार्थविचारा॥
औरहु जाल गुप्त बहुबेरा । सो पूछब जस परै निबेरा ॥
अब भाखहु प्रभु दुइकरभेदा ।साधु गुरु दुइ एककिछेदा॥
यहसाहेब कछु जानिनजाई । कहहुयथार्थन्यावबिलगाई॥
हंस जीव पद दीनदयाला । नाशकनष्ट कालकोजाला८३

गुरु उत्तर ।

दोहा—अस्मदादि जग भेष जो, खानी मनुष्य स्वरूप ॥
तेते रूप सो साधु हैं,सुन शिष्य उत्तम रूप ॥ ८४ ॥

गुरु बोधिक ज थीर पद, डोलै कतहुं नाहिं ॥
आपु सुखी औरे सुखी, गुरु कहिये ताहिं ॥ ८५ ॥
जाके लक्षण परख गुण, सुन शिष्य सब विस्तार ॥
साहुचोर तोंहिलखिपरै, ठहरिकेकरहु विचार ॥८६॥

तोमर छन्द।

सुन साधुनके गुण लक्ष शिष्य। कहै मुनिश्वर वेद ऋष्य ॥
जे जे मतनमा जे जें भेष। ते रूप धरें निर्बान देख ॥
ते रूप कहिये अस्मदादि। ते साधुरूप कहिये अनादि॥
काहेसो रूप प्रत्यक्ष पूज्य। तेहि रूप धरै गुरुरूप पूज्य॥
तेहि लक्षण उत्तम उत्तम गोत। जगकोबेकारनासकपरोत॥
तेहिमांहिपरखगुरुठहर साध।आनंदलहरिकेसमुद्रअगाध॥
ते साध पारखी पारख युक्त। उत्तम क्रिया सत्यादि युक्त॥
यहिमांहि भेद बहुतेअहंत।गुरुबुद्धि परख लहिलहहुसंत॥
बहु कालकेर जे जे महंत। ते परे नाम धांरे अनंत ॥

शिष्य प्रश्न।

यह सुनत शिष्यमनभईहैशंक।तबपूछै होयआरतनिःशंक॥
का भेद आहिप्रभु दीनराय।सोकृपाकरिदीजैलखाय८७॥

गुरु उत्तर।

दोहा—सुनहु शिष्य वृत्तांत यह, साधु भेष बहु भेद ॥
भेष काज धारै अमित, साधु रहित जग खेद ॥८८॥
प्रथम कला कालके, दुखित भये बहु जीव ॥
कलिप बुद्धि अनुमान निज, भेष धरै कोउ पीव॥८९॥

भेष त्याग प्रापति निमित, नाना मत परकास ॥
रूप धरहिं बहु जीयरा, भेष साधु सुबिलास ॥ ९० ॥
हे शिष्य ठहरै साधु वह, जे भेषनमें सांच ॥
दीन उद्धारण गुरु गुनी, तेंहिरूप धारि वांच ॥ ९१ ॥
उत्तम दशा विरक्तता, प्राप्त बोधके रूप ॥
अहै प्रत्यक्ष प्रमाण जग, स्वयं साधु गुरुरूप ॥ ९२ ॥
भेष साधु बहु अंतरे, द्रष्टा दृष्टि विचार ॥
साधुरूपि गुरु प्रत्यक्ष हैं, भेष साधुता सार ॥ ९३ ॥
दीन दयाल भेष यह, धारोअतिप्रिय कीन्ह ॥
ताते शिष्य समुदाय यह, मंगलमयको चीन्ह ॥ ९४ ॥
मंगल मूरति साधु गुरु, लक्षण लक्षित अंग ॥
गुरु अधिकारी वस्तुके, दृष्टि है तिन संग ॥ ९५ ॥
साधु गुरुको भेद यह, भेष साधु इमि भेद ॥
किंचित दृष्टि प्रताप गुरु, बहु प्रकार कहे वेद ॥ ९६ ॥
गुरु साधु अंतर नहीं, एकता बहुते येह ॥
साधु भेष अंतर कछुक, द्रष्टा दृष्टि करेह ॥ ९७ ॥
द्रष्टा ठहरै परख गुरु, अति प्रसन्न गुरु ज्ञान ॥
संगी करै पांचको, और पचीस सम जान ॥ ९८ ॥
तीनों गुण अचरण शुभ, औ रहस्य गुत होय ॥
ठहरै रमिता भूमिपर, सुन शिष्य मानुष सोय ॥ ९९ ॥
मानुष बुद्धि पाये बिना, मानुष कधी न होय ॥
मानुष भये बिना नहिं, लहै सु पारख सोय ॥ १०० ॥

परख लहे बिनु जीयंरहि, प्रथमादुख न मिटाय ॥
दुःख मिटै बिनु हंसपद,शिष्य सो कैसे कहाय १०१॥
यह प्रकार दाया सहित, कहा बचन टकसार ॥
गुरु बीजक मत प्रौढ शुभ, नाशक नष्ट पसार ॥ १०२
असरण शरण दयालप्रभु, बन्दीछोर कबीर ॥
मत प्रकाश शुचि विमल अति, हरण कालकी पीर १०३

शिष्य प्रश्न ।

सोरठा–हे गुरु दीन दयाल, तुम भाखेउ गुरु साधु गुण॥
जानेउं सबै कृपाल, मर्म जथारथ उभय गुण॥ १०४॥
अब कछु पूछन चाहै,मानुषके गुण लक्षयुत ॥
चौरासी केहि आहि,निर्णय कहहु यथार्थ शुभ १०५

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हे शिष्य सुनहु यथार्थ विचारा।चौरासीको जो व्यवहारा॥
मन मायाकृत ब्रह्म बनाया । चौरासी फंदा निर्माया ॥
चारि खानिमा बासा दीन्हा । द्वारा चौरासीको कीन्हा ॥
सोई खानि चौरासी योनी । जीव कोटि प्रगटे बहुछोनी॥
उत्तम मध्यम गुणहु समूहा।खानिखानिबिच दीन्हेउजूहा॥
यहि विधि चारिखानि चौरासी।बसै जहांतहां नष्टप्रकासी॥
पारख जीवन कष्टित देखी । खानि उग्र बोधितकै लेखी॥
चारि खानि द्रष्टा जब देखा।निर्णयखानि:मनुष्यकीपेखा॥
बुद्धिवंता मानुष बुद्धि सारा।मानुष:देहको किया विचारा॥
मानुष देह उत्तम जगखानी।स्थावर:मिलि चारि ठहरानी॥

अंडज पिंडज उषमज खानी।रूप ठहर मानुष बुद्धि जानी
अंडज अंडमांहि जो आया।पिंडज पिंड प्रगट जो जाया
उषमज अंड पिंड सन्बंधी।स्थावर तत्व है उषमज संधी ॥
पांच तत्वमा जासु प्रकासू। तत्व स्थावर सम्बंधी बासू ॥
अंडज पिंडज उषमज माही।चेतन तत्व हंसाको आही ॥
उषमज जैसे दुई अधारा। तैसे स्थावर तत्व पसारा ॥
जीवत भावस्वतः तहां नाहीं।तत्वसंयुक्त प्रकाश दिखाहीं॥
निर्णय वचन विचारै येहा।गुणन सहित जड स्थावरदेहा६॥

दोहा—चेतनहूंते गुण अधिक, जड स्थावर विस्तार ॥
बासा चेतन ताहिमें, खानी उग्र अधार ॥ १०७ ॥
हंस बिहारन खानि जड, उत्तम मध्यम कीन्ह ॥
बासा तामध्ये राखिके, मानुष आपन पद दीन्ह१०८
निर्णय दयानिधानके। खानिनके गुण देख ॥
मानुष खानिते भिन्न है, भ्रमबस खानिमें लेख१०९॥
बानीते खानी लखै, द्रष्टा मनुष्य स्वरूप ॥
मानुष भये सुधरै सबै, निर्मल दृष्टि अनूप ॥ ११०॥
दृष्टि प्रकाशी सो परख गुरु, मानुष परखिके लीन्ह ॥
मानुष पारख लहतहीं, गुरु दृष्टिहि चित दीन्ह१११॥
मानुष गुरुमुख परख लही,सम हंसा पद थीर ॥
औरहि परखावन लग्यो, गुरुमत गुण गंभीर॥११२॥
मानुष देही पांचकी दशा साधुके रूप ॥
पंचाइत गुरुन्याव शुभ; अटल राज गुरुभूप ॥११३॥

परम सुउज्जल धर्म है, हे शिष्य लिये जो जाय ॥
मानुष बचै यह जालसे, काल रहै पछिताय ॥११४॥
काल कला मानुष लखै, पशुते लखी न जाय ॥
बोधित खानि औ बानिमें, पशुवा रहै भुलाय११५॥

शिष्य प्रश्न।

चौपाई।

मानुष भिन्न कहेउकस स्वामी।खानिबानिसों कहेउ प्रनामी
कैसे भिन्न मानुष सुप्रकारा।निर्णय कहहु यथार्थ विचारा॥
मानुष चौरासीमा थापू। कहेउ महातम आपन आपू॥
सोकेहि भांतिभिन्नबतलावा।दीनउद्धारणदेहुलखावा११६

गुरु उत्तर।

सोरठा–सुनहु शिष्य वृत्तांत,चतुर खानि निर्णय लखहु॥
वेदशास्त्र वेदांत, संत ऋषीश्वर मुनि मनुज ॥ ११७॥
सबन कीन्ह परमान, तेहि अचरण चलहीं सब ॥
बन्दीछोर सुजान, निर्णय कीन्ह निज परखते॥११८

चौपाई।

चारिउ खानि निरंजनथापा।जमा सबनमों अपनीआपा॥
मैं कर्ता कहि सबन भुलाई। राखेउ निजसेवा अरुझाई॥
कालबलीबल अतिबलवंडा। राखेउसबहींस्वबलब्रह्मंडा॥
चारिउ खानि योनि चौरासी।जीव शीवथल नभचरवासी
पारख देखेउ खानीऔबानी।जीव कोटिते करनहिं हानी॥
लहतहिंताहि खानि फरियाई।चारिउखानी मनुष्यतेपाई॥
मानुषरूप अति दुर्लभ भाई। जाते चारिउ लखै बनाई॥

चारिउकर लक्षण व्यवहारा। लखैमनुष्यशुभ अशुभ विचारा।
मानुष निर्णय आश्रित जोई। मानुप बुद्धि भलीविधिसोई॥
उत्तम मध्यम चीनऔछिन्ना। पशु खानी मानुपते भिन्ना॥
मिलित खानी सबएक अनेका। एकते अधिकएकनहिंएका
पशु लक्षण मानुषको रूपा। ऐसेहि आहि प्रत्यक्ष स्वरूपा॥
ऐसेहि कला विदित बहुग्रंथा। लक्ष भक्ष वाचक मनमंथा॥
पारख दृष्टिमनुष्यकोचीन्हा। वानिखानिफारियावनलीन्हा
षट संभाव कला चहुंधारी। मानुपरूप तेई अधिकारी॥
सो पारख बल तिन्हेंपरखाई। मानुपरूप अनुमान मिटाई॥
जहां अनुमान तहां यमको फंदा। परखोसंतो आदिको धंदा
परखतरूप मानुष बुद्धिवंता। लहै मोद अनुमय ना संता॥
ब्रह्माकार रूप अनुमाना। मेटेउ जथारथ मनुष्यसमाना॥
मानुषबुद्धि है अतिसे भारी। लखै सुलक्षण गुरुमुखवारी॥
मन मानै संकल्प कहानी। मेटेउ रहटकी ऐंचातानी॥
मानुषकौनसुनहुशिष्यसोई। खानीवानी निर्णय बुद्धिहोई॥
रूपमनुष्यजग देखहु सोई। सोजथारथतेमनुष्य न होई॥
मानुषलक्षण मानुपखानी। बिनपारखनहिंमानुपजानी ११९.

सत्यशब्द टकसार ।

साखी—मानुष हुवा सो ना मुवा, मुवा सो डांगर ढोर॥
एकौजीव ठौर नहिं लागा, भया सो हाथी घोर १२०॥

दोहा—दया छिमा अरु शीलता, पारख जथा विचार॥
लहै चार लक्षण शुभहिं, मानुषगुरुबुद्धिसार॥ १२१॥

भोजन छाजन भय सहित, मैथुन निद्रा मोह ॥
षट विकार चहुं खानिके, मानुष लहै न कोय॥ १२२॥
सब आश्रित ये षटनके, बड खटखट षटकेर ॥
खटखट पटके लखेते, पुनि खटखट नहिं फेर॥ १२३॥
पट पंचाइत न्याव गुरु, संतनके सत्संग ॥
असरन शरणकी बुद्धिते, पटको खटखट भंग॥ १२४ ॥
यह प्रकार समिता लहै, गुरु पंचाइत न्याव ॥
उद्वेगन आरंभ तजि, मनन जथारथ भाव ॥ १२५ ॥
वर्तमानकी भूमिका, ठहरै मनुष्यको रूप ॥
यथा वर्तै तेहि मगन मन, दुख सुखशांतस्वरूप॥ १२६॥
चौरासीकी पत्रिका, अहै मनुष्यको रूप ॥
मानुषहीते सब होत है, गहै अनेकन रूप ॥ १२७ ॥
यथा पटन निर्णय लखै, चारिउ पद गुण खानि ॥
बार्ना सुधारै चारिउ विधि, होवै सांच गुरुबानि १२८॥
सत्य वचन सो सांचता, दयारूप अनुहार ॥
शील हंस समिता लखैं, जीवन केर विचार॥ १२९ ॥
चारिउ विधि पूरण सोई, मानुष कहिये सोय ॥
षट त्यागे अनुमानता, सहज वृत्तिता होय ॥ १३० ॥
अदभुत रूप परिछिन्न शिष्य, इमि मानुषके लक्ष ॥
रूप मनुष्य बहु जगतकै, सो मानुष यम भक्ष १३१ ॥
निर्णय गुरुमुख यथा लही, सुधरै मानुष खानि ॥
दया साधुमुख साँच कहीं, शील दयाकी बानि १३२

चौराशीकी रहटसों, बांचै हंसा सोय ॥
लहै आपन पद जीयरा, काल देखि रहै रोय ॥१२३॥
हे शिष्य उत्तम खानि यह, मानुषते नहिं और ॥
मानुषभये शिष्य सुमति मति, छाडैकालकी दौर १२४॥
चौरासी निर्णय सहित, मानुष करै फरियाव ॥
कहेउंजथारथमतिविमल, नहिं अनुमान मिलाव १२५॥

शिष्य प्रश्न ।

गीतक छंद ।

चारिचौरासीकी निर्णय भाखेउ, प्रभु लहेउंतव सुख॥
त्याग दोउ दुख, नासि अनुमान अभू ॥
बसन घुतरी एक अनेकन, त्यागि ब्रह्म कहानियाँ ॥
लहेउं अंबुज चरण राउर, अभय पदकर दानियाँ ॥
निर्णय जथारथ श्रवण अमृत, धार हृदय अघाइयाँ ॥
अब कहु कृपा निधान, इनकर रूप कौन कहाइयाँ ॥
बहु रूप चौरासी अहै, केहि रूप मानुप जानिये ॥
सो करहुदाया दीन दुखहर, भिन्नभिन्नबखानिये १३६॥
दोहा—तुम समान दुख मेटन, को है समरथ और ॥
दुखित कालके जालमें, जीवा लायउ ठौर ॥१३७॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

सुनहु शिष्य मानुषको रूपा चौरासी मध्ये मानुष भूपा ॥
चारि खानी और चहुं बानी । ईश्वर ब्रह्म सृष्टि अरुज्ञानी॥
ब्रह्म सृष्टिके जीव गनाऊं । पंच देह प्रत्यक्ष बताऊं ॥

सो पांचनते बहु विस्तारा । पंच देह पंच तत्व सम्हारा॥
सात्त्विक गुण देवादिक झारी।रज इंद्री तम तत्त्व विकारी
मन माया कल्पित ब्रह्मजाला।ब्रह्म सृष्टिमें जीव बेहाला ॥
ईश्वर सृष्टिसो अनगन खानी।चारि चौरासी मध्ये बानी॥
सो कोवार जाल गुण गूढा।परहिं कहहिं मति ये अति मूढा
उत्तम मध्यम भुगते दोई । जीव परै दोउ सृष्टि बिगोई ॥
सूक्षम अहंकार सम्बंधी । खान पान व्यवहारहुँ बंधी ॥
उग्र दशा जीव नास्ति समाना।देखन रूप ब्रह्म परवाना॥
सो अनुमान कल्पिकियो ठाढा।हेशिष्य परे बहुत यह गाढा
कल्पित कल्पनाश कियो बासा।कल्पनासहितब्रह्मविश्वासा
ब्रह्म सहिता हंता बुद्धिकाला।काल होइ बहु कला समाला॥
अमितग्रंथभाखासोमहातम।ऋषिमुनिसनकादिकसोपुरातम
छानिछानि बहुबानिनबंधा।बानिनबंधभयाबहुअंधा१३८
दोहा—सृष्टि कल्पनाते भई, कल्पित ब्रह्माकार ॥
कल्पबुद्धि अनुमानके, ऋषि मुये पचिहार ॥ १३९॥
भेद न पाये कल्पना, कोहौं हौंको होहू ॥
अनुमानी अनुमान भौ, नेह कठिन दृढ छोहू॥१४०॥
ताते हे शिष्य उभयता, कल्पित सृष्टि पसार ॥
भई कल्पना जाहिते, सोई भयो खुवार ॥ १४१ ॥
ब्रह्म जीव ईश्वर जगत, ई सब अनुमित सैन ॥
निरुवारै ठहरै नहीं, भासै झांई बैन ॥ १४२ ॥
जाको है यह भासना, सोई पद सोई रूप ॥
ताके गुरु निर्णय सहित, मनुष्य जथारथ भूप॥१४३॥

मानुष रूप शुभ प्रथमा, इन्हते चारिउ खानि ॥
अरुझ जहां तहां फंदमें, पारख लीन्ह पहिचानि १४४
सोई रूप यह जगतमें, धारे दीन दयाल ॥
भेष सुमंगल संत तन, निर्णय देहिं कृपाल ॥ १४५॥
ताते हे शिष्य रूप है, मानुष प्रथमा नाम ॥
कल्पि कल्पि मति ब्रह्मलों, बसै औरके धाम ॥१४६ ॥
चौरासी कल्पित भये, भक्षित एक अनेक ॥
पुनि सो बहुत विचार करि, ब्रह्म एकका एक१४७॥
ब्रह्म भये चौरासी, चौरासी मिटि ब्रह्म ॥
घायल घूमहि जीयरा, उलटि पलटि इमिभर्म॥ १४८॥
ब्रह्म भरम माया मनहीं, भये अनेकन रूप ॥
याहीके अनुमान शिष्य, ब्रह्माकार स्वरूप ॥ १४९॥
कल्पित याको ब्रह्म भौ, इच्छा माया भास ॥
मन मानै मनतव्यता, चौरासी कियो बास ॥१५०॥
चौरासी चहुंखानि मन, कल्पित माया फेर ॥
ब्रह्म ईश जड देहमहँ, लागै निजपद हेर ॥ १५१ ॥
चारिउ खानी चारिउ बानी, चारि रूप चहु देह॥
ब्रह्म ईश माया मनहू, चहुं मध्ये बासा येह ॥१५२॥
हे शिष्य ब्रह्माकारको, लक्षणई गुण होय ॥
कैसे चौरासी मिटै, कैसे रूप समोय ॥ १५३ ॥
ताते देखो सबनको, पारख कियो विचार ॥
निर्णय कियो चहुं खानिको, गुरुबुद्धि मानुष सार१५४

रूप मनुष्यसोसब भयो, चौरासीचहुं खानि ॥
बानी यथार्थ विचार गुरु,मानुष रूपतेजानि॥१५५॥
ताते हे शिष्य चारिमा, मानुष प्रथमा नाम ॥
मानुषते सबही भयो, मानुषके गुण आन ॥ १५६॥
मन माया सो कल्पना, ब्रह्माकार स्वरूप ॥
हे शिष्य सबैअनर्थ पद,नहिं ताके ये स्वरूप॥१५७॥
रूप सबै अरु कछु नहीं, रूपै रूप उपाय ॥
संकलिपत यह सृष्टि है, थिरता कहुं न पाय ॥१५८॥
नास्ति सनेही सब भये, आस्ति नास्ति लौ लीन ॥
जीव भरोसे औरके, निजपद नाहीं चीन्ह ॥ १५९ ॥
होना कछु न याको हतो, भये अनेकन रूप ॥
चौरासी औ चारिमा, मानुष प्रथमा रूप ॥१६०॥
प्रथम रूपसे सब भयो, सो प्रथमा गौ भूल ॥
जीव प्रपंचे पंचके, सहै घनेरी शूल ॥ १६१ ॥
हे शिष्य देखु बिचारिकै, निर्णय करहु यथार्थ ॥
सबके मत प्रत्यक्ष हैं, बानीमें वेदार्थ ॥१६२॥
जीव संकल्पे जग भयो,मिटे संकल्प नसाय ॥
यह प्रमाण है वेद बुध, कहैं प्रत्यक्ष लखाय ॥१६३॥
हे शिष्य ऐसे मतनमहँ, जीवहि चैन ना होय ॥
नष्ट सनेही नष्ट भौ, भ्रष्ट कल्पना सोय ॥ १६४ ॥
ऐसे उपदेशन समुझि,जीव अबुध पतियाय ॥
क्षुधित पेट कहुं नाममें, भोंदू रखै भुलाय ॥ १६५॥

ब्रह्मराजमों माया रानी, मनवजीर तनस्थान ॥
दुग दुग सबहिन चित्तमहँ, हमको हमको आन १६६॥
ताते हे शिष्य देखु तै, सो है कल्पित रूप ॥
अनुमानी अनुमान भौ, सहे घनेरी कूप ॥ १६७ ॥
मानुष बिन कछु नाभयो, प्रथमा मानुष नाम ॥
मानुषते सबही भयो, ब्रह्मरूप अरु नाम ॥१६८॥
नामरूप गुणमय जगत, चौरासीको फेर ॥
मानुष भूले सब भयो, भूल मिटे नहिं फेर ॥ १६९ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी--फेर परा नहिं अंगमों, नहिं इंद्रियन मांहि ॥
फेर परा कछु बूझमें, सो निरुवारेउ नाहिं ॥ १७० ॥
दोहा--बूझो संतो ठहरिके, देखो ब्रह्माकार ॥
जीव भरोसे कौनके, बैठे करै पुकार ॥ १७१ ॥
मानुष निर्णय यथा विधि, कहेउं प्रथम है रूप ॥
या बासे चौरासी बासा, या निरुवार स्वरूप १७२॥
बहु प्रकार वर्णन अहै बहु प्रकारके बोध ॥
बहु प्रकार मति कल्पिके, निजकल्पित कियोशोध १७३
रहित कल्पना ब्रह्म भौ, ब्रह्मकी इच्छा जहान ॥
कहै कल्पना रहित भई, मिथ्या बकै अयान॥१७४॥
उपदेशी सो नष्ट भौ, भ्रष्ट जीव हैरान ॥
बंदै चरण अबोध जीव, चाहै निज कल्यान॥१७५॥
ई नहिं जानै बावरे, मोर कल्पना आहि ॥
हे शिष्य बिनु मानुष भये, चौरासी भरमाहि॥१७६॥

शिष्य प्रश्न।

छन्द–हे स्वामी यह निर्णय भाखेउ,अति सुख पायऊं॥
जन्म जन्मकी तृषा नाशी,समुझि अमृत घ्यायऊं॥
अबकछुकहुदीनउद्धारणसअ्रथ,मानुषलक्षणगुणजथा॥
केहिविधिकहियेपहिचान,मानुषभाखेउपरमारथा१७७

गुरु उत्तर।

छन्द–सुनशिष्यसुमति अनेकविधि,याके अनेकनअगहैं॥
पुनि ताहिमा जो प्रत्यक्ष गुणगन,परखबिनुकोइनालहैं
लहै जीव जे दृढसोसतगुरुमुख,देखसत्य वर्णनकियो॥
सो सुनहुशिष्य यह देहकेगुण,जीवकेगुणहूकह्यो१७८॥

दोहा–चारि खानिका जीवरा, मानुष कधी न होय॥
जाको गुरुपारख लही, मानुष कहावै सोय ॥१७९॥
यह लक्षण समुदाय गुण, कहा वचन टकसार॥
गुरु पूरा जो होगया, तो शिष्य उतारे पार ॥१८०॥

चौपाई।

मानुष समुझै मानुप होई। गुण लक्षण मानुषते जोई॥
छिमा दया सत्य धीरविचारा।मानुष लक्षण सहित निर्धारा
सदा एकसम बुद्धि प्रकाशा।भाखै वचन न कल्पितआशा॥
असविवेक शिष्य जेहि घट आवा।सो गुण मानुषकेरकहावा
मानुष गुण औगुणको त्यागै।निर्णय वचन जथारथपागै॥
अनुमानी गुण कालकहंता।नास्ति नष्टके आदि न अंता॥
आदि अंत जाके जानि नजाई।सो अनुमान नास्ति है भाई॥
सो पशु खानि मानुष बुद्धिनाहीं।धोखा धारमें गोता खाहीं

निर्बचनी जो ब्रह्माकारा । सो अनुमान सृष्टि विस्तारा॥
सो निर्णयते नास्ति कहावै। जो नहिं है तहां क्यों मन लावै
कंचन कांच बराबर लेखै । सो बुद्धिमान औरको पेखै ॥
तातेपारखकियाविचारा।कल्पित नास्ति सृष्टिव्यवहारा८१
दोहा—उभय काल गुण दोषमय, कल्पित सृष्टि हैं ॥
नासै उपराजै बहुर, नाम क्षुधा बसींहं ॥ १८२ ॥
मन संकल्पते जग बहू, मन विकल्पते नाश ॥
रहट जीव बांचे नहीं, धोखाधार विनाश ॥ १८३ ॥
गुण उत्तम लक्षण सहित, निर्णय वचन यथार्थ ॥
जो बर्तैं सोई खरा, अनुमानी मिथ्यार्थ ॥ १८४ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

शब्द ।

संतो मानुष कोइ एक शूरा । जाहि मिले गुरु पूरा ॥
बहुतक ब्रह्म धारके हंसा । बहुतक शिव गन भूता ॥
बहुतक विष्णु सोई जड होवें । बहुत निरंजन पूता ॥
बहुतक शिव शक्ति औराधें । मदिरा पिये अचेता ॥
खून करें बहु पूजि भरमजड । रछा तनके हेता ॥
षट दर्शन पाखंड छयानवे । अपने अपने भावै ॥
सबै सराहें निज निज बानी । परख कहांते पावै ॥
धंदे बंदे अंधे भरमे । मिथ्या निजुके थापा ॥
कहहिं कबीर मानुष गुरुमुख लहु।मेटे काल कलापा १८५॥
साखी—मानुषका गुणही बडा, मांस न आवै काज ॥
हाड न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज॥१८६॥

शिष्य प्रश्न ।

सोरठा–बन्दीजन उर धार, कहेउ जथारथ मनुष्य गुण ॥
लक्षण लक्ष विचार, या पारखते लहेउं प्रभु ॥१८७॥
मानुष प्रथमा रूप, केहि कारण गुरु निर्मयो ॥
कैसे गुरुमत भूप, पाये दुख सुख सब गयो ॥१८८॥

गुरु उत्तर।

दोहा–हे शिष्य थीर जो आस्ति पद, हंस स्वतः आनंद ॥
निज अकाशको मर्म भयो, एकोहँ स्वच्छंद ॥१८९॥
व्याप महामाया जनित, मन मनसा गुण नेक ॥
गुण न कल्पना तीन गुण,भयो प्रत्यक्ष बिधेक॥१९०॥
सात्विक जाये चारिउ, अतः चौदह देव ॥
रज दश इंद्री देवकी, कर्म ज्ञानके भेव ॥ १९१ ॥
तामस गुण हंकार युत, जाये पांचन पांच ॥
पांचोंसे पचीस भौ, चौरासीको नाच ॥ १९२ ॥
चौरासी औ चारिको, कर्ता मानुष रूप ॥
कोहँ इच्छासे भयो, कल्पित नाना रूप ॥ १९३ ॥
चारि देह पंचम दशा, शब्दाकार अकाश ॥
जिमि अकाश तेही भये, चारिउ तत्व प्रकाश १९४॥
तैसे ब्रह्मते माया, मायाके गुण तीन ॥
कल्पित मानुष रूपको, मन मिलि व्यवरा कीन्ह १९५
याको बहु विस्तारते, चारिउ पांचो मत ॥
कहै वेद मुनि मनुज तन, व्यवरा कियो समस्त १९६

अहै प्रत्यक्ष प्रमाण जग, विदित ग्रंथ बहु एक ॥
हे शिष्य पाये कसर कछु, सो द्रष्टा बुद्धि देख॥ १९७॥
सब अनुमाने ब्रह्मके,सूक्ष्म हंत जग होय ॥
निर्णय जथा परखके, मनुष्य कल्पना सोय ॥ १९८
काहे हे शिष्य ब्रह्मते, इच्छा हंता रूप ॥
रूप बिना व्यापै नहीं, हंता माया कूप ॥ १९९ ॥
रूपबिना इच्छा नहीं, रूप बिना नहिं नाम ॥
रूपविना संकल्पको, कर्ता कौने ठाम ॥ २०० ॥
ताते कल्पित सब भयो, मन माया अरु ब्रह्म ॥
ईश गुणन संयुक्त बहु, चारि चौरासी भर्म ॥ २०१॥
रूप मनुष्य प्रथमा अहै, रूपकी झांई रूप ॥
भासेउ दुतिया याहिको, सोहँ ब्रह्म स्वरूप ॥ २०२॥
अनबनी जतन नसायके, कल्पो ब्रह्माकार ॥
ब्रह्म भये बहु दीर्घ पद, ताते धोखा धार ॥ २०३ ॥
रूपहि रूप समोइके, रूपते उतपति रूप ॥
रूपहिते पुनि नास्ति है, रूपहि रूप अरूप ॥ २०४॥
हंस स्वतः आनंद पद, सो मानुष धारि देह ॥
ब्रह्म कल्पिजग निर्मयो, चौरासी कियो गेह ॥२०५॥
भूलो अपने रूपको, सो प्रथमा गौं भूल ॥
परेहु फंदा कालके, सहै चनेरी सूल ॥ २०६ ॥

शिष्य प्रश्न

दोहा—हंस स्वतःपद थीर जो, काहे मनुष्य स्वरूप ॥
सो प्रसंग समझायके, कहहु सतगुरु भूप ॥ २०७ ॥

गुरु उत्तर।

दोहा—हे शिष्य सुनहु प्रसंग शुभ, भाषौं जथा प्रमान ॥
स्वतःआस्ति आनंद पद, जैसे भयो अयान ॥२०८॥
धीर आदि सब तत्वता, याके थे सब पास ॥
प्रतिबिंबित झांई लखी,आस्ति कियो तहां बास २०९
करत बास तहां आस्तिके, हंता भई प्रकास ॥
दर्पण देखै प्राणि जिमि, जथा अहंता भास ॥२१०॥
सोहँ ब्रह्माकार भौ, ब्रह्म कल्पि मन माया ॥
माया मनते सब भयो, कल्पि कल्पि बहु पाया२११
हे शिष्य हंसा मनुष्य पद, रूप भरमते जान ॥
आस्ति नास्ति मिलतही, भये सृष्टि निर्मान ॥२१२॥
कल्पित झांईमा बसो, झांई सोई ब्रह्म ॥
कल्पित सोई कल्पना, जगतको भयो आरंभ २१३॥
हे शिष्य हंसा मनुष्य तन,ऐसे लह्यो तू जान ॥
जैसे मद्यपी मद बसी, कियो आपनो भान ॥२१४॥

शिष्य प्रश्न।

सोरठा—साहेब स्वतःप्रकाश, दीनबंधु करुणा भवन ॥
कैसेहि हंसन भास, झांईमा बासा कियो ॥ २१५ ॥
झांई याही केर, तन बिनु झांई होत नहीं ॥
तन सो कौन प्रभु तोर, जब कछु नहिं तव कल्पकस२१६
कहिये दीन दयाल, याके उत्तर जथा बिधि ॥
हरहु कठिन उरसाल, निर्णय कहहु जथार्थ शुभ २१७

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हे शिष्य सुमति यथार्थ सुनीजे।याके उत्तर चितमहँ दीजे॥
हंस स्वतःपद नहिं कछुलेशा । हंस न देह न गेह कलेशा ॥
आदिआस्तिपदथीरजथारथ।निर्णयरूपप्रकाशप्रकाशक॥
थीरज आदि तत्त्व तेहि संगा । अहै प्रकाश विहार सुसंगा
भास प्रकाश बिंब अनुकूला । रूपभासते झांई भूला ॥
स्वतःथीरपद झांई बासा । भयो प्रत्यक्षतहां फुरिआसा ॥
आसा कोहँ कल्पना भयऊ।होत ज्ञान मन इच्छाठयऊ ॥
इच्छाशक्तिसो माया नामा।माया मध्यसों मनको धामा॥
मन माया दोउ युक्ति विचारी।कर्म विस्तारी स्थूलसंचारी
ताते भया स्थूल पसारा । कर्मजालको बहु विस्तारा ॥
हेशिष्य झांई प्रथमबेकारा।ताते आस्ति नास्तिअनुसारा॥
आस्ति नास्ति सम्बंधीभयऊ।हेशिष्य ताते जग निर्मयऊ॥
प्रथमा पदमो भयो विकारा । ताते ब्रह्म पदारथ सारा ॥
ब्रह्मभये ताते सुख नाहीं । नास्तिपदारथ नास्तिहिमाहीं॥
सो प्रत्यक्षशिष्य जानविकारा।ब्रह्माकार नास्ति अधारा ॥
कल्पना बासा सो सब माहीं।मन बासे चौरासी जाहीं॥
अनबनिजतननास्तिकोफांसा।नास्तिसनेहीनास्तिहिबासा
हे शिष्य हंसा भरम भुलाना।झांईमा बासा तेहि ठाना ॥
ताते यह पद नाहिंन थीरा । कल्पि २ चौरासी फीरा ॥
हे शिष्य प्रथम देह हंसाकी । तेहि देहते झांई झांकी ॥
झांई बिंब देहकी आभा । बसै तहां कोहँकी दाभा ॥

बिंबाकार भयो परचंडा । इच्छाते कीन्हों ब्रह्मंडा ॥
हे शिष्य याते ब्रह्माकारा । हंस देहको प्रथम विकारा ॥
सो प्रथमापद मिथ्या झांई । कैसे हंस दशाको पाई २१८॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—ऐसे अमृतमय वचन सुनी, शिष्य अति सुखपाय ॥
बोले हो गुरु मर्म सब, जानेउं तव प्रभाय ॥ २१९ ॥
अब साहेब कछु शंका भई, कहो दीन प्रतिपाल ॥
हंस देहकी बिंबते, झांई संधि औ काल ॥ २२० ॥
जेहि देहिकी बिंबते, येतो भयो उपाध ॥
सो आस्ति कैसे भयो, कहहु जथारथ साध ॥ २२१॥

गुरु उत्तर ।

दोहा—हे शिष्य अतिहि उपाधि जो, झांई ते परकास ॥
दुतिया भासो याहिको, रूप बिंबकी आस ॥ २२२॥
रूप है सो प्रतिबिंब नहीं, बसो सोई प्रतिबिंब ॥
ताते हे शिष्य रूपको, नाशिवंत है कीव ॥ २२३ ॥

छन्द अरिल ।

आस्ति हंस नास्तिरूप, उधमज प्रतिबिंब अहै ॥
झांई संधि काल लै सो, ब्रह्मको प्रकाश भो ॥
ब्रह्मते विस्तार जगत, सब जानहू तुम ।
आस्ति बस्यो नास्ति मांहि, ताते उजबास भो ॥
बिंब नास्ति झांई नास्ति, संधि काल जगतनास्ति ।
आदि मध्य अंत सर्व, नास्तिको तमास भो ॥

आशा बासा कल्पना, सोऊ नास्ति जानहू तुम ।
सुबुद्धिशिष्य तेरीआसा बासामें, तूहि निरासभौ२२४॥

छन्द कवित्त ।

समुझि देखु चित्त त्यागि, नास्तिसुखजो अनित्यपागि
गुरु चरणन करु संगति, संत साधुकी ॥
हो मिस्कीन, राखु निश्चय आकीन ॥
तू तो जमापद बाकी, खर्च काहे अबादकी ॥
मन मनसा दोऊ, लौंडि निकारि डारो ॥
मारो हंकार तृष्ण, कुबुद्धि कुबादकी ॥
रूप हंस धार, ठहर कीजिये विचार ॥
यार बफादार दीनानाथ, दीनबन्धु गुरु साधुकी२२५॥

दोहा--शिष्य ब्रह्म सिद्धांत मत, वेद बखाने सोय ॥
वेद मते जग सब चले, भले बुरे गुण जोय ॥ २२६ ॥
भलो होत है भलो लही, ब्रह्मअस्मि स्वरूप ॥
हे शिष्य देखु विचारिके, निबते हंता रूप ॥ २२७॥

चौपाई ।

झांई संधि कालका फेरा । बसै जीव निज नाहिंन हेरा॥
मनमनसाकेफंदे अरुझा।किंचितबिंबभाससों नासुरझा२२८

दोहा–भासो जीवरूपतेही, बिंबते अनबनि रूप ॥
हे शिष्य प्रथमा चरण, नास्ति ब्रह्म सो भूप ॥२२९॥
प्रत्यक्ष गमनत यह, नास्ति सनेही नास्ति ॥
बंदनिये सब जालके, हंस प्रगट पद आस्ति॥२३०॥

सोरठ--हे शिष्य आस्ति स्वरूप, नास्ति रूप गुणमयजगत
छितराने सब रूप, ब्रह्म सनेही जीयरा ॥ २३१ ॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—साहेब दीन दयाल प्रभु, मैं जानेउं तेव भेव ॥
बिंब प्रगट झांई भई, झांई ते ब्रह्मदेव ॥ २३२ ॥
करुणारवन कृपाल तन, जानि परी मोहि येह॥
हंसरूप जानेउ भले, मिथ्या मनको नेह ॥ २३३ ॥
अब कहिये प्रभु हंसको, प्रथमा रूप बिहार ॥
खानी बानी कौनसी, कौनसी वस्तु अहार ॥२३४ ॥

गुरु उत्तर

दोहा—सुन शिष्य हंसा देह, जीवरूप धीरता युक्त ॥
ताको व्यवरा यह अहै, जथा अनुक्रम युक्त ॥२३५॥
हंस आस्तिता निज मर्म, रूप तद्रस्याकार ॥
सेवक एक अनेकको, नहीं तहां संचार ॥ २३६ ॥
हंस आस्ति जो जमा विधि, जमा हंसपद थीर ॥
तेहि पद प्रेम प्रवाहते, तारण गुरुमत धीर ॥ २३७ ॥
जमा हंस अबलसो थीर, बिंबसे भासै और ॥
और भासते ठौर गई, भूलि भटकि बहु दौर ॥२३८॥
सो नाशक है कल्पना, कल्पित नाना जाल ॥
जालमध्ये वेहाल जीव, भये अनेकन हाल ॥ २३९॥
जालमध्ये बहुते जीया, त्राहि त्राहि बिलखंत ॥
सो गुरु पारख लहतही, नाशक नास्ति लहंत॥२४०॥
कबीत—आनंद महल अबास सोहावन, भौन साधु समाज बिहारा ॥ प्रेम प्रत्यक्षसो स्वच्छ अलंकृत, धीरज

दया अरु शील बिचारा ॥ बीर स्वभावसों नष्टप्रमाणसो, बालक रासको भूमि अधारा ॥ ये गुण लक्षण लक्षित तेही, गुरुपद श्रेष्ट न आन अचारा ॥ २४१ ॥

दोहा--ताहि जमासों थीर पद, बिंवते भिन्नाकार ॥
बोध सोई पद गुरु है,अबोध शिष्य सो बिहार २४२॥
गुरु शिष्य बोधित बोधना, हंसन दुःख मिटाव ॥
हंस लहै शिष्य सुख जोई, सुनिये सोई प्रभाव२४३॥
आस्ति आत्माराम यह, नास्ति सनेही दीन ॥
गुरुमुख मिटै सो दीनता, काल कला होय छीन२४४॥
कला काल छूटे जो सुख, सो सुख हंस बिहार ॥
गुरु शिष्यको सम्बाद शुभ, सोई वाक्य विचार २४५
गुरुसेवा अरु साधुकी, देहे शिष्य तेहि होय ॥
सोई कृपा बिहार है, शिष्य लेहु मल जोय॥ २४६ ॥
साधु समागम प्रेम विधि, कथन गुणन समूह ॥
निछावर करु कल्पना, ब्रह्म अहंता जूह ॥ २४७ ॥
ऐसे आहि तहां हंस गुरु, भाखत हंसन ज्ञान ॥
सो बिहार गुरु शिष्यको प्रत्यक्ष कियो बखान २४८॥
मन मायाकृत गुण गणन, श्वान विष्टवत त्याग ॥
अप्रमेय सुख ब्रह्ममें, भूलि न इन्ह अनुराग ॥ १४९॥
हे शिष्य साधु समाजमों, अहै प्रत्यक्ष बिहार ॥
अनुमानी बहु नास्ति मत, बहे घोर अंधार ॥२५०॥
शिष्य आस्ति पद प्रगट यह, गुरुमुख जानहु सोय ॥
ध्यान अनुमाने ब्रह्मसुख,कहबे मात्रित होय॥२५१॥

मंगल मूरति साधु गुरु, सो सब सुखकी खान ॥
ताहि त्याग बहुतक बहे, ब्रह्मसिंधु सुख मान ॥२५२॥
ये नहिं जानहि जीवरा, हौं को को यह आहि
साधु समागम त्यागिके, परे चौरासी माहि ॥२५३॥
अनबनि जतन नसायके, संग्रह ब्रह्म करेह ॥
मन माया संयुक्त मिली, धरे अनेकन देह ॥ २५४ ॥
ऐसो मत जग विदित है, बहु निर्णय यहिकेर ॥
लखै जो गुरुमुख धीर धारि, मिटै चौरासी फेर॥२५५॥
हंस विहार सो साधु संग, गुरु निर्णय लौलीन ॥
कला काल लागै नहीं, पारख दृष्टि प्रबीन ॥२५६॥
मन बच कर्म गुरु साधुकी, आज्ञामा समुहाय ॥
द्रव्य जुरै रक्षै तिन्हें, वस्त्र अन्न जल प्याय ॥ २५७॥
हे शिष्य उत्तम शिष्य यह, जिन्ह कीन्हा परमान ॥
भक्ति सोई अधिकार पद, मानुष सो बुद्धिमान॥२५८॥
हमहूँ हे शिष्य यह कर्म, कीन्हों गुरु अभ्यास ॥
सो तोहि व्यवरा भाखेउ, हती वस्तु जो पास॥२५९॥
वंदन चरणामृत गहन , महा प्रसादी पाय ॥
मिष्ट वचन आनंद युत, पोषण विधि सब लाय२६०॥

शिष्य प्रश्न।

सोरठा—हे साहेब असरन शरण, कहेउ जथारथ भेव ॥
हंस कीन्ह तारण तरण, हंस बिहारको मर्मसब२६१॥
अब कहिये विचार, हंस दृष्टिका मोहिश्रति ॥
कैसे लक्ष संचार, प्रगट पुहुमी गुरुरूप प्रभु ॥ २६२॥

मो सम दीन न कोय, तुमसमान साहेब गनी ॥
करहु कृपा चित सोय, जाते पारख श्रौढलही २६३॥

गुरु उत्तर।

दोहा—हे शिष्य उत्तम प्रश्न यह, मैं बहु हिये सुख मान ॥
गुरु संगतके कियेते, फल प्रगट भये हिये आन॥२६४॥
तोर मर्म जानेउ भले, अति प्रसन्न सुन शिष्य ॥
वेद मते बहु कल्पते, पै निर्णयसो दीख ॥ २६५ ॥
अनुमानी आसक्तको, कान मतो परमान ॥
लखेउ जथारथ गुरुसमुख, कहौं सुनोधरिकान॥२२६॥
मन मायको फेर बहु, अंडो जाल अति गूढ ॥
सो प्रपंचते भले लहू, जानि त्यागि तेहि मूढ॥२६७॥
हे शिष्य दृष्टि हंसकी, पारख सबहीं केर ॥
ठहरै रमिता भूमिपर, तजि चौरासी फेर ॥ २६८ ॥
पारख सबकी थीर पद, ठहरि रहै सतसंग ॥
मन मायाकृत गुणनको, देखै मिथ्या भंग ॥ २६९ ॥
गुरुमुख साधु समाजमह, निर्णय लख बनाय ॥
द्रष्टा हंसा परख लही, सतसंगति बलपाय ॥ २७० ॥
मैं मेरी संकल्प यह, सोई दुखकी खान ॥
ताहि त्याग गुरु परख लह, द्रष्टा सोई सुजान॥२७१॥
पारख दृष्टि प्रताप बल, पायो द्रष्टा दृष्ट ॥
श्रेष्ठ दुस्त बल परखते, होवै त्याग कनिष्ट ॥ २७२ ॥
संकल्पे जग है भयो, मिटै संकल्प नसाय ॥
एक अनेकको रहत यह, देखु दृष्टिबल पाय ॥२७३॥

चौरासीके मध्यमें, चारिउ खानि प्रचंड ॥
तेहिमा मानुष रूपको, राखै दृष्टि अखंड ॥ २७४ ॥
सो प्रकाश प्रभुकेलखेते, मानुषबुद्धि फरियाय ॥
मानुषते सब होत है, द्रष्टा मनुष्य पदपाय ॥ २७५ ॥
ऐसे उज्वल दृष्टिबल, मानुष रूपहि जान ॥
ताते पारख सुबुद्धि तब, होय जथारथ जान ॥२७६॥
लखै दृष्टिबल परखत, मानुषरूप सो होय ॥
बन्दनिये जेहिपद सोई, निश्चल परसमसोय ॥२७७॥
हंस द्रष्टा पद थीरलही, परखाये सब जाल ॥
सदा सुखारी पारखी, नजरे नजर निहाल ॥ २७८॥
हे शिष्य ऐसे मत कहै, गुरु पारख बलथीर ॥
सत्यशब्द टकसार विधि, पारख कहहिं कबीर॥२७९॥
सो पारखके लहेते, सब दुख तुरित मिटाय ॥
अनुमानी अनुमानमहँ, बहुतक गये बौराय ॥२८०॥
मानुष द्रष्टा पारखी, सबके पारख कीन्ह ॥
जमा आपनी राखिके, पारखबल गुरुचीन्ह ॥२८१॥
सब जीवनके मर्मको, जानै द्रष्टा सोय ॥
सोई दृष्टि गुरु परख लही, सुधरै मानुष जोय॥२८२॥
हंतामा सबही परे, हंता देखै साध ॥
हंताते न्यारा रहै, गुरुमुख दृष्टि अबाध ॥ २८३ ॥
देखन है बहु भांतिका, तामें निर्णय येह ॥
एक देखत है जगत सब, एक ब्रह्मसुख नेह॥ २८४ ॥

जगसुखअनित्यविचारबुद्धि, ब्रह्मसुखहिलौलीन ॥
द्रष्टा दोऊ सुखनको, मिथ्या जानहु लीन ॥ २८५ ॥
अपनी दृष्टि प्रताप बल, गुरु उपदेश विशेष ॥
सत्संगति सुख नित्यप्रति, द्रष्टा पारखी देख ॥२८६॥
सोई पारख प्रगट गुरु, जहां नहीं अनुमान ॥
सुख प्रत्यक्ष पूरण अमल, रहै जथारथ जान॥२८७॥
हे शिष्य ऐसे हंसकी, दृष्टि स्वतः आनंद ॥
ते आनंदकी प्राप्तिको; द्रष्टा लहै स्वच्छंद ॥ २८८॥
ताते हे शिष्य साधुको, संग करहु निःकाम ॥
गुरुमुखनिर्णयके लखै, धोखा मिटै तमाम ॥ २८९ ॥
कालकला ब्रह्मास्मि जे, महावाक्य वेदांत ॥
समुझहु बहु मत वेद विधि, नाशकके यह भ्रांत२९०॥

चौपाई ।

काल कला बहुतक प्रचंडा । जाकी डर कंपै ब्रह्मंडा ॥
सो गुरुपारख लहत नसाई । पारख लहै दृष्टि फरियाई ॥
अनबनि जतन करैं यमराजा। मन माया परे कारि साजा ॥
नाना मतिकरि भोरे जीवा । राखैं सेवा निजबसि कीवा॥
सो द्रष्टा गुरु पारख पाई।तेहिके निकट भरम नहिं जाई॥
तेहि जालते बांचे साधू ।मन माया कल्पित मेटै व्याधू ॥
सुधरे गुरुसेवा शिष्य होई।परख लहै दृष्टि पारखी सोई॥
पारख गुरु प्रताप पुनि जाना। ते पुनि द्रष्टा परख समाना॥
ते द्रष्टा ते गुरुपद थीरा । ते द्रष्टा गुरु प्रगट शरीरा ॥
ते द्रष्टा साधू जग मुक्ता । ते द्रष्टा शिष्य गुरुमुख युक्ता॥

हे शिष्य गुरु पारख अपनावो।जाते ठहरि हंस पद पावो॥
एक अनेक त्यागि ब्रह्म झांई।रहहु ठहरि पारख गुरुमांही॥
सुनहु जथारथ गुरुमुख बानी । देखु दृष्टिनिर्णयसमुहानी
निर्णय जथा जीवके संगा । होखै तबहीं कालगुण भंगा॥
काल संधि झांईका फेरा । मिटै लखै गुरुमुखहिं सबेरा ॥
दीनबन्धु गुरु दीन दयाला । ताकी कृपादृष्टि लखुजाला॥
लखै जाल सो थीर पद पावै । फेर मिट ना जुइनभरमावै
ताते पारख शरण सुखाला। लखहु सुलक्षणहोहुनिहाला॥
मन मनसासंकल्पमिटावो।काल कला लखिगुरुअपनावो
हे शिष्यहंसदृष्टितबहोई । गुरुमुख ठहरै हंसपद जोई२९१

शिष्य प्रश्न ।

दोहा--सुनि गुरुवानी अति सुहृदय, कहैशिष्य करजोर॥
साहेब दीन दयाल प्रभु, भाखेउ जथारथ ठौर॥२९२॥
मैं आयेउं राउर शरण, दीन गरीबनिवाज ॥
शिष्य आहि लघोत पद, कैसे गुरु पद आज॥२९३॥
हंस पदारथ सार सो, कैसे पावै येह ॥
शिष्य भाव सादर्श होय, पद अछिन्न होय नेह॥२९४॥
जाते साहेब धर्मता, शिखापन न मिटाय ॥
रहै राउरी टहलते, हंस थीरता पाय ॥ २९५॥
यह अनुक्रम जथा विधि, दीजै मोहि बताय ॥
जाते मार्ग प्रत्यक्ष तव, हंता नहि समुहाय ॥ २९६ ॥
शिष्य गुरुपद नेहता, दिन दिन बढै दयाल ॥
सहजहि बंधन मिटै, युक्ति कहो ततकाल ॥ २९७ ॥

स्वामी भाव मोरे हृदयते, कबहुं न होय अभाव ॥
युक्ति बतावौ तौनसी, लहै न कालको दाव ॥ २९८ ॥

गुरु उत्तर ।

दोहा-- हे शिष्य उत्तम बुद्धि तव, भल सो पूछोमोहि ॥
कहौं जथारथ साधुमत, प्रगट देखावों तोहि॥ २९९॥
सांच कही हंता लहै, जीवरूप बिनसाय ॥
बिनसे चौरासी भये, ब्रह्म अस्मि कहाय ॥ ३०० ॥
एक एक वर्णन करों, सुन शिष्य सावध होय ॥
निर्णय शिष्य जथार्थ लहु, भरमत्यागि है सोय३०१
प्रथमा पदमों नेकता, भयो जथा विधि सोय ॥
सो सब तुम जानेहु भले, लखेहुआपनोलोय॥३०२॥
कारण बढवत बहु बढो, भये अनेकन रूप ॥
सो अनेकता एकमों, पुनि अनेक स्वरूप ॥ ३०३॥
बहै सो ब्रह्म अनेक होय, रचो जाल विस्तार ॥
पुनि सो आपै एक होय, करै अनेक संघार ३०४ ॥
तेहि जालमें जीयरा, परे पाय दुख भूरि ॥
जीव भरोसे चैनके, पर परी आंखिमें धूरि ॥३०५॥
दुखित भये अकुलायके, ढूंढै निज कल्यान ॥
सांच धीरता उर बस्यो, देख्यो पद परवान॥३०६॥
सो प्रमाण पद हंसको, एकोहं ब्रह्म जाल ॥
आनंदित भौ सांचमों, शिष्य सो प्रथम दयाल३०७
दुखिया सो सुखिया भयो, सो पद शिष्यतवआय॥
बोधेउं हंस जानि निज,पद सो गुरु कहाय॥३०८॥

मन माया संकल्पको, निरसन भया अपार ॥
बोध हेतु दुख मिटनको, गुरुमत प्रगट विचार ॥ ३०९ ॥
गुरुमत लखै सो शिष्य है, बोधे सो गुरुदेव ॥
तारण तरण सो आपुही, एकै हंसा भेव ॥ ३१० ॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

हंसा ऐसो गुरुमत भारी । लखे ते भवमें आवत नाहीं ॥
भवके बहोत बेगारी । शिष्य शिखापन गुरुकी माने ॥
गुरु साधुनके आज्ञाकारी । तेई मुक्ति पदारथ पावै ॥
यमते रहनि निन्यारी । सत्य भेष सत्य रहनि साधुकी ॥
संत दर्श अविकारी । ते अधिकारी गुरु पारखके ॥
निर्जिव धोख निवारी । गुरुमुख सुख अनुमान रहित पद ॥
बसै आनंद अटारी । प्रेम भाव साधुन सेवकाई ॥
कहहिं कबीर पुकारी ॥ ३११ ॥

दोहा—हे शिष्य निर्णय जो लखै, तेही भया निहाल ॥
तेई गुरु तेई शिष्य गुरु, तेई साधु दयाल ॥ ३१२ ॥
निर्णय जथा प्रमाण जिन, लहै दृष्टि निजु सोय ॥
त शिष्य हंता क्यों परै, रहै अपन पद जोय ॥ ३१३ ॥
गुरुमत जाके उर बस्यो, निश्चल भयो सो जीव ॥
हे शिष्य अधिकारी अहै, साधुनके गुरु पीव ॥ ३१४ ॥
गुरु साधुहिं सन्मानही, मिथ्या जालहि त्याग ॥
सांच हृदयदायासहित, निज सुख गुरु अनुराग ३१५ ॥

दीन दयालको मत लखै, शिष्य स्वतःपद थीर ॥
साधुन गुरुसम जानिके, सेवहि मन वच धीर ॥ २१६
साधु भेष जग विदित है, तेई रूप गुरु कीन्ह ॥
सो प्रत्यक्ष पद छाडिके, अनुमय कालअधीन ॥ २१७ ॥
साधुनको जल अन्नते, वस्त्र सहित करु स्वच्छ ॥
शक्ये जथार्थ अनुक्रमना, गुरुसेवक शिष्य स्वच्छे २१८
गुरु साधुपद दीर्घ जग, हे शिष्य सबन प्रमान ॥
त्रिविधि ताहि सेवन करे, आपु दासपद मान २१९ ॥
हे शिष्य जे दासातने, हंताते ते भीन्न ॥
तेई गुरुपारख लहै, हंत कल्पना कीन्ह ॥ २२० ॥
तेई उत्तम पारखी, गुरुमतके अधिकार ॥
हंता नासै शिष्य जो, हस थीरपद सार ॥ ३२१ ॥
दास भाव सेवा सहित, भक्ति साधु गुरुकेर ॥
यह प्रकार हसा बसै, सेवकको नहिं फेर ॥ ३२२ ॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

झगरा एक बढो राजा राम । जो निरुवारै सो निर्वान ॥
ब्रह्म बडा कि जहांसे आया। वेद बडा कि जिन उपजाया ॥
ई मन बडा कि जेहि मन माना। राम बडा कि रामहि जाना ॥
भ्रमि भ्रमिकबीराफिरैंउदास। तीर्थबडाकितीर्थकादास ३२३

दोहा—यह दृष्टांत अनुक्रम, है व्यवहार विचार ॥
हंता मिटै तो दासपद, भिन्न आहि व्यवहार ॥ ३२४ ॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—हे प्रभु कृपा निधान गुरु, जानेउं यह सब रीति ॥
अब कहिये मत विमल निज्, गुरु उपदेश संप्रीति ३२५
गुरुपद जानेउं नीकि विधि, अनुक्रम कहु उपदेश ॥
जाते तव पद प्रीति अति, दिन दिन सरस सुहेत ३२६

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

सुन शिष्य सावधान मत येहा। गुरुपद लखहु दीर्घ संदेहा॥
जो भाखेउं तै नीके जाना । साधु गुरुचरित्र विधिनाना ॥
अब सुन गुरु उपदेश बताऊं। आपन रूप लखि कृपाकराऊं
शिष्य वासना जहां जहां होई।तहांतहांसहित जथारथजोई
ऐसन विधि तेहि पारख देई।चित नहिं दुखै नीक करिलेई॥
पहिले जहां बंधावा होई । ताहि सराहि मिले भलसोई॥
जब ताकर मत होय प्रऊढा। मिलिके पारख लावे ऊढा॥
जब परखै तब आप उचाटा । उडै थिति नहिं पावै बाटा
अथक भय पछ छूटे तासू । तब निजमतपारखपरकासू॥
निर्णय भूमि ताहि ठहराई । पारख दृष्टिकै ताहि बुझाई ॥
बूझत कछु जो कसर रहाई । पुनि सो जीव कालमुखजाई॥
काल कला तेहि नीकि दर्सावै।कसर खोट तेहि नीकिबतावैं
रती रती दर्साव करावे । अबुधकेसंग अबुध होयजावे ॥
ऐसे जानि आपनपद भाई। शिष्यहि लेइ आपन अपनाई
कर्मजालको बहु विस्तारा । ताहिभलीविधि देई विचारा ॥

कर्महिमांहि घीन अरुऊंचा।ऊंचहु ऊंच नीच सो नीचा॥
भलि भांति लखै कर्मकहानी।मान महातम भरम निसानी
ऐसे भांति सो कर्म छुडावै । कर्म जालसों जीव बचावै॥
कर्म जालके बासी जीयरा । कर्म मिटै तो धर्म घनेरा ॥
धर्म साधिको बहु विस्तारा । धर्म रहट जीवन बहु मारा॥
धर्म अंग बहु योग कमावै । थिति पावै सामीप रहावै ॥
तीरथ व्रत सेवा बहु लावै । ऋद्धि सिद्धि करामात मनावै॥
संयम नियम प्राण आकर्षण। योग धारणा हठ आकर्षण॥
अनबनि चाल अनेक प्रकारा ।धर्म जालको जो अधिकारा
आपु नसै पुनि और नसावै।नाटक चाटक विद्या लावै॥
पुरुष राम सबहीं है नारी । ऐसो कहै रहै कहि भारी ॥
गुप्त कहानी हरिकी कहई। प्रत्यक्ष साधुगुरुमतनअचरई॥
तेहिको पारख निजुकै जानै। तेहि सेवकसों प्रीति जोठानै
ठान प्रीति ताहि सम होई।सखीसैनलखि सखी समोई॥
सैन बैन एकांत करि पावै । कसर देखाय सुमति प्रगटावै॥
जबते जाइ कसर ठहराई। छोडै तुरित न नेरे जाई ॥
तब पारख निज मत प्रगटावै। ताको रूप प्रत्यक्ष लखावै॥
लखै रूप रूपसो होई। ठहर रहै आपन पद जोई ॥
लखै सुलक्षण आदि कहानी। जाते जीव होय निजुखानी
हे शिष्य धर्मजालको भाऊ ।कहेउं जथा उपदेश प्रभाऊ॥
यहूते अति ज्ञाने प्रचंडा।तेहु सुनहुशिष्यप्रगटब्रह्मंडा॥२२७
दोहा–धर्म त्यागि बहु जीयरा, ज्ञानी स्वयं प्रकास ॥
ज्ञान मते मत प्रगट है, ब्रह्मास्मि पै बास ॥ २२८ ॥

ऐसो खानि कलेशता, पाये बहुतक जीव ॥
स्वयं अस्मि हंता सहित, बसै और करिपीव॥३२९॥
तेहि उपदेशन कौन विधि, सुनहु शिष्य दै कान ॥
ताही मत बासीनको, थापै गुरुके समान ॥ ३३० ॥
शिष्य जानि मत देइ वह, अंतस अपनो रूप ॥
मेल परस्पर कियेते, देखै मत सो अनूप ॥ ३३१ ॥
देई बहुत स्याबासता, ताहि हर्ष बहुतेस ॥
पुनि शंका तापर करै, ताहि मताके देस ॥ ३३२ ॥
शंका जौन प्रकारकी, ब्रह्म एक बहु जीव ॥
एक ब्रह्मते जीव बहु, काहे भयउ को कीव ॥३३३॥
आप स्वतः प्रकाशमें, ब्रह्म हंत कर्तार ॥
जीव सृष्टि कौने किया,दुख सुखको दातार ॥३३४॥
दुख सुख ब्रह्महि नहिं कहै, शिष्य कहहु तेहि पाहि ॥
जीव भूलते है सही, परसि ब्रह्म पद आहि ॥३३५॥
भयो जीव यहि ब्रह्मते, पुनि ब्रह्महि लौलीन ॥
तिमि उपाधि सब मेटिके, जल अधार जस मीन३३६
हे शिष्य अनंत दृष्टांतते, मिलिबोधै तेहि फेर ॥
झांई दृष्टि मिटै जब, स्वयं स्वरूप लखि हेर॥३३७॥
जब सो थकै निज कसरलखि,धोखा सब मिटि जाय।
होय उच्चाट ब्रह्मजालते, हंता कल्पित भाय ॥३३८॥
हे शिष्य तीनिउ जाल यह, तोहि कहेउं उपदेश ॥
मिलि हिलि निज मत प्रगट करि,मेटै कालकलेश३३९

इन्ह तीनहु जालनते अधिक, परम हंस मत आहि ॥
तेहि अनुरागी जीयरा, मन वच ब्रह्म कहाहि॥३४०॥
ब्रह्म भरम ईश्वरहु भरम, जीव भ्रम बसि जोय ॥
ज्योंका त्यों बतलावहीं, व्याप नास्ति पद सोय ३४१
सुखमें बासा जानिके, गये जीव तहां फूल ॥
ताको उपदेशन कठिन, वचन रचन कहै भूल॥३४२॥
हे शिष्य ताके शिष्यता, दासातन करु नीत ॥
कृपा करै निज मत कहै, ताहि देखु अति हीत॥३४३॥
हितके सेवा कियेते, सो हृदया न दुराव ॥
दूरै न तोरी दृष्टिते, पर उपदेश स्वभाव ॥ ३४४ ॥
जब ताको निज मत लखै, शंका करै तेहि मांहि ॥
वह शंका मानै नहीं, निज मत अति तेहि आहि३४५
निर्बचनी पद थीरता, सोहँ हंसा एक ॥
सो अनेक कैसे भयो, पुनि कैसे सो एक ॥ ३४६ ॥
याके बहु उत्तर करै, समुझावै पुनि सोय ॥
हे शिष्य ते जानै भले, उत्तर प्रश्न समोय ॥३४७॥
उत्तर प्रश्न अनेक विधि, निर्णय सहित जथार्थ ॥
उपदेश तेहि मेल विधि, लखैआपनो अर्थ ॥ ३४८ ॥
काहेते शिष्य मेल विधि, उचटै नहीं सो जीव ॥
वह तू जमा सो एकही, ताते मेलहु कीव ॥ ३४९ ॥
मिलि लखेते उचटै नहीं, एकता सुखकी खानि ॥
सत्य शब्द टकसार विधि,निर्णय कही बखानि ३५०

सत्य शब्द टकसार ।

साखी—दादा भाई बापकेलेखो, चरणन होइ हौं बंदा ॥
अबकी पुरियाजोनिरुवारै,सोजनसदाअनंदा॥३५१॥
दोहा—ऐसी उपदेशन युक्ति, दीन्हीतोहिबताय ॥
जाते उचटै नहीं सो, लहै हंस पद आय ॥ ३५२ ॥
ठहरावै तेहि पद निजु, सो कृपाल गुरु देव ॥
अनुमानी संकलपना, नाश लहै बिनु भेव ॥ ३५३॥
गुरु उपदेशन अनुक्रम, तो कह दिये बताय ॥
इहि अनुरागी जीयरा, निज पदमा ठहराय ॥३५४॥
सुन शिष्यगुरुमत प्रगटयह, कहैसोबन्दीछोर ॥
दुखित जीव व्याकुललखै,कियेकृपानिजओर॥३५५॥
ऐसी विधि उपदेशकी, परिपाटी यह आहिं ॥
गुरुमत करहु प्रत्यक्ष तुम,कालकलाके माहिं॥३५६॥
निर्णय मत अनुमानहत, लहै जीव सुख चैन ॥
ब्रह्म ईश माया मनहू, बसै न इनकी ऐन ॥३५७॥
गुरु अनुरागी जीयरा, तारण तरण उदार ॥
भोंदू काल जंजालके, सकलों सेधनहार ॥३५८॥

चौपाई ।

काल कला सब गुरुसमुझावै । निर्भय हंस परमपदपावै ॥
दृष्टिपरै तबकालको जाला।सदासुखारीपरख निहाला३५९
दोहा—असरन शरण उपदेशते, होवै मानुष येह ॥
मानुष गुरु उपदेशते, देखे सबकी देह ॥ ३६०॥

सो प्रकाश पूरण अमल, गुरुमुख पावै सार ॥
तेही कर्म उपदेश शिष्य, महाजाल निरुवार॥३६१॥
जाकी बुद्धि जहां मंडी, तहां पावै विश्राम ॥
सो याके चितते उठै, उपदेशीको काम ॥३६२॥
ताको कहिये पारखी, बन्दी छोर दयाल ॥
तेई साधु तेई गुरु गनी,तेईशिष्यसो निहाल ॥३६३॥
सेवा लावै साधु गुरु, पूजै आठौ जाम ॥
तीरथ चरणामृत गहन, वीरा अचल मुकाम॥३६४॥
बाना दीन दयालको,छाप तिलक उर माल ॥
उपदेशे जीवन सदा, धारे रूपसो हाल ॥३६५॥
दीन उद्धारन आस्ति पद,साधु गुरु प्रत्यक्ष ॥
श्रवण करै ताके वचन,मननिजुकै गुरुलक्ष ॥३६६॥
अध्यासन साक्षातता, निर्णय जथा प्रमान ॥
साक्षातहु साक्षातता, अहै जथारथ ज्ञान ॥ ३६७॥
भेद त्यागि इमि भक्ति गुरु, करै सोई जिज्ञास ॥
पावै शिष्य सो शांतपद, ठहरै गुरुमत ध्यास॥३६८॥
उपदेशनकी युक्तिता, गुरु शिष्य केर संदेश ॥
इमि उपदेशै शिष्य जग, सत्य शब्द उपदेश॥३६९॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—हे प्रभु दीन्ही शिष्यतुम, उपदेशकी चाल ॥
सो मैं नीकेही लह्यौं, साहेब दीन दयाल ॥ ३७०॥
अब कहिये करुणारवन,थीर कौन पद आहि ॥
स्वतःहंस आनंद पद, पावै केहि पद मांहि ॥३७१॥

केहि पद पाये कृपानिधि, एक अनेकको भाव ॥
मिटैरहै ठहराय सुथिर, परख दृष्टिको पाव ॥३७२॥
सो साहेब बिस्तार युत, कहिये जथा प्रमाण ॥
निर्णय सहित सो भाखिये, जाते होय कल्याण३७३॥

गरु उत्तर।

दोहा--सुन शिष्य हंसको थीर पद, जैसे जलको सेत ॥
सो कोई सिंधु कोई सरिता, बापी कूप घट पोत॥३७४॥
समुद्रथारसुतरंगयुत, मेघ करे सो पान ॥
बुंद होय वृषें धरणि, नदिन सहित समान ॥ ३७५॥
ठौर ठौरसों समेटिकै, बसै सागर खार ॥
तैसे हंसा ब्रह्ममें, उपजै जीव विहार ॥ ३७६ ॥
पुनि सो प्रापत ब्रह्म जीव, जैसे सागर नीर ॥
रहट खानि यह फेर है, ठहरे नहिं सो नीर ॥३७७ ॥
स्रोत नीर किंचित अहै, मिष्ट सुरस अरु शीत ॥
सो नहिं सागर मिलत है, नहिं मेघनकीभीत ॥३७८॥
तैसे हे शिष्य ठहर पद, अहै यह सब रूप ॥
द्रष्टा होवै सबनकर, हंकार तजि स्वरूप ॥ ३७९ ॥
वचन सतगुरु यथाविधि, कहैं सुमारग चाल ॥
आस्ति आत्माराम यह, कोहं कोहं जाल ३८० ॥
मन माया पद देखिके, पारखे द्रष्टा होय ॥
निर्णय जथा प्रमाण लखहु ठहर पद सोय३८१॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

संतो ठहरिके करहु बिचार । ठौर निज सुखदाई ॥
बिना विचार सकल जग जहंडे। थिति कहुकौनकहांपाई॥
माथे व्याप संधिके घेरा । विष बौराने समुदाई ॥
ज्ञानी भक्त योगी कहलावे । मर्म महातम भरमाई ॥
त्रिदेवा अधिकारि जगतके । त्रिविधि भेपमनकुटलाई ॥
चीन्ह न परी घात मनुवाके । मृतक भये नर बौराई ॥
निर्णय तिलक लिलाट विराजै । राजकाजविधियुक्ताई ॥
सो प्रपंच विदित है जगमें । जहंडे और न जहंडाई ॥
विष्णु दयाके रूप कहावैं । कंठी कंठे दिखलाई ॥
सो विख्यात प्रगट हुये जगमें । विषयवैरसंगकुशलाई ॥
जतिको डिंभ जो हरको देखा । कामारी दृढ फैलाई ॥
खुली कांछ कामके माते । कहत न लागे सकुचाई ॥
जैसा कहै करै पुनि तैसा । सत्यशब्दसों अटलाई ॥
फंदा टूटै तब जीव छूटै । बिन गुरु जाल न दर्साई ॥
संत सदा सोई परमाणिक । जिन निजुघरकीसुधिपाई ॥
कहहिं कबीर चेतु नर बौरे । हुशियारदुखबिलगाई३८२

दोहा—बन्दीछोर कबीर गुरु, कहा वचन टकसार ॥
तेहि मत प्रगट पुनीत मन, राखै दुंदनिवार ॥३८३ ॥
हेशिष्य यह क्रमते करै, याको सदा विचार ॥
आस्ति आत्माराम है, नास्ति जगत विस्तार॥३८४॥

नास्ति मांहि ये आस्ति जो, लागे तेहू नास्ति ॥
याकी पारख ठहरिके, गुरुमुख लखै सो आस्ति ३८५
संकल्पे जग है भयो, मिटै संकल्प नसाय ॥
दोऊकी पारख करे, ठहरै दोऊ न कहाय ॥ ३८६॥
आस्तिसे देखे नास्तिको,व्यष्टि समष्ट्याकार ॥
समष्टि व्यष्टि दोऊ मेटै, गुरुमुखसोतदाकार ॥३८७॥
तदाकारसो आस्ति पद, सोई है कर्तार ॥
कर्ता कल्पै सब भयो, ब्रह्मसृष्टि जग झार ॥ ३८८ ॥
ब्रह्म आस्ति हंसा सोई, नास्ति रूपकी खानि ॥
त्यागै गुरुमुख परखलही,परखै खानि औबानि३८९॥

चौपाई।

हे शिष्य हंसन निश्चय येहा। ठहरै गुरुपद सहित सनेहा॥
बुरी बात जो दृष्टि समाई। तुरितहि त्यागै पक्षनाकरई ॥
निर्णयआश्रितजोजीवभयऊ। सोजीवनिर्णयजथारथठयऊ
अनुमानी अनुमानअहंता। परेकालमुख लहे नसमता३९०
सोरठ–अब कछु शंका होय,सो पूछहु शिष्य प्रसन्न चित॥
कहौं यथा विधि सोय,निर्णय सहित यथार्थ सुपद३९१

शिष्य प्रश्न।

सोरठा–साहेब गरीब निवाज,भाखेहु यथाविधि मोहिसों
बलिजाउं ये आवाज,जानेउं अनुग्रह मैं सकल॥३९२
अब कहु बन्दीछोर, लक्षण प्राप्ति मनुष्यके ॥
काल कलाके ओर, कैसे आदरसन रहै ॥ ३९३ ॥

चौकडी ।

सब जानेउं विधि पूर्व । ते सत साहेब धूर्व ॥
निर्णय कहहु व्योहार।जेहि होय भरम संघार॥२९४॥

गुरु उत्तर ।

गीतक छन्द ।

सुन शिष्य याके लक्ष जो, प्राप्त मनुष्य तन थीरके॥
जो आस्ति नास्ति विचार गहै, सत्य हंस जानहुहीरके
मानुष भये ते ठहरहिं, निज ठौर सह ततबीरके ॥
जेसुनहिंगुरुमतनिरखिनिर्णय, वचनसाहेबकबीरके२९५

तोमर छन्द ।

सुनु शिष्य कहौं समुझाय, तोहि ठौर देहुँ बताय ॥
तन लखहु मानुष येह, नहीं प्रापति दूजी देह॥२९६॥
दोहा—देह आस्ति पद प्राप्तिको, मानुष तन अधिकार ॥
मनुष्य लक्षणते सुनहु,सुन याको जो विचार॥२९७॥

गीतक छन्द ।

जे भये प्राप्ति मनुष्य तन,अब सुनहु लक्षण तासुके॥
बानी सबनकी अहै प्रत्यक्ष, देखु प्रथमा भासके ॥
सो सबनमा मत कहेउं बहु विधि, परख ताहि यथार्थहो
केहि हेतु भटकेहु अनेक धारन,बकेक्यों वेदार्थ हो२९८

चौपाई ।

सार शब्द गुरु निर्णय जोई।लखै दृष्टि निज अनुभयखोई ॥
होय जो विरक्त मतिधीरा।होय निर्बंध लखै पद थीरा२९९

दोहा—जो मानुष गृहिधर्मयुत, राखे शील विचार ॥
गुरुमुख बानी साधुसंग, मन वच सेवा सार॥४००॥
सेवक भाव सादर्श रहै, अहं न आनै चीत ॥
निर्णय लखे यथार्थ विधि,साधुनकोकरेमीत॥४०१॥
सत्य शील दयासहित, वर्तै जग व्यवहार ॥
गुरु साधुनके आश्रिता, दीन वचन उच्चार ॥ ४०२ ॥
बहु संग्रह विषयानको, चित्त नआवहि ताहि ॥
मधुकर यों सबजगत,घटि बढि लखिवर्ताहि॥४०३॥

चौपाई।

प्रीति सदा गुरु पारख करई ।संगति सदा साधु आचरई॥
उत्तममध्यम जगव्यवहारा।निर्णमसहितकरैअनुसारा४०४
दोहा—गृहीधर्म बड खटपटी।तामह रहैहुशियार ॥
लोक वेदकी रीति सव,करै सहित सो विचार॥४०५॥
जीव घात आदिक कर्म, करे न कबहूँ भूल ॥
सो रच्छा जीवन करै, प्रेम सहित अनुकूल॥४०६॥
बानी अप्रिय कहै नहीं, कहै सबन उपकार ॥
ठहरै पद बोधित गुरु, लावै भक्ति गोहार ॥४०७॥
चारि खानि बहु जीयरहिं, दुख दाई जो होय ॥
जुरै तो रच्छै जीवकह, असक रहै चुप सोय ॥४०८॥
यह प्रकार गृहिधर्मके, लक्षण दिये बताय ॥
अब शिष्य विरक्त धर्मके,लक्षण सुनहु बनाय॥४०९॥
विरक्त बोधै देह निजु, मैथुन त्यागे अष्ट ॥
ठहरै रमिता भूमिपर, बोधि कालता कष्ट ॥ ४१० ॥

कष्ट करै विषयानको, नष्ट न कतहुं होय ॥
भ्रष्ट बुद्धि त्यागे भले, अष्ट जाम लखु जोय ॥४११॥
अहंकार आनै नहीं, मैं उत्तम यह नीच ॥
एकत्व सबहीं सम लखै, मानुष खानिके बीच॥४१२॥

सत्यशब्द टकसार ।

शब्द ।

हंसा हो चित चेतु सकेरा । इन्ह परपंच कैल बहुतेरा ॥
पाखंडरूप रच्यो इन्ह त्रिगुण।तेहि पाखंड भूलल संसारा॥
घरके खसम बधिक वे राजा ।परजा क्याधौकरे विचारा॥
भक्ति न जानै भक्त कहावै।तजि अमृतविषकैलिनसारा॥
आगे बडे ऐसेहि बूडे । तिनहुं न मानल कहा हमारा ॥
कहा हमार गांठि दृढ बांधो।निशि वासर रहियोहुशियारा
ये कलि गुरू बडे परपंची ।डारि ठगौरी सब जग मारा॥
वेद कीतेव दोउ फंद पसारा ।तेहि फंदे परु आप विचारा॥
कहहिंकवीर तेहंसनविसरे।जोहिमामि लेछुडावनहारा ४१३

शब्द ।

वंदे करिले आपु निबेरा ।
आपु जीयत लखु आपुठौरकरु, मुये कहां घर तेरा ॥
यह औसर नहिं चेतहु प्राणी, अंत कोई नहीं तेरा ॥
कहहि कबीर सुनो हो संतो, कठिन कालकोघेरा४१४
दोहा—मन्मथ बुद्धिको ज्ञान जो, काल जालपरचंड ॥
ताहि लखै गुरुबुद्धिते, नहीं विरक्त गृहि दंड॥४१५॥

दोय प्रकार मन्मथ धर्म, गृहस्थाश्रम अरु साध ॥
दोउनको लाजीम है,गुरुमुख होहु अबाध ॥ ४१६ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

शब्द ।

नरको नहिं परतीत हमारी ।
झूठा बनिज कियो झूठेसों, पूजी सबन मिलि हारी॥
षट दर्शन मिलि पंथ चलायो, त्रिदेवा अधिकारी ॥
राजा देश बडो परपंची, रैयत रहत उजारी ॥
इतते उत उतते इत रहहू, यमकी सांड सवारी ॥
ज्यों कपि डोर बांधु बाजीगर,अपनी खुसी परारी ॥
इहै पेड उतपति परलयका, विषया सबै विकारी ॥
जैसे श्वान अपावन राजी, त्यों लागी संसारी ॥
कहहिं कबीर यह अदबुद ज्ञाना,को मानै बात हमारी॥
अजहूं लेउँछुडायकालसों, जो करै सुरति संभारी४१७

दोहा–अस विचार गुरुबोधको,जा घट होय प्रकास ॥
ते गृही गुरुरूप हैं, तरै तारु अन्यास ॥४१८॥

चौपाई ।

गृहीको है लाजीम सेवा । साधूको है त्यागको लेवा ॥
गृही सेवै गुरु औ साधू । दोहूनको है धर्म अबाधू ॥
निर्णय जो गुरुमुखहि सूना।ताहि मनन साक्षातहुगूना ॥
प्रेम लगावै आस्तिपद मांही।ठहरैपंचाइतगुरु पाहीं४१९॥

दोहा–पंचाइत गुरुन्यावकी, याको होय सहाय ॥
तब कछु ग्रहन साधुपद, सोई गुरुपद आय ॥ ४२० ॥

सत्यशब्द टकसार ।

रमैनी ।

येजियरा तैअपने दुखहि सम्हार।जेहिदुखव्यापिरहासंसार
माया मोह बंधा सब लोई । अल्पलाभ मूल गौ खोई ॥
मोर तोरमें सबै बिगूर्चा । जननी गर्भ वोद्रमा सूता ॥
बहुतक खेल खेलैं बहुरूपा।जन भँवरा असगये बहूता ॥
उपजिबिनसिफिरिजुइनीआवै।सुखकोलेशसपनेहुनहिंपावै
दुख संताप कष्ट बहु पावै।सो न मिला जो जरत बुझावै॥
मोर तोरमें जरै जग सारा । धृग स्वरथ झूठा हंकार ॥
झूंठी आस रहा जग लागी।इन्हतेभागि बहुरि पुनिआगी
जेहि हितके राखेउ सब लोई।सो सयान बांचा नहिं कोई॥
साखी– आपु आपु चेते नहीं,कहौं तो रुसवा होय॥
कहैंकबीर जोआपुनजागै,निरास्तिआस्तिनहोय४२१
दोहा–अब सुनु शिष्य समान चित,निर्णय युत गुरुज्ञान॥
उपदेशै जीवन सदा, आपु न हंता मान ॥ ४२२ ॥
प्राप्ति जीव इच्छा नहीं, केवल हंत छुडाव ॥
निज स्वरूप लखि दयायुत,दीन जानि अपनाव४२३
हे शिष्यजीव अबोध बहु, परे कालके जाल ॥
तेहि दाया निज और करि,बोधे सो दीन दयाल४२४
गृही साधु गुण लच्छयुत,काल कलाकी फांस ॥
बांचै जेहि उपदेश करि,गृही विरक्त भ्रम नास४२५॥
प्राप्ति पदारथ कारने, गृह कोई कोई साध ॥
गुरुमुख प्राप्ति भयो जहां, ठहरे तेहि अबाद ॥४२६॥

सुन शिष्य गुरुमत विमल अति, पावै गुरुसम होय ॥
गृहबाधा तेहि ना करै, रहै अपन पद जोय ॥ ४२७ ॥
और बिरक्त बुद्धिमान जो, पावे गुरुमत स्वच्छ ॥
ताहि न माया लूटि है, पारखमें सब लच्छ ॥४२८ ॥
अनुमानी दोऊ दिशा, चौरासी बसे नित्त ॥
ब्रह्म रहट संकलपना, परे सोई छिन चित्त ॥ ४२९ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

शब्द ।

कहोहोनिरंजनकौनेबानी।हाथ पांव मुखश्रवणजिभ्यानहीं
का कहि जपहुहो प्रानी।ज्योतिहि जोति ज्योतिजोकहिये॥
ज्योति कौन सहिदानी। ज्योतिहि ज्योति ज्योतिदैमारै॥
तब कहु ज्योति कहां समानी।चारि वेद ब्रह्मा जोकहिया॥
उनहुं न या गति जानी । कहहिं कबीर सुनो हो संतो ॥
बूझो पंडित ज्ञानी ॥ ४३० ॥

दोहा—बन्दीछोर सुजान गुरु, असरन शरण दयाल ॥
गुरु हंसन उद्धार हित, भाखेउ स्वपद कृपाल॥४३१ ॥
ऐसी रहनी जो रहै, तेई साधु गुरुरूप ॥
आप तरे तारै और, क्या विरक्त गृहि भूप॥ ४३२ ॥
गृहि विरक्त दोउ रूप हैं, निर्णयते एकै आहि ॥
गुरुमत अदल प्रकाशको, है प्रगट जेहि मांहि ४३३॥
तेई हंस प्रमाण युत, दीनबन्धु निर्धार ॥
बन्दनिये ताके चरण, सुनि शिष्य सहितविचार४३४

सत्य भेष सत्पद सहित, ठहरै आस्ति स्वरूप ॥
ते अधिकारी पारखी, साँचै गुरुमत भूप॥४३५॥
रहनि गहनि सत्य भेषके, हंस दशाशुद्ध होय ॥
गुरु बानी निर्णय सहित, लखैअपनपद जोय ॥४३६॥
ब्रह्म इश मायाजनित, मनउपाधि गुण खान ॥
ते उपाधि हंता सहित, हे शिष्य लेहु पहिचान४३७॥
प्राप्ति मत प्रगट सुयह, गुरुगम होवै नेर ॥
ब्रह्म जगत संशय सबै, मिटै चौरासी फेर ॥ ४३८ ॥
सुन शिष्य मानुष तने तू, अतिशय हेतु बढाव ॥
यही रूपते सिद्धता, प्राप्ति होत ठहराव ॥ ४३९ ॥
ठहरै बुंद समुद्रता, दुई उपाधि मिटि जांय ॥
गुरुमत न्यावप्रत्यक्षशिष्य,निर्णय लखहु बनाय४४०
या रहस्य युत जे जिया,ते उर दया लहंत ॥
धीर विचार औ शील गुण, हंसहि बोध करंत४४१॥
साधुनके बहु भेषता, गृहिनके बहु चाल ॥
गुरुमत एक अदल है, करैं सो उभय निहाल॥४४२॥
पारख गुरु टकसारकी, निर्णय कही तमाम ॥
गुरु अभ्यास न जो करै, भाखेउं सो विश्राम॥४४३॥
जो रहस्य गुरुबोधकी, जानै ठहरै जीव ॥
सोई गुरु पारख लहै, पंचाइत गुरु कीव ॥४४४॥
गुरु शिष्य संभाषण अहै, युक्ति धारिया रीति ॥
कहंताको सुनता मिलै, तबहीं वचन लागे प्रीति४४५॥
निर्णय पंचाइत सुमत, जमा यथार्थ निबेर ॥
शिष्य ठहरावै सर्वसें, गुरुसम कल्पनाके नेर॥४४६॥

मर्यादा जेहि जौन विधि, बर्तैं तौन प्रमान ॥
जमामांहि कछु फेर नहीं, उज्जल धर्म अरुज्ञान४४७॥
सार शब्द निर्णय सहित, गुरुमुख मत सुप्रमान ॥
अहै यथार्थ सम्बाद शुभ, है विलासकी खान ४४८॥
हे शिष्य तुम गुरु साधुमा, अधिक प्रेम करु संग॥
विमल बुद्धि सूझै तुझे, मन मायाको रंग ॥ ४४९॥
हे शिष्य गाफिल ना रहो, हंत कल्पना लेव ॥
सदा दृष्टि निर्मल करो, साधुन गुरुपद सेव ॥४५०॥
गुरु बोधित गुरुबोध यह, पाये शिष्य विश्राम ॥
राम रहस गुरुकी दया, भौ गुरुबोध तमाम ॥ ४५१॥
गुरु शिष्यको संबाद यह, बहु विधि कहा विचार ॥
याकी पूरण परख करि, यथा भक्ति उर धार॥४५२॥

इति गुरुबोध पारख विचार रामरहस साहेबकृत
गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

सार शब्द निर्णय ।

दया गुरुकी । अथ लिख्यते ग्रंथ सार शब्द निर्णय॥
साखी–सार शब्द पाये बिना, जीवहि चैन न होय ॥
फंद काल जाते लखि परै, सार शब्द कहिये सोय१॥

चौकडी ।

सार शब्द निर्णयको नाम । जातेहोय जीवको काम ॥
सार शब्द कहिये टकसार । त्रिविधि शब्दको परखविचार

सार शब्दको अंग विचार । दूजे शील तीजे दृढ सार ॥
चौथे दया धरै चितमांहि । बिना दया कारज कछु नाहिं ॥
पहिले त्यागै पशुवत धर्म ।जाते मिटै त्रिविधिको भर्म ॥
पहिले आहि विचारको अंग।सो सुनि लेहु यथार्थप्रसंग॥
साँच झूँठ जो है संसार । सांच आतमा झूँठ पसार ॥
साँच कियो झूठामँह बास। क्रम क्रम त्यागै झूँठकी आस॥
जीव अजीवको करै विचार । खान पान उत्तम व्यवहार॥
आस्ति नास्तिका निर्णय करै । पक्का सौदा हृदय धरै ॥
दूजे शीलको वर्णन गुने । कर्कश वचन कहे ना सुने ॥
जामें होय जीव सुख काज । सोई करै होय निरव्याज ॥
बिना शील कछु बनै न काज।शील बिना कालको साज॥
मैं मेरीमें सब जग भूल । खानी क्लेश शील बिन फूल ॥
तीजे दृढता धारे चित्त। आतम सत्य सब जगत अनित्य॥
पक्का होयके सौदा लेय । धोखाधारमें चित्त न देय ॥
काल कलाते डरै न सोय।मिथ्या जानि आपन पदजोय॥
वीर सरिस निज पदमहँ लीन।साहनसाही तखत नसीन॥
चौथे दयाको निर्णय येह । करै विचार अदेही देह ॥
आत्मा सबमह एक निहार।मन वच कर्म प्रतिपालविचार॥
काल जालते जीव उबार । दया धरै चित दया अधार ॥
नाम दयाल कहाये सोय । दया धरै चित ऐसे होय ॥
पशुवत धर्मको करिये त्याग।करै विचार सहित अनुराग॥
छाजन भोजन मैथुन येह । भय निद्रा मोह षट देह ॥
यह षट अंशी जगत उपाय ।पशु मानुष एकै सम आय॥

है आसक्त षट मध्ये सोय। पशु आसक्त मानुषले जोय ॥
पशुवत धर्मको करै विचार। सो मानुषबुद्धिगुरुमुखसार॥
भेष अमंगल काल दुराय। नष्ट ज्ञान नहिं ताहि समाय॥
गुरुपूजा सन्तन सनमान। गुरु संत एकै सम जान॥
प्रत्यक्ष देव सन्त गुरु मान। मान महातम भरम भुलान॥
जा मुख निर्णय लखै विशेष। ते गुरुसम न और कोईलेष॥
साहेब गुरुदास शिष्य होय। भक्ति तेई अधिकारी सोय२॥
साखी–धन्य धन्य सोई जीव है, जिन परखा संसार ॥
तेई बन्दीछोर हैं, तारण तरण उदार ॥ ३ ॥
रामरहस गुरु परख लही, केते सुधरे जीव ॥
काल कला नहिं तेहि लगै, सत्संगति गुरु कीव ॥ ४॥
सार शब्दको निर्णय, देखु संत चितलाय ॥
जेहि अनुरागे जीव जग, परख लहै दुखजाय ॥५ ॥

इति श्रीसारशब्दनिर्णय ग्रंथ रामरहससाहेबकृत गुरुकी
दयासे सम्पूर्ण ॥

सत्य शब्द टकसार।
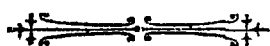
॥ दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्रंथ सत्यशब्दटकसार
परख विलास ॥

दोहा–साहेब दीनदयाल गुरु, सो पर औरन कोय ॥
शरण आय यमसों बचै, आवागवन न होय ॥ १॥

दयाकरण औगुण हरण, तारण तरण उदार ॥
अशरण शरण बंदौं चरण, तुम बिन नहिं निस्तार॥२॥
देखि अधमता आपनी, परबस यमके हाथ ॥
त्रसित गहेउं साहेब शरण, भव भय हारिसनाथ॥३॥
प्रभु सब लायक पारखी, हौं भरमिक अज्ञान ॥
लोहा कनक पारस करै, साहेब शरण समान ॥ ४ ॥
बंदौंचरण सब दुखहरण, प्रभुप्रसाद दुखभूरि ॥
दयाकरी दुख सब हरी, संसृत शूल भौ दूरि ॥ ५ ॥
बहे बहाये जात थे, भवसागरके मांहि ॥
दया करी परखाय सब, शरणाये गहि बांहि ॥ ६ ॥
संतत अभय गुरुके चरण, सदा परख परकास ॥
संमन सबै भवजाल तम, रामरहस सुख बास॥ ७ ॥
सर्बोपर गुरुके चरण । जो हारी भव खेद ॥
परम उदार सागर दया, थाह न पावै वेद ॥ ८ ॥
चारि वेद जग विदित हैं, ब्रह्मा कीन्ह परकास ॥
चारि रूपसों जानिये, चारि अवस्था भास ॥ ९ ॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

संतो दुबिधा कहांते आया। नाना भांति विचार करत हो कौने मति बौराया ॥

तुर्या रूप ।

ऋगु कहै निराकार निर्लेपित । अगम अगोचर साँई ॥
आवै न जाय मरै नहिं जीवै । रूप बरण कछु नाहीं ॥

सुषुप्ति रूप।

अथर्वण कहै प्रपंचहि दीसै। सत्य पदारथ नाहीं ॥
जो उठि जाय बहुरि न आवै। मरि मरि कहां समाहीं ॥

स्वप्न रूप।

यजुर कहै सगुण परमेश्वर। दश औतार धराया ॥
गोपिनके संग रहस रम्यो है। बहु प्रकारसे गाया ॥

जागृति रूप।

साम कहै यह ब्रह्म अखंडित। दुतिया और न कोई ॥
आपै आप रमे परमेश्वर। सत्य पदारथ सोई ॥

सत्य वेदका मसला।

यह प्रमाण सबन मिलि कीन्हा। ज्यों अंधरेकी हाथी ॥
आदि बापको मर्म न जाने। पूत होत नहिं साखी ॥
अंधरेकी हाथी सांच है। सांचे हैं सगरे ॥
हाथनकी टोई कहैं। आंखिनके अंधरे ॥

मसला।

शब्दातीत शब्दते पाइन, बूझे बिरला कोई ॥
कहैं कबीर सतगुरुकी सैना, आप मिटे तब वोई ॥ १०॥
साखी—ब्रह्मादिक सनकादि ले, मुनिवर आदि पर्यंत ॥
बिन गुरु मोह निशाशयन, सुख सपने न लहंत ११॥
गुरुके गुण गावैं सभी, सत्य सही बिनु लछ ॥
मायाके उपदेश अज, हरि हर कालके भछ ॥ १२ ॥
कर्म धर्म मति तीनिले, अज हरि हर समुदाय ॥
गावहिं ध्यावहिं ताहि कहँ, जेहि सङ्ग जीवनसाय १३॥

कहनेको चूके नहीं, जेती जिसकी दौर ॥
सबै शब्द सहिदानहैं, परख शब्दसों ठौर ॥ १४ ॥
षट शास्त्र षट मुनि कहैं, शाखा मूल सो वेद ॥
बहुत भांति झगरन लगे, बिन गुरु पाये न भेद॥ १५॥

सत्यशब्द टकसार ।

झूलना निर्णय ।

मिमांसा कहै सब कर्महीं है। वैशेषिकसमयको ध्यावताहै॥
न्यायबादी कर्तार ठानै। पातंजली योग बखानता है ॥
सांख्यवादि नित्यानित्य कहै ।वेदांती ब्रह्मअनुमानताहै ॥
कहहिंकबीरयेदुंदचहुंदिशमची।सोदुंदहीकोसबगावताहै १६
साखी--भरम जाल जो जगतके, ताके अंग अनेक ॥
एक एक अंग दृढ इष्टके, गावहिं निज निज टेक १७॥
चिदाकाश महाशून्य जो, लोक वेद परवान ॥
माया खानि तासु गुण, जीव विवश हैरान ॥ १८ ॥
त्रिगुण मत संसारके, परमारथ स्वारथ ज्ञान ॥
जथारथ बिनु पारख नहीं, परखै मान अमान ॥ १९ ॥
परमारथ पतिबर्तवत, स्वारथ निज संसार
ज्ञान असि एकता जबै, चिदाकाश निर्धार ॥ २० ॥
चिदाकाश युग पद मिलै, संधिन सूझै सोय॥
परखावै संसार यह, जो गुरु पूरा होय ॥ २१ ॥

सत्य शब्द टकसार ।

चौपाई ।

पहिला गुरु है माता पिता । रक्त बिंदके जो हैं दाता ॥

दूजे गुरु है मनकी दाई। गर्भमांहि जिन युक्ति बनाई॥
तीजे गुरु जिन्ह धरिया नाऊं।ले ले नांव पुकारत गाऊं॥
चौथे गुरु जिनविद्यादीन्हा।जगतप्रमाण रीतिसों कीन्हा॥
पचयें गुरु जिन दीक्षादीन्हा।रामकृष्णको सुमरणकीन्हा॥
छठयें गुरु जिन भ्रमगढतोरा। सबसों तोरि एकसों जोरा॥
सतयें गुरुजिनसत्यलखाया।जहांकोथा तहां पहुँचाया२२॥
साखी-येते गुरु जहानमें, चेला सब संसार॥
गुरु सदा सो बंदिये, जो संधि परखावनहार॥ २३॥
संधि मिटावै जीवकी, काटै यमका फंद॥
साहेब दीन दयाल सो, संशय खंडै द्वंद॥ २४॥
सात गुरु जो जगतमें, नष्ट सबनको ज्ञान॥
धोखा ताप न जेहि रहै,सो परख प्रकाश गुरु जान२५॥
निज स्वभाव ठहरै नहीं,नास्ति होय किमिसार॥
सत्य शरण पारख विना, बहै धार अंधार॥ २६॥

सत्यशब्द टकसार।

रमैनी।

कबहुं न भयउ संग औसाथा।ऐसेहि जन्मगमायउआछो॥
बहुरि न पैहोऐसो थाना।साधुसंगतितुम नहिं पहिचाना॥
अब तोर होई नर्कमहँ बासा।निसिदिनबसेउ लबारकेपासा
साखी-जात सबन कह देखिया, कहहिं कबीर पुकार॥
चेतवा होय तो चेतिले,नहिंतो दिवस परतुहै धार २७॥

रमैनी।

तेहि साहेबके लागहु साथा।दुइ दुख मेटिके होहुसनाथा॥
दशरथ कुल अवतरिनहिंआया।नहिं लंकाकेरावसताया॥

नहिं देवकीके गर्भहि आया। नहीं यशोदा गोद खेलाया॥
पृथिवीरवनधवननहिं करिया। पैठिपताल नहिंवलिछलिया
नहिवलि राजासों मांडल रारी। नहिंहरणाकुशबधलपछारी
वराहरूप धरणी नहिधरिया। क्षत्रीमारिनिक्षत्रीनहिकरिया
नहिं गोवर्धनकरगहिधरिया। नहिग्वालनसंगवनरफिरिया
गंडुकीशालिग्रामनहिकूला। मच्छकच्छहोयनहिजलडोला
द्वारावती शरीर नहि छाडा। ले जगन्नाथ पिंड नहि गाडा॥

साखी–कहहिं कबीर पुकारिके, वै पंथे मति भूल॥
जेहि राखेउ अनुमानकै, सो थूल नहि अस्थूल॥२८॥

रमैनी ।

अल्प सुखदुखआदिउ अंता। मनभुलान मैगर मैमंता॥
सुख विसराय मुक्ति कहां पावै। परिहारिसांचझूठनिजधावै॥
अनल ज्योति डाहै एकसंगा। नैन नेह जस जरै पतंगा॥
करहु विचार जो सबदुखजाई। परिहारि झूठाकेर सगाई॥
लालच लागी जन्म सिराई। जरा मरण नियरायलआई॥
साखी–भरमका बांधा ई जग, यहि विधि आवै जाय॥
मानुष जन्म पायके, नर काहेको जहँडाय॥ २९॥

साखी–निर्णय यथार्थ ।

सांचा शब्द कबीरका, प्रगट कहो जगमाहिं॥
जैसेको तैसा कहै, सो तो निन्दा नाहिं॥ ३०॥
मूढ सबै ज्ञानी भये, आपै ब्रह्म कहाय॥
ब्रह्मादि सनकादिलों, सुर नर मुनि समुदाय॥ ३१॥

ब्रह्म होय शीतल भये, शीतल तृप्तीरूप ॥
अनल समानी ताहि जल, परे भरम तमकूप ॥३२॥
निर्विकार माया परे, तेहि कहैं वेद पुरान ॥
पुनि प्रपंच सबताहिके,उदकहि आगि समान॥३३॥
जीव विवश व्याकुल फिरै, चाहै निज कल्यान ॥
कहै अकाम अनन्य होहु,बिन पारख पिसिमान ३४
लखि न परै तेहिबसि परे,छिनछिन भ्रम मतदेत॥
अज्ञानी ज्ञानी करै, ज्ञानिहिं करै अचेत ॥ ३५ ॥
पैठा है घट भीतरे, बैठा है साचेत ॥
जब जैसी गति चाहै, तब तैसी मति देत ॥ ३६ ॥
स्वभाव जीव जीवै सही,यम संतत रस लेत ॥
ज्ञानरूप विलसै सोई, हंस दुसह दुख देत ॥ ३७ ॥
महासंधि धोखा सोई, झांई आपा ओट ॥
लहतहिं दुंदज ज्ञानभौ, पूरण संशय खोट ॥ ३८ ॥
इच्छा कर्म स्थूलले, प्रगटे जग समुदाय ॥
विविधि रूप बहुकष्टमय, रहा संतत जहंडाय॥३९॥
नाना मत उदबेगके, सब घट करैं कलोल ॥
जीव भरोसे चैनके, पचहिसो डामाडोल ॥ ४० ॥
विषके माते जीयरा, विकल चहै दुख जाय ॥
बिन गुरु तापर औषधी, विषहर डसि डसि जाय४१
अव्यक्तरूप सोई ज्ञान है, माया गुण विख्यात ॥
पंचकोश परपंच सब, महा कठिन यम घात॥ ४२ ॥

ब्रह्म जीव ईश्वर जगत, ई सब अनमिल सैन ॥
निरुवारे ठहरै नहीं, भासे झांई बैन ॥ ४३ ॥
आदि अंत ये कहतहौं, शिष्य मुख्यहै अनुहार ॥
जेहि अनुरागे जीव जग, परख होय टकसार ॥४४॥
जिन परखा संसार यह, तिनकहं नहिं अंदेश ॥
महा कठिन भ्रमजालके, अरुझनहार उपदेश ॥४५॥
आदि अंत है जगतके, परखहु मान अमान ॥
भटका है परचय बिना, देश ज्ञान विज्ञान ॥ ४६ ॥
अधिष्ठाता जे ज्ञानके, महासंधि माकाश ॥
सोई ब्रह्म विज्ञानमय, ज्ञान उपजै चिदाकाश ॥४७॥
इच्छा तेहि अज्ञान कही, त्रिगुण जाल समुझाय ॥
अस विचार गावै तेहि, मान अमान दृढाय ॥ ४८ ॥
आस्ति यह चिदआतमा, नास्ति सोई माकास ॥
मिलतहि धोखा संधिके, महाजाल भौ बास ॥४९॥
दुंदज सत्य असत्यके, जहां नहीं कछु लेश ॥
सो प्रकाश गुरु परख है, मेटत सकल कलेश ॥५०॥

चौकडी ।

साहेब सो जो आवै न जाय।सदासनातन नहिं बिनसाय॥
स्वर्ग पताल नहीं दिगबोध।वारपार बुद्धि संधिक सोध॥
परख प्रकाश स्वभाव असंध।बिनु तेहि जीव परे हैं बंध॥
हंसा आस्ति स्वभाविकजान।आपा ओट नास्ति पहिचान
धोखा नास्ति भया अध्यास।हंसा उलटै सोहँ वास ॥
एकोहँ बहुस्यामि उद्वेग । संधि एक सो भया अनेक ॥

चाहै चैन न सूझै संध। जतन सोइ जो दोहरी बंध ॥
अधिष्ठाता सोई संधि निवास।ज्ञान अज्ञान उदबेग विलास
कर्म स्थूल भया परचंड। नाना पिंड खंड ब्रह्मंड ॥
ब्रह्मांड समष्टि ईश परवान।देह अभिमानी व्यष्टि बखान॥
ईश्वर अंश दुहु मिटे मिटाय। अधिष्ठाता माकाश रहाय॥
सोहँ उलटै हंसा होय। पावै पारख पारखि सोय ॥
सो दयाल साहेब गुरुदेव। भच्छक भोंदू सोहं भेव ॥
पावैपरखझांईमिटिजाय।नास्ति ज्ञान नहिं ताहिसमाय९१

सत्य शब्द टकसार।

साखी—साहेब पारसरूप है, लोहरूप संसार ॥
पारस सो पारस भया, परख भया टकसार ॥ ९२ ॥

सत्यपद।

गुरु प्रकाश निज ओटते, झांई सदा झहराय ॥
अंतर दुबिधा संधिसो, बिन पारख बिलटाय ॥९३॥
चिदवशिष्ट नित्य सत्य है, चितवत धोखा ओर॥
भ्रमिक भये माकाशमें, सो स्वभाव कहै मोर ॥ ९४॥
बहु इच्छा उदबेग तेही, सोई शक्ति परवान॥
तीनि भुवन तेहि अंगमें, नाम रूप गुण जान ॥९५॥
नाम रूप गुणमय जगत, धरिया विविध स्वरूप ॥
छितराने जहां तहां सोई, सबै दास वै भूप ॥ ९६ ॥
अहंकार मद राजबल, बहुत कलेश अपार ॥
सबै भुलावा अंश कही, शून्य होय तदाकार ॥९७॥

इन्हमें जो गुरु परख लही, मेटेउ झांई त्रास ॥
पारखमें सो स्वभावसुख, अचल अशंक विलास५८॥
जाहि दयागुरु परख लही, मेटै सब भवजाल ॥
रच्छक बन्दीछोर सो, साहेब दीनदयाल ॥ ५९ ॥
आपु दुखी परजा दुखी, भच्छक भोंदू काल ॥
नष्ट सनेही भ्रष्ट है, कष्ट सबै भवजाल ॥ ६० ॥
चाहै सुख भवजालमें, सूझै नहिं निज भूल ॥
विविधि फंद फर फंद रचि, रहा जाल मद फूल६१॥
परख समाधि लहै बिना, धोखेहि रहै समाय ॥
कर्म धर्म मत तीनि ले, भोंदू रखें भुलाय ॥ ६२ ॥
धर्म समाधि तत् है, कर्म समाधि त्वं ॥
सहज समाधि असि लहै, तत्त्वमसि तीहु अंग॥६३॥
शब्द ब्रह्म अज जानिये, सगुण ब्रह्म हरि होय ॥
हर सों शून्य समाधि है, नाम रूपगुण सोय ॥ ६४ ॥
नाम रूप गुण लीन होय, महाकाल ज्यों त्यों लहे ॥
बिनु पारख छूटै नहीं, उदय अस्त धोखे रहे ॥ ६५॥

सत्यशब्द टकसार।

रमैनी।

बज्रहुते तृण खिनमें होई। तृणते बज्र करै पुनि सोई ॥
निझरुनीरुजानि परिहारिया।कर्मका बांधा लालच कारिया।
कर्म धर्म मत बुद्धि परिहरिया।झूँठा नाम सांच ले धरिया॥
रजगति त्रिविधिकीन्ह प्रकाशा।कर्म धर्म बुद्धिकेर बिनाशा॥

रविके उदय तारा भौ छीना। चर बीहर दूनोंमें लीना ॥
विषके खाये विष नहिंजावै। गारुडसोजो मरतजियावै ॥
साखी--अलख जो लागी पलकमें, पलकहीमें डसिजाय ॥
विषहर मंत्र न माने, तो गारुड काह कराय ॥ ६६ ॥

रमैनी।

सुखकेवृक्षएकजगत्र उपाया।समुझिनपरलिविषयकछुमाया।
छौ क्षत्री पत्री युगचारी। फल दुई पाप पुण्य अधिकारी॥
स्वाद अनंत कछुवर्णिनजाई। करिचरित्रसोताहिंसमाई॥
जो नटवट साज साजिया।जो खेलै सो देखै बाजिया ॥
मोहा बापुरा युक्ति न देखा।शिव शक्ति विरंचि नहिंपेखा॥
साखी--परदे परदे चलि गई, समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानेसो बांचि है,नहिंतो होत सकलकीहानि॥ ६७॥
कालचक्र घुमंत सदा, जीवहि चैन न देत ॥
पंच कोश होय जीवके, जीवन धन हरि लेत ॥ ६८॥
काल चक्र चक्की चलै, सदा दिवस औ रात ॥
सगुण अगुण दुई पाटला, तामें जीव पिसात ॥ ६९ ॥

अकार कालचक्रको ॥ पंचकोश ॥

अंश पृथ्वी ॥ १ ॥

पिंड विश्व अभिमान।अवस्था जाग्रति।विलासअस्थूल। भूमिका छिप्रा। मुक्ति सालोक ॥

अंश चौरासा ॥ २ ॥

हिरण्यगर्भ तैजस। अभिमान।अवस्था स्वप्न। विलास सूक्ष्म। भूमिका गतागत। मुक्ति सामीप ॥

अंश मूल प्रकृति ॥ ३ ॥

शून्य अज्ञान । प्राज्ञ अभिमान । अवस्था सुषुप्ति । विलास आनंद । भूमिका सौलेष्टता । मुक्ति सारूप ॥

अंश सर्व साक्षिणी ॥ ४ ॥

ज्ञान अवस्था तुर्या ॥ प्रत्यगय अभिमान । भोग आनंद भास । भूमिका सुलीनता । मुक्ति सायुज्य ॥

अंश संधि महाकाश ॥ ५ ॥

तुर्यातीत । मान अमान रहित। अभिमानहीन ।भूमिकाहीन । आरोपहीन । सो जीवन्मुक्ति है ॥ ७० ॥

सत्य शब्द टकसार ।

छन्द–अन्नमय अरु प्राणमय, तीजे मनोमय जानिये ॥
ज्ञानमय विज्ञानमय, सोई पंचकोश बखानिये ॥
तत् त्वं असि त्रिविधि वानि, सबै पहिचानिये ॥
कठिनसो त्रिदोष कारण,परम पद किमिमानिये ७१॥

साखी–पशुवा लोक अरु वेदके, मोह अंध संसार ॥
वह लादे खेदै आपको, यह अपनी चहत उबार ॥
भरमचक्र यमजाल सो, बिन गुरु कैसे लखाय ॥
पारख पाये जानिये, आदि अंत समुदाय ॥ ७३ ॥
प्रभु सुखदाई पारखी, दुष्ट दुसह दुख खान ॥
परबस जीवबिकल फिरै, पारख बिना अयान ॥७४॥
जो जीव पावै पारख,सो लहै अचल बिश्राम ॥
प्रीति प्रतीति अनुछिन बढै, धोखा मिटेतमाम ॥७५॥

रामरहस गुरु परखमें,सदा विलास भ्रम नास॥
चहुं प्रलय संधिक कला, रहा न ताके गांस॥ ७६॥
चार अवस्था फंद है, फंद बीच बहु फंद ॥
बिनु पारख छूटें नहीं, काल जाल मतिमंद ॥ ७७ ॥
जीव दुखी चाहै छूटन, चीन्है नाही काल ॥
आशा देवै निवृत्तिका, भोरे भवके जाल ॥ ७८ ॥
त्रिविध भेष बनायके, कीन्ह कपट उतपात ॥
बाना गही उबारने, लाई कला यम घात ॥ ७९ ॥
जतिके चिह्न लंगोट है,दया चिह्न उर माल ॥
राज तिलक है अदलका, शोभै परगट भाल ॥ ८० ॥
महा दुष्ट जीवहिं ठगे, भेष कपट किये काल॥
भेष देखि निवृत्तिका, अपनाये सो दयाल ॥ ८१ ॥
भेष अमंगल नष्ट गुण, जेते त्रिविधि फांस ॥
अदल चलाई कालपर, सो त्रिदोषहि नास॥ ८२ ॥
अदल चलाई सत्यका, साहेब बन्दी छोर ॥
पारख छोरै जीवको, यमके हाथ मरोर ॥ ८३ ॥
रीति प्रीति सोइ सत्य है,सही सत्य सो भेष ॥
झूठाको शोभे नहीं, निर्णय करिके देख ॥ ८४ ॥
सीत प्रसाद क्षुधा हरै, चरणोदक हरै प्यास ॥
बीरा पान दयालका, मेटत यमके त्रास ॥ ८५ ॥
बन्दे सन्मुख पारखी, सीस भेट धरु हाथ ॥
वचन उचारो बंदगी, सत्य प्रेमके साथ ॥ ८६ ॥

दया दयाल पारख लहै, सुधरै सब भ्रमजाल॥
अदल चलै तबसत्यका, शिर धुनि रोवै काल॥ ८७ ॥
प्रथमें शब्द सुधारिके, टारै त्रिविधि जाल ॥
झांई मेटत संधिको, ऐसो शरण दयाल ॥ ८८ ॥
पारख गुरु सुखबास है, जहां न फंदा काल ॥
सो बिनु जीव बिनास है, चौरासीके जाल ॥ ८९ ॥
साहेब सांचा पाइके, नहिं कीन्हो दृढ नेह ॥
काल फंद भुगतै सोई, चौरासीके खेह ॥ ९० ॥
नारी पुरुषके भाव तजि, साहेब सांचा सेइये ॥
लाज कपट सब छाडिके, अभयपरम पदपाइये॥ ९१॥
जो रहस्य युत पारखी, साहेब सांचा सोय ॥
तरै तारै भव जाल सोई, काल देखि रहै रोय॥ ९२ ॥
दृढ पारख जे जन भये, काल फंद सब देख ॥
सत्य स्वरूप सोई सदा, रीति सत्य सत भेष ॥ ९३ ॥
धन्य धन्य सो जीव है, काल जालसब टाल ॥
झांई संधि मिटावहीं, नजरे नजर निहाल ॥ ९४ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

शब्द ।

संतो ठहरिके करहु विचार । ठौर निज सुखदाई ॥
बिना विचार सकल जग जहंडे । थितिकहुकौनकहांपाई॥
माथे व्याप संधिके घेरा । विष बौराने समुदाई ॥
ज्ञानी भक्त योगी कहलावै । मर्म महातम भरमाई ॥
त्रिदेवा अधिकारि जगतके । त्रिविधि भेष मन कुटिलाई॥

चीन्ह न परी घात मनुवाके, मृतुक भये नर बौराई ॥
निर्णय तिलक लिलाट विराजै, राजकाज विधि जुक्ताई॥
सो परपंच विदित है जगमें, जहंडे औरन जहंडाई ॥
विष्णु दयाके रूप कहावें, कंठी कंठे दिखलाई ॥
जत्त सत्त सब टार बहाई, विषय विकारसो कुशलाई ॥
जतिके डिंभ जो हरको देखा, कामारी दृढ फैलाई ॥
खुली कांछ कामके माते, कहत न लागै सकुचाई ॥
जैसा कहै करै तैसा जो, सत्य शब्दसों अटलाई ॥
फंदा टूटे तब जीव छूटे, बिन गुरु जाल न दरसाई ॥
संत सदा सोई परमानिक, जिन निज घरकी सुधि पाई॥
कहहिं कबीर चेत नर बौरे, हो हुशियार दुखबिलगाई९५

साखी–साधु साधु सबहीं बडे अपनी अपनी ठौर ॥
शब्द विवेकी पारखी, तिनके माथे मौर ॥ ९६ ॥

चौपाई ।

बन्दीछोर शरण सुखदाता । मेटनहार मोह जिव त्राता ॥
महाकठिन यमजाल मिटाई। अपनायन तौ जातनसाई॥
परबस काल जीव सब रोवैं । दुसह दरेरदुखजीवनखोवैं॥
आपुअव्यक्तउपरौटा लाई । इच्छा सगुणत रौटा बनाई ॥
कीला एकता सुमेर अखंडू । छिद्र तरौटा लाइप्रचंडू ॥
हथरातीन मेख जडदीन्हा । चक्कीचलतनिसुबासरकीन्हा
पीसत संतत जीवहि डारी।भोग करत यम जीवखुवारी॥
छिनछिनजीव विकलतेहिमाहीं।रक्षकजानिकीलातरजाहीं
तहंवाँ आदि पतनको रंधू । जीवहि चीन्ह परेनाहिंसंधू ॥

कारण कीला पिसवै केरा । चक्की घुरमत ताहि दरेरा ॥
बिन रक्षकको लेइ बचाई । कीला-चक्की सबबिलगाई९७
साखी—चक्की कठिन संसार जो, सदा रहै घुरमाय ॥
निज झांई भरमायके, चूर भया समुदाय ॥ ९८ ॥
एक अनंत निज भूलमें, कारण संधि न सूझ ॥
शब्दातीत चिद गावहीं, परख बिना नहिं बूझ ॥९९ ॥
सोप्रकाश जो कसरनहीं, धोखा काहि समाय ॥
चिदानंद अनुमान नहीं, बिन गुरु नहीं बुझाय१००॥

सत्यशब्द टकसार ।

लगनियां ।

धरती अकाश बनल दोनों जतवा ।
किलवा सुमेरु बिच लागलरेकी ॥
केहु दिहल गेहूँवां केहुरे दौरिया ।
केहुरे पठावल जतसारिरेकी ॥
सासुदिहलगेहूंवाननदी दिहलदौरियाँ
गोतनी पटावल जतसारिरेकी ॥
चोखेचलुजतुवाझमकिलेहु झिकवा ।
देवरा भुखल भैया पाहुनरेकी ॥
जतवो न चलई मकरीवो न खई ।
हथडा धईले कामिनि रोवैरेकी ॥
घोडवा चढल रामा करहिं पुछरिया ।
केकरि तिरिया रोवै जतसारिरेकी ॥

जांघ तोर थाकेउ बहियां घुनलागेउ ।
तोहरे अछत रोवै कामिनिरेकी ॥
घोडवासेउतरिरामाजंघियाबइठावल ।
अपने पटुकवा लोरवा पोछहिरेकी ॥
तोहरा पटुकवा प्रभू दरदरवारिया ।
हमरे अचरवा लोरवा पोछहुरेकी ॥
दास कबीर यह गावल लगनियां ।
बहुरि न आइब जतसारिरेकी ॥ १०१ ॥

रुइया ओटि ओटि कइले गुनावन । घर नहिं खरचि दोअरी धुनावन ॥ कैसेकै लुगरवा पहिरब । कैसेकै दिन खेपवरेकी ॥ एक टकाके चरखा बनावल । ढेगुवहि टेकुवा चमरख लावल ॥ एक अधेलाके धुनामलहे साजवरेकी । उलटि पलटि धनी रुइया धुनावल॥सहज स्वरूपीपिउरी बटावल । चुटकी संवारि सूत कातल ॥ ऐठनौ न लाग-लरेकी । एक तगवा नौलो दूसर गैल टूटी ॥ चिलरे काटल उठल टिहूकी । तब धुनियहि गारियावल ॥ मोरि रुइया काचलरेकी । एक तूहि नारि अलप सुकुमारी ॥ चिलरे ढिलवासो रचल धमारी । अपनी रहनिया नहिं चेतहु ॥ केहु गारि पारहुरेकी ॥ दास कबीर यह लगनी गावल । साधु संत सबके मन भावल ॥ अहो साधो लेहु न विचारि । परमपद पावल रेकी ॥ १०२ ॥

जतसारी ।

रामनामके इहै जतसारिया, अहो सजनी पीसिलेहु बाटकी सांभररेकी ॥ तन करु जतवा मन करु किलवा, गुरुके शब्द करु हाथडरेकी ॥ चित करु गेहुंवा प्रेमकी दौरिया, समुझि समुझि झिकवा नावहुरेकी ॥ अरारि दरारि जो पिसलेगे सजनी, अहो सजनी होयबेहु पियाकी सोहागिनरेकी ॥ मनभर पिसलेहु सहज उठवलेहु, गुरूके शबद करु चालनरेकी ॥ दास कबीर यह गावल लगनियां, अहो सजनी गुरुके चरन चित लावहुरेकी ॥ १०३ ॥ सुरत मकरिया गाडलेगे सजनी, अहो सजनी दुनोंरे नैन ज्योतिया लावहुरेकी ॥ मनघुर मनघुर मनघुर सजनी, अहो सजनी एक दिन चांद छिपायलरेकी ॥ संगहि अछत पिया भरम भुलैलू, अहो सजनी मोरे लेखे पिया परदेशहीरेकी ॥ दिन दश रजनी सुख करु सजनी, अहो सजनी ऐसन समैया नहिं पायबरेकी ॥ नौ दश नदिया अगम बहै सोतिया, अहो सजनी बीचैमें पुरइन दह लागलरेकी ॥ फूल एक फुलल अनूप फूल है सजनी, अहो सजनी तेहि फुल भँवरा लोभायलरेकी ॥ सब सखिया मिलि एक घर जायब, अहो सजनी समुद्रके लहरि समायबरेकी ॥ दास कबीर यह गावल लगनियां, अहो सजनी कबधौं पियाघर जायबरेकी ॥ १०४ ॥

साखी-लगनियां गावहिं साधुजन, अपनी खबरि न जान ॥
कूट छांट कोइ अनकुटे, सब जीव भये पिसान ॥ १०५ ॥

चौपाई।

असजतसारिबिकटसोचाला।जीवबिकलतेहिमध्यबेहाला।
परख जथारथ प्रभु परकासू।कठिन महातम काल बिनासू।
कालचक्र चक्की कठिनाई। पारख पाये जात बिलाई॥
पारखबल बहियां भौजेही।सब विधि चीन्ह परा खल द्रोही।
सुरत समान रहि जेहि फांसा।उचटत ताहि मिटतयम त्रासा।
शरणागत प्रभु आये जोई। कालचक्रते बांचे सोई॥
महाशून्य शून्य औ स्वासा।धरती सो सबकाल विलासा।
चीन्हहु अंश अवस्था चारी।तुरियातीत कला सो भारी॥
तत्वमसि ले बारह बानी।ग्रासन हेतु काल सहिदानी१०६

साखी–पृथिवी स्वासा शून्य जो, महाशून्य मन मान॥
फँसे जीव व्याकुल फिरैं,पुनि पुनि सोई परवान१०७॥
विनु शरणागत परख गुरु, नहिं जीवन निस्तार॥
सर्वोपर गुरु परख है, लहै तो होय उबार॥ १०८॥

छन्द–भव पार सब उतरन चहै,पुनिपुनि गहै यमजाल हो॥
सुरती समानी जाहि तेरी, सोई परगट काल हो॥
विश्वरूप निरंजन दुःखन, खानी दुष्ट कराल हो॥
महाशून्य२औस्वासा,पृथिवीकठिनफंदाकालहो१०९

छन्द–बहु फंद अवस्था चारि पन,चहुंपहरचहुंयुगमें फंसा॥
नाना बिकट बंधन तेहि है, समुझ तेरो दृढ गसा॥
चाहै छूटन तो परखिले, यमजालकी जैसी दसा॥
सबमुरचा भरम खोइकै,शुद्ध होय जब संशयनसा११०

चौपाई ।

प्रभु प्रसाद पारख दृढ पाये। बिकट कला यमजाल छोड़ाये
एक एक परखायब फांसा । सो संक्षेप करौं परकासा ॥
सोजीव बांधि बांधियमत्रासा। शरणागतदृढपरख विलासा
भक्ति भाव प्रेमअधिकाई। परख लहत बल काल नसाई ॥
काल कला नहिं पावै ताके। भक्ति भाव गुरु पारख जाके
जाते उचाट होयघिन जानी। सुरति न जाय ताहि पहिचानी
होय विराग फांस यम देखी। प्रभुके पद दृढ प्रेम विशेषी॥
परम पारखी जीवन्मुक्ता । नहिं पावै तेहि कालके उक्ता॥
काल स्वभाव फंद विस्तारा । पकरत खांत हंसन बेचारा
अपनी भक्ति अरु ज्ञान दृढाई। दुष्ट सोई साहेब कहलाई ॥
वेद किताब कुरान पुराना। अनबनि भांति रहा जहंडाना॥
मृत्तु सनेही मृत्तु स्वरूपा । महाजाल मद भूप अनूपा ॥
जीवन जीवन्हि निसुदिन हरही। त्रिविधि राजसदासोकरहीं
व्यष्टि समष्टि नहीं कछु भेदा। अंश ईश्वर धोखा है वेदा॥
एकै जथा रहा जहंडाई। व्यष्टि समष्टि पद होय बिलगाई॥
कहुँ ब्रह्म कहुँ ईश कहावै । कहुं जीव होयके पछतावै ॥
जाहिबेकारते होहु अनेका। दुर्मतिसोइ जो करै विवेका ११

साखी—आपु बेकारी मूल जग, निर्विकार पुनि आप ॥
जीव भुलावै अंश कही, भोजन करै मिलाप॥ ११२॥

चौपाई ।

महाशून्य सो धुंद अंधेरा । कारण लहत न सूझत पारा॥
रोगी रोग विवश अकुलाई । सुखके जतन चाह अधिकाई
परपंचा दुखमय सो भूपा। परजन कष्ट अनेक स्वरूपा ॥

खेति करै यम देश बनाई । तीन लोक चौथे सो राई ॥
जोती बोई उपराजै पाली । काटि मीजि कोठीमें घाली॥
विहनहार अंश जुक्तावै । औसर पाय ताहि उपजावै ॥
जीव विकल वसकालके फंदा । सेवहिं परख बिनातेहिअंधा
दीनदयाल दयानिधि साईं । सर्ब ऊपर जेहि संधिनसाई ॥
आवत परख प्रकाश आनंदा।नासत सकल कालके फंदा॥
पंचकोश जिन लांघा जाई । दुगदुग अंतर रहा समाई॥
छूटै न रोग रहा ठहराई । सांचा होय प्रेम गोहराई ॥
प्रेम पुकार उलटि सो देखा।प्रकाशलहत निजमूलहिपेखा
झांई संधि सब गई बिलाई ।फंदा काल सबै लखि पाई ॥
निजपद जानि दयासो कीन्हा।बंधन जीव छोडावै लीन्हा
देखि दुसहदुख जीवनकेरी। दया कीन्ह पारख प्रभुप्रेरी ॥
पारखउदय भया तेहिपासा । संधि जीव परपंचनआसा॥
उपजै सबै बेकारके प्रेरे । परख लहै न रहै यम घेरे ॥
सन्मुख प्रभुके आज्ञाकारी । पारख गुरु तेई अधिकारी ॥
जोपरपंचहिंकरहि प्रऊढा । काल स्वरूपसो जानहुमूढा॥
एक माते विष रहा तमाई । अंधकार तेहि रहा समाई ॥
पारखी सोई दीनदयाला । मेटततुरितसबैभवजाला ११३
साखी–सर्वरूप जग जीव जत, देही देह समान ॥
अधिकारी सो पारखी, परम उदार सुजान ॥११४॥

चौपाई ।

जब प्रगटै पारख प्रभु आई । कालफांस सब तुरितलखाई
करि न सकै परपंच प्रवेशू । मिटाविकटयमजालकलेशू॥

बिकट कलेश जीवनके देखी।कीन्हप्रकाशसो परखविशेषी
केतिक पारख प्रभुके पाये । जरा मरण यमजाल मिटाये॥
यहि विधि हंस छुडाय अनेका।बधिककला नहिं लागैएका
वधिक निराशधुनहिंशिरअपना। हंसछुटत तेहिहोतकलपना
ममता राज मोह दल भारी। छाडेअधम न होयसुखारी॥
आपु नष्ट पुनि सबहिं नसावै।भरमका राज विलास बढावै
इन्ह परपंच जे छूटन चहहीं । तापर राजदंड बहु करहीं॥
जिन्ह जिव परख लहैप्रभुकेरा।महाजाल यमजालनिबेरा॥
आपु छुटे पुनि और छुडावै।देखि सो हंस काल पछितावै
तब यम बहुत प्रपंच पसारा ।धोखा टाटि मध्यमें डारा॥
शर बहु भांति कर्मके लाई। आसा कांपमा लसा बनाई।
छिनछिन जीवन लेत बझाई । पारखमिलै तो परे लराई॥
जेअजान नाहिंजानहिं फंदा । लेत बुझाय जालसो गंदा॥
पछदुइतोरिआंखिदोउसीया।जीवहिवधिकझोरिमोलिया११५

साखी–जिन जिन पारख पाये, तिन तिन लागिनफांस॥
अज्ञ जीव परबस परे, समुझि परी नहिं गांस ॥११६॥
ज्यों ज्यों लसा छोडावहीं, त्यों त्यों लपटत जाय॥
अधम वधिक सब हंसन, पकरि बझाये खाय॥११७॥

सत्यशब्द टकसार।

विलाप हंस अज्ञानी--शब्द ।

चल मोरे नैहर हंसा अमरापुर बासी ॥
टटियाके ओटवेव्याधा लगवलेगलेफांसी ॥
पर दूनों तोरे व्याधा सीयले दूनों आंखी ॥

मोरे लेखे यहो व्याधा, दिनवा भई राती ॥
मैं तोहि पूछों रे व्याधा, कहहु सत्य मोही॥
कौनि नगरिया व्याधा, बेंचवेले मोही ॥
अमरापुर पट्टन हंसा, बसत निरमोही ॥
वोहिरे नगरिया हंसा, बेचबोले तोही ॥
कहहिं कबीर हंसा, सुनहु नर लोई ॥
ऐसे व्याधाके बसि हंसा, परहु मति कोई॥ ११८॥

चौपाई ।

कालकला विदित संसारा।बिरले जन कोई बांचनहारा॥
आपु गुप्त टाटीके ओटा । गुण मायासो जग विख्याता॥
तीनि कांप शरमाँह लगाई । तामें आशा लासा लाई ॥
राति दिवस यम घात लगावै।पकरि हंस बहु नाच नचावै
जिन चतुरा परखा यमजाला।चहै बचावन हंस बेहाला ॥
हंससो देखि बधिक अकुलाई।कारि नसकै कछु निजप्रभुताई
अनेकहि कला ताहिपर डारे।सकभरि दुष्ट लरे पुनिहारे॥
पारख बल नहिं पावै सोई।प्रीति प्रतीति अभय पद जोई॥
जहां कछु संधि अपनी पावै।तो यम पकारि ताहि अपनावैं
जगयमदेशलहिजीवठेकाना।नाहकभटकतरहतअयाना ११९

साखी—जो चाहो कल्याण निजु, गहहु परख टकसार ॥
सुरति सम्हारि अडिग होय,तजहू यम बिस्तार १२०
सुरति सम्हारि परख ले, रक्षक भक्षक भाव ॥
दृढ प्रेम बहियां गहै; काटै यमके दाव ॥ १२१ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

शब्द ।

हंसा हो चित चेतु सकेरा, इन्ह परपंच कैल बहुतेरा ॥
पाखंडरूप रच्यो इन्ह त्रिगुण, तेहि पाखंड भूलल संसारा
घरके खसम वधिक वैराजा, परजा क्या धौं करै विचारा
भक्ति न जानै भक्त कहावै, तजि अमृत विषकै लिन सारा
आगे बडे ऐसेहि बूडे, तिनहुं न मानल कहा हमारा ॥
कहा हमार गांठि दृढ बाँधो, निशि बासर रहियो हुशियारा
ये कलि गुरु बड़े परपंची, डारि ठगौरी सब जग मारा ॥
वेद कितेब दोउ फंद पसारा, तेहि फंदे परु आप विचारा ॥
कहहिं कबीर ते हंस न बिसरै, जेहिमा मिले छुडावनहारा, १२२

शब्द ।

नरको नहिं परतीत हमारी ।
झूँठा बनिज कियो झूँठेसों, पूजी सबन मिलि हारी ॥
षट दर्शन मिलि पंथ चलायो, त्रिदेवा अधिकारी ॥
राजा देश बडो परपंची, रैयत रहत उजारी ॥
इतते उत उतते इत रहहु, यमकी सांड संवारी ॥
ज्यों कपि डोर बांधु बाजीगर, अपनी खुसी परारी ॥
इहै पेड उतपति परलयका, विषया सबै बेकारी ॥
जैसे श्वान अपावन राजी, त्यों लागी संसारी ॥
कहहिं कबीर यह अदबुद ज्ञाना, को मानै बात हमारी ॥
अजहू लेहुँ छुडाय कालसों, जो करै सुरति संभारी १२३

शब्द अष्टपदी गुरुस्तुति ।

प्रभुजी तुम बिन कौन छुडावे ।
महा कठिन यमजाल फांस है तासो कौन बचावे ॥
नाना फांस फंसाय जीवको, आपन रूप छिपावे ॥
पंच कोश होय परगट ग्रासै, तेहिको कौन लखावे ॥
आपुहि एक अनेक कहावै, त्रिविधि रूप बनावै ॥
सैनपाट होय दुष्ट नष्ट सो, परलय अंत देखावैं ॥
विषय बेकार जगत अरुझावै, जहां तहां भटकावै ॥
योग ध्यान बिगुर्चन भारी, ताहि सुरति अटकावै ॥
आस नाम नौका बैठावै, भवके धार बहावै ॥
तत्वमसि कहि ताहि डुबावै, अंत कोई नहिं पावै ॥
चार मुक्ति जोइन चौरासी, तेहि मिलि हेतु बढावै ॥
नेम धर्म पूजा औ संयम, बहु विधि लागि लगावै ॥
भेष अलेख करे को पावै; जीवहि चैन न आवै ॥
चारि वेद षट अष्ट दशों ले, शून्यहि शून्य समावै ॥
कालचक्र बसि उतपति परलय, जीवदुसह दुख पावै॥
साहेब दया कीन्ह परखाये, रामरहस गुणगावै१२४॥
साखी–कपट चतुरता कालबसी, सन्मुख प्रभुकेनहिंहोय॥
भ्रमहारी साहेब शरण, निश्चय भया बिलोय ॥१२५॥

चौपाई ।

सदा कालनिजजाल पसारा।नित्य प्रलय परलयविस्तारा।
लेत सकेलि जाल एक बारा। महा प्रलय सो विदितसंसारा।
पिंड ब्रह्मांडके एकस्वभाऊ। प्रलय चार सोकालकेदाऊ॥
नित्य प्रलय सो नितपरबीते। प्रलय मरण जलामयकीते॥

एकांतिक प्रलय ब्रह्मज्ञाना ।महाप्रलयमहाशून्यसमाना ॥
अत्यंता नहिं मान अमाना।चहुं प्रलय महाकाल समाना॥
अस बाजी बाजीगर केरा । सोई कलंदर बंदर जियरा ॥
बाजी झूठ बाजीगर सांचा । परबसजीवविकलभौनाचा॥
बाजीगर बडचतुर सयाना। ठगि ठगिजिवसेवानिजठाना
जेहि जेहि भांति चहै सो नचावै।मोहडोरि बहु फेर घुमावै ॥
साटी नर्क डेराइ डेराई । लोभ स्वर्ग चारा देखलाई ॥
जीवहिनाचनचावतकाला।भावअनेककठिन जंजाला १२६
साखी—नाच नचावै यम सदा, भांति भांतिके भाव ॥
कबहुं चढावै पोहनी, जब जैसा सो दाव ॥ १२७ ॥
भूषण बहुत पहिनायके, बहुरि लेत छिटकाय ॥
बाजीगरके विलासमें, जीव बंदर पछताय ॥ १२८ ॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

अब हम जानियाहो, हरिबाजीको खेल ॥
डंक बजाय देखाय तमासा, बहुरी लेत सकेल ॥
हरिबाजी सुर नर मुनि जहंडे, माया चाटक लाया ॥
घरमें डारि सकल भरमाया, हृदया ज्ञान न आया ॥
बाजी झूँठ बाजीगर सांचा, साधुनकी मति ऐसी ॥
कहहिंकबीरंजिन जैसी समुझी,ताकीगति भईतैसी १२९

चौपाई ।

डोरी मोह न छूटै सोई । यमबसि जीव सदा रहै रोई ॥
बाजी बनायदेखाय तमासा।लेत सकेलि सो करतविलासा।

जाके स्वभाव दया सो दयाला। देखि सके नहिं जीव बेहाला।
जब जब बाजी काल पसारे। तब तब प्रभु पारख विस्तारे ॥
होय उदय यमजाल छोडावै। अभय अच्युत पारख शरणावै
जब जीव पारख प्रभुके पावै। डोरि मोह सो तुरत तोरावै ॥
प्रभु शरणागत रहत समाई। काल डरत तेहि निकट न जाई
यहि विधि जीव परमपद पावै। देखि काल तेहि बहु पछतावै
सकभरि चहत बझावै सोई। ऐसा अधम मूढ यम जोई ॥
जोपारखयमजाल मिटावै। तापरकालकलाकिमिपावै १३०
साखी—पारख तोरे भरम गढ, खीझे कालकराल ॥
कारि न सके कछु प्रभुता, ऐसो शरण दयाल॥१३१॥
सत्य शरण प्रभु पावते, टूटि मोहकी डोर ॥
अभय भक्त पारख सदा, कला न लागै चोर॥१३२॥

चौपाई।

रचना आदि जाल सो कहऊ। प्रभु पारख प्रसादसो लहऊ
सुनहु सभन भवचक्र कहानी। आदि अंत परे पहिचानी॥
महाआस्ति परकाशक सारा। महानास्ति सो धुंदाकारा ॥
धुंदाकार कछु वस्तु न भाई। झांई आस्ति भास दृढ पाई॥
भास अध्यास होत अकुलाई। ज्ञानहिमँह अज्ञान समाई॥
इच्छा सुख दुख सूझत नाहीं। कर्म द्रव्य बहु विधि प्रगटाहीं
एक अनेक सोई परवाना। नीचा नीच कर्म लपटाना ॥
तेई निरंजन अटपट चाला। सुखके जतन महा जंजाल
अनबनि चाल रहा जहंडाई। भूल स्वभाविक आपै सांई॥
द्रव्य कर्म इच्छा अरु ज्ञाना। मेटि मिटाय लहै विज्ञाना ॥

आपु अनंतसो परजा भाई । एक सो मायापति अन्याई॥
आपै चोर साहु सो आपै।भरमिक भरम विदश तेहि थापै॥
ममता राज अधिक अधिकाई।विविध भर्मकी लागी काई
सन्मुख संधि रहा लौलाई । आप ओट नाहिं परखाई ॥
पलकहि भारि जो प्रभुपद हेरे । तुरतहि झांई संधि निवेरे॥
जोसहि सन्मुख प्रभुके न होई।चाहैभलपै शून्यविगोई१३३

साखी—एक बातकी बात है, बहु विधि कहा बनाय ॥
भारी परदा बीचका, ताते लखा न जाय ॥ १३४ ॥

चौपाई ।

निर्विकारके करनि वेकारा । दुर्मति राज न सूझै पारा॥
एक अनंत जीव विलखाई।अटपट चाल दोविधि जहंडाई
प्रथमा सोई स्वरूप विराजै ।संधि स्वरूप चहुं विधि गाजै
दूजे विविधि भरमसोई जाला।घटपट ज्ञान होय वैठे काला
संधि ज्ञान सो भोंदू रचना।राज हेतु जीव विविध कल्पना॥
पारख प्रभु भवजाल छोडावै।झांई संधि सब तुरित मिटावै
रक्षकभक्षकजेहिलखिपरहीं।बिनपारिश्रमभवसारितातरहीं १३५

सत्य शब्द टकसार ।

साखी--गुरु तो ऐसा चाहिये, ज्यों सिकलीगर होय ॥
जन्म जन्मका मूरचा, गुरु पलमें डारे खोय॥१३६॥

चौपाई ।

सर्व परे प्रभु दीन दयाला।नीचे नीच सो काल कराला
जीवै जीव मध्य सो बासा । बिनु पारख सो काल गरासा
दया स्वभाव दया प्रभुकेरा।परख प्रकाश न लेश अंधेरा॥

सो बिनु पारखजीवनसाना।कालकला घट ताहि समाना॥
काल कराल सो दुष्ट स्वभाऊ।महा जाल भव ताकेदाऊ॥
तामस तम स्वरूप विराजै । सदा दुष्ट महा दुर्मत छाजै ॥
मूल पेड फल तीनि फलाई ।पंच रंग पल्लव फूलफलाई॥
कटु अरुमीठचुवैरसताही।भँवर होयजिवलुब्धै जाही १३७

साखी—अव्यक्त मूल जग पेडसो, तामस रूप दुखखान॥
लासा मोह बिकट तेही,पर हंसन अरु ज्ञान ॥ १३८॥
तामस केरे तीन गुण, भँवर लेइ तहां बास ॥
एकै डारी तीनि फल, भांटा ऊंख कपास ॥ १३९॥

चौपाई ।

प्रथम निरंजन शून्य स्वरूपा।जेहि विधि रचा महा भवकूपा
जीवन जीव देखि ललचाना।संधिअबुधताहि लपटाना ॥
ज्ञानरूप सो अंतर बासा।जीव स्वभाव जीवन परकासा॥
एक अनंतहोय करै परकासा।कालकराल पलहिपलग्रासा
सो बंधन जीवसुनहु अपाना।अनंतरूपहोयके अरुझाना॥
कारणविश्व अव्यक्त बेकारी।जीवन हरैसोई जालपसारी॥
तामस रूप निरंजन राया।सोई अगुण सगुण होयआया॥
थाना चारि आपु निर्माई । कला अनंत जीवभरमाई ॥
प्रथमें तुरिया ज्ञान कहावै । दूजे शून्य सुषोति धावै ॥
तीजे स्वासा सपन बनाई।चौथेपृथिवीजग बिटमाई १४०

साखी—जीव फंसे तेहि जालमें, सूझै वार न पार ॥
त्राहि त्राहि निसुदिन करै, साहेब लेहु उबार॥ १४१॥

साहेबको जाने नहीं, हाकिम चोर प्रचंड ॥
यम ठाकुर यमदेशमें, खंड पिंड ब्रह्मंड ॥ १४२ ॥

चौपाई ।

जीवहि ग्रासि एक तन भयऊ।दुबिधा कला तबै निर्मयऊ॥
कारण पुरुष एकरूप संवारी।इच्छो दुतिया कारण नारी ॥
चिदाकाश सो पुरुष स्वरूपा।शक्ति सगुण मायाके रूपा ॥
अर्धंगी सोइ नारि कहावै ।मेल मिलाप परस्पर भावै ॥
पवन थीर अंधेरी झांई। सदा बिलास भर्म तेहि मांई ॥
एक जीव दुई रूप समाना।बिनु पारख न परे पहिचाना॥
नारि पुरुष दोउ कीन्ह मिलापा।शून्यस्वरूप सुषुप्तिव्यापा
चिदाकाश दूजे थीर पौना।युगल शरीर मिला जिवतौना
कारण युगल खानि सोइ कीन्हा।प्रगट पिंडज अंकुर चीन्हा
कारणअनंतताहिबिटमाया।मध्यमध्यतेहिजीवसमाया१४३
साखी--नारि पुरुषके मिलापते, अदबुद बीज उपाय ॥
पृथक पृथक बहु रूप सो,प्रगट भये समुदाय॥ १४४॥
चिदाकाश सो पुरुष है, नारी सो थिर पौन ॥
बीज परे उपजै सोई, खेत अंधेरी जौन ॥ १४५ ॥

चौपाई ।

करतं मिलाप आकर्षण जोई।तेज अंश उतपानी सोई ॥
प्रेरिक बीज पाय बपु धारी।रचना नेह जलतत्वसंवारी॥
शक्ति अंश पृथवी परवाना । आपन रूप शून्यपरधाना॥
उपजी थीर पौनभई स्वासा।पांचकला पांचोंपरकासा ॥
गगन समीरअनल जल धरती।पांचो पांचरंग होयबरती॥

गगन स्याम आप बपु धारी।हरा पवनसो हर अधिकारी
अनल लाल विष्णु गुण गाजै। श्वेत नीर ब्रह्माको छाजै॥
पृथिवी पीत शक्ति होय आई।पांचो पांच कला निर्माई॥
न्यारे न्यारे चाल स्वभाऊ। बैर परस्पर कालके दाऊ॥
एकन एक सोई रखवारा।पुनि सो एकन एक संघारा१४६

साखी–बैर भाव सो पांचमें, पुनि एक भाव मिलाप॥
दुख सुख कारण विदितसो, अगम बुद्धिपरताप१४७
रंग वर्ण सो पांचके, न्यारे न्यारे चाल॥
भाग पांचसो पांच गुण, महा विकट यमजाल१४८॥

चौपाई।

तीनि पौनतिनि नाडि बनाई। माया अंश सोई प्रगटाई॥
इंगला पिंगला सुषमना सोई। अजहरि हर तेहि मध्यसमोई
नाशक नेह सुषमना कीन्हा।स्वासानेह पिंगलारचिलीन्हा
इंगला अपनी अंश उपाई। त्रिविध होय माया प्रगटाई॥
चंदा रजगुण अज हितकारी।पालन सूर्य विष्णु अधिकारी
सुषमना परलयशंभु निवासा।त्रिगुणहोयशक्ति तेहिफांसा॥
उपजा खेत श्वास तरु पौधा।कला अनंत तेहिभीतरसोधा
पांच श्वास तिहुं नाडि समाई।भिन्न भिन्न सो अदल चलाई॥
स्वासा वास जीव भये जबहीं।चंचलता बहु उपजी तबहीं
तीनि शरीरजीव तब पाई।तुर्या सुषुप्ती सपन अरुझाई१४९

साखी–तुर्या सुषुप्ती सपन ले, पाये तीन शरीर॥
ज्ञान अंधेरी चंचलता, काल फांस गंभीर॥ १५०॥

कारण उष्मज खानिके, सोई कीन्ह प्रकास ॥
आशा सोई कहावई, बासा जहां विलास ॥१५१॥

चौपाई ।

सोई श्वास लिंगम तनधारी । तैंतिसकोटि योनिविस्तारी
खानी तीन लिंगमप्रतिकीन्हा।पिंडजअंकुरअण्डऊष्मजदीन्हा
पांच तत्व त्रिगुण संचारी । नारी पुरुष दुइरूप संवारी ॥
सातस्वर्ग स्वासाबिचकीन्हा।तैंतिस कोटि बासातहांदीन्हा
सो रचना विस्तार बनाई । जोतिष दृष्टि सब परेलखाई॥
जोतिष श्वास ब्रह्मांड दरसावे । श्वास पिंड सरोदै गावै ॥
सोई मूल ब्रह्मांड अरु पिंडा।अगम कला बुद्धि परचंडा॥
सो सब कला कहब कछु आगे। परख प्रताप जगायेजागे
कारण सब सूक्षम जमजाला।प्रगट लखाये दीनदयाला॥
महाअंध तमकर्मकी खाई।नाचतहतेप्रभुलीन्हछोडाई१५२

साखी—रामरहस गुरुकी दया, छूटा कठिन भ्रमजाल ॥
भये अशंक शंका नहीं, पारख मिले दयाल ॥१५३॥
पिंडजाल वर्णन करौं, सुनो सन्त चितलाय ॥
लोक वेद बिख्यात है, विरले परख लखाय ॥ १५४॥

चौपाई ।

स्वासा गरजि घटा होयआया।पूरण जल अस्थूलउपाया
सो जल अंड अकारप्रमाना। त्रिगुण पांचों तत्व समाना॥
पोकचा मध्ये कमलदलसाजा।ताहिकमलएक रूप उपराजा
अंड फूटि अस्थूल उपाना । चारि अवस्थामें प्रगटाना ॥
जैसे स्वासा लिंगम भयऊ। वैसेहिपिंडजाल रचिदयऊ॥

नाडी तीनि श्वासामें राजै। तैसेहि तीन पिंडमें गाजै ॥
वात पित्त कफ तीहुमें धावै। त्रिविधि अपनी राजजनावै॥
पांच तत्व ले पिंड प्रकाशा। पांचों पांच अंश सुखबासा॥
आपु हरि हर ब्रह्मा माया। त्रिगुण शक्ति बनीसोकाया ॥
पिंड शक्तिको अंश बनाई। रूप कला होय आपु समाई॥
पन सोई चार अवस्था कीन्हा। चारों लक्ष चहुं बीच दीन्हा
बालापन तुर्याके रूपा। चेरिक भरमिक शून्य स्वरूपा ॥
चञ्चलयुवा श्वास अधिकारी। पृथिवी बिरधाई संचारी॥
जन्म शक्तिसो आदि जनावै। मरणशक्तिसोब्रह्मकहावै १५५
साखी–तीन अंश महाशून्यके, अज हरि हर बपुधार ॥
मायाके गुण तीन सो, नारी पुरुष विचार ॥१५६॥
त्रिगुण फांस बहु भांतिके मध्य किया परकाश ॥
आदि रूप माया भई, अंत आपु सो नाश ॥१५७॥

चौपाई।

पांच तत्व अस्थान विशेषा। पृथक पृथक त्रिगुणके लेखा
मेरु शिखरपर आपु बिराजे। शब्द अनाहद बहु विधि बाजे
धरति कलेजा मुख जेहि द्वारा। खान पान सोइ करै अहारा
लिंग द्वार जल भाल निवासी। मैथुन अहार सोइसुखबासी
पावक विष्णु पित्तसो बासा। द्वारा नैन रूपको आसा॥
पवन नाभि शिव बास कराई। नासाद्वार गंधसो लहई ॥
बायें कोठी अनल बनाई। दहिने जल कोठी निर्माई ॥
बाइ गिरह नाभी बिच दीन्हा। तीन कला मायाको कीन्हा
आपु निरंजन मन होय आये। तीनि अंश तहंवा निर्माये

चितबुधिअहं अज हरिहर रूपा।अंतःकरण शक्ति अनुरूपा
पांच पांच पुनिपांचउपाना।एकनिएकबैरविधिनाना १५८
साखी–पांचसे पुनि पचीस भौ, भिन्न भिन्न सो दाव ॥
विवश परे तेहि जालमें, जीव दुसह दुख पाव१५९
वर्णन गुण प्रकृति सो, सुनिये संत सुजान ॥
रामरहस गुरु परखते, मेटा सब अज्ञान ॥ १६० ॥

चौपाई ।

पांच पचीस कीन्ह विस्तारा।तीन शक्ति नौ रूप संवारा॥
नाडीचाम हाड कच मासू।पृथिवी प्रकृति पांच सो बासू॥
माया नाडी शिवरोमनिवासी।चामविष्णुअजमासुप्रकासी
हाड निरंजन आपु कहावै।अनंत फांस जीवहि भरमावै॥
रक्त पित्त कफ बिंद पसेवा ।जल प्रकृति सोइ पांच उपेवा
रक्त शक्ति मायाको छाजै । पित्त विष्णुके अंश बिराजै॥
कफ ब्रह्माके अंश उपाई। शंभु पसेव बिंद सो राई ॥
भूँख प्यास आलस जंभुवाई। निद्रा पांच अनल उपाई ॥
ते पांचों सोइ पांच कहावै । भूख शक्ति माया देखलावै॥
तृषा शक्ति ब्रह्माकी शोभा।आलस लक्ष विष्णुकी आभा
जंभुवाई शिवके बिस्तारी।नींदनिरंजन आपु संवारी१६१
साखी–अस प्रपंच सब कालके, भटका रहत अयान ॥
बिनु शरणागत पारखी, किमि पावै कल्यान॥१६२॥

चौपाई ।

बोलन धावत बल परधाना। पसारन संकोच वायु परवाना
सोई पांच पुनि पांच कहावै।बोलन शक्ति माया देखलावै

बलसो विष्णु पसारनअजके।धावन शंभु संकोचसहजके॥
काम क्रोध लोभ मद मोहा।पांच प्रकृति गगनके सोहा॥
तहां मोह मायाके रूपा। हरी काम अज लोभस्वरूपा॥
क्रोध महादेव मदसो आपू। कला अनेक काल परतापू॥
तीनि शक्ति नौ नाडी कीन्हा।इंगलापिंगला सुषमनाचीन्हा
शिवसनकादिकदंडरचिधारीगणेशनिपथस्विंनिमूलसंवारी
हस्तिनी पुहुखा पचये गंधारी। इमि संतननाडीनिरधारी
अलंबुखा अरु कुहू कहावै।बारुनि शंखिनि यहिनौगावै॥
तेहि नेह नौ द्वार उपानी। त्रिविधि होय मायाप्रगटानी॥
दशयें भाग माया होय आई। लिंगरूप निरंजन राई॥
पुरुष अंश बीज होय धावै। अष्टांगी रज अंशमिलावै॥
पांच तत्व त्रिगुण होय आई।अष्टांगी तेहि भांति बनाई॥
अष्ट अंग तेहिनेहउपाना।नारीपुरुषहोयकेअरुझाना १६३

साखी—नारी समानी पुरुषमें, पुरुष समाना नारि॥
युगल अंश पट लायके, रचा जाल विस्तारि १६४॥

छन्द—परपंच पांच पचीसभौ,अनमिलसबै निजदावको॥
संग एकन्हि एकमें, उतपात अनेकन्हि ताहिसो॥
बहुरोग शूल देखाय जीवहि,चैन नहिं एकछिनदियो॥
नित घुर्म घुर्मित कालचक्र,दरेरि तेहि घायल कियो॥
बहु व्याधि खानि सो पिंड औ,ब्रह्मांड पिंजरमोंबसो॥
प्रीति औ प्रतीति सो दिनदिन,जाल यमसोंदृढगसो॥
हँस चहै आनंद तेही सों, फंद है जिसमें फँसो॥
व्याधा शरण सब ताकहीं,बुद्धि देखि पारखीहंसो १६५

साखी–परबस हाथ वधिकके,हंस चहै आनंद ॥
हेत अटल पारख सोई, उचटि जाय यमफंद॥ १६६॥

चौपाई ।

सात कमल औसायर साता । पिंड ब्रह्मांड एकसमबाता॥
सात स्वर्ग स्वासा अनुसारा । घेरा सात सायरके डारा॥
स्वर्ग सात सायरको आसा । कमल प्रबंध पिंड पराकासा
दल सहस्रदश कमल उपाई । मेरु शिखर ऊपर उरमाई॥
सहस्रश्वासातेहिमांह विलासा। आपुनिरंजनकीन्हावासा॥
दुइदल त्रिकुटी मांहि बनाई । सहस्रश्वास ज्योति फैलाई॥
सहस्रश्वास शारदा नेहा। कमल षोडश दलकंठउरेहा ॥
द्वादश दल हृदय अस्थाना।अनहद चक्र श्वेत परमाना ॥
षटसहस्र श्वासा बधाना । पारवती शंभूके थाना ॥
दशदलकमलनीलरंगकीन्हा। कमलाविष्णुको बासादीन्हा
षट सहस्र श्वासा अनुहारी । विलसे दोय पुरुष औनारी॥
अष्ट कमलदल पीत संवारी। पेडू नाभी तले पसारी ॥
षट सहस्र श्वासा संचारी । अज सावित्री बास विचारी॥
मूलचक्र कमलदल चारी ।तेहिबिच गणपतिवाससंवारी॥
लालरंग तहां छौसै श्वासा।सातस्वर्गसोईपिंडप्रकासा १६७

साखी–प्रति प्रतिकमलगांठिहढ, सोई पहाडरचिलीन्ह ॥
तेहि पास सागर रचा, भिन्न भिन्न गुण कीन्ह॥ १६८॥
कारण सब सूक्षम भये, कारज है विस्तार ॥
प्रगट अवनी और पिंडमें,बिरला समुझनहार॥ १६९॥

चौपाई।

कमल सात सोई सातपहारा। गांठि कटोरी घेरा डारा॥
सोई प्रति कमलपहार कहावै। देवपारचक्र वैकुंठ बतावै॥
कैलास हेमवान हेमवंत सुमेरा। सायर सात तेहिकेघेरा॥
लोन अपछ औ क्षीर सुधारा। मदिराघृत दधिजलधारा॥
शिखर सुमेर शुद्ध जलजोई। जोगी अमिरस चाखैंसोई॥
घृत सायर हेमवन्तनेवासा। दुइ दलकमलज्योतिपरकासा॥
हेमवान दल षोडश कहिये। सायरदधि ताहिढिगलहिये॥
द्वादस कमल कैलास उमराई। सुरा समुद्र तेहि तीरबनाई॥
दश दल सोई वैकुंठ कहावै। सायर क्षीर तहां उपजावै॥
पारचक्र अष्टदल सोई। सायर अपछ ताहिढिगहोई॥
कमल चारि दल मुग्ध बनाई। सायर लोन तहां निर्माई॥
नाडी तीनसै साठ उपराजा। कसनीं बहत्तर कोठीसाजा॥
सोईप्रतिकमलकलाअनुहारी। नाडीसंगमकोठिसंवारी१७०

साखी—रग जो तीनसै साठिले, मेल जहां तहां कीन्ह॥
कोठी बहत्तर विदित सो, हंस अरुझावन दीन्ह१७१॥
और अनेकनि जाल जो, सबै सुनहु बिलगाय॥
दश औ तीन प्रकारके, वायु सो तहां उपाय॥१७२॥

चौपाई।

दश वायु दश बाजा बाजै। शब्द अनाहद सोई गाजै॥
झीनी पांचसो पुरुष सनेही। मोटी पांच मायाकी देही॥
प्राण अपान औ व्यान समाना। पचयें वायु है उदाना॥
हृदय प्राण है गुदा अपाना। नाभि समान कंठ उदाना॥

सर्व शरीर व्यापै सो व्याना । पांचो पांच तहां परधाना ॥
अज अपान है हरि उदाना । शिवसमान मायासोव्याना॥
प्राण निरंजन आपु कहावै । पांच थूल वायु निरमावै ॥
कूर्म नाग किंकिरा धनंजे । देवदत्त सोई पांच भनीजै ॥
वायु नाग उदगार स्वभाऊ । वायु कूर्म नेत्रके दाऊ ॥
किंकिरा सो चमकावन करई । देवदत्त जेहि बलपगु धरई॥
धनंजयबलसाधनकेपावै।कायाविशुर्चनबहुविधिलावै १७३

साखी--बल विशेष समसाधना, आपु धनंजय सोय ॥
जतन विविधितेहि लाइके, योग अभ्यासी होय १७४
बड उतपात उतपातिके, कला लखै नहिं जीव ॥
सदा रहें लौलीन तेहि, कबधौं मिलहिंगे पीव॥ १७५॥

चौपाई ।

आपन आपन भाग देखावै। जहां तहांपांचकलाहोयधावै
ब्रह्मा नाग हरिकूर्म होई । किंकिरा हर चमकावै सोई ॥
देवदत्त माया परधाना । धनंजय रूप आपु भगवाना ॥
तीन शक्तिकी अंशी बाई । पूरक रेचक कुंभक लाई ॥
लेत कछु पूरक गहि लेई । अज हितकारी कहावै तेई ॥
रेचक सो जो छोडे बाई । विष्णु आप तेहिमांहिसमाई ॥
कुंभकसो जो गहिके रहई । सुषमना अंश शंकरसोलहई॥
चहत कहत पुनि ताहिनसावै। होत प्रगट तेहि तहांछुपावै॥
प्रगटत पालत अंत नसावै।तीनितीनिअंश युगल देखावै॥
षट सो कला जगतपरचारी । तीनितीनिअंशपुरुषऔनारी

साखी-षट ऊर्मी षट रस पुनी, षट दर्शन षट कर्म ॥
षट शास्त्र षट ऋतु सो, षट ब्रह्माके धर्म ॥ १७७ ॥
षट दक्षिणायन सोई कला, उत्तरायण षट मास ॥
षट सब भेपहि जानिये, युगल अंश परकास ॥ १७८ ॥

चौपाई।

बड खटखट सोइ षटके होई । परखै छूटै बिरला कोई ॥
बहु परपंच पिंड ब्रह्मंडा । नहिं सुख दुख कलेश प्रचंडा ॥
रचि अस्थूल कला बहु भारी । अष्ट अंगको भेद संवारी ॥
मस्तक आप निरंजन राया । अंग सात सोई प्रति माया ॥
अतल वितल सुतल निर्माई । तलातल रसातलतल प्रगटाई
सतये सो पाताल बनाई । पारखनी मारग उरमाई ॥
शंकर पीठ तेहि तल नामा । नारी पुरुष दोउ ढिग विश्रामा
अतल हरि सो बांहु कहावै । तलातल पगु लक्ष्मीको धावै ॥
छाती वितल सो अज परवाना । पेट सुतल सावित्री थाना
पेडु रसातल आदि भवानी । पृथिवी सातसोई परवानी १७९

साखी-पेडू रसातल ताहिमें, लिंग पुरुष परधान ॥
नारि विषेशन मोहनी, भग अकार निर्मान ॥ १८० ॥
नारी मोहै पुरुषको, पुरुष बसी सो होय ॥
बडी परस्पर लाग है, जीव बिकल रहै रोय ॥ १८१ ॥

चौपाई।

नारी होय पुरुष लौलावै । पुरुष सदा नारीको धावै ॥
मिलहिं परस्पर सुख अनुमानी । कठिनकलेशपरे नहिंजानी
गांस भास दृढ रूप समाई । दुर्मति छिनछिनजीव बिलखाई

विरह वियोग सतावे भारी। कोउ बिन पुरुष कोउ बिन नारी
पुरुष चहै अपने बसि नारी। नारी अपनी दाव विचारी॥
कठिन उतपातअनेकन्हिभांती। परखहु ताहिनहीं कुशलाती
नारी पुरुष होय कौन समाना। परखहु तेहि सुनु संतसुजाना
नारी पुरुषके भाव मेटाई । सकुच चतुरता कपट नसाई ॥
शरणागत प्रभुके दृढ गहहू। पारख पाय अभय पद लहहू॥
बिरला जे साहेब अनुरागी। मोहनींद सोवत उठिजागी ८२
साखी–हंसन नारी पुरुष है, ये सब कालको फंद ॥
गांस भास सो मेटिके, साहेब शरण आनंद ॥ १८३॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी–नारी रचंते पुरुषा, पुरुष रचंते नार ॥
पुरुषै पुरुषा जो रचै, ते बिरले संसार ॥ १८४ ॥
जो तू चाहै मुझको, छाड सकलकी आस ॥
मुझहि ऐसा होय रहू, सब सुख तेरे पास ॥ १८५ ॥

चौपाई ।

सुनहु कालकला बहुतेरा । जीवन जीव लुटै तेहि घेरा ॥
पुनिअस्थूल दुइ कला प्रकासा। नारी पुरुष दोयअंगनेवासा
दहिने पुरुष बायें सो नारी। विविधि भांति यमजालपसारी
रेषालक्षण रचि रचि दीन्हा। चीन्ह चक्र सोई छापाकीन्हा
तेहि बिच कला अनंत सँवारी । लेखा कर्म धर्म अनुहारी
कर्म भोग जीवहि भुगतावै। पल पलसो सब लेखा लावै॥
तासु लक्ष सामुद्रिक कीन्हा। विद्या रची प्रगटकै दीन्हा॥
बहुत भांतिके कर्म बौराई। दुर्मति शुभ अरु अशुभ बनाई

आपै बहु नाच नचावै। दोष लगाय जीवहि सतावै॥
कबहूं अकर्म सोवै रीझै।कबहूं सुकर्म करत बहु खीजै१८६
साखी—बहुत कुकर्मी राज दै, धर्मिकको दुखभूरि॥
कर्म सुकर्म मिलायके, अंत मिलावै धूरि॥१८७॥
राजा कुटिल प्रपंची रानी,दुष्ट भाव सब फौज॥
चैन न परजा जीवको,सब चाहैंअपनी मौज॥१८८॥

चौपाई।

घटघट काल करे घनघोरा। मारे लुटे खाय चहुं ओरा॥
उपजी खेती अनबनि भांती। भाव जीव आसेउतपाती॥
चारिखानि सोइआपुबिराजे।संमककला सबहीकोसाजे॥
चारि खानिजेहिभांति उपाई।चार कलासो प्रगटदेखाई॥
पिंडज तुर्या अंश स्वरूपा। अंकुरजसोहै शून्य स्वरूपा॥
स्वासा नेह उखमज उत्पानी।पृथ्वी सनेही अंडजखानी॥
पिंडज आपु अधार उपावै।जडता शून्य स्वरूप बनावै॥
स्वासा चंचलता अधिकारी।आशा धरती अंडसंवारी॥
आसाउतपतिकारण जाना। सोईअधिकारचालविधिनाना
बासाचारिखानिपरवाना।ताकर भेद सुनुसंतसुजाना१८९
साखी—आसा पिंडज तुरिया, धरतीजान बिलास॥
जर लागी महाशून्यमें,जडता दीन्य निवास॥१९०॥
अंकुरज कारण थीर पौन, पृथिवी प्रगटे आय॥
जुगल शून्य जड रूप सो,चेतनता न लखाय॥१९१॥

चौपाई।

लिंगम कारणउखमजकेरा। उपजन अनलअस्थूलसबेरा॥
पवन विलास आसतेहिआगी।तेहितेखानिकछुकसोजागी

अमित स्वभाव विशेष बनाई। उपजी नाशबहुदेरनलाई॥
अंडजकारण धरती कीन्हा। पवन विलासमनोरमदीन्हा॥
उखमजते चेतन अधिकाई। अंडजश्वास विलासबनाई॥
उलटिपलटिकै रची उपाधा। महाकठिन उतपातवियाधा
चारिखानि जोइनि परवाना।लख चौरासीकियाबंधाना॥
बिचबिच कला अनेकपसारा। नारि पुरुष दुइ रूपसंवारा॥
जेहिविधिचारिखानिनिर्माईप्रतिप्रतिखानिसोइचारिसमाई
जुई ढील अंडज उपराजा।अंकुरज रोम सो पिंडविराजा॥
साखी-कीडा उखमज लादमें, अनेकन भांति स्वरूप॥
पिंडज भाव उतपति भये,विलगविलग गुणरूप१९३
देखहु फंद सो कालके, प्रगट कह्यों परचार॥
रामरहस गुरुके शरण, परख शब्द टकसार॥ १९४॥

चौपाई।

रचि खानी बहु कालासंवारी। कला कालको भेद निवारी
उत्तम मध्यम लघुता कीन्हा।निकृष्ट चारि खानिमेंदीन्हा
एक एकसे उत्तम होई। एक एकसों मध्यम सोई॥
पुनि लघुता एकनसों एका। एकते एक निकृष्ट विशेषा॥
नारी चारि पुरुष सो चारी। चार खानसोकला पसारी॥
पदमिनिचित्रिनिशंखिनिकीन्हा।हस्तिनीचौथेरचिकेदीन्हा
भेद चाल गुण न्यारेन्यारे। भोग भावको कलोलपसारे॥
ससा मृगघोडा खर राचा। चारिकलासों पुरुषमेंसांचा॥
आसन बहु विधि काम प्रसंगा।व्यापिरहा बहु रंग तरंगा॥
अनेकन्हि जतनसो कलापसारी।विद्याकोक लक्षसोडारी॥

साखी—विद्या कोक परगट किये, मानुष उत्तम होय ॥
भोग होत बहु भांति सो, चले अपनपौ खोय १९६॥
जो नहिं जानहि कोक विधि, पशुवा ताहि बखान॥
अपने उत्तम मानिके, ऐसो अधम अज्ञान ॥१९७॥

चौपाई।

रंगरूप कोइ गोरा स्यामा।गोहमन करो चार परमाना ॥
बवना नाटा और मझोला। लंबा सोई चार प्रतिकूला॥
गढन अस्थूल भेदसो चारी। बहु सुन्दर सम शुद्ध संवारी
मध्यम निर्घिन कीन्हा सोई।अनंत कला तेहि मध्य समोई
देखिये सुंदर एकते एका ।एक देखि एक लागत फीका ॥
जेती कला काल प्रगटावै ।अवस्थाचारि सोजुगतदेखावै॥
जहांजहां चारिकीन्ह विस्तारा।चारि अवस्था कारणसारा
कारण एक कारजसो अनेका।परखहु संत जीव करहु विवेका
जसजस परखहुफीकाहोई।व्यापै न कालकला पुनिसोई॥
पारख पाय कलानहिं लागे।ऐसीशरणनगहहिंअभागे १९८
साखी—पारख पाय फीका परे, उचटि जाय यमजाल॥
भक्तिभाव दृढ शरण जो, सोई सदा खुसियाल १९९
कला काल सब परख ले, जेते हैं सब फांस ॥
बिन पारख सोई बीज है, जन्म मरणके गांस २००

चौपाई।

काल फंद रचा बहुताई । फंद बीच बहु फंद उपाई ॥
बहिरा अंधा काना गूँगा। नकबैठा लूला औ पंगा ॥
कुबजा अष्टावक्र बनाई। आपु घीन पुनि आपु घिनाई॥

जाल प्रति जाल न्यारेन्यारे।तामें बिकल रहे जीव विचारे
उतपति पालन और संघारा।त्रिगुण जहां तहां सोई विस्तारा
खानि रोगके पूरण अंगा । बहुत भांति उपजावै सोगा॥
केहु निहारे तन सुन्दरताई। केहु देखि मन बहु पछिताई॥
रहै न सुंदरता अरुबीना।छिन छिन औरेहि औरेकीन्हा॥
धूरि मिलावै रखै नहिंचीन्हा।ताहि मगन पछेतावनदीन्हा
घात परस्पर जोइन सोई । एकन्हि एक जहां तहां खोई ॥
जीवन हान करै जिव केरा।परखहु बांचहु हंस सवेरा२०१॥
साखी–प्रभुके शरण सहाय बिनु, कैसे होय उवार ॥
अधम काल ग्रासै सबै, अपनी जाल पसार ॥२०२॥
और अनेकन जो कला, कीन्हा काल परचंड ॥
बझै जीव बहु भांतिसो, थूल अस्थूल ब्रह्मंड॥२०३॥

चौपाई ।

भूत प्रेत जोइन विस्तारी । थूल अस्थूल मध्य तेहिडारी
घोर कष्टसो जोइन कीन्हा। दुइके संगमें बासा दीन्हा ॥
पांच तीन झीना औ स्थूला । अष्ट वायुसो जोइन मूला॥
आयु काल समय बनि आवै।आयुहि बीचै मांहि नसावै॥
मृत्यु अकाल बिनासे देही । प्रेत जुईनमों राखहि तेही॥
भूत प्रेत आशा उपजावै । जोइन भूत ताहि भरमावै ॥
सो जोइनीके हेतु प्रपंचू । बहुत कलेश जीवहिने संचू॥
तेहि जोइन सो कला प्रकासा।बिनसै देह आशा सोईबासा॥
साबर मंत्र यंत्र उपराजा । प्रेत लक्ष ताहि बिच साजा॥
तामसगुणसो शिवअधिकारी।विद्याधनीपुरुपऔनारी२०४

साखी–बहु प्रकारके रूपधरि, काल करे घनघोर ॥
सोई ठाकुर सब जीवके, जे स्वतःकुटिलता चोर२०५

सत्य शब्द टकसार।

साखी–साहेब साहेव सब कहैं, मोहि अंदेसा और॥
साहेबसों परचय नहीं, बैठहुगे केहि ठौर ॥ २०६ ॥

चौपाई।

और सुनहु ब्रह्मांड पसारा। सूक्षम पिंड सोहै विस्तारा॥
जेहि विधिलिंगम पिंड संवारा।समसोइकलाब्रह्मांडप्रचारा
पिंड ब्रह्मांड भाव नहिं दूजा।अंडरूप सबै होय उपजा॥
गोल अकार चक्र है जोई। सर्ब रूप सोइ परगट होई ॥
सोई अंड ब्रह्मांड कहावे। सर्व बीज सोई रूप उपजावै॥
पृथक पृथक ब्रह्मांडनियारा।गनत गनतकोइ पावैनपारा॥
ओर छोरमहाशून्यहै जाके।खोजि बेअंत बतावहिं ताके॥
ब्रह्मांड रचना विस्तारा। प्रगट पिंड ताके अधारा ॥
चिदाकाश सोई पुरुप कहाई। ताके मध्य शून्य निर्माई॥
शून्य मध्य स्वासा उपराजा।स्वासा बीच धरतिको साजा
चिदाकाशसो तुरिया झांई। सुषुप्ति सोई शून्य परछांई॥
झांई स्वासासपनकहावै।छायापृथिवीजागृतलावै॥२०७॥

साखी–ब्रह्मांड विस्तारसो, पिंड अंश आधार ॥
गांसभांससोईचारिके, अवस्था लखहुविचार॥२०८॥
तुर्यातीत एकता जबै, भेद बुद्धि नहिं चार ॥
पँचयें आपै आपसों, ग्रसै जीत परचार ॥ २०९ ॥

महाकारण सो आपुहि राई । दोय स्वरूप तहां प्रगटाई ॥
इच्छा शक्ति सो माया छाजै।पुरुष ब्रह्म आपु होय गाजै॥
दुतिया लोई शून्य बिस्तारा।तासु नाम कारण परचारा॥
करत मिलाप पुरुषऔ नारी।कारण अनेकरूप बिस्तारी॥
वीज अनेक पुरुषके अंसा ।उपजी दुतिया खेतमौ बंसा॥
पांच तत्वके कारण कीन्हा । पांच श्वास उपजाई लीन्हा
मिलत आकर्षण अनल प्रकासी।रचनाहेतु वीजजलरासी
प्रेरिक बल सब कारण धाई । दुतिया खेतमें रहा समाई॥
सोई कारण वायू केरे । तीनों पुत्र रायके चेरे ॥
आपुहि कारणशून्य स्वभाऊ।पृथिवीथीरपवनकेदाऊ२१०

साखी–कारण शून्य है श्वासके, महाकारण सो आप ॥
अनल आकर्षण वीज जल,प्रेरिक वायू थाप॥२११॥
कारण पृथिवी खेतसों, थीर पवन विख्यात ॥
पांच तत्व कारज भये, परगट बड उतपात ॥२१२॥

चौपाई ।

पांच कलाजो कारण साजा। पांच श्वास लिंगमउपराजा
आपुहि शून्य निरंजन धाये ।पृथिवी महाशक्ति निर्माये॥
प्रेरिक बल अंशी सो बाई ।अनल अकर्षणसों उपजाई॥
रचना नेह जलसों कीन्हा। उपजै खेत सबकारणचीन्हा ॥
कारज प्रगट भये विस्तारा ।पांचहु चाल न्यारा न्यारा॥
तीन पुत्र दोई पितु अरु माता।बैर विरोध परस्पर घाता॥
पुरुष अंशसो तीन उपाये । तीन अंश माया प्रगटाये ॥
अंशी पुरुष तीनि सो छौना।माया कला तीन घरपौना॥
तीनिहुं घरसो नाडि बनाई । चंद सूर्य तेहि मध्य समाई॥

सुषमना तहां राहु संचारी। अज हरि हर सोई बपु धारी॥
तीनों तीन कला विस्तारी। समय तीन सोई अनुहारी॥
दक्षिणायन उत्तरायन जोई। इंगला पिंगला बिलसै सोई॥
कबहुं सूर्य घर चंदा जाही। चंदा कबहुं सूर्यघर माहीं २१३॥
साखी—जसजस चंदा सूर्यघर, तस तस होवै छीन॥
जस जस बल घर आपना, बढै कला होय पीन २१४
पंद्रह तिथि परवान सो, अपने अपने पच्छ॥
जब जब तीनिहुं एक घर, करै काल सो भच्छ २१५॥

चौपाई।

अपने घर चंदा बल पावै। तहंवाँ ताहि राहु सतावै॥
अपने घर सूरज बलवाना। केतु होय यम तहां समाना॥
औसर आप आप जो गावै। तीनिहुं तीन कला होय धावै॥
उपजन पोषण अंत नसाना। लिंगम ब्रह्मांड सोई परवाना॥
तीनि नाडि नौरूप बनाई। सोई नौ ग्रह होय प्रगटाई॥
तेंतिस कोटि योनि विस्तारा। सोईतारागन औतारा॥
सातस्वर्ग तिनके अस्थाना। तामें अनेककला विधिनाना॥
आपु अपवर्ग सातके मूला। सोईश्वास लिंगम प्रतिकूला॥
नवयें थीर पवन ब्रह्मंडा। कारण उतपति प्रलय प्रचंडा॥
नारि पुरुष दुइ रूप परवाना। देव योनिसो कलानिर्माना२१६
साखी—पांच श्वास गुण तीन लें, श्वास लिंगब्रह्मंड॥
सात स्वर्ग अपवर्गके, भिन्न भिन्न सो खंड॥ २१७॥
रूप अनेकन ताहि में, तारागन परवान॥
सोई सब देव कहावहीं, ब्रह्मांड थूल है जान॥२१८॥

चौपाई ।

रातिदिसजो पलक न माना। लगन अंधेरीखुलतजगभाना।
परकाशिक सब घटपटरूपा । थीर पवन झांई तमकूपा॥
चंदादिक परकाशिक भूला ।जागृत सूर्य देखिजिवभूला ॥
राति दिवस सोई परवाना।एक नारि एकपुरुष कहाना ॥
तेहिमें तीन कला निर्माया । संझा तीनि तेहि प्रगटाया॥
आदि अंत एक मध्य प्रमाना।ताबिचलगनकलाविधिनाना।
दश द्वारा दश दिशा बनाई।अष्टांगी तेहि मांह समाई ॥
योगिनी होय बहु कला देखावै।सन्मुख बायें ग्रासन धावै
पाछे दहिने रक्षक सोई । जोतिषदृष्टिलक्षणसबहोई ॥
परिवा नौमी पूरब वासा ।उत्तर दुतिया दशमि निवासा ॥
तीज एकादशि अग्नेय रहाई । बायव्य चौथ द्वादशी धाई ॥
पंचमी त्रयोदशि दक्षिणविराजै । षष्ठी चतुर्दशीपश्चिमगाजै
सप्तमीपूर्णिमानैऋत्यरहई।अष्टमीअमावसईशान्यविहरई २१९

साखी–जब सो चाल चलावै, चले विविधि सो चाल ॥
न्यारे न्यारे दोष गुण,विदित कला है काल ॥२२०॥
दशा सबै सो थूलके, जोतिष दृष्टि लखाय ॥
रचना है ब्रह्मांडकी, बहु पसार समुदाय ॥ २२१ ॥

चौपाई ।

सात स्वर्गके सात बंधाना। सोई पहाड लिंगम परवाना॥
सायर सात सातके पासा । सोई सूक्ष्म कारण परकासा ॥
धरती सो अस्थूल कहाई । तेहिमें कारज होय प्रगटाई ॥
पुरुष अंश होय जलसोइधाई।लिंग मथी सोई बीज उपाई॥

पूरण ग्रंथमें अंड परवाना। सो फोकचा ब्रह्मांड बखाना
फोकचा पृथिवी सोई ब्रह्मंडा।तामें बहु विधिरूप प्रचंडा॥
अंत रूप सब धूरि मिलाई।देखि देखिजीव बहुपछताई॥
जोई बीज पुनि सोइ रजहोई।दुई देह धरि प्रगटे सोई॥
पांच तत्त्व सोई कारजरूपा।रहा समाय सो सबैस्वरूपा॥
एक एक व्यापिक सब ठौरा। इन्ह परपंच जीव भौ बौरा॥
तीनिनाडित्रिबेनीकीन्हा।गंगायमुना सरस्वतिरचिलीन्हा
शिखर सुमेरसों प्रगटी धारा। तीनों तीनलोक परचारा॥
द्वीपद्वीपप्रति संगमकीन्हा।पुनिसोभिन्नभिन्नकेदीन्हा२२२

साखी–प्रति प्रतिद्वीपसंगम करी,पुनि तेहि दीन्हछिटकाय
सो त्रिबेनी राज है, प्रजा नदी समुदाय॥ २२३॥
जब जब करै जलामयी, गडबड सम्यक होय॥
सूक्ष्म हेतु जो गावहीं, बहुरि प्रगटतहै सोय॥२२४॥

चौपाई।

नदी जहां तहां संगम कोठा। पारख बिना भये सब खोटा
सायर सात सोई परवाना। नौ नाडी नौ खंडनिसाना॥
सात पहाड सात सोई द्वीपा।सोई पहाड अस्थिके रूपा॥
धरती मासु रक्त सो नीरा। अकुरज रोम सोहै शरीरा॥
दीपबंद खंड ब्रह्मांड संवारी। रचनामें रचना विस्तारी॥
सो अस्थूल ब्रह्मांड कहावै। अष्टांगी होयके दिखलावै॥
एक सुमरेसो शीस बनाई। सात अंग धरती निर्माई॥
सोई सात धरती परवाना। ऊंचा नीचा अंग ठेकाना॥

रचि ब्रह्मांड कला बहु भारी। सोई अंश सब पिंड संवारी॥
उत्पतिआदिप्रलयसोअंता। मध्यमध्यतेहिकलाअनंता २५

साखी–अष्ट धातु बहु खानिके, उपजा जग विस्तार॥
नित प्रतिपालन नाशक, रहै न एक करार॥ २२६॥
नित उपजे अरु नित खपै, निश्चय नष्टसो मूल॥
परखहु काल कला सबै, देखि जगतमति भूल॥ २२७॥

चौपाई।

चलै नित्य सो जगत कहावै। ठहरै नहिं नित नव प्रगटावै॥
अस्थिरता अपना ले जीवा। आस्ति ताहिमें भास बनीवा
चलायमान सब पिंड ब्रह्मंडू। बड अचरज हिंडोल प्रचंडू
आवत जात पै गहै ताहीं। बैठि जीव डोरी गहिमाहीं॥
परम अधार हिंडोला ताके। महाशून्य नाशक गुण जाके॥
पाप पुण्य खंभा दोइ लाई। कर्म पटरी सब जीव वैठाई
माया मोह जेवरि दृढ बांधी। डंडी सुख दुख परम अगाधी
भरमिकभरमदिवसऔराती। केहिविधिकहहुजीवकुशलाती
तजी आस निज पारख पाये। झूला बहुरि न ताहि झुलाये
तजहुआस यहि झूलाकेरा। गहहुपरख प्रभुशरणसबेरा२२८

साखी–बिरले बांचहि सुजन जन, जाहि परी पहिचान॥
साहेबके परचय बिना, झूला सबै झुलान॥ २२९॥
झूला झूलत कल नहीं, बिकल दिवस औ रैन॥
आस हिंडोला गायके, चहहि जीव सुख चैन॥ २३०॥

सत्यशब्द टकसार।

हिंडोला।

भरम हिंडोला झूले सब जग आय॥
पाप पुण्यके खंभा दोऊ। मेरू माया मांहि॥
लोभ भँवरा विषय मरुवा। काम कीला ठानि॥
शुभ अशुभ बनाये डारी। गहै दूनों पानि॥
कर्म पटरिया बैठिके। को को न झूले आनि॥
झूलत गण गंधर्व मुनिवर। झूलत सुरपति इंद्र॥
झूलत नारद शारदा। झूलत व्यास फणिंद्र॥
झूलत विरंचीमहेशशुकमुनि। झूलत सूरज चंद॥
आप निर्गुण सर्गुण होय। झूलीया गोविंद॥
छौचारि चौदह सात एकईस।तीनिउलोक बनाय॥
खानी बानी खोजि देखहु।अस्थिर कोईनरहाय॥
खंड ब्रह्मांड खोजि देखहु। छूटन कितहूं नाहिं॥
साधु संगतिखोजिदेखहु।जीवनिस्तारिकितजाहिं॥
शशि सूर रैनि शारदी। तहां तत्त्व प्रलय नाहिं॥
काल अकाल परलय नहीं।तहां सतबिरले जाहिं॥
तहांके बिछुरे बहु कल्प बीते। भूमि परे भुलाय॥
साधु संगति खोजि देखहु।बहुरि न उलटि समाय॥
ये झूलबेकी भय नहीं। जो होय संत सुजान॥
कहहि कबीरसतसुकृतमिलेतो।बहुरि न झूलैआन २३१

चौपाई।

पुनि परपंच जो जग परचारा।सुनहुसंत सो सब विस्तारा॥

अनंत रूप आपुहि बिटमाई।एक विशेप दूसर होयआई॥
धर्मराय सो थूल स्वरूपा । दुतिया नारीअर्धंग अनूपा॥
जो विशेष लिंगम निर्माई । सोई कला अस्थूल बनाई ॥
धर्म केल करै संग नारी । रचना कछुक और विस्तारी॥
कर्ता आपु श्वास गहिलीन्हा।सुखमाया अर्धंगी दीन्हा ॥
अक्षर चौंतिस कीन्ह पसारा।एक शून्य सबहीते न्यारा॥
शून्याशून्य निरंजन नेही । चौंतिस सो मायाके देही ॥
चिदाकाश स्वासा अनुमाना।दुतिया कंठ खेत परवाना॥
परत बीज तहां उपजीबानी।अक्षरथूल भई सहिदानी२३२
साखी–चिदाकाश स्वासा भया, कंठसो दुतिया खेत ॥
उपजैं अक्षर थूलसो, अपनी कला सचेत ॥ २३३ ॥
सात स्वर्गसो खेतमों, खंड खंड परवान ॥
पांच तत्त्व गुण तीन ले, अक्षर सब प्रगटान॥२३४॥

चौपाई ।

अवर्ग कवर्ग चवर्ग टवर्गा । तवर्ग पवर्ग यवर्ग शवर्गा ॥
सात स्वर्गअपवर्गस्वरमानो ।षोडशकला ताहिपहिचानो॥
अठवें आठ कला विस्तारा ।दोबिध कलानरनारिसंवारा॥
नवयें श्वास अर्धचंद्र देखावै ।दशयेंनिःअक्षरआपुकहावै॥
शून्याशून्य निःअक्षर माना।अक्षर स्वासा अधबखाना॥
छव बानी छव भास शरीरा। पारस अमी कहावै नीरा ॥
अकाश सातके लक्ष बनाई । भिन्न भिन्नकै प्रगट देखाई॥
नासा कंठ अरु सुलभ उचारा।ऊर्ध तालबंधदेतविस्तारा॥
ओठ समेत सो सात कहावै ।अष्टमनिःअक्षरश्वासदेखावै॥

तीन अवस्था तेहि विस्तारा।तुरिया सुषुप्ति थूल संवारा॥
तुरिया स्वासा नासा शूंन ।कंठ इत्यादिक लिंगम धूंन ॥
परा पश्यंती मध्यमा बानी । चारि अवस्था वेद बखानी॥
रूप संवारी मात्रा लाई । अन बनि बानि तहां प्रगटाई॥
अक्षर पांच पांच प्रति स्वर्गा।सात स्वर्ग आपु अपवर्गा॥
सोई अक्षर प्रगटे चौंतीसा । आपुहि शून्य भये पैंतीसा॥
सुनहु सो अक्षर महा प्रपंचू।रचना कला काल सब कंचू॥
स्वासा आपु एकला राई।बीच सातके भाग देखाई२३५

साखी—अपनी अपनी भागले,करहिं सबै बिलास॥
एकनि एक मिलायके, अंत करै सो नास ॥ २३६॥
स्वासासों स्वर ऊपजे, स्वरसे होय चौंतीस ॥
तेहि अक्षर बहुबानी बनी,शून्याशून्य पैंतीस॥२३७॥

चौपाई।

नासाअलंभन शूना कीन्हा।ओठ भाग माया तेहि दीन्हा
सुलभ अस्थान विशेष सनेही । नौ अक्षरमें थूल उरेही॥
ब्रह्मा कंठ शंभु दंतारी । हरिके ऊर्ध अस्थान संवारी ॥
तालबंध अक्षर माया प्रतिकूला ।सो तालु सबहिनके मूला
कला युक्ति अक्षर उच्चारा । अक्षर चौंतिस एक नियारा॥
अक्षर पचीस समाना जाई । बासा पांच तहां निर्माई ॥
पांच पांचहोय सोई प्रगटाना।पुनि सोई शून्या माहिसमाना
प्रथम अज दूजे हरि आया । तीजे शंभु चौथे सो माया॥
पचयें आपु निरंजन राया।पांच पांच यह विधि निर्माया॥
छटयें सुलभ नौ अक्षर नेहा।सोइ नौ तत्व लिंगमके देहा॥

पचीस कारज अक्षर अस्थूला ।नौ सो कारण परगट थूला
शून्याशून्यहोयसबैबिलाना।पुनिसो चौंतीसकेउतपाना२३८
साखी–उपजावै खपावै अक्षर, अनेकन्हि बानि प्रकास॥
पुरा पश्यंती मध्यमा, चारि अवस्था भास ॥२३९ ॥
नाभी परा पश्यंती हृदय, कंठ मध्यमा सोय ॥
उच्चारे सोइ वैखरी, स्वर अलंभ सो होय ॥ २४० ॥

चौपाई ।

अक्षर रचि कन्या प्रगटाई । प्रथमे सोहँ शब्द बनाई ॥
सोहँ शब्दको सुनहु प्रकारा।जाहि भांतिसे तेहि उच्चारा॥
श्वासा आपुहि खैंची जबहीं।सकार अक्षर अनुमानी तबहीं
तीन कला तेहि मध्यनिवासा।ससाअकार तीजे सोश्वासा
श्वासा अर्धचंद्र अनुहारी । सूर अकार मात्रा विस्तारी ॥
ससा गूंज एक रूप संवारी । तीन कला ले सो उच्चारी॥
आपु श्वास सुर इच्छा गाजै । ससा सोई संसार विराजै॥
सोई आदि उतपति परवाना।परलय अंत दूजा संधाना॥
छोडत श्वास बिलानी जबहीं ।हँ अक्षर उपराजी तबहीं ॥
हँकार अक्षर अस्थूल सनेहा।अंत नास्ति शून्या अस्नेहा॥
हँकार अक्षर प्रगट अस्थूला।नाना स्वभाविक नष्टसोमूला
थूल सकार अस्थूल हँकारा।शून्याशून्य परलयतरडारा॥
उतपतिपालन परलयकीन्हा।पांचकला तीनगुणसबदीन्हा
आदि अंतसों करहिं विचारा । सोहँ शब्द उठै गुंजारा ॥
दुई रूप तेहिमांहि प्रकासा ।नारी अंग पुरुष सोई श्वासा
यहि विधि सोहं शब्द बनाई।उपजन बिनसन रहटालाई॥

सो सोहँ नाशके बैना। अजपा जपहिं शंभु अनुमाना॥
सो परचित बोला औ चाला।शून्यातजिसहजप्रतिपाला॥
जो उलटि पलटाये बानी। परमहंस अजपा अनुमानी॥
श्वासा खैंचि मिलाये मूला। नाभीअर्ध अंग प्रतिकूला॥
लै जो पावै शून्य रहिजाई। परमहंसके चाल दृढाई॥
बन्धमोक्षकेचाल दिखावै।दुहुविधिशून्यहिमांहिसमावै२४१

साखी—सोहँ अजपा जाप है, शंभु रहे लौलाय॥
अर्थ विचारत आपुहीं, प्रगटे सब घट आय॥२४२॥
सोहँ अस्मि वाक्य है, सो त्रिदोषक जान॥
श्वासहि परलय रूपहोय, सोईविदितब्रह्मज्ञान॥२४३॥

चौपाई।

रचना सोहँ बहु विधिकीन्हा। ॐकार दूजे रचि लीन्हा॥
तेहिमें पांचो कला संवारी। शून्य अर्धचन्द्र अनुहारी॥
अ उ म अज हरि हर रूपा।ॐ अंग पांचकलाअनुरूपा॥
तीनि शक्ति सोई प्रगटाई। उतपति पालन अंत देखाई॥
दुई भागके रूप दरसाया। ॐ सोः पुरुष अंग सो माया॥
सो ॐकार जाप है अजके। जागृत नेही कला सहजके॥
महाकारण सोईशून्यविराजै।अर्धचंद्र,कारण होय गाजै॥
तीन पुत्र त्रिगुणमय नारी। सोई षटअंशी सृष्टि पसारी॥
अर्थ विचारहिं ताहि समाहीं।करतकलोलकालमुखजाहीं॥
उलटि पलटिके राहचलावै। सगुण अगुणके भासदढावै॥
सो परणव गायत्री मूला।जपहिंजपावहिं जानुनशूला॥
जोजानहिजीवशूलअपाना।धोखकशब्दनकरैपरवाना२४४

साखी—प्रणव अजके जाप है, गायत्रीके मूल ॥
पंचीकरण ताके कला, रहै जगतमें भूल ॥ २४५ ॥
मायामयी सब पुरुष हैं, पुरुषमयी सब नारि ॥
नितप्रतिगावहि ध्यावहि, शक्तिमताअनुसारि॥२४६॥
चौबीसा अक्षर मिलायके, गायत्री अस्थूल ॥
विधि बहुविधि महिमा जपै, परखै नहीं यमहूल॥२४७॥

चौपाई ।

भू पृथ्वीसे जपै जपावै । कर्म समाधि जग भरमावै ॥
रचीॐकार कला बहु भारी।राम शब्दको कला संवारी ॥
रेफ अकार मकार प्रमाना। हरी ब्रह्मा शिवसोईपरधाना॥
त्रिगुण रूप थूल अभिमानी ।राम शब्द कला उतपानी॥
पुनि दोइरूप होयकेबिलगाना।ररा ममा सोई प्रगटाना॥
ररा अर्धचंद्र होय धावै । ममा शून्य स्वरूप देखावै ॥
जबहीं कामिनी ररा होई । महा शून्य ममा तहां सोई ॥
रेफ भाव ररा तहां लावै । ममा शून्य होय तहां धावै ॥
आपैं पुरुष आप सोईनारी।बहु अचरज यमजालपसारी॥
ररा शब्द विष्णुसो देवा । थूल अभिमानीकरैसब सेवा॥
कामिनीरूपी भक्ति दृढाई । भग मस्तक अपने अपनाई ॥
त्रिश्वरूप शिलाके पूजा।आपुअनंतभावनहिदूजा॥२४८॥

साखी—कामिनिरूपी सोई कला, विष्णु कियाविस्तार ॥
ममा बिरह बियाधते, होय शून्य भरतार ॥ २४९ ॥
माया गुण नहि लखि परे, रहै कला सोइ भूल ॥
विरह बाण घायल करै, लाये अनेकन्हि हूल॥२५०॥

सत्य शब्द टकसार।

साखी–स्वासासो सोहँ भया, सोहँसे ॐकार ॥
ॐकारसे ररा भया, पंडित करो विचार ॥ २५१ ॥

चौपाई।

तीनशब्द रचि कला अपारा।सोहँ परणव कला प्रचारा॥
पुनि चौंतीस मात्रा लाई। पिंड समान रचना निरमाई॥
रचिसोथूलबहु वाचा कीन्हा।भासअनेकनयोनिरचिदीन्हा
एकसो एक मिलै नहिं कोई। भिन्न भिन्न योनी सो होई॥
प्रति प्रतियोनीकलाअपारा।विदित जहां तहां सोइ पसारा
विशेष एक देवबाच कहावै।कलामांह बहु कला समावै॥
शुद्ध अशुद्ध विचारन लागे।विद्या वैयाकरण अनुरागे ॥
शब्द निरूपणा अनबनि भांती।तर्क शास्त्र कीन्ह उतपाती
छन्द प्रबंध कीन्ह बंधाना। चाल भाव कविताई नाना॥
गन अरु अगनतहां बिलगाई।विद्याकावर चालबनाई२५२

साखी–हाव भाव रस भेद ले, कविताई परचार ॥
बंधे जीव बहु भांतिसो, चीन्है नहीं लबार ॥ २५३ ॥
लबरीमों लबरा फंसा, लबरी लबरा मांहि ॥
जीव सुख मानहिं ताहिमों,जहांकालबांधे गहिबांहि२५४

चौपाई।

कलम मसी मसियानी लाई।शब्द थूल अस्थूल बनाई ॥
कला युक्ति अक्षर औ मंत्रा। प्रगटे रूप धरती लै पत्रा॥
शब्द उच्चार सो थूल कहावै।रूपमान अस्थूल देखावै ॥
सोई पिंड पत्रा ब्रह्मंडा। विदित कला सो सबै प्रचंडा ॥

बहुविधिरूपअस्थूलबनाई। अनबनि भांतिसोरहा छितराई
अंग भंग कहु बाचो न जाई। पृथक पृथक कहु सुंदरताई॥
सो जागृत सब शुद्ध कहावै। लिखना पढना शब्द दृढावै॥
चतुस्त कुतसित वाक्य अनेका। बहु प्रपंच का वर्णों तेका॥
लिखिमिटिजगव्यवहारअरुझाना। विविधिविधिजहांतहांजहडाना
नौ विधिअंककलापरवाना । दशयेंएकशून्य प्रगटाना ॥
शून्याशून्य दश गुण बढिआई। एक अनेकसोशून्यसमाई
गनती एकते करहिं अनेका। लेखा तामध्यविविधिविवेका
विद्यालेखाअनेकस्वभाऊ। परखहुसोसबकालकेदाऊ २५५

साखी--कला कला अरुझावहीं, अधम अनेक व्यौहार॥
रार परस्पर जीवन्ही, कहै हमार तोहार ॥ २५६ ॥
मोर तोर सब कालके, ताहि लेखे मति भूल॥
आशा लेखामों बंधा, पाउ घनेरी सूल ॥ २५७ ॥

चौपाई ।

बाचा रचि बहु कला संवारी। राग रागनी सृष्टि पसारी॥
विद्या सो संगीत कहाई । विशेष प्रीति ताहि दृढ लाई॥
तीनि ग्राम सोइ नारि बिराजै। स्वरसो सात स्वर्ग सोइ छाजै
शब्द अलाप सो थूल संवारी। पुरुष सो राग रागनी नारी॥
कला ताल गति नाच उपाई। सो अस्थूल ले प्रगटदेखाई
चालअनेक योनि सोकीन्हा। बाजा अनबनि बासादीन्हा
अपने अपने समय सोहाई। अंग भंग सुनिके घिनियाई ॥
शुभअरुअशुभमिलाइप्रसंगू । कामकलाके बहुत तरंगू ॥
बिरहहर्षअरु शोक बधावा। शोभा बहुतक विविधिबनावा

बहु विस्तार रची सो फंदा। होय रहै जिव परबश अंधा॥
राम कहानी सुने न काना। मस्त रागके भये दिवाना॥
विविधि चाल बाजा दरसावै। पिंड ब्रह्मांडमें शब्दसमावै२५८

साखी—अपने अपने जालमें, सबै फंसावा जाल॥
बहुत भांति उपजायके, ग्रासे काल कराल॥२५९॥
तब का चेतहु बावरे, जब मुख परि हो काल॥
यहि औसर है परख ले, छूटहु महा भवजाल॥२६०॥

चौपाई।

रचि अनेक विद्या विधिनाना। लौन पलाका कीन्ह बंधाना।
सोई आशा सोई निश्चय धागा। भास दृष्टि सेवन दृढलागा।
दृष्टबंद बाजी देखलाई। फंद फरफंद बहुते अरुझाई॥
तीन श्वास त्रिगुण अनुरूपा। एक लौनको किया स्वरूपा।
दुई लौन मिलि मेष बनाई। सोई मेष पला उपजाई॥
साठि पला एकठाई कीन्हा। तेहि परवान दंड रचि लीन्हा।
साठ दंड सो दिन औ राती। चारि चारि तेहि पहरउतपाती।
चार पहर चौ कला उपाई। बाल कुमार युवा वृद्धाई॥
चार पहर एक रूप उपाना। आठ पहर दुई होयप्रगटाना॥
छौसै सहस्र एकईस परवाना। दिनऔरातश्वासअनुमाना२६१

साखी—नारि पुरुषके भाव दुई। राति दिवस परवान॥
स्वासा सहस्र एकईस अरु, छौसे लेखा मान॥२६२॥
अस्थूल पिंड ब्रह्मांडके, कारण लिंगम सोय॥
संतत वर्तत विविधि विधि, कारण कारज होय२६३॥

चौपाई ।

सात बार सोइ स्वर्ग अनुरूपा। ताबिच लगन कला बहुरूपा
चौदह भुवन एक अपवर्गा । पंद्रह तिथि पंद्रह परसंगा ॥
अनेक कलातेहि पंद्रह समाना। बदी सुदी होयके प्रगटाना
दोऊ पक्ष दोऊ सो अंगा। दक्षिणायन उत्तरायन लिंगा ॥
दुई पंद्रहको मास कहावै । चार मास एक समय समावै ॥
तीन समय सो तीहु तरंगा। कफपितवातअजहरिहरअंगा ॥
तीन समय छौऋतु करडारी। पुरुष तीन तीन सो नारी॥
बारहमास एक संवत कहाई। तीनसै साठ दिनरातखपाई॥
सो संवत अस्थूल बनाई । बारम्बार नासै उपजाई ॥
एक साठिका पल ब्रह्मंडा । सोई विदित ब्रह्मांडको दंडा॥
युग अरु कल्प कीन्ह बंधाना। प्रलय महाप्रलय उतपाना ॥
सूक्ष्म अवध पिंड ब्रह्मंडा । महा विस्तारअवधपरचंडा ॥
आयु अवध आपु रचिलीन्हा। थिर नहिंऔरहिऔरेकीन्हा
तेहि प्रतीतिकौनविधिकीजै। छिनभंगीचितकबहुंनदीजै२६४

साखी-लेखा भाव शुभ अशुभ लै, जोतिषदृष्टिबनाय ॥
नित्यप्रलय प्रलय तेही, महाप्रलयमांहि समाय२६५॥
सत्य प्रीति परतीत दृढ, राखे जीव अटकाय ॥
नाशक नाशे ताहिमें, अनबनि विधि भटकाय२६६॥

चौपाई ।

यहि विधिकलाअनेकप्रकासा। लक्ष स्वभावअगमविश्वासा
विद्या अगम लक्ष स्वभावा। सिद्धकला सो प्रगट देखावा
पांच तत्व त्रिगुण निर्माई । लक्ष सोइ अगम प्रगटाई ॥

पांच तत्त्वको पांच स्वभावा ।तीनोंगुणतेहिसंगलगावा ॥
एकन एकविरोध मिलापा।फलतेहिदुखसुखबहुविधिथापा
थूल अस्थूल सकल ब्रह्मंडा । पूरण कला सोई परचंडा ॥
वाक्य विचार अक्षर निहारी । वर्तमान जाने सब सारी॥
देह स्वभाव दिशा प्रभाऊ । भिन्न भिन्न विलगीसबदाऊ॥
सोई स्वभाव दाव लखि लेई । होनीहार परगट कै देई॥
मनके दाव लखै सो होई । निर्णय करि देखैं जो कोई॥
बिनुतेहिसाधैसिद्धिनपावै।कालचरित्रविविधिविधिगावै ॥
साखी–मनके दाव जो लखि परै,सबै होय परकाश ॥
पुनि थिर नाहीं ताहिके, अंत होय सो नास ॥२६८॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी–लाख कोशको भूत बतावै,करोर कोशकोसिद्ध ॥
गाडे कुंवाको अजय बतावै, तैयों यमका फंद॥२६९॥
सिद्ध भयातो क्या भया, चहुंदिश फूटी बास ॥
अंतर वाके बीज है, फिर जामनकी आस ॥२७०॥

चौपाई ।

लिंगम जो ब्रह्मांड निहारे । भिन्न भिन्नके कला विचारै॥
जोतिष दृष्टि रहै लौलाई । तीक्ष्णबुद्धि नहिं चूक गनाई ॥
सो होनी ब्रह्मांड जनावै । साधन करै सिद्धि सोपावै॥
धातु मूल जिव लगन विचारे । मन मुष्टिका भेद संवारे ॥
श्वासा लिंगम पिंड निहारे। साधन युत जोताहि संभारे॥
आगम भेद सबै सो पावै । सिद्ध स्वरोदय विद्या गावै॥
सुषमनागगनसोकारणनासा ।वायुअनलपिंगलासुखबासा

इंगला जल पृथिवी हितकारी। दूनहुं अंग बेप्रीति संवारी॥
दहिने अंग पुरुषके दाऊ ।चरकारज तेहि मांहि बनाऊ॥
अर्धंगी बायें सो नारी । थिर कारज तेहिमध्यसंवारी ॥
अपनी अपनी राजसंवारै।बेप्रीतिपरस्परकाजविगारै२७१

साखी–कारण चंचल पुरुषके, थिर कारणसो भार ॥
पथिक चले पथ नाथके, कारज सो विस्तार॥२७२॥
थिर पृथिवी अस्थूलसो, चंचल लिंगम श्वास ॥
युगल एकत्र वर्तत रहै,विरह परस्पर नास ॥ २७३॥
तर अरु ऊपर आपुही, दुइ दुइ भाग विस्तार ॥
कठिन काल परपंच है, परखहु होय उबार ॥ २७४॥

चौपाई ।

स्वासा साधन युक्ति बनाया।योग अभ्यास कर्म अरुझाया
शनै शनै स्वासाको साधै ।संयम बहु विधि चित्त दृढबांधै
अपनी बसि जब पावै बाई। सूर्त अष्टांग योगमें लाई॥
चौरासी आसन परवाना । एकनि एक करै विधिनाना
दृढकै मूल दुवारा बांधै । उलटी पवन ऊर्धको साधै ॥
बेधि चक्र छौ मेरुहि जाई । शब्द अनाहदसो लौलाई॥
सोई सिद्ध योगी कहलावै ।नाश समय सूरमाहलखावै॥
समय जानि सो जाहि पराई। आशा जीवन देई बौराई॥
कछुक कालसो खेल खेलाई। नासै अंत न रहै सिद्धाई ॥
जैसे सर्पहि गरुड खेलावै।भोजन करे बहु विधि नचावै॥
नेती धोतीके षटकर्मा । संयम यतन अनेकनि धर्मा ॥
योग युक्ति छिनमांह नसाई।कालबलीकछुनहींबसाई२७५

साखी—केते साधहिं योगसो, इच्छा करन शरीर ॥
नासै अंत बांचै नहीं, जतन घनेरी पीर ॥ २७६ ॥
संपूरण चूसे सोई, जीव लखै नहिं ताहि ॥
कष्ट अनेक लहै सदा, करै तराहि तराहि ॥ २७७ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी--गोरख रसिया योगके, मुये न जारी देह ॥
मास गली माटी मिली, कोरो मांजी देह ॥ २७८ ॥
झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छूटि न काहु२७९॥
गोरख अंटके कालपुर, कौन कहावै साहु ॥ २८०॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

संतो जागत नींद न कीजे,
काल न खाय कल्प नहिं व्यापै,देह जरा नहिं छीजै
उलटी गंग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूरहि ग्रासै ॥
नौग्रह मारि रोगिया बैठो, जलमें बिंब प्रकासै ॥
बिनु चरणको दुहुं दिशि धावै,बिनु लोचनजगसूझै ॥
संशय उलटि सिंधको ग्रासै, ई अरज कोई बूझै ॥
औंधे घडा नहिं जल बूडै, सीधेसो जल भरिया ॥
जेहिकारण नर भिन्नभिन्न करैं, सो गुरु प्रसादे तरिया॥
बैठि गुफामें सब जग देखै, बाहर किछउ न सूझै ॥
उलटा बाण पारधिहि लागै, सूरा होय सो बूझै ॥
गायन कहै कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै ॥
नटवट बाजा पेखनि पेखै, अनहदहेत बढावै ॥

कथनी बदनी निजुके जोवै, ई सब अकथ कहानी ॥
धरती उलटि अकाशहि बेधै, ई पुरुषनकी बानी ॥
बिना पियाला अमृत अचवै, नदी नीर भरिराखै ॥
कहैं कबीर सो युग युगजीवै, जो राम सुधारसचाखै ८१

शब्द ।

मैं कासों कहौं को सुनै को पतियाय, फुलवाके छुवत भँवर मरिजाय ॥ जोतिये न बोईये सींचिये न सोय, बिनु डारी बिनु पात फूल एक होय ॥ गगन मंडल बिच फूल एक फूला, तर भौ डार ऊपर भौ मूला ॥ फल भल फुलल मलिनि भल गाथल, फुलवा बिनसि गौ भँवर निरासल ॥ कहहि कबीर सुनो संतो भाई, पंडित जन फूल रहल लोभाई ॥ २८० ॥

साखी—शब्दै मारा गिरि-परा, शब्दहि छोडा राज ॥
जिन्ह जिन्हशब्दविवेकिया, तिन्हकासरिगौ काज२८२
बिन पारख बानी सुनै, धावै ताके साथ ॥
घायल अनेकनि भावमों, तजहिं न पटकहिं माथ२८३

चौपाई ।

बहुविधिसाधनयोगपसारा। कोइउत्तमकोइमध्यमसंवारा॥
मुद्रा पांच तत्वसो होई । त्रिगुण शक्ति मंत्र है सोई ॥
तप संताप जे सृष्टि बनाई । योनी योग अनेक देखाई ॥
तेहि योनिमों जो जिव डारे । बहुत कष्ट ताहि दै मारे ॥
योगविवशतप बंधन बंधा । करहिं लडाई मतिके अंधा ॥
चहत छुटन तेहिदंड देखावै। बहुत महातम चौकी लावै ॥
लोभडोरि दृढआशाबांधी। नाशउपायविविधिविधिसाधी॥

रज सत तमगुण तीनिहुं डोरी।जेवरि प्रौढ बांधि जिव भोरी।
निकसि न सकहिं फंसे जिवरहहीं।तीनिहुं भांति राजदंडसहहीं।
बन्दीखाना तीन प्रकारा। तेहिमें चार आश्रम विस्तारा॥
पँचयें नाशक आपुहि आपा।परमहंस ऊंचा पद थापा॥
प्रथमे एकोहँ बहुस्यामा। अनंत भांति भव खेती जामा॥
बारह बानी भोजन हेतू।अभय चरमपद कहहिं अचेतू२८४

साखी-बंदी शोभा विविधि विधि,दुसह कलेश अपार॥
पहरा चौकी महिमा, आशा फांसी डार॥ २८५॥
जहां तहां त्रिदोष ले, तत्त्वमसी परचंड॥
बारह बानी चारि तिथि, नाशक हेतु अखंड॥२८६॥

सत्यशब्द टकसार।

साखी-प्रथम एक जो हौं किया, भया सो बारह बान॥
कसत कसौटी ना टिका,पीतर भया निदान॥२८७॥

रमैनी।

तत्वमसी इनके उपदेसा। ई उपनिषद कहैं संदेसा॥
ई निश्चय इनके बड भारी। वाहिक वर्णन करैं अधिकारी॥
परमतत्वका निज परवाना।सनकादिक नारदशुकमाना॥
याज्ञवल्क्य औ जनक सम्बादा।दत्तात्रेय वोहि रस स्वादा॥
वोहिबातरामवशिष्टमिलिगाई। वोहिबातकृष्णउद्धवसमुझाई
वोहि बात जो जनक दृढाई। देह धरे विदेह कहाई॥
साखी-कुल मर्य्यादा खोयके, जीवत मुवा न होय॥
देखत जो नहिं देखिया, अदृष्ट कहावे सोय॥२८८॥

चौपाई ।

बहुत रहे यमजाल फंसाई । लालच लागी बडी बडाई ॥
सबहिं बडाई यमके हाथा। लहहिं दुसह दुख धुनहिसोमाथा
पाया चढावै ज्ञान विज्ञाना। सात भूमिका लाइ निसाना॥
सोई तहां सात स्वर्ग अनुमानी। पहुंचत ठौर भये विज्ञानी॥
महाशून्य अंधकार स्वरूपा। परहिं जीव ताहि तमकूपा॥
आपु अकेला ब्रह्म कहावै। तेहि अंधकार कोइ लखि नहिंपावै
जीवहिं धरि धरि करै अहारा। महिमा बडी जगत विस्तारा
करत विषय नहिं शंका मानी। आपै पुरुष विदितब्रह्मज्ञानी
महा अंध सूझै नहिं पारा। भटकहिं बहु विधि भरमअपारा
आतम बादि आपुहि आपा। बहुतक सहहिं भरम संतापा॥
बिन पारख गुरु कौन लखावै। महा कठिन यमजाल बचावै
अज्ञ तज्ञ दुहु भाग डुबाये। कैसे छुटै विनु पारख पाये२८९

साखी--सूझि परै नहिं जालसो, ज्ञान करहिं बहु भांति॥
आंधर भये तमकूपमें, वर्णन करहि सो शांति॥२९०॥
जीव न पावै मर्म सो, पुनि पुनि उठै अकुलाय ॥
अगम अपार अथाह कहि, शिर धुनिधुनिपछताय२९१

चौपाई ।

अज हरि हर त्रिगुण त्रैलोका। चौथे शोकमें आपु अशोका
भिन्न भिन्न तेहिअदलप्रमाना। चौकी बंधनजीवविधिनाना
अपने स्वभाव चहै जिवजीया। गोहरावैनिशिदिनपियपीया
तोरन चहहिं फंद यमकेरा। महा कलेश योग अरुझेरा॥
बंदी तेहि कारण निर्माया। घायल कसकाहिंबहुअंतनपाया॥

जन जोगाय अंत सो नासै। तत्वमसि त्रिदोष सो ग्रासै॥
सो विस्तार जालकेहि भांती। बिनपारख गुरुजीवकुशलाती
आश कुशलदृढ फांसीलावै। जेवरि बंधे जिव यमपुरधावै॥
जे जीव तजहिं जाल यममोटी। तेहिदृढझीनाफांसीखोटी॥
मोरे आश उबारन जिवके। औषधविषफलकहतअमीके॥
खाय खाय विषजीवबौराना। अपनेमरणकीखबरनजाना॥
चाहै कुशलकुशलयमफांसी। विविधिभांतियमजीवहिंगांसी
गांसनसूझैअपनपौनबूझै। भलाकहतउलटाजिवखीजै२९२
साखी—गांस फांस बहुविधि रचा, झीना लखा न जाय॥
नासे नाशक रूपसो, त्रिगुण होय समुदाय॥ २९३॥

टकसार।

साखी—मोटी माया सब तजे, झीनी तजी न जाय॥
पीर पैगंबर औलिया, झीनी सबको खाय॥ २९४॥

शब्द।

भरोसे अनुभवके भूले।
जीत्र दो दो साखी जोरि, जुगतके फीरे ज्ञानके फूले॥
कर्ता काल नहिंपहिचाना, जिन्ह जेर कियाजगसबहीं॥
अंतकाल यह काम न आवै, पछतैहैं सब तबहीं॥
त्रिकुटी ध्यान धरै योगी सब, उन्मनी तारि लावै॥
अजपा जपै शून्य मनराखै, मूल भेद नाहिं पावै॥
नित उठि ज्ञान करै चरचा सब, कथनीमों लपटाने॥
निर्गुण सर्गुण दोनों धोखा, मूल भेद नहिं जाने॥
सोहँ सोहँ महाकाल है, ररा तेज रहै सोई॥

निशिदिन नाम निरंजन सुमिरै, तौ जिव पारन होइ ॥
आगे खोज करो भाइ संतो,बानी बूझ लखु मेरी ॥
ईहै काल महा दुखदाई, अन्त लेयँगे घेरी ॥
कहैं कबीर कहा कारि भाखो,जिभ्या कहो न जाई ॥
अपरंपार पारके पारा, सबसो न्यार रहाई ॥ २९५॥

साखी--जिभ्यापर आवै नहीं, श्वास आस नहिं होय ॥
अलख लखावहि आपुकहँ, झरासतगुरुकहिसोय२९६
शून्य मरै अजपा मरै, अनहदभी मरजाय ॥
सूर्त मरै अरु नीरतभी, तब जीव कहां समाय॥२९७॥
नित पारख परकाशमें, सोई निज घर जान ॥
बिनु घर पाये आपना, मरै न यम पहिचान॥२९८॥

चौपाई ।

और कला साबरजोसिरजा। तमगुणअधिकारीहरगिरिजा॥
मोहन उच्चाटनमारनतीन्ही।रजसततमअजहरिहरकीन्ही॥
तैंतिस कोटि देवता परवाना।बीजनाम सकलोंपरधाना॥
सोई नाम ले मंत्र बनाई। तैंतिस कोटि देव अरुझाई ॥
पुनि सोइ यंत्र तैंतीस करोरी। महाजाल रचिके जिवभोरी
यंत्र अस्थूल मंत्र सो थूला। देखिरूपबहुविधिजिवभूला॥
योनी लाख चौरासी जोई। नाम नेह बांधे सब कोई ॥
जोइजोइ नाम मंत्रउपराजा।यंत्र विविधिभांतितेहिसाजा॥
प्रेत योनि मंत्र बहु भांती। सबहि विशेष महाउतपाती ॥
विद्या अनंत रचा विस्तारा।सांच झूंठ मिश्रितसोसारा॥
बहुत झूठ सांचा कोइ कोई।दृढविश्वासभरमजिवसोई२९९

साखी-चटक मटक बाजीगरी, झूठ सांच फैलाय ॥
अनबनि विद्या को गनै,राखे जीव अरुझाय॥२००॥
अस्मशान सिद्धि सबै, इंद्रजाल माया रची ॥
ठगहारी चोरी कपट, भेद पिसाची छलरची ॥२०१॥

चौपाई।

डाका घात कुटिलता कीन्हा।बैर परस्पर योनी दीन्हा॥
योनी मानुप उत्तम होई। तेहिमें बहुत प्रपंच समोई ॥
एकहि एक करै बसि अपना।राज काजके कलह कल्पना॥
हाकिम हुकुम बड़ी प्रभुताई ।अनबनि योनिभरम दृढाई॥
बनिज वैपार कृषी बहु कर्मा।टहलू टहल अनेकनि धर्मा॥
ईर्षा लाज भाव मर्यादा। रार परस्पर लाइ विषादा॥
कारण सब कारज प्रगटाई।जालहि जाल रचा अरुझाई॥
वधिक बियाध सबै निर्माई।परखहु काल कला बहु ताई॥
विषय विकारमई संसारा। आपुहि रूप जगत विस्तारा॥
तामस रूप विकार कराला। धोखा जीवन देइ दयाला॥
परम दयालके अस नहिंकरनी।नष्टरूप परमपद बरनी२०२

साखी--महा अघट करनी यम, घटघट रहा समाय ॥
जीव न चीन्हैं ताहिको, रहहि सदा लौलाय॥२०३॥

सत्यशब्द टकसार।

साखी-पैठाहै घट भीतरे, बैठा है साचेत ॥
जब जैसी गति चाहै, तब तैसी मति देत ॥ २०४॥

चौपाई।

भानु होय कलाबहु कीन्हा।आपुहिआपकलामयचीन्हा॥
सर्व कला सो आपु बिराजै। परखविलासलहै तमभाजै॥

तामसनीच लपटिजिवमाहीं।नित्यजीवनधनहरिहारिखाहीं
तामस विवश अंध होयडोलै।जीवदुसहदुखकालकलोलै॥
नाशक एक जीव पुनि एका।परवस आदि कालके भेषा ॥
चीन्हहु ताहिगहहु प्रभुचरणा।सो प्रकाशपारख तमहरणा॥
भूलहु मति अब यमके फेरे ।परखहु दुसह दुःख तेहिकेघेरे॥
यतन अनेक बझावन तोही । दहुंदिश फांस परो है वोही॥
परै न लख विनु पारख प्रीती।विनुपारख को यमकोजीती॥
जति सति तपसीसिद्धभुलाई।गांठिनखुलहिंरहहिं अकुलाई
ठाडेश्वारि डिगंमर मौनी ऊर्धवांहीं।छांदे वांधेयमपुरजाहीं
हित बानी नहिं सुनहिअयाना।धोखेमांह रहें बौराना॥२०५
साखी-महिमाकेरी घमंडमें, रहहि जीव सब भूल ॥
यतन करहि अरुझेहि सदा, दृढ गांठी नहिं खूल२०६॥

सत्यशब्द ।

साखी-पांच तत्व गुण तीनकी, आय परी है गांठ ॥
याहीमें भूला फिरै, महा पुरुषकी झांट ॥ ३०७ ॥
चंदन सर्प लपेटिया, चंदन काह कराय ॥
रोम रोम विष भीनिया, अमृत कहां समाय॥३०८॥

चौपाई ।

औरो कला अनेक प्रचारा । वैदक रसक्रिया अनुसारा॥
कफ पित वात नाड़िकातीनी।चालस्वभावभिन्नकरदीन्ही॥
पचीस प्रकृति पांचतत्वकेरा।विविधिउपाधिताहिबौडेरा॥
बैर परस्पर रोग उपाई । वैदक ताके लक्ष बनाई ॥
एक जडी एक नाशहि घाता।रसक्रिया सोईयमविख्याता

एक एकके मारन जानी । समन रोग औषधी ठानी ॥
कहुं झूठा कहुं होवै फूरा । मिथ्या सत्य चिकित्सापूरा॥
बांचन चहहिं जतन बहुकरहीं।त्रिदोषक सब अंत ग्रासहीं
छोडै न काहु खेल खेलाई।फांसी अनबनि विधिगरेलाई॥
आशा लागि अरोग शरीरा।रोग मूल पावहिं बहु पीरा॥
जहां तहां तीर्थस्थान उपाई । पाप पुण्य कर्म लपटाई ॥
जल तरना बहुचाल उपाना।अंत डुबावैजतनविधिनाना॥
बाहन वाजी अनेक प्रकारा।एक विवश एक जीवहि डारा
जतन रतनके चाल चलाई।तिल जव रतिमासापरखाई॥
गनत २ कोइ पार न पावै।फैलफैलाय अंबूहदेखावै२०९॥
साखी–बैर विरोध मचायके, रचा अनेक हथियार ॥
धनुर्विद्या गावै तेई, कारण सोई संघार ॥ २१० ॥
रेखा लक्षण भेद सो, सामुद्रिक रचि दीन्ह ॥
चतुराई बहुभांतिके, कला प्रगट सब कीन्ह ॥२११॥

चौपाई ।

जेहि प्रकार अनंत होय आई ।विद्या तेहि भांति निर्माई॥
चौदह तामें विशेषण गांठी । अष्टांगी प्रति वोई आंटी ॥
अष्टंगी सब कला अपारा ।सिद्धि सिखाय विविधिप्रकारा
एक मोहनी रूप सोहाये।कलबलछलतेहिविविधिलगाये॥
धर्मराय अष्टांगी नारी । बहु विधि कैल करै जगभारी ॥
त्रिदेवा अस्थूल उपाने । तबहिं धर्म महाशून्य समाने ॥
अनंतकलाकेजीवहि फांसी।आपुमहाशून्यअचलअविनासी
सब घट जीवन जीव चोरावै।आपु चोरावै आपु छिपावै॥

शीस छिपावै देह देखावै । ताते चोर चीन्ह नहिं पावै ॥
घडसो माया कला प्रकासी। आपुनिरीह अव्यक्तसुखरासी
निर्विकार निर्लिप्त अमाया। धोखा प्रगट कला सो गाया॥
ऐसो भरम विगुर्चन कीन्हा। सोइ काल जिव आसा लीन्हा
अस ठगजोठगेदिनराती। कहहु कुशलजीवकौनेभांती ३१२
साखी–प्रीति करै जो ताहिसों, जे ठगहारी धन लेत ॥
दर्द न बूझै जीवका, चूसि चूसि दुख देत ॥ ३१३ ॥

सत्यशब्द टकसार।

साखी–तीन लोक चोरी भया, सबका सर्वस लीन्ह ॥
बिना मूंडका चोरवा, परा न काहू चीन्ह ॥ ३१४ ॥
ध्यान धरहिं बहु भांतिसो, निरखहिं शोभा ईस ॥
आभा झलकी देहकी, मृत्यु समय बिनु शीस॥३१५॥

चौपाई।

त्रिदेवा त्रयगुण अधिकारी। बहुविधि रूप कला बपुधारी ॥
तीन पुत्र जननीके पासा । विद्या बुद्धि करै परकासा ॥
जननी और कला सब जाने। जीव ठगौरी नहिं पहिचाने॥
चितवत आस्ति नास्तिके ओरा। तामस तमकेरूपघनघोरा
बेकार भाव इच्छा उतपानी। नाम रूप गुणमय प्रगटानी॥
तेहि भग लिंग अनंत उपाना। आपुहि जहां तहां छितराना
साहेब आपु और सब दासा। जीवन धन पूजा निज गांसा
महा विकारी दुखिया आपू । निजसुख हेतु प्रजा संतापू॥
राजके हेतु ठगौरी लाई । कर्म धर्म मत जीव बौराई ॥
इच्छारूप सो प्रगटी नारी । नहिं जाने राजा ठगहारी ॥

त्रिदेवा पूछै महतारी। कैसे सृष्टि भया अधिकारी॥
धर्मराय प्रथम उपदेसा। पुरुष अरूप शून्यमें बासा॥
सोई पुरुष जगत निर्माई। यह उपदेश कीन्ह तेहि माई॥
शून्य समाधि लगावहु जाई। दर्शे पुरुष तबहीं प्रगटाई॥
जेहि प्रकार माया उपदेसा। हींडत ढूँढत फिरत उदासा॥
खोजत पुरुष चहत सुखमूरी। सो नहिं जाने देइ हैं सूरी॥३१६
साखी–शून्य समाधि लगायके, रहै प्रीति लौलाय॥
झलकी बिंब शरीरकी, मगन भये तीहुं भाय॥३१७॥
जब पूँछहि प्रतिबिंबसों, कहै न कोई भेव॥
मोह अंध व्याकुल भये, भटकी थके त्रिदेव॥३१८॥

सत्यशब्द टकसार।

साखी–ब्रह्मा पूछे जननीसो, करजोरे शीस नवाय॥
कौन बरण वह पुरुष है, माता कहु समुझाय॥३१९॥
रेख रूप वै है नहीं, अधर धरी नहिं देह॥
गगन मंडलके मध्यमें, निरखो पुरुष विदेह॥३२०॥
धरे ध्यान गगनके मांही, लाये वज्र किंवार॥
देखी प्रतिमा आपनी, तीनिउ भये निहाल॥३२१॥
ये मन तो शीतल भया, जब उपजा ब्रह्मज्ञान॥
जेहि बसंदर जग जरै, सो पुनि उदक समान॥३२२॥
लोभ मोह काम क्रोध, माया गागरि फूटि॥
कहैं कबीर हरिहू मिले, दुगदुग नाहीं छूटि॥३२३॥

चौपाई।

कला अनंत पावै नहिं पारा। निश्चय बोलै अगम अपारा॥

पुनि मातासो पूछत भयऊ।जननीकेहिविधिजगबिटमयऊ
कस भये हम कहांते आये।केहिकारण यह जगत उपाये ॥
खोजत खोजत अंत न पाया।माता ढूँढत दहुं दिश धाया
जेहि विधि जीवन होय हमारी।सोई कहहु मैं शरण तुम्हारी
पुंत्र प्रऊढ युवा जब देखा।उपजी कामके कला विशेषा॥
कहा भोग तुम हमसो ठानो।काहु बात शंका मति मानो
भोग करत सुकुचाने ब्रह्मा । हरिसो सोई कीन्ह अरंभा ॥
विष्णुहु जब नहिं मानी बैना।तब शिव भोग करत भौ चैना
देखिभोग शिव बहु ललचाने।विषय भोग झगरा सो ठाने॥
साझा तीहुं भाइमिलिकीन्हा।लाजमिटायविषयरसलीन्हा
पूछहिंतीनोकहहुसबमोहीं।शरण गहेउंदृढ माता तोही२२४
साखी–सुनतहि बानी पुत्रकी, विषय चाट उपदेश ॥
सर्ब जलामय रूप है, कही अस्थूल संदेश ॥३२५॥

सत्यशब्द टकसार ।

रमैनी ।

जीवरूप एक अंतर बासा।अंतर ज्योति कीन्ह परकाशा॥
इच्छारूपि नारि अवतरी । तासु नाम गायत्री धरी ॥
तेहि नारिके पुत्र तीनि भयऊ । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाऊ ॥
फिर ब्रह्में पूछल महतारी।को तोर पुरुष केकारि तुम नारी ॥
तुम हम हम तुम और न कोई।तुमहिंसे पुरुष हमें तोरि जोई
साखी--बाप पूतकी एकै नारी, एकै माय बियाय ॥
ऐसा पूत सपूत न देखा,जो बाप हि चीन्हे धाय ३२६

विषय मूल माया लगी, कीन्हे ताहि प्रऊढ॥
बडे विवेकी तिहु लोकमें, परखहु मतिके मूढ॥३२७॥

चौपाई।

विषय संदेश दूजे उपदेशा।अस्थूलकलाकोदियासंदेशा॥
बीजरूप तेहि भगवाना।विषय विकार जगत अरुझाना॥
दृष्टि पसारि देखु जग माहीं। बीजरूप दूसर कछु नाहीं॥
सोई बीज तुमहिं तन धारी।माया रज हमहीं सो नारी॥
तुम सो मूल हमहिं अर्धंगी।मेल परस्पर भये बहु रंगी॥
नौ नाडी चौकला है जोई।छतीस नीर पहिचानहु सोई॥
पवन पचासी स्वासा माहीं।कोटि उनचास कला दरसाहीं
स्वासा पेड सार सो मूला। विविध डार पत्र फल फूला॥
निवृत्ति कला जो चहहू ताता।दृढके गहहु सार मम बाता॥
स्वासाउलटिकेनाभिसमावो।परम हंसके चाल चलावो॥
मूलहि समेटि रहहु अकामा। उलटहु सोहँ वोहँ रामा॥
जो प्रवृति कला तोहि भावै।पूर विलास सदा सुख पावै॥
पंच मकार अमीजिवजानो।मम उपदेश हमारी मानो॥
दूनहु कला तुम्हारी ताता।खंडित काहे लहहु कहै माता॥
सुनिगुनिमगन भयेत्रिदेवा। विषय भोग जननीके सेवा॥
माया मत अरूढजो कीन्हा।तासु लछ परगटके दीन्हा॥
लिंगरूप शंकर निर्माई। भग जल हरिसेवा अधिकाई॥
भग औ लिंग थापिएकठौरी।विषय मस्त एकताई बौरी
प्रथम भोगके कारण नाहा।महादेव तामस औगाहा३२८॥
साखी—एकता ज्ञान विषयमई, भोजन पंच मकार॥
प्रगट अघोरी कर्म सो, शंभु कला विस्तार॥३२९॥

ब्रह्मा गुप्त त्रिविधि कला, रखहिं निरंतर जन बास ॥
पंच मकारी शक्ति गुण, शिवकेअधिक विश्वास ३३०

चौपाई ।

अंडरूप शिलाके सेवा । हिरण्यगर्भ सो हरिके भेवा ॥
विश्वरूप अंड परधाना । सोईसो अंश शिला उतपाना॥
आपु नारिहोयध्यावहिंताही।भग अकार लिलाटे माही॥
सदा धोय अमृत रस अंचवै।कामिनीरूप दहुंदिशनचवै ॥
सात्विक भाव विरह विधिनाना।संयमताहि हेतु परवाना॥
अंत सबनके एकै मूला । विषय विकारमई जिव भूला॥
जलसाई नरायण गावै । बहु विधि ब्रह्मा गाइ सुनावै॥
तासो कमल नाल उतपानी।कमलासनसोइआपु बखानी॥
सोई रूप बिधि पुजै पुजावै।सदा शक्तिको ध्यान लागावै
पंचमकारसो भोजन गुप्ता । शक्तिधर्म अजमाया भक्ता॥
तीहु कलामें रूढ प्रचंडी । विद्या बुद्धि अहँ घमंडी३३१
साखी–तीनिहुं तीन प्रकारसे, विषय सनेही ज्ञान ॥
विदित किया संसारमें, भटके बहुत अयान ॥३३२॥
हरि पतिबर्ता कामिनी, ब्रह्मा पुरुषमय रूप ॥
हर एकत्र सिद्धांत है, परे विषयके कूप ॥ ३३३ ॥

चौपाई ।

उपदेशी नारी सो अकेली । तीन पुत्र चेला कोइ चेली॥
भोग करत तीन पुत्री जाये।सूक्षम कारण सोई उपाये ॥
पारवती सो सुषमना नेहा । शंभु विहार करै सो देहा ॥
लक्ष्मी पिंगला अंश उरेही । विष्णु विहार करै सो देही॥

सावित्री इंगला अधिकारी । ब्रह्मा जासो रचा धमारी ॥
गुरु उपदेश बहुत दृढ कीन्हा । त्रिदेवा माथे गहि लीन्हा॥
तीनि शक्ति सोइ रूप हमारी।सौंपी जानि तुम्हें अधिकारी॥
प्रथम नाम हमारा गावो । पाछे नाम पुरुष बतलावो ॥
त्रिदेवा कर जोरि ठाढे । प्रीति परस्पर पल पल बाढे ॥
छोभित माता कीन्ह सहाई।सूक्ष्म गति सब दीन्हलखाई॥
जेता झीना मोटा भेवा । माया प्रसाद शिष्य त्रिदेवा ॥
शिष्य सब दुखको मर्म न जानी।तीनों पुत्र विषय अभिमानी

साखी—रचना सूक्ष्म हेतु जो, दीन्ही सबै चिन्हाय ॥
अधिकारी प्रति आपनी,तीन्हों लीन्ह बिलगाय३३५
अपनी घरनी राजमें, तीनों करहिं विलास ॥
कबहुंपरस्परभटकिभटकि,रचहिंसो विघ्न विनास३३६

चौपाई ।

अव्यक्तरूप सहज प्रकाशी। निर्विकार पूरण अविनाशी॥
पराक्रम पुरुष सो भारी । सोई कारण इच्छा हम नारी ॥
हम इच्छा हम सो संसारा । अनंत कलाको पावै पारा ॥
अंश पुरुष तुम तीन उपाये । पुत्री तीनि हमहिं निर्माये॥
जो झीना सोई मोटा भेवा ।एक सम पिंड ब्रह्मांड उरेहा॥
पिंड ब्रह्मांड राज मिलि करहू । ब्रह्मज्ञान हृदयमों धरहू ॥
राज पाट बांटि सो दीन्हा।तीनों तीन लोक सो लीन्हा॥
मृत्युलोक ब्रह्मा अधिकारी ।कर्म भूमिका भवजल भारी॥
स्वर्गलोक विष्णुहि स्वीकारी।भोग अभोग कर्म विस्तारी
शून्य पातालसो शंकर राजा।पुनि प्रतिलोकमेंतीहुविराजा

अपने अपने गुणके राऊ । कहत गुण औगुण सब दाऊ॥
औगुन गर्भ घमंड अधिकाई।बिनु पारखबूडीचतुराई३३७
साखी--औगुण रूप त्रिगुण सवै, नाशक जाके मूल ॥
विदित कहावै गुण सोई, खानि घनेरी शूल ॥३३८॥
पृथक पृथक अनबनिकला, प्रीति जवै त्रिदोष ॥
प्रगट करै पदआपनी, नाशक तहाँ सरोष ॥ ३३९ ॥

चौपाई ।

राज मगन मन तीनिहुं भाई।जहां जे गुण तीनिहुं बिलगाई
बहु विधि ब्रह्मा कर्म उपावै । कर्म सुकर्म विष्णु बिलगावै॥
शंभू शून्य समाधि लगाई । योग ज्ञानके मता चलाई ॥
ॐकार ब्रह्माके जापा । रँ शब्द हरिके परतापा ॥
सोहँ शब्द शंभु परवाना।तीनि वाक्य मत एकहि जाना॥
एकबात माया नाहिं भाखी । तीनिहुं पुत्रते गुप्तहि राखी॥
धर्मरायके कहै उपभेवा । विषय मगन भये त्रिदेवा ॥
जहांलों त्रिगुणी फांस बनाई।लिंग पिंड ब्रह्मांड अरुझाई॥
राजपाट त्रिदेवा दृढाई । महाशून्य जननी सुधि लाई ॥
रूप प्रगट अस्थूल नसानी । अपने पदमें रहो समानी ॥
गये बिलाय रहे त्रिदेवा । राजपाटको ठानिन भेवा ॥
हरि कमला ब्रह्माब्रह्मानी।उमा महेश करहिं रजधानी३४०
साखी--अपने अपने राजमें, सबै भये परचंड ॥
सोई धूम जो मचि रहा, सात दीप नौ खंड ॥ ३४१ ॥
चारि वेद प्रगट किये, गुणसो तीनहुं [illegible] ॥
सोई स्वास भगवानके, ब्रह्मा रची फैलाय ॥ ३४२॥

चौपाई।

चारि वेद ब्रह्मा अनुसारी। तामें चारि मता अनुहारी॥
प्रथमें ऋगु तुरियाके नेहा। नहिंजहां थूल अस्थूलेलीहा॥
साक्षी हेतु सत्य प्रतिपाला। अवस्थातीन भरममयजाला॥
दूजे अथर्वण संश्रित रूपा। शून्य सनेह सो कीन्हस्वरूपा॥
वर्णन शून्य जो स्थिर पौना। सब परपंच विदितहैजौना॥
तीजे यजुर लिंगम अस्नेही। सगुण अवतार विष्णुकेदेही॥
असुरन मारि संघारे गोसांई। पालन कर्म वधिककीनांई॥
अशुभ संघारन पालनशुभके। प्रगटतकारण कारजहरिके॥
ईश्वरकर्म अशुभ बहुभांती। हरि शुभकर्म परस्पर घाती॥
जहांदेखहिसोकलाप्रगटाये। निश्चयकारज हरि होयआये॥
सोई अवतार निश्चर संघारी। कहुं कला थोरे कहुं भारी॥
यजुरकलासोईपरवाना। विष्णुअवतारविदितजगजाना॥४३

साखी—समय समय प्रगट भये, कलाविशेष समान॥
यजुर करै वर्णन तेही, थूल मता परमान॥३४४॥
चौथे साम कहै मता, जागृतिरूप दृढाय॥
कारण जलामय सत्य है, कारज जग समुदाय॥३४५

चौपाई।

चौथे सामबीज भगवाना। आस्तिभांति प्रियकोपरवाना॥
नामरूप कारज सो उपाधी। कंचन भूषण भेदसोसाधी॥
घट मृत्तिका दृष्टांत दिखावै। कारण नाम रूप समुझावै॥
सत्य हेतु कारज भ्रमजाला। सामवेदके यही हवाला॥
पुनि प्रति वेदकर्म दृढकीन्हा। धर्मयोगके मतलिखिदीन्हा॥

बहु विधि कर्म भरम फैलाई। चारि वर्णके चाल चलाई ॥
मुखके कर्म आपु गहि लीन्हा। बाहु कर्म छत्री सो कीन्हा ॥
कर्म चातुरी वैश्य बखानी । पशुके कर्म शूद्र उतपानी ॥
चारि वर्णमें रचना लीन्हा। चित्रगुप्त एक परगट कीन्हा ॥
लेखा गुप्त कर्म पटवारी । लिखै हिसाब संवार संवारी ॥
और अनेक जो कर्म लगाई । जोई कर्म सोई खोमकहाई ॥
और अनेकनि दुर्मति लाई। जातिभिन्नभिन्नबिलगाई २४६

साखी—उत्तम मध्यम कर्म ले, रचिया वर्ण वियाध ॥
राखा सबै अरुझायके, अपनी अपनी बांध ॥२४७॥
कर्म कमाई सबनपर, राज दाम परवान ॥
जन्मत मरत न छोडहीं, बिबिधि कर्मके खान २४८

चौपाई।

नित्यप्रति सबहीं कर्म दृढावै। विषयविकारजगत अरुझावै
राजदंड दाम भरि लेई । जन्मत मरत न छूटी देई ॥
बहुविधि उपजा खेत करावै। राजकाज अपना फैलावै ॥
जन्म कर्म शुभ सगुन सगाई। वर्णभ्रष्ट बहु कर्म लगाई ॥
ग्रहण अमावस पूर्णिमा गावै। दक्षिणा दान जेवनार बनावै ॥
देवी देवता भूत पुजावै । होम यज्ञ जीव वधहि करावै ॥
पिंड श्राद्ध मृतुकके नांऊ। उपजा अनबनि कर्मकेगांऊ ॥
कर्मगांव जे बसे न कोई । तेहिपर राजा आकुल होई ॥
त्रिविधि भांति कर्मके शोभा। यज्ञ करहिं देइ बहु लोभा ॥
लुब्धहि जीव न जानहिंलासा। कर्मके नाना भांति तमासा ॥
त्रिगुण जेवरी कर्म बनाई । महिमा महातममें अरुझाई ॥

सो जेवरि डारि गरमाहीं । चहहिं उबार जीव मुढताहीं ॥
धीमर चारा लोभ देखावै । बनसी मर्म सोमीननपावै ॥
धाइ गहहि पाछेपछिताई।तलफहिबहुविधिछूटनजाई३४९
साखी—बहु कर्महि अरुझायजिव, डोरी अपने हाथ ॥
नाच नचावै यम सदा, कारण कारज साथ॥३५०॥
चहहिं जो निस्तरनको, इन्ह कर्मन छुटकाय ॥
तेहि तीहुं फांस ले धावहीं, बंदी देहिं दृढाय ॥३५१॥

चौपाई ।

जो कोईजीव इन्हतेअकुलाना।चाहैअपनानिजकल्याना॥
बहु प्रकार तेहि सासत देई । जीवन धन दोऊ हरि लेई ॥
संयम जतन दृढ बरन करावै । जहां तहां तीरथ दौरावै ॥
कष्ट अनल तन देवै बासा । ब्रह्मचर्य आश्रम परकासा ॥
मैथुन अष्ट जितावन लागे।बिरहनारि दुखसइहिं अभागे॥
लिखहिंचक्र करहिं तेहि सेवा । दुसह कलेश फलेसोमेवा॥
सो बंदी अजके विस्तारा । बंधुवन कष्ट अनेकप्रकारा॥
ग्रासैलोभनहिं जानहिं शूला।बहुविधिकर्मबाण यमहूला॥
घायल घुमहिं घाव अनेका।आगिलआशा करहिंविवेका॥
पालहिं जहरचहहिं फलभोगू।छुवततमरहि तेहिआसअरोगू
जपतप नेम कलेश अपारा । बूडहिबहुतमोहभवधारा३५२

सत्यशब्द टकसार ।

रमैनी ।

बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यम बांधे अंजनीके पूता ॥
यमके बाहन बांधे जनी । बांधे सृष्टि कहांलों गनी ॥

बांधेउ देव तैंतीस करोरी । संबरत लोहबंद गौ तोरी ॥
राजा संबरे तुरिया चढी । पंथी संबरे नाम ले बढी ॥
अर्थ बिहूना संबरे नारी । परजा संबरे पुहुमी झारी ॥

साखी--बंदि मनावैं ते फल पावे, बंदि दिया सोदेय ॥
कहैंकबीरसोऊबरे, जोनिशिवासरनामहिंलेय॥३५३॥
बन्दीखाना जो परे, तेहि राजा खुसियाल ॥
लोभ गरासे जीवको, सूझे नहिं भवजाल ॥ ३५४॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी--जहर जिमी दै रोपिया, अमी सींचे सौ वार ॥
कबीर खलक ना तजे, जामे जौन विचार ॥ ३५५ ॥
विषके बिरवे घर किया, रहा सर्प लपटाय ॥
ताते जियरे डरभया, जागत रैनि विहाय ॥ ३५६ ॥

चौपाई ।

जो कोई जीव विचक्षण लोई । बंदी फांस अज बांचासोई ॥
विष्णु फांस तेहि ऊपर डारे । धर्म भक्तिको कला संवारे ॥
बंदी गृहआश्रम दृढ कीन्हा।कामिनिफांस गलेतेहिदीन्हा॥
सेवा शिला सुमिरनहरिनामा।भक्ति सोईजो करैअकामा ॥
संयम जपतप नेम अचारा । भजनप्रसंग हरिविषयविकारा
ध्यानरूप मानसके पूजा । चोदहभुवन महातम रांजा ॥
विरहअनलको कीन्ह प्रकासा।परगटविष्णुफांसमोंफांसा॥
छिनभर चैन न आवै तेई । हितके मति दुसमन जेई ॥
बाउर होय दहुं दिश धावै । और जीवको धोखा लावै ॥

सन्मुख घाव सहै नहिं भाजै।महिमा महातम चौकीगाजै॥
बूडहिंमांझधारभवजाला।करक करेजा विरह बेहाला३५७

साखी—विरही अनल जलावहीं, प्रगट हरीसो रूप॥
दाह न देखै आपनी, आस परा तमकूप ॥ ३५८ ॥
तिन्ह आंखिन पथरा दिये, समुझ दिये भ्रमजाल ॥
छिनछिन जीवनजीवको, भोगे काल कराल॥३५९॥

सत्य शब्द टकसार ।

रमैनी ।

माटिक कोट पषाणको ताला।सोईक बन सोई रखवाला॥
सो वन देखत जीव डेराना।ब्राह्मण वैष्णव एकै जाना ॥
ज्यों किसान किसानी करई । उपजे खेत बीज नहि परई
छाडि देहु नर झेलिका झेला । बूडे दोऊ गुरु औ चेला ॥
तीसर बूडे पारथ भाई । जिन बन डाहे दवां लगाई ॥
भूंकि भूंकि कूकुर मरि गयऊ।काज न एकौ सियारसे भयऊ

साखी—मूस बिलाई एक संग, कहु कैसे रहि जाय ॥
अचरज एक देखो हो संतो,हस्ती सिंघहि खाय३६०॥
जाहीके शर लागे, सोई जाने पीर ॥
लागे तो भागे नहीं, सुखसिंधु निहारु कबीर ॥३६१॥

चौपाई ।

विष्णुफांस जेहि लागे नाहीं।प्रगट शिवके फांस अरुझाई॥
वर्णाश्रम संन्यास दृढाई। परमहंस ले अंत देखाई ॥
चारि अवस्था चहुं प्रतिबंदी।पंचये नाशक आपु अनंदी॥
नाश करे आनंद कहावे । बंदी कठिन यम घात लगावै॥

योग अभ्यास बिगुर्चन भारी। दुख संताप अनंत संवारी
जीवत गडे अनल तन जारै । कुंभ बांधि जलमांहि पवारै
स्वासा साधि मस्तक मसकावै। छार लगाय जगतभरमावै
पठवै जंगल कोश पहारा । बहु सासत देई जिव मारा ॥
आशा बंधन फांस फँसाना । जीव न मानै मरण अपाना ॥
त्रिगुण फांस कष्ट परचंडा । पूरण पिंड खंड ब्रह्मंडा ॥
व्याधिविविधिदुखपावैकलेसा। ठाडेश्वरीमौनिदिगम्बरभेसा
जेवरि बानीमें लपटावै। फूला फिरै ऊर्धबांहु कहावै ३६२
साखी—पूरण पिंड ब्रह्मांडसो, त्रिगुण फांस लगाय ॥
नाशक नासे जीवको, आपै आप कहाय ॥ ३६३ ॥
बदीछोर छोडावहिं, मेटि मेटि जम फांस ॥
धन्य धन्य सो जीव है । तजहिं महा भवगांस ३६४॥

सत्यशब्द टकसार ।

रमैनी ।

राहिले पीमराही बही । करगी आवत काहु न कही ॥
आई करगी भौ अजगूता । जन्म जन्म यह पहिरे बूता॥
बूता पहिरि यम कीन्हसमाना। तीन लोकमें कीन्ह पयाना
बांधेउ ब्रह्मा विष्णु महेशू । सुरनर मुनि औ बांधु गणेशू
बांधे पवन पावक औ नीरू। चांद सूर्य बांधेउ दोउ बीरू॥
सांच मंत्र बांधे सब झारी । अमृत वस्तु न जानै नारी॥
साखी—अमृत वस्तु जानै नहीं, मगन भया सब लोय ॥
कहहिं कबीर कामों नहीं, जीवहि मरण न होय ॥ ३६५॥
करके करेजे गडि रही, वचन वृक्षकी फांस ॥
निकसाये निकसे नहीं, रहा सो काहू गांस ॥ ३६६॥

चौपाई।

तन मन राचे कर्म दृढाई। करहिं राज बहु दंड देखाई॥
सोई राजकला धरतीके। विदित कीन्ह बलबस छत्रीके॥
बांहुकर्म जिनके बल भारी।जीतहिं जहां तहां राज विचारी
सन्मुख मरण शूर ललकारी।करहिं घात प्रचारि प्रचारी॥
मारे मरहिं परम गति पावै। अकथ कलाको भेद लखावै॥
त्रिगुण भई राज परमाना।चारिकला तेहि मांहि ठेकाना॥
समिता भाव मिलावै जानै।दाम देई अवसर अनुमानै॥
करहिं भेद मत भोरि भुलाई।रार परस्पर प्रीति तोराई॥
दंड युद्ध बहुभांति विचारै।राजकाज सब विधिहि संवारै॥
हाथ कृपाण बाण बल जाके।डरहिं जीव धरती बसि ताके
लूटहिं मारहिं करहिं कलोला।भय बसि एक एकजग डोला
जुझहिं जुझावहिं अनबनिभांती।पूरि रहा जग सोईयमघाती
अस्तुति निंदा हर्ष विषादा।कलहकल्पना परस्परवादा३६७
साखी—एकन्हि एकके बसि परे, त्रिगुण अदल चलाय॥
धूरि रहा सब सोई कला, घातक नहीं लखाय३६८॥

सत्यशब्द टकसार।

रमैनी।

क्षत्री करै क्षत्रिया धर्मा। सवाई वाके बाढै कर्मा॥
जिन्ह अवधूगुरुज्ञान लखाया।ताकर मन ताहि ले धाया॥
क्षत्री सो जो कुटुमसों जूझै। पांचों मेटि एककै बूझै॥
जीव मारि जीव प्रतिपाले। देखत जन्म आपनो हारे॥
हाले करे निसाने घाऊ। जूझि परे तहां मन्मथ राऊ॥

साखी–मन्मथ मरै न जीवै, जीवहि मरण न होय ॥
शून्य सनेही राम बिनु, चले अपनपौ खोय ॥२६९॥

शब्द ।

माया महा ठगिनी हम जानी,
त्रिगुणी फांस लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥
केशवके कमला होय बैठी, शिवके भवन भवानी ॥
पंडाके मूरति होय बैठी, तीरथहूमें पानी ॥
योगीके योगिनि होय बैठी, राजाके घर रानी ॥
काहूके हीरा होय बैठी, काहूके कवडी कानी ॥
भक्ताके भक्तिन होय बैठी, ब्रह्माके ब्रह्मानी ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, ई सब अकथ कहानी २७०

चौपाई ।

त्रिदेवा जननीके सेवा । जो कछु कलाको पावै भेवा ॥
चौदह विद्या गाइ सुनाई । भिन्न भिन्नके प्रटग देखाई ॥
चौदह मूल अरु शाखा अंगा । गांठि अनंत सोई परसंगा
चौदह मूल जगतके मांही । और अनंत वर्णि नहिं जांही ॥
ब्रह्मज्ञान रसक्रिया जोई । वेदपाठ कविताई होई ॥
जोतिष औ विद्या संगीता । वैयाकरण जल तरन समेता ॥
युद्धकरन धनुवान प्रचारी । बाहन बसि सब अश्व संवारी
विद्या वैदक कोक परवाना । नाटक चेटक चतुर सुजाना ॥
चौदह रतन कीन्ह परकासा । मथिके भवजल विद्याविलासा
कर्ता भये विद्याके सागर । थाह न पावै अगम रतनागर ॥
अनबनि रतन अंत नहिं सोई । कारण कारज परगट होई ॥

गावहिं गुण कर्ता त्रयदेवा।पावै न पार अनंत कहि तेवा॥
अनंत कला प्रगटे कर्तारा।लेखा करत न पावै पारा ॥
सोरह कला विदित लखाई।बहु माया सिद्धि प्रगटाई ॥
चौदह भुवन भावना जोई। चौदह यम होय बर्ते सोई॥
धर्मराय यमराज बिराजै।थूल कला झीना नित गाजै३७१
साखी—धर्मराय राजा सोई। चौदह बाहन संग ॥
नर्क स्वर्ग दुख सुखमई, उठे अनेक तरंग ॥ ३७२ ॥
जननीके परसंगसो, विद्या लहै अनेक ॥
चौदह मूल प्रमाण ले, कीन्हा प्रगट विवेक ॥३७३॥
वर्णन करहि बहु भांतिते, त्रिदेवा समुदाय ॥
विदित जगत परचंड सो,फांस गांस न लखाय ३७४॥

सत्यशब्द टकसार।

रमैनी।

जिन्ह जिवकीन्हआपुविश्वासा।नर्कगये तेहि नर्कहि वासा
आवत जात न लागे बारा। काल अहेरी सांझ सकारा॥
चौदह विद्या पढि समुझावा।अपने मरणकीखबरि न पावा
जाने जीवको परा अंदेसा।झूठहि आयके कहा संदेसा॥
संगति छाडिकरै असरारा। उबहै मोट नर्ककर भारा॥
साखी—गुरुद्रोही मन्मुखी, नारी पुरुष विचार॥
ते नर चौरासी भरमि हैं, ज्योंलों चंद्र दिवाकार३७५

रमैनी।

अंबुकीरासि समुद्रकी खाई।रवि शशि कोटि तैंतिसों भाई॥
भँवरजालमें आसन मांडा।चाहत सुखदुख संगन छाडा॥

दुखको मर्म न काहू पाया । बहुत भांतिके जग भरमाया
आपुहि बाउर आपु सयाना।हृदया बसै तेहि राम न जाना

साखी--तेही हरि तेहि ठाकुर, तेही हरिके दास ॥
ना यम भया न जामिनी, भामिनि चली निरास २७६

चौपाई ।

ब्रह्म समाधि त्रिदेव लगावै।तृपित रूप अक्षय सोइ गावै॥
तेहि तृपित सोइ आगिसमाना।जेहिंसेजरैसकलअरुझाना
संशय शोक लहरि उठि आवै।पुनि सो वाही जाय समावै
परबस जीव न सूझै पारा । अगम अथाह शब्द उच्चारा॥
तीनि लोकके द्रष्टा आपू । दृश्य सबै माया परतापू ॥
नहिं पुनि दृश्य न द्रष्टा कोई।गुमसुम आपु अकेले सोई॥
नाहिं नाहिं सो लखेउस्वरूपा।नहिं नाशक सो आपुअनूपा
नाशक नासे जीवहि भोरी।त्रिगुण फांस कलेश न थोरी॥
सत्य वैद्य जियावन हेतू । सो नाशक बसि भयेअचेतू ॥
कीन्ह अचेत सुधि नहिं राखी।देखहु परखहुमत सबसाखी
पारखीसबकेबीजककीन्हा।जहांवोजीवचीन्हावैदीन्हा२७७

सत्यशब्द टकसार ।

रमैनी ।

एक सयान सयान न होई।दूसर सयान न जाने कोई ॥
तीसरसयानसयानहि खाई । चौथे सयान तहां ले जाई॥
पंचयेंसयान जो जानेउकोई । छठयेंमा सब गैल बिगोई॥
सतयां सयान जो जानहुभाई। लोक वेदमों देउ देखाई ॥

साखी–बीजक वित्त बतावै, जो वित्त जो गुप्ता होय ॥
ऐसे शब्द बतावै जीवको, बूझै बिरला कोय ॥३७८॥
तीन लोकके द्रष्टा कहिये, इच्छारूपी रांड ॥
तिनहुंके भीतरसो निकसी, पैठि रहीतेहि भांड॥३७९॥
नहीं रोग नहीं रोगी कहते, सत्य वैद्य सो नाम ॥
संशयमई विकल फिरै, पूरण ब्रह्म अकाम ॥ ३८० ॥
कालचक्रके फेरमें, जियरा परे भुलाय ॥
नित्य प्रलयपरलयरहै; महाप्रलयहाथ बिकाय॥३८१॥
लोक देव गुण कर्मत्रय, ताप कला तन तीन ॥
तृणके ओट पहाड है, बानी तीन प्रवीन ॥३८२॥
परबस जियरा कालके, दुख पावै संसार ॥
विनु पारख भटकत फिरै, थकै विचार विचार ॥३८३॥
महाचाक्र भवचक्र है, ठहरै नहीं छिन एक ॥
तहां जियरा चाहै कुशल, करि करिब्रह्मविवेक॥३८४॥

चौपाई ।

बिन गुरु पूरण पूर न होई । कोटिक जतन करै जो कोई॥
बहुतक जतन करै संसारा । मुद्रा पांचों नाम अधारा ॥
साधन विविधि विगुर्चन भारी।कामिनिरूपीभक्तिविचारी॥
ब्रह्मज्ञान अद्वैत कहावै ।विषय विकार सदा पछतावै॥
अनहद वोहँ सोहँ जापा ।शून्याशून्य निःअक्षरथापा ॥
नामनिःअक्षर जपहि मनलाई । अर्थ नाम ररा रराई ॥
धावहिं स्वर अक्षरनके मांही।जलथल.पाथरमोंअरुझाई॥
विविधि प्रकारयुक्तिजगजापू। फंदा बंदी सहैं संतापू ॥

विनुपारखनहिं चीन्हैकाला । विनु चीन्हे रहैभवकेजाला॥
पंचकोशके घेरा माहीं।देखहु सत कतहुं सुखनाहीं॥ ३८५॥
साखी-महाचक्रके चरखपर, घूमन लागे जीव ॥
चैन न पावै दुख सहै, गोहरावै पिवपीव ॥ ३८६॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी-कवीर भरम न भाजिया, बहुविधि धरियाभेष ॥
सांईके परचावते, अंतर रहि गई रेख ॥ ३८७ ॥

चौपाई ।

विशेषरूप त्रिवेद नसाना । कालकराल मुखजा समाना॥
लक्षमी पारवती ब्रह्मानी । एक एककै सबै बिलानी ॥
गुणमय रूप रहे त्रिदेवा । संतत अपनी करावै सेवा ॥
कारण कारज विविधि प्रकारा।थूलअस्थूलउपजाएकैमारा
उपजै विनसै सहज स्वभाऊ।पिंड ब्रह्मांड सब यमकेदाऊ॥
कोई न बचा जे जग औतारा।नाशक रूपमईसंसारा॥ ३८८

सत्यशब्द टकसार ।

रमैनी ।

मरिगौ ब्रह्म काशीको वासी। शिवसहित मूयेअविनासी ॥
मथुराको मरिगौ कृष्ण गोवारा।मारिमारि गये दशौंअवतारा
मारिमारि गये भक्तिजिनठानी।सगुणमा निर्गुणजिन्हआनी॥
साखी-नाथ मछंदर वांचे नहीं, गोरख दत्त औ व्यास ॥
कहहिं कबीर पुकारिके,ई सब परे कालकीफांस ३८९॥

चौपाई ।

जेहि त्रिदोष मुये त्रिदेवा । कर्म धर्म मत रचिया भेवा॥
सोई सिद्धि सब साधुन पाई।सनकादिक मुनि नारदगाई॥

बालमीक मुनिवर इत्यादी। षट मुनि षटशास्त्रके बादी॥
जैमुनी और कणाद कहावै। गौतम भिन्न भिन्न सो गावै॥
कपिल व्यास शेष परवाना। षट शास्त्रके कीन्ह बंधाना॥
उक्ति पनिच धनु वाक्यबनाई।बहु मत वेद शर ताई चढाई
उरसब जीव निसाना कीन्हा।सायकविविधिचलावनलीन्हा
लगे तीर सबके उरमाहीं।बिनु पारखसो निकसत नाहीं॥
षट शास्त्र शाखा उपराजा।ग्रासित काल कर्म नहिं भाजा
षट शास्त्र षट अंश बिराजे।तीन पुरुष तीन नारि गाजे॥
मीमांसा वैशेषिक सोई। परगट न्याय पातंजल जोई॥
शास्त्र सांख्य वेदांत सो जोरी।इन्ह षटमांह वैरनहिंथोरी३९०
साखी—चार वेद षट अंशसो, प्रगट भये जग आय॥
अर्थ विचारत जीव थके, झगरा बहुत मचाय३९१॥
खटखट षटके जानहीं, सो न परहिं भवफंद॥
गुरु पारख प्रतापसो, सदा रहै आनंद॥ ३९२॥

चौपाई।

और अठारह कथे पुराना।बहु विधि कर्मफांस अरुझाना॥
युक्ति इतिहास अनेक मिलाई।सुनहिंसुनावहिंव्यासअधिकाई
जो परपंच होय जगमाहीं।उपजहिं ग्रंथ व्यासके ताहीं॥
ग्रंथ अनेक को गने गनावै। शाखामों शाखा उपजावै॥
हेतु सबै कारज होय आवै।एक समय पुनि ताहिमिटावै
रहटा उपजन बिनसन केरा।परखहिं जीन न रहहिं धंधेरा
धंधारी सब कालको आहीं।भरमहिं विविधि भांतिपछताहीं
जेहि देखहु सो सृष्टि नियारा।बहै जीव सब भवजल धारा॥

पार लगै जब पारख पावै।नहिं तो भवके धार डुबावै ॥
भवके धार तरंग अनेका।और गंभीर अथाहसंशयका२९३
साखी–महासागर संसार है, जाके संशय सार ॥
सुरनर मुनि सब बहि गये,पारखी उतरे पार॥२९४॥
अनुभव बहु आश्चर्यसो, युक्ति किये इतिहास ॥
चंचल मायाके बसि परे, समुझि परी नहिं फांस२९५

सत्य शब्द टकसार ।

साखी–हिलगी भाल शरीरमें, तीर रहा है टूट ॥
चुंबक बिनु निकसै नहीं, कोटि पाहन गये छूट २९६
करक करेजे गडि रही, वचन वृक्षकी फांस ॥
निकसाये निकसै नहीं, रहा सो काहू गांस ॥२९७॥

चौपाई ।

काल कराल तरंग उठावै । नाना भांति पंथ निर्मावै ॥
आदम नाम कर्म बौराना । मामा हवामांहि समाना ॥
दुबिधा भरम बीच सो डारी।हिंदू तुरुक दुइ जाल पसारी
जो मत वेद किताब सो चारी।जंबूर तौरेद इंजीलअनुसारी
चौथे कहै फुरकान कुराना। चारिहु चारि मता बंधाना॥
आदम आदि सलेमा नामा । नूह नबी जंबूर कलामा॥
तुर्या सोई लाहूत हढाई । और सबै सो जाल देखाई ॥
मूसा नूर तूरपर धावै । सो तौरेत माया भटकावै ॥
ईसा नबीलिंगम अभिमानी।फलक मोकाम इंजीलबखानी
खतमा नबी महम्मद जेहि नाऊं।जामें जमी ये चारों दाऊं ॥
सो फरकान कुरान कलामा।वर्णन बहु विधि चार मुकामा

जाग्रत सो नासूत कहाई। तहँवाँ सरीखत चालचलाई॥
दूजे थूल जलकूत बखाना। साधन जतन तरीकत अनुमाना॥
तीजे सो जबरूत बताई। समय हकीकततहां लखाई॥
चौथे सो लाहूत अनुमाना। मारफत सोई है ब्रह्मज्ञाना॥३९८

साखी-पँचयें सो विज्ञानमें, है हाहूत विचार॥
जबराइल मिकाइल अजहरी, इसराफीलसंघार ३९९॥
दुर्मति कारण सबनके, कारण दुविधा दोय॥
विविधि चाल तेहि मध्यमें, संतत परगटहोय॥४००॥

सत्य शब्द टकसार।

रमैनी।

आदम आदि सुधि नहिं पाई। मामा हवा कहांते आई॥
तब नहिं होते तुरुक औ हिन्दू। मायकेरुधिर पिताके बिंदू॥
तब नहिं होते गाय कसाई। तब बिसमिल्ला किन फुरमाई॥
तब नहिं होते कुल औ जाती। दोजख बिहिस्तकौन उतपाती॥
मन मसलेकी सुधि न जाना। मति भुलान दुइदीनबखाना॥
साखी-संजोगेका गुण रवै, बिजोगे का गुण जाय॥
जिभ्या स्वारथ कारणें, नरकीन्हे बहुत उपाय॥४०१॥

रमैनी।

जिन्हकलमाकलिमाहिपढाया। कुदरतखोजतिनहुंनहिंपाया॥
कर्मत कर्म करे करतूता। वेद कितेव भया सब रीता॥
कर्मतसो जगभौ अवतरिया। कर्मतसो निमाजकोधरिया॥
कर्मत सुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरुक न जाने भेऊ॥

साखी–पानी पवन संजोयके, रचिया यह उतपात ॥
शून्यहिं सुरति समोइके, कासो कहिये जात ॥४०२॥

चौपाई ।

वेद किताब दोउ फंदा भारी । पूर परस्पर एक अनुहारी॥
संतत पंथ अनेक उपराजे।सय्यद खान मिरजा होय गाजे
चौथे शेखमो सिखत दासा।पांडे मोलना समहिं बिलासा
पंडित काजी निर्णय देहीं । हाकिम राजा पोता लेहीं ॥
दंड परस्पर एक समतूला । साहनसाह महाराजी भूला॥
चक्रवर्ति आपु पद पाई । कला विशेष भये प्रभुताई ॥
अदबुद पंथ जीव अकुलाई । दुबिधा फंद जो करैउपाई॥
आकुल होय वोहि मग धावै।जहां कसाई छुरी चलावै ॥
कुहके जीव अनेक कुचाला।बलिप्रदान कोइ करै हलाला
झटका हलाल नशंका मानै।आपुन छागर सो नहिं जानै॥
जरहिंदुनोंघरयमकीआगी।झुलसि झुलसि रहेआशालागी
वाचा फेर बहु पंथ देखावै।मत एकै जहांतहांहोय धावै ४०३

सत्य शब्द टकसार ।

मसला ।

नदिया एक घाट बहुतेरी,कहहिं कबीरबचनकीफेरी४०४॥

साखी–रेष रूप विनु वेदमें, औ कुरान बेचून ॥
आपसमें दोऊ लडैं, जाना पै न दोहून ॥ ४०५ ॥

शब्द ।

भाईरे दुई जगदीश कहांते आया, कहु कौने बौराया ॥
अल्लाह राम करीमा केशव, हरि हजरत नाम धराया ॥

गहना एक कनकते गहना, यामें भाव न दूजा ॥
कहन सुननको दुइकर थापै, एक निमाज एक पूजा ॥
वोहि महादेव वोही महम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये ॥
को हिंदू को तुरुक कहावै, एक जिमीपर रहिये ॥
वेद कितेब पढै वै कुतबा, वे मोलना वै पांडे ॥
वेगर वेगर नाम धराये, एक मट्टीके भांडे ॥
कहहिं कबीर वे दूनों भूले, रामहि किनहु न पाया ॥
वे खसी वे गाय कटावैं, बादिहि जन्म गमाया ॥४०६॥

शब्द ।

संतो राह दुनों हम दीठा,
हिंदू तुरुक हटा नहिं माने, स्वाद सबनको मीठा ॥
हिंदू बरत एकादशी साधे, दूध सिंघारा सेती ॥
अन्नको त्यागे मनको न हटके, पारन करे सगोती ॥
तुरुक रोजा निमाज गुजारै, बिसमिलबांगपुकारै ॥
इनको बिहिस्तकहांसे होवै, जो सांझै मुरगी मारै ॥
हिंदुकी दया मेहर तुरकनकी, दोनों घटसो त्यागी ॥
ई हलाल वे झटका मारै, आग दुनों घर लागी ॥
हिंदू तुरुककी एक राह है, सतगुरु सोई लखाई ॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, राम न कहूं खुदाई४०७

साखी—बड उतपात यमजाल है, परखहु संत सुजान ॥
घात करे बहु भांतिसो, तहां जीव चहै कल्यान४०८॥

चौपाई ।

अठासीसहस्रमिलि नबी कहाई। बिन गुरु आदम अंतनपाई
मध्य मध्य फंदा बहुतेरा। विविधि कलेश जीव अरुझेरा ॥

उरझ रहै जिव जहां तहां बंधा।बन्दीछोर न चीन्है अंधा॥
क्षर अक्षर निःअक्षर धावै । त्रिगुण फांसहीमें अरुझावै ॥
परख न टीके और मन लावै।जतन कलेश सोई सोइ भावै
अमली अमल हीके लत लागी।पतंग न लखहिं उतंगहिआगी
कालमता मद जीव बौराना।विविधि उक्ति बहु पंथउपाना॥
साहेब नाम ओट धर काला ।जीवहि भोरि करे बेहाला॥
सदा काल बहु फंद बनावै ।सोई फांस जीवहि उरमावै ॥
चलहु जीव यमफांस बचाई।जेहि विधि तीर चुभै नहिं भाई
रहहु परखमें हो हुशियारा ।छार भार सब यमशिरमारा॥
शरणागत पारख लौलाये । यमके फंदाचलहु मिटाये ॥
निज घर बास करहु जियअपना।यमपुर बहुत कलेश कल्पना
कल्पत कल्पत जन्म सिराई।सदा रहै यम घात लगाई॥
बांचहिं तेहि जे परमसयाने।सुर्ति समेटि प्रभुपदलपटाने॥
परखतशब्द सुर्तिकरै जीवा।होयअशंकशरणसमकीवा४०९

साखी–परखत सुरत समेटते, भये अशंक शरणाय ॥
शिर कूटत यम अपना, नेकौ नाहिं बसाय ॥ ४१० ॥
पारख अचल अखंड है, ताहि परे नहिं और ॥
बिनु तेहि भटकि जग रहे,जहां नहिं थितिठौर ४११॥

छन्द–भटकि बहे बहुधारमें, पारख बिना नहिं ठौर है ॥
बूडे न पावै थाह सो, गंभीर दहुं दिश भौ रहै ॥
तामस बसी जिव उजबुजै, चहै और गावत और है ॥
आशा मगर भक्षण करै, जेहि ग्रास हेतक गौ रहै ॥
गावै विषय विकारके, नित्य ध्यावै अगम अपारके॥

नहिं थाह सो संसारके, चहै पार आस लबारके ॥
मत भ्रष्ट करत खुवार तेई, यार परम विचारके ॥
घरचोर ठौर उबारके, मतविदितजससरकारके ॥ ४१२ ॥

सत्य शब्द टकसार ।

शब्द ।

ऐसो वेद वैद्य जगमाहीं, ताते रोगी जीवत नाहीं ॥
कथा कर्म काटनके ताँई, सुनता है सब कोई ॥
औषध और रोग कछु औरहि, कुपथ परे सबलोई ॥
गोपी कृष्ण कांधके लीन्हा, सबको यही बतावै ॥
जैसी सुनै उपजै पुनि तैसी, लहरि विषयकी आवै ॥
बारह वरषको पुरुष बतावै, सोरह वरषकी नारी ॥
कह कबीर भली समुझाई, भूला चोर कटारी ॥ ४१३ ॥

शब्द ।

सहज एक ऐसी हूल परी ।
भागे शुक सनकादिक नारद, मोहे अक्षय हरी ॥
ब्रह्मा विष्णुआदि ले भागे, सुध बुध सबबिसरी ॥
ये तीनोंके देखादेखी, दुनिया भागी सगरी ॥
नौ दश भागे औ तैंतीसों, चौरासी सगरी ॥
भेष अलेख करे को लेखा, काहु न परख करी ॥
धीरज राखि रहे नहिं कोई, छाडि चले नगरी ॥
कहहिं कबीर हटो नहिं माने, धोखेकी विडरी ॥ ४१४ ॥

साखी--एक शब्द गुरुदेवका, ताका अनंत विचार ॥
थाके मुनिजन पंडिता, वेद न पावै पार ॥ ४१५ ॥

जो घर हैगा सर्पका, सो घर साधन होय ॥
सकल संपदा लेगया, विषहर लागा सोय ॥ ४१६ ॥

चौपाई ।

सो त्रिदोष ब्रह्मांड विराजै । सोई कला घटभीतरसाजै॥
त्रिविधि अपनी फांस चलावै।बहुविधिरोगसोगउपजावै॥
अनबनि रोग को वर्णै पारा।सब मिलि गाइ गाइ दुनिहारा
नासे अंत न रखै शरीरा । घुमंहि रहटा सांझ सकेरा ॥
जन्म मरण सोई कहलावै । रहटामांहि जीव घुमांवै ॥
चारि खानिके आशा चारी।उलटिपलटि सोइबासाडारी॥
जोइ आशा सोई बासा लाई।उपजनबिनसनबीजबनाई॥
आस तुर्या पिंडज परधाना।बासा धरती कीन्हठेकाना॥
अचलखानेआशा थिरपौना। धरतीबास जढताई तौना॥
अंडज आशा धरती लाई।बासा शून्य अधिकारउडाई॥
आशा उखमज श्वास बनाई। बासाअनलदेइभरमाई४१७

साखी–सबै कला सब खानिमें, अधिकारी बिलगाय ॥
और योनीते औरमें, कारण देइ भरमाय ॥ ४१८ ॥
बढे बिलास चहुं खानिमें, अपने अपने आस ॥
चलन अधिकता जहांनहीं,जिनकी जैसीबास॥४१९॥

चौपाई ।

तेसो फंद जनमके हेता । भिन्न भिन्न तेहि लक्षसचेता॥
देहमांह जस कर्म कमावै । सोई कर्म बुद्धिहोयकेधावै॥
लक्ष स्वभाव सोइ सोई होई।घट साचा घटमांहिसमोई॥
देहअभिमानी देहनिवासा।थूल अभिमानी लिंगमवासा॥

शून्य अभिमानी शून्यहि राखै।तुर्याअभिमानीनिरंजनचाखै
ताहि कला चौ कला उपाई।कला बीचबहु कला समाई ॥
देह बुद्धि जेहि जीव लगावै । सोई आसा होइ उपजावै ॥
बिनसै देह देह सोई पावै । अंडज खानिमों जाइ समावै॥
पहिली आस बास उलटाई ।थीर पौन दुनिया भरमाई ॥
ज्ञानी थूल थूलसो आसा।पलटि उखमज तेहि दीन्ह नेवासा
थीरपौन अभिमान दृढाई । खानि अंकुरज जाइ समाई॥
तुर्या ज्ञान न और अलंभा । पिंडज तेहि राखै जगदंबा॥
उलटिपलटियोनीभरमावै।आपुहिआसबासहोइधावै४२०
साखी—उलटि पलटि बहु भांतिते, चौरासी भरमाय ॥
आस भरोसा कुशलके, अंध सबै पतियाय ॥४२१॥
विविधि प्रकार उपजा करै, एकते करै अनेक ॥
चहै भक्ति जेहि जीवको, देई विज्ञान विवेक॥४२२॥

सत्यशब्द टकसार ।

चौंतीसा ।

घघा घट विनसै घट होई । घटहीमें घट राखु समोई ॥
जो घटघटेघटेहिफिरिआवै।घटहीमेंफिर घटहिसमावै४२३

चौपाई ।

बुद्धि थूल मिलावै जाही । भुगतावै स्वर्गादिक ताही ॥
थूल अस्थूलके जेहि नहिंआसा।बुद्धिशून्य अचेतनिवासा।
शून्यहि छोडि ज्ञानरस पागे।सर्वसाक्षिनी पद अनुरागे ॥
एकते एक कला अधिकाई। भासविलास न संधिलखाई॥
सर्बा सर्ब गिरा सहिताही । तुर्यातीत होय पद जाही ॥

उतपतिप्रलयसोतहांसुभाई।उलटिपलटिपुनि पुनिजहंडाई
सर्व खेत उपजा उपजाई । पेरहिं कोल्हू कष्ट देखाई ॥
कोल्हुहि पेरि रस लेत चुवाई ।महाकराह साधन औटाई॥
कर्म सुकर्म इंधन बहुतेरा।अनल विरह तन चूल्हनि बेरा॥
रस औटत कोउ रावा भयऊ।कोई चक्की गुरु स्थूल उपयऊ
अति प्रसन्न न गुरके मीठा।रही कंद जो मिलि सब सीठा ॥
रावा कसी शक्कर सो कीन्हा।छोई कसरी भिन्न कै लीन्हा
शक्कर दूध विचार मिलाई।अनबनि भांति ताहि फारियादी
दीन्ह सेवार धीरता बहुताई।चीनी कीन्ह निज माटनमांही
पुनि पुनि ताहि दोबारा करहीं।तुरिया शुद्ध वोद्रतेहिभरहीं॥
मिश्री सो विज्ञानकहावै।सब विधि कालके मुखहिंसमावै
महिमा बास फूल प्रभुताई।तेहिते कंद बिकंद बनाई४२४॥
साखी—सब विधि खाई आपुहि,शुभ अरु अशुभबनाय॥
कोउ मीठा बहु भांतिसो,गुड करनी समुदाय॥४२५॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी—बिनु डांडै जग डांडिया, सोरट परिया डांड ॥
बाटनिहारे लोभिया, गुरते मीठी खांड ॥ ४२६ ॥

चौपाई ।

सर्व कला शाखा यम मूला।सो बसि जीव सहै बहु शूला॥
सब विधि पिंड ब्रह्मांड नसाई।महाशून्यमें रहत समाई ॥
पुनि सोइ भांति जगत निर्मावै।सांझ सबेरा प्रगट देखावै
आदि अंत मध्यबहुत संवारा ।तामें जीव एक पेरा बेचारा
जो यह कालजालल खिपावै।झाई गांसि सब दूरि बहावै॥

आशा पारख पारख बासी।जीवन जीव सदा सुखरासी॥
आशापारख बरते जबहीं।कालफाँस नहिं व्यापै तबहीं ॥
आदि अंतकै पारख पावै।सोई यमपर अदल चलावै ॥
आप बचै और जीवबचावै।जो समुझै तेहि बंदि छोडावै॥
यम पछताइ हारि मुख गोई।पारखपाय परमपद सोई ॥
जेहि प्रसाद छूटे यमफांसा । रहै न एको वाके गांसा ॥
परखविलासमगनमनअपने।संशय भरमलेशनसपने ४२७

साखी--रामरहससाहेबशरण, अभय अशंक उद्योत ॥
आवागमनकी गम नहीं, भोर सांझ नहिं होत ४२८
नाशकके सब रूप हैं, रहै तेहि मध्य समाय ॥
कष्टविविधि विधि पावते,पारख लीन्ह छोडाय४२९॥

चौपाई ।

मिथ्या सत्य सबै जग झूठा।परखहु खोलहु मर्कट मूठा ॥
जाके नाशक मूल कहावै । सो पद सत्य कहांते पावै ॥
नाशक झूँठ सांचप्रभुशरणा।महाबिकट दारुण दुखहरणा॥
ऐसो शरण न आवै जोई । राखनहार और नहिं कोई ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक जेते।पीर पैगम्बर औलिया तेते ॥
बूडे भवजल मायाके चेरा।गहहु शरण दृढ परख सबेरा॥
आशा इन्ह परपंच न कीजै।जीवन जन्म सुफल करलीजै
बिघ्न कोई नहिं कष्ट अपारा।जाते सुख साहेब दरबारा ॥
शरण समान करहिंप्रभुअपना।जन्म मरणके मिटै कल्पना
सत्य लोक सुख सागर सोई।प्रभुशरणागत पारखी जोई
सोसत्यलोककरहुविश्रामा।आसतजहुयमरायकेग्रामा४३०

साखी–प्रभु शरणागत परख दृढ, सत्यलोक परवान ॥
संतत जीव विलास है, झूठा काल गुमान ॥४३१॥
पारख सीढी झांकके, पलटि बहै भवधार ॥
थाह न पावहि बूडहीं, नहि ताके निस्तार ॥४३२॥

सत्य शब्द टकसार ।

साखी–गुरु सीढीते ऊतरे, शब्द विमूसा होय ॥
ताको काल घसीटिहै, राखि सकै नहि कोय ॥४३३॥

सांचे श्राप न लागे, सांचे काल न खाय ॥
सांचहिसांचा जो चले, ताको कहा नसाय ॥४३४॥
सांच बराबर तप नहीं, झूंठ बराबर पाप ॥
जाके हृदया सांच है, ताके हृदया आप ॥४३५॥

चौपाई ।

विधि हरि हर बहुरूप तरंगा ।जहां तहां ताके उठैं तरंगा॥
उठत तरंग उक्ति बहुतेरा । हेतक फांस काल बौंडेरा ॥
बौड़ेरा उठि जाय विलाई ।उडहि संगसोउलटि गिराई ॥
बौंडेरा आवै वहु भाती । बाचहु उडै नाहिं कुशलाती॥
रज समान संग पौन उडाई।जलमैं पायके कीच समाई ॥
त्याग करहिं प्रथम जगमोटा।विनाविचार वसी सबखोटा
जब नहिं देखिपरे असत्यागा।मनहिंमन पछताहिअभागा
कथनी कहही उडहिअकाशा।पुनि सोइविषयमईजगवासा
मत मतवारे बाउर लोगा।बिनुपारखसबभयेसंशयसोगा॥
सुखअनुमानजगउनकेचरणा।तेहिसंतापविविधिविधिमरणा

वोहि बंदीजग जोहहिंआशा।नाश कलेश यमकरेतमाशा॥
दुखकेघमंडकछुवर्णिनजाई।रोवहिआशानिराशाभाई४३६

सत्यशब्द टकसार।

साखी--कथनी कथै अगाधकी,ज्यों अकाशको गिद्ध॥
चारा वाके भूमिपर, उड़ै भया क्या सिद्ध ॥ ४३७ ॥
गृही तजके भये उदासी, वनखंड तपको जाय ॥
चोली थाकी मारिया, बेरई चुनि चुनि खाय ॥४३८॥
घर जंजाल बाहर जंजाल,जंजालकायामाथे॥
जो जंजाल तजियोगीभये,सोजंजालहैसाथे ॥४३९॥

शब्द।

सुन रे सुभगिया, कौने कारण बन लौले अगिया॥
नहिंबनकतरानहिंबनकूस,अगियालौलेबनआगनफूस
रोवहींआशारोवहिंनिरासा,भरलिडेहरमोरजरेकपासा
यहि ठगनीके पांच भ्रतार, ठगतठगत आइलिसंसार॥
कहैंकबीरमोरजतियाझीन,गुरुकेशब्दसेरहतलौलीन४४०

चौपाई।

त्याग सोइ जो सदा सुखारी। आशा मोह भवफंदाभारी॥
मोह नदीमें सब कोइ डूबै।सुसुकि सुसुकिउजबुजहोयऊबै॥
थाह नहीं नहिं देखै पारा।पुनि पुनि बहै भवहीकेधारा॥
करहु विचार तजहु सोआशा।संशयसोग मोहभ्रमनाशा॥
परख अटल सदा सुखकरहू।भरमि भरमि जिवकाहेमरहू॥
पारख सब जग गांस मिटावै।बिनु परिश्रम परमपदपावै॥
रामरहस गुरुशरणा आये।सब भय संशय तुरित मिटाये॥

नहिं कछुसाधन नहिंकछुयुक्ती। नहिं कछु बौडेराके उक्ती ॥
पूजा संतन गुरु सेवकाई। परख विलास अटलदेखलाई ॥
जो पारख तजिऔर लोभाना। निश्चययमकेहाथबिकाना॥
जो चेतहु तो होय उबारा । नहिं तो होईहोयमके चारा॥
कर्म धर्म मत सब बौराये । कहहु परमपद कैसे पाये ॥
तजहुआसभ्रमजालकेबानी। लहहु विलासपरखपदजानी ४४१
साखी—पूजा संतन कीजिये, सेवकाई गुरुकेर ॥
भूखे अन्न जेवांइये, पारख करहु सबेर ॥ ४४२ ॥

टकसार ।

साखी—जो तू आया जगतमें, तो ऐसा कर लेउ ॥
कर साहेबकी बंदगी, भूखेको कछु देउ ॥ ४४३ ॥
फेर परा नहिं तत्वमें, नहिं इंद्रियनके माहिं ॥
फेर परा कछु बूझमें, सो निरुवारेहु नाहिं ॥ ४४४॥

चौपाई ।

और जतन कछुवो मत करहू । केवल पारखसाहेबलहहू॥
शंका संधि रहत कछुनाहीं। नाशकआपुहि आप बिलाहीं॥
जे नाशक अस्नेही कीन्हा । कष्ट घनेरी माथे लीन्हा॥
बोध चहहु पारख प्रभु शरणा। विनाप्रयासेभवजलतरणा॥
बिनु पारखप्रतीति न होई। बिना प्रतीति प्रीति नहिं सोई॥
प्रीतिविनानहिसाहेबकेशरना। भटकिभटकिभवजलमेंबहना
बांचन चहहु जो यहयमफांसा। वचनबसावहुपरखविलासा
सत्य शब्द टकसार कहावै ।बीजक जीवन पद परखावै॥
जहां जो जीव रहैंअरुझाई। फांसगांस यम सबहिंलखाई॥

देखत पारख छूटै फांसा। तहँवाँ यमके रहै न बासा॥
संतत शरण जीव सुखकारी। नाशक जाल सबै भवहारी॥
साखी—बचन बसावहु पारखी, बीजक है सो नाम॥
अक्षर अक्षर गुरुसे लखहु, संशय मेटहु तमाम४४६॥

सत्यशब्द टकसार।

रमैनी।

तैं सुत मान हमारी सेवा। तोकइ राज देउं हो देवा॥
अगम दुगम गढ देउं छुडाई। औरौ बातसुनहु कछु आई॥
उतपति परलय देउं देखाई। करहु राज सुख बिलसो जाई
एकौ बार न होइ है बाँको। बहुरिजन्म न होइ है ताको॥
जाय पाप सुख होइ है दाना। निश्चय वचन कबीरकेमाना
साखी—साधु संत तेई जना, जिन्ह मानल वचन हमार॥
आदि अंत औ युग युग, देखहु दृष्टि पसार॥ ४४७॥

चौपाई।

बचन बचनजगसबकोइकहहीं। बचनकला बिरलेकोइ लहहीं
पारखी बचन बचावन फांसा। और वचन हैं यमके गांसा॥
विषके गुण अमृत कहि ताके। भोरे जीव परहिं बसिजाके॥
जेहि जेहि पूजी भवजल बेरा। सबके बीजक पुरख निबेरा
साखी शब्द रमैनी कीन्हा। बेलि बिरहुलि कहरा रचिदीन्हा
और बसंत हिंडोला लगनी। विप्रमतीसी अर्थमें बरनी॥
चांचर लार बिरह जग जेंता। जेहि जेहि बूझबेग सबतेता॥
बिपर्जय चौंतीसा सब बानी। नामअर्थमें सबहिं बखानी॥
आयत बैत हदीश रुवाई। रसला मसल सब भेद सुनाई॥

रेखता और झूलना भेदा । पढ अष्टादश मत चहु वेदा॥
जे सब गुप्त मता रखु गोई । पारख दृष्टि सबनके खोई॥
जालफांसपरखहिं जे जीवा।विविधिप्रकार शब्दतेहिकीवा
परख विलास करहिं जो कोई।संशय मोह रहित जिव होई
आवागवन बीज नहिं राखी। परख विलास प्रगटहैसाखी
विस्मय एकौ नहीं जो आपै।परख विलास जापसोइजापै
जपतपजतनकरतजिवमरहीं।परखविलासकष्टसबहरहीं४४८

साखी–जे जीव परख विलासमें, लहैं सदा सुखचैन ॥
तिन्हके त्रास न कालके,और कहै को बैन ॥ ४४९ ॥
परख विलासी जीव जे, धन्य सोई संसार ॥
और सबै निर्धन रहै, यमके हाथ खुवार ॥ ४५० ॥

चौपाई ।

जीवन धन पारख है तेरा।दृढके गहहु सो समुझ सबेरा॥
जो जहां प्रीति अटलहै जाके । बासा तेई तहां है ताके॥
अधिकारी खैंचे निज ओरा।सो जिव जानि परहुजनिभोरा
यमकेगांस अनेकन्हिभांती।भूलिसोबहुमतिमोहकेराती४५१॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी–काल खडा शिर ऊपरे, तैं जागु बिराने मीत ॥
जाका घर है गैलमें, सो कस सोवै निचिंत ॥४५२॥
अधम कला सब कालके, देखहु उलटी रीति ॥
करै प्रतीति दृढ चोर सो,साहेबसे नहि प्रीति ४५३॥

चौपाई ।

साहेब अनबनि भांति बुझावै।सुनै न जीव चोर संग धावै॥
नाना रंग सब रहै रंगाई ।सूझै न निज पद तमहि तमाई ॥
औषध पारख जीवहि लावै।नैंन रोग सब तुरित मिटावै॥
तब देखहु जिव आंख पसारी।साहेब सुख तस्करके खुवारी
ठाकुर तस्कर केहि विधि मानी।फूटि आंख एकौ नहिंजानी
जो जानहु तो करहु विचारा।तस्कर संग कौन निस्तारा॥
तस्करके संग कौन भलाई ।जीवन धन हरि हरिले जाई ॥
करहु संभार वचन गुरु मानो।विष अमृत मत एकै सानो॥
विषके खाये न जीवै जीवा।देखहु अनेक जतन जो कीवा॥
स्वारथ परमारथके हेता । सहहु कलेश कहहु गुण केता ॥
परखलहहुसाहेबकेशरणा।स्वतःस्वभावसबैदुखहरणा४६४
छन्द—साहेब स्वतःप्रकाश पारख, त्रास नहीं यमदंडके ॥
बास शरण विलास तजि, सब आस पिंड ब्रह्मांडके॥
गांस फांस मिटाय दास,हुलास ज्ञान अखंडके ॥
नहिं नाशते इतिहास सुनि सोई,आदि अंतप्रचंडके॥
यम हंत एक अनंत, तेहिके फांस बहु वर्णतके ॥
बहु जंत गाई हरंत, कूप पतंत बहुतसे गनंतके ॥
सब दास होई रहंत, दुष्ट परंत चीन्हन कंतके ॥
आदि अंतजे सुनहि संत, नहिं धावहिं सो बे अतके॥
जीव हाल कीन्ह बेहाल,काल कराल सुनि अवजालके
उर साल अनेकन्हि भाल,सो बाचाल कबीतन गालके
तेहि ढाल डाल प्रचंड होहु, निहाल नाल कृपालके॥

लहुपरख साला माल, मेटि भवजाल शरणदयालके
यह बुदबुदा जो शरीर, नीर थीर झूठा हीरके ॥
परपंच बहु ततवीर,तेहिके वीर उवरे हीरके ॥
तजु ललनि कीर फकीर,जेहि डर नहिं उजीर अमीरके
गुरु पीर हरें भवभीर, अभय गभीर शरण कवीरके ॥
नारदादि शुकादिदै, ब्रह्मादि सब जेहि गावहीं ॥
गाइ धाइ हराइ, बारंबार मन पछतावहीं ॥
जस जस जतन छूटन करहिं,भव बूडे थाह नपावहीं ॥
सो धार कठिन अधार,ते गहि पार पारख लावहीं४५५

साखी–संतत सुखहै पारखमें, साधन जतन विनास ॥
भूलिभटकिमतिजाहुजन,विबिधिकर्मके फांस॥४५६॥

चौपाई ।

कर्मफांस बहुते कठिनाई । विनु पारख कोइछुटैनभाई ॥
काल बली राखै जीव रोकी। परख न देइं जाल त्रिलोकी
बहुमत मदिरा सबनि मताई। भये अचेत न रही चेताई॥
लाज सकुच परिवार उपाधा।नेम बांध अनेकन्हि बांधा॥
कौन सुनै को मानै बाता । यमके घात सोई कुशलाता॥
मोह नींद बहु विधि ते लागे। गाढी नींद जगाये न जागे
बिरले जागहिं परख प्रकाशा।तम तामसके होय विनाशा॥
बहुत सुनहिं नहिं खोलहिंनैना।परख पुकार दहुं दिश बैना॥
मातें नींदपलक जो खोलहीं।औरहिऔरभोरसत बोलहीं॥
छिन छिन आंख डपिढपिजाई।चेत हिमहिपरखैकोभाई४५७

साखी–जगै न खोलै पलक जो, बारम्बार जगाय ॥
झूठी मीठी नींद है,आंख ढपि ढपि जाय ॥ ४५८ ॥

सत्यशब्द टकसार।

रमैनी।

बज्रहुते तृण खिनमें होई। तृणते बज्र करै पुनि सोई ॥
निझरु नीरुजानि परिहरिया।कर्मका बांधा लालचकरिया
कर्मधर्म मत बुद्धि परिहरिया।झूठानाम साँचले धरिया॥
रजगतित्रिविधिकीन्हप्रकाशा।कर्मधर्म बुद्धिकेर विनाशा॥
रविके उदय तारा भौ छीना। चर बीहर दूनोंमें लीना॥
विषके खाये विष नहिं जावै।गारुड सोजो मरत जियावै॥
साखी–अलखजोलागीपलकमें, पलकहीमें डँसि जाय ॥
विषहर मंत्र न माने, तो गारुडकाहकराय॥४५९॥
मन मायाकी कोठरी, तन संशयका कोट ॥
विषहर मंत्र माने नहीं, काल सर्पकी चोट ॥ ४६० ॥

चौपाई।

रहहु सदा पारख हुशियारा।नाशक नष्ट सदा व्यौहारा॥
अदबुद रूप देखाय भुलाई।नाशकनास्ति नहींकुशलाई॥
नष्ट कला नाशक पहिचानी।फांसगांसमेटहु बिलछानी॥
रहस दयाल रहहु लौलाये। आस गांस छूटे पारखपाये॥
नहिंअनुमान न अटपटचाला।परखहुसबविधियमजंजाला
ज्ञाने जनावै पारख सोई। लहत शरण सुख जीवहिहोई॥
संतत जीवै जीव व्यवहारा। नाशक नष्टमई संसारा॥
सो अव्यक्तनहिं चीन्हैकोई।यद्यपि आपुव्यक्तरूपिहैसोई॥

देखहु व्यक्तसो सबअव्यक्ता। आपु ब्रह्म आपुहिसोशक्ता॥
पारख लहन नियारा होई । आस वास हेतुसब खोई ॥
सहजहिं नष्ट स्वभाव शरीरा।त्याग जतनतेहिअनबनिपीरा
जतन युक्ति मत नाशककेरा । सो सब तनहैकरहुनिवेरा॥
योनी भरमत पीरा भारी।जन्म मरणदुखदुसहविचारी॥
तनअभिमानलहहुदुखकाहे।बनिहैपरखविलासकीचाहे४६१

सत्यशब्द टकसार ।

साखी--दोहरा तौ नौ तन भया, पदहिं न चीन्है कोय ॥
जिन्ह यह शब्द विवेकिया, छत्रधनीहैसोय॥ ४६२ ॥
साहु चोर चीन्है नहीं, अंधा मतिका हीन ॥
पारख बिना बिनाशहै,करु विचार होहू भीन ॥४६३॥
माया तजे क्या भया, जो मान तजानहिं जाय॥
जेहि माने मुनिवर ठगे, सो मान सबनकोखाय४६४॥

त्रोटकछन्द ।

संसार संशय शरीर, भवधार गहिर गंभीर ॥
भवतरंग बहु पीर, पारख लगावे तीर ॥
बहु बहिगये तेहि धार, कहि कहि अथाह अपार ॥
सूझै न बूंद अधार, परख प्रकाश उबार ॥
तेहि धन्य धन्य सो जीव, जिन्ह परख पाये पीव ॥
बहु छीर कविमत कीव, मथि मथि निकारै घीव ॥
सो वचन हैं टकसार, करु एक एक विचार ॥
मत देखहु सा ज लबार, करेजीवनहि संवार ॥

बेहा सो खेत उजार, तेहि आस मास उबार ॥
परपंच सब वदकार, बेबुध करैं इतबार ॥४६५ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी–बेहा दीन्हो खेतको, बेहा खेतहि खाय ॥
तीन लोक संशय परी, मैं काहि कहौं समुझाय४६६॥

चौपाई ।

संशय भरम मिटावहु भाई।परखविलास प्रीति अधिकाई॥
परख परे नहिंऔर ठिकाना।धोखेमें मति फिरहु भुलाना॥
और बिरानेंके मत बौरा । फिरहिंबिकल दहुंदिशजगदौरा
कतहुं न थीरझीनाऔसोटा।नाशकनष्टमई कलि खोटा॥
लहहु परख परखावहु हंसा ।जे कछु गांठि बांधेहु संसा॥
परखत गांठि संशय नसावै।नाशक अपनो रूप देखावै॥
सो पहिचानमान सबडारो।परबस यम जीवन मति हारो
बहियां बल पारख प्रभुताई । गहत शरण सो लेत छोडाई
कलह कल्पनासबजग भर्मा।निर्मल चाल परखमयमर्मा॥
सुजन सेवक साहेब गुरुदेवा।धाय गहिल करहिं तेहि सेवा
चरणोदक परसादी लेहीं।परखप्रताप जीवसुख देहीं ४६७

साखी–साहु साहेब गुरु सोई, दरस प्रत्यक्षहि होय ॥
ध्यान अनुमान यमके कला, चले अपनपौ खोय४६८
पारख मिले संशय भजै, रहै न कल्पना कोय ॥
और परे कोई नहीं, धोखा यमके होय ॥ ४६९ ॥

सत्यशब्द ।

साखी–जाके मुनिवर तपकरे, वेद थके गुण गाय ॥
सोई देउं शिखापना, कोई नहिं पतियाय ॥४७० ॥

चौपाई ।

गुरुके मिलत कल्पना भाजै।सोई साहेब सत्य विराजै ॥
तजहु और आशा यमकेरा।पारख सब दुख करै निबेरा ॥
हंस दशा धरि बिहरहुभाई ।नीर छीर बहु विधि करियाई
निर्बैरी बर्तै व्यवहारा । एक अनेक बहै भवधारा ॥
एकै जीव अनेक बनाई । केहिसे बैर करहु मेरे भाई ॥
परखहु दुर्मति करहु बिनासा।जोई विकार यमकेर बिलासा
त्रिविधि फांस सबै बौराई । भांति अनेकन्हि दुर्मतिलाई॥
धोखा दयाल कर्म कठिनाई।विष्णु दुर्मति चाल चलाई॥
ब्रह्मा राजतिलक अनुसारी।अदल न्याय परपंचसंवारी ॥
जुलमीजुलमतिलकनहिंशोभे ।झूठमहातम सबैजिवलोभे॥
विषय त्यागि हर बानाधारी।जती कहावै सती संचारी॥
जामें पुत्र जतीके शोभा । देखत राम सीता मनलोभा॥
सतवंती पतिब्रता कहाये। विधिसंयोग कुंभजऋषिआये॥
वर्णनसबकेचालकुचाला।विदितपुराणनतिन्हकेहाला४७१

साखी–बहुतक चाल दुर्मति रचे,धोखा आस लगाय ॥
महिमा केरी गांसमें, अंध सबै पतियाय ॥ ४७२ ॥

सत्यशब्द ।

झूलना ।

गुरुदेवकी नारी जो हरलई चन्द्रमा । कुन्ताकुमारीसे सूर्य प्रसंग कीन्हा॥गौतमके घरणिसे सुरपतिने छलकरी ।

कृष्ण सब गोपिनके रंग भीना ॥ ब्रह्मा सुतासंग भाग फिरे। शिव मोहिनी देखिके भये अधीना ॥ हरी जग आयके जत्त सत्त टारिया।मातापुत्रिसों तीहु भोगकीन्हा॥ अंजनीके छलनको देव तीनों गये। पाप औ पुण्य जिन्ह घोरि पीन्हा॥ कहहिं कबीर सब देव अन्याई भये। तिन-हिंका कहा सब जगत कीन्हा ॥ ४७३ ॥

चौपाई।

करहिं कुचाल महातम भारी। धोखा देइ देइ जीवन मारी
पातशाह शिर टोपी दीन्हा। सोउचालकुचालगहिलीन्हा॥
कफनी कफन अजादि बाना। तीनहुं सोई फांस अस्थाना॥
पारखी सबके पारख कीन्हा।अपनीभेष अपनायसोलीन्हा
भेष जथारथ राखिसो साखी।और अमंगल एकौनहिंराखी॥
निजपद जानि भेष अपनाई। कंठी तिलक लंगोट सोहाई॥
टोपी कफनी कुरता राजै। परख विलाससबैशुभ साजै॥
सोई भेष सो मंगलकारी। औरअनेकन्हि जतनखुवारी॥
छीर नीरसो हंस निबेरा। बकबकध्यान कालके प्रेरा॥
बक अरु हंस चालबिलगावै। परख विलाससदासुखपावै॥
आदि अंत परखो परखावो। झांई दुर्मति दूर बहावो४७४

सत्यशब्द टकसार।

साखी—मानुषजन्म नर पायके, चूकै अबकी घात ॥
जाय परे भवचक्रमें, सहै घनेरी लात ॥ ४७५ ॥
जिन्ह चेता तिन्ह चेता, मानुषकेरी दाव ॥
नाहिं तो दुर्मत फेरमें, सहै घनेरी घाव ॥ ४७६ ॥

छन्द–जेहि हेतु सुरनर मुनिजना, बहु योग जपरटलावहीं॥
नहिं ओर छोर बेकार पावहिं, अगम कहि कहि गावहीं
सो आदि अंत जे सुजनजन, पारख कराहिं परखावहीं
सबभांसभासमिटायअभय, अशंकसोइपदपावहीं४७७

इति सत्यशब्द टकसार ग्रंथ रामरहससाहेब कृत
गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

सत्ताईस रमैनी.
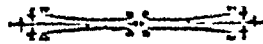
॥ दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते सत्ताईस रमैनी ॥

रमैनी १.

प्रथम शब्द है शून्याकार । परा अव्यक्तसो कहै विचार॥
अंतःकरण उदय जब होय । पश्यंती अर्धमात्रा सोय ॥
स्वरसो कंठ मध्यमा जान । चौंतिस अक्षर मुखअस्थान॥
अनवनि बानी तेहिके माहिं । बिन जाने नर भटकाखाहिं
बानी अक्षर स्वर समुदाय । अर्ध पश्यंती जात नशाय ॥
शून्याकार सो प्रथमा रहै । अक्षर ब्रह्म सनातन कहै ॥
निरबर्त परबर्त है शब्दाकार । प्रणव जानै यही विचार ॥
साखी–अकुलाहटके शब्द जे, भये चारि सो भेप ॥
बहु बानी बहु रूपकी, पृथक पृथक सब देश ॥ १ ॥

रमैनी २.

अनबनि बानी चार प्रकार । काल संधि झांई औ सार॥
हेतु शब्द बूझिये जोय । जानि जथारथ द्वारा सोय ॥
भरमिक झांई संधि औ काल । सार शब्द काटे भ्रमजाल॥

द्वारा चारि अर्थ परमान । पदारथ बिंगारथ पहिचान ॥
भयो अर्थ धुन्यारथ चार।द्वारा शब्द कोइ लखै विचार ॥
परा पराइत मुखसो जान । मोरे सोरह कला निदान॥
साखी—बिनु जाने सोरह कला, शब्दी शब्द कौवाय ॥
शब्द सुधारि पहिचानिये, कौन कहां बौवाय ॥ २ ॥

रमैनी ३.

अक्षर वेद पुराण बखान । धर्म कर्म तीरथ अनुमान ॥
अक्षर पूजा सेवा जाप । और महातम जेते थाप ॥
यही कहावत अक्षर काल।जाय गडी उर होयकेभाल ॥
वोहँ सोहँ आतम राम । माया मंत्रादिक सब काम ॥
यह सब अक्षर संधिक कहै।जेहिमा निशि बासरजीवरहै॥
निर्गुण अलख अकह निर्वान।मनबुद्धि इंद्री जाई नजान॥
विधि निषेध जहांबनतनदोय।कहहिं कबीर पदझांईसोय॥
साखी—पहिले झांई झांकते, पैठा संधिक काल ॥
पुनि झांईकी झांई रही, गुरु बिन सके कोटाल ॥३॥

रमैनी ४.

प्रथमें संभव शब्द अमान । शब्दी शब्द कियोअनुमान ॥
मान महातम मान भुलान । मानत मानत बावन ठान ॥
फेरा फिरत भया भ्रमजाल। देह आदिक जगभयेविशाल ॥
देह भयेते देहिक होय । जगत भयेते कर्ता कोय ॥
कर्ता कारण कर्महिं लाग। घर घर लोग कियोअनुराग॥
छौ दर्शन वर्णाश्रम चार । नौ छौ भये पाखंड बेकार ॥
कोई त्यागी अनुरागी कोय।विधि निषेध मायाते दोय॥

कल्पेउ ग्रंथ पुराण अनेक।भरमी रहे सब विना विवेक ॥
साखी—भर्मि रहा सब शब्दमों, शब्दी शब्द न जान ॥
गुरुकृपा निज परख बल, परखो धोखा ज्ञान ॥ ४॥

रमैनी ५.

धोखा प्रथम परखिये भाई ।नामजाति कुल कर्मबडाई॥
क्षितिजलपावकमरुत अकाश।तामह पंच विषय परकाश
तत्व पांचमें स्वासा सार । प्राण अपानसमान उदान॥
उदान व्यान बावन संसार।निजनिजथलनिजकारजकार
इंगलापिंगलाऔसुखमनी।एकईस सहस्र छौसतसै गनी ॥
निगम अगम सो सदाबतावै। स्वासा सार स्वरोदै गावै॥
साखी—धोखा अंधेरी पायके, यहि विधि भया शरीर॥
कल्पेउ कर्ता एक पुनि, बढी कर्मकी पीर ॥ ५ ॥

रमैनी ६.

योग जप तप ध्यान अलेख।तीरथ फिरत धरत बहु भेष॥
योगी जंगम सिद्ध उदासि।घरको त्यागि फिरत वनवासि
कंद मूल फल करे अहार।कोइ कोइ जटा धरे शिरभार॥
मन मलीन मुख लाये धूर । आगे पीछे आगि औ सूर॥
नगन होय नर खोरिन फिरे । पीतर पाथरमें शिर धरे॥
साखी—काल शब्दके सोरते, होर परी संसार॥
देखा देखी भागिया, कोई न करै विचार ॥ ६ ॥

रमैनी ७.

जब पुनिआयबसीअसबानी।तबचितमांहिकियोअनुमानी
मैंही ब्रह्म कर्ता जगकेरा । परे सो जाल जगतके फेरा ॥

पांचतीनि गुण जग उपजाया।सो माया में ब्रह्म निकाया ॥
उपजै खपै जगत विस्तारा। मैं साक्षी सब जाननिहारा ॥
ओकह जानि सकै नहिं कोई।जोपै विधि हरि शंकर होई॥
अस संधिककी परी बेकार। बिन गुरुकृपा न होय उबार॥
मगन ब्रह्म संधिकके ज्ञान।अस जानि अब भौ भ्रमहान॥
साखी—संधि शब्द है ब्रह्ममें। भूलि रहा कित लोग ॥
परखेउ धोखा भेव नहीं। अंत होय बड सोग ॥ ७ ॥

रमैनी ८.

जो कोई संधिक धोखा जान।सो पुनिउलटकियोअनुमान
मन बुद्धि इंद्री जाइ न जान।निर्वचनी सो सदा अमान॥
अकल अनीह अबाद अभेद।नेति नेति कहि गावहिं वेद॥
सोहँ वृत्ति अखंडित रहै। एक होय अब को तहां कहै॥
जानि परी तब नित्याकार।सांई सो भ्रम महा विकार ॥
साखी—संभव शब्द अमानजो, झांई प्रथम विकार ॥
परखो धोखा भेव निजु, गुरुकी दया उबार ॥ ८ ॥

रमैनी ९.

पहिले एक शब्द समुदाय। बावन रूप धरे छितराय ॥
इच्छा नारि धरी तेहि भेस। ताते ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
चारिउ उरपुर बावन जागे। पांच अठारह कँठहि लागे ॥
तालू पांच शून्यसो आये। दश रसनाके पूत कहाये ॥
पांच अधर अधरहिमा रहे। शून्यहि कंठसम मध्यहि बहे
ओठ कंठ लै प्रगटे ठौर। बोलन लागै और की और ॥
साखी—एक शब्द समुदाय जो। जामें चारि प्रकार ॥
काल शब्द संधि शब्द। झांई औ प्रनि सार ॥ ९ ॥

रमैनी १०.

पांच तीन नौ छौ औ चार । और अठारह करैं पुकार ॥
कर्म धर्म तीरथके भाव । ये सब कलि शब्दके दाव ॥
सोहँ आतम ब्रह्म लखाव । तत्वमसि मृत्युंजय भाव ॥
पंच कोश नौ कोश बखान।सत्य झूठमें कियो अनुमान॥
ईश्वर साक्षी जाननिहार । ई सब संधिक कहै विचार ॥
कारण कारज जहां न होय।मिथ्याको मिथ्याकहि सोय॥
बैन चैन नहिं मौन रहाय । ई सब झांई दीन्ह भुलाय ॥
कोइ काहुका कहा न मान।जो जेहि भावे तहां अरुझान॥
परे जिव तेहि यमकीधार । ज्योंलों पावे शब्द न सार ॥
जीवदुसह दुख देखि दयाल।तब प्रेरी प्रभु परख रिसाल
साखी--परखावै प्रभु एकको, जासें चार प्रकार ॥
कालसंधि झांई लखी, लखी शब्द मतसार ॥ १० ॥

रमैनी ११.

प्रथमें एकशब्द आरूढ । तेहि तकि कर्म करे बहु मूढ ॥
ब्रह्म भरम होय जगमें पैठा।निर्मल होय फिरत बहु ऐंठा॥
भरम सनातन गावै पांच । अंटकि रहै नर भवकीखांच॥
आगे पीछे दहिने बांय । भरम रहा चारिउ दिश छांय ॥
पैठि भरम नर भये उदास ।घरको त्यागि फिरत बनवास
भरम बढी शिर केश बढाये।तके गगन कोइ बांह उठाये ॥
दै तारी कर नासा गहै । भरमिक गुरु बतावै कहै ॥
भरम बढी अरु घूमनलागै ।बिन गुरु परचै कहुको जागै॥
साखी--कहहिं कबीर पुकारिके, गहहु शरण तजिमान ॥
परखावै गुरु भरमको, बानि खानि सहिदान ॥ ११ ॥

रमैनी १२.

भरमे जीव परमातम माया। भरमदेह और भरमनिकाया॥
अनहदभरमऔज्योतिप्रकाश। आदि अंतलोंभरमहिभाश॥
इत उत करै भरम निर्मान। भरम मान औ भरमअमान॥
कोहँ जगत कहांते भया। ई सब भरम अति निर्मया॥
प्रलय चारि भ्रम पुण्यऔ पाप। मंत्र जाप पूजा भ्रम थाप॥
साखी—बाप पूत दोउ भरम हैं, आध कोश नौ पांच॥
विनु गुरु भरम न छूटै, कैसे आवे सांच॥
बाट बाट सब भरम है, माया रची बनाय॥
भेद बिना भरमें सकल, गुरु बिन कहां लखाय॥१२॥

रमैनी १३.

कलमा बांग निमाज गुजारे। भरम भई अल्लाह पुकारे॥
अजब भरम एक भई तमासा। अल्लाह मकान बेचून नेवासा॥
बेनमून वे सबसे पारा। आखिर ताको करै दिदारा॥
रगरे नाक ससजीद अचेत। नीचे बूत परसते हेत॥
बावन तीस वर्ण निरमान। हिन्दू तुरुक दोऊ भरमान॥
साखी—भरमि रहा सब वर्णसों, हिन्दू तुरुक बखान॥
कहहिं कबीर पुकारिके, बिन गुरुको पहिचान॥१३॥

रमैनी १४.

भरमत भरमत सब भरमाने। राम सनेही कोइ बिरलाजाने॥
त्रिदेवा सब खोजत हारे। सुर नर मुनि नहिं पावतपारे॥
थकित भये तब कहै वे अंता। बिरहिनि नारि रही बिनुकंता
कोटिन तर्क करै मनमाहीं। दिलकी दुबिधा कतहुंनजाहीं
कोई नख शिख जटा बढावै। भरमिभरमिसबजहांतहांधावै

बात न सूझै भई अंधेरी। होय रही बानीकी चेरी ॥
नाना पंथ वर्णि नहिं जाई। नाम जातिगुण कर्म बडाई॥
रैन दिवस वै ठाढे रहहीं। वृक्ष पहाड काहे नहिं तरहीं॥
साखी-खसम न चीन्है बावरी, परे पुरुष लौलीन ॥
कहहिं कबीर पुकारिके, परी न बानीचीन्ह ॥ १४ ॥

रमैनी १५.

कनरसकी मतवाली नार। कुटनिनसे खोजैलगवार ॥
कुटनी आंखिन काजर दीऊ। लगी बतावन ऊपर पीऊ॥
काजर देके होय गई अंधी। समुझि न परी बातकी संधी
बाजै कुटनी मारै मटकी। ईसव छिनरों तामें अंटकी ॥
बिरहिन होयके देह सुखावै। कोई शिरमें केस बढावै ॥
मानिमानिसबकीन्हसिंगारा। बिनु पियापरसे सबै अंगारा
साखी-अंटकी नार छिनार सब, हरदम कुटनी द्वार ॥
खसम न चीन्है बावरी, घरघर फिरत खुवार ॥१५॥

रमैनी १६.

नौ दरवाजा भरम बिलास। भरमे बावन वहैं वतास ॥
कनउज बावन भूत समान। कहल गांवसो प्रथम उडान ॥
माया ब्रह्म जीव अनुमान। मानतहीं मालिक बौरान ॥
अकबक भूत बकै परचंड। व्यापि रहा सकलों ब्रह्मंड ॥
ई भ्रमभूतकी अकथ कहानी। गोतै जीव जहां नहिं पानी
तनिक तनिकपर बौरे दौरा। जहां जाय तहां पावै न ठौरा
साखी-योगी रोगी भक्त बावरा, ज्ञानी फिरै निखट्टू ॥
संसारीको चैन नहीं है, ज्यों सरायका टट्टू ॥ १६ ॥

रमैनी १७.

इत उत दौरे सब संसारा। छुटै न मरम कियो उपचारा ॥
जारे जीवको बहुरि जरावै। काटे ऊपर लोन लगावै ॥
योगिनकी ऐसी हाल बनाई। उलटी बत्ती नाकचलाई॥
कोई विभूति मृग छाला डारै। अगम पंथकी राहनिहारै॥
काहूको जलमांहि सुतावै। कहरतही सब रैन गमावै ॥
भक्ति नार सब कीन्हसिंगारा। बिनुपियापरचैसबेअंगारा
एक गर्भ ज्ञान अनुमान। नारि पुरुषको भेद नजान॥
संसारी कहुं कल नपावै। कहरत जगमें जीव गमावै॥
चारि दिशासो मंत्री झारे। लिये पलीता मालनाहारे॥
जरै न भूत बडो बरियारा। काजी पंडितपढि पढिहारा
इन दोनोंपर एकै भूत। झारेंगे क्या माकी चूत ॥

साखी--भूतन उभी भूतसो, संतो करो विचार ॥
कहहिं कबीर पुकारिके, विन गुरु नहिं निस्तार॥
परम प्रकाश भासजो, होत औढ विशेष ॥
तदप्रकाश संभव भई, महाकाश अवशेष ॥
झांई संभव बुद्धि ले, करै कल्पना अनेक ॥
सो प्रकाशक जानिये, ईश्वर साक्षी एक ॥
विषय भई संकल्प जब, तदाकार सो रूप ॥
महा अँधेरी भूल सो, परे अविद्या कूप ॥
महातत्व त्रिगुण पांच तत्व, समष्टिव्यष्टिपरमान ॥
दोय प्रकार होय प्रगटे, खंड अखंड सो जान ॥१७॥

रमैनी १८.

सदाआस्ति भासैनिज भास। सोई कहिये परम प्रकास॥
परम प्रकाश ले झांई होय। महदाकाश होयबरतै सोय॥
वरतै वर्तमान परचंड । भासक तुर्यातीत अखंड ॥
काल संधि होय उश्वास । आगे पीछे अनबनि भास ॥
विविधि भावना कल्पितरूप। परकाशिकसोसाक्षीअनूप॥
शून्य अज्ञान सुषुप्ति होय ।अकुलाहट तेहि नादहैसोय॥
नाद उद्वेग अकर्षण जान । तेज नीर प्रगटे तेहि आन॥
पानी पौन गांठि परिजाय । देही देह धरै जग आय ॥
सो कौवार शब्द परचंड । बहु व्यवहार खंड ब्रह्मंड ॥
साखी--जतन भयो निज अर्थको, जेहि छूटै दुखभूर ॥
धूर परी जब आंखिमें,तब किमि सूझै निजमूर ॥१८॥

रमैनी १९.

पांजी परख जबै फरियाय । तुरितहिं सबै विकारनसाय॥
शब्द सुधारे रहै अकर्म । सौति भक्तके खोटे कर्म ॥
काल जाल ज्यो लखीनआय।तौलों निजपद नाहिंपाय॥
झांई संधि काल पहिचान ।सार शब्द बिन गुरु नहिंजान॥
परखै रूप अवस्था जाय।आन विचार न ताहि समाय॥
झांई संधि ले परखै जोय । संशय वाके रहै न कोय ॥
साखी--धन्य धन्य तारण तरण, जिनपरखा संसार ॥
बन्दीछोर कबीर सों, परगट गुरु विचार ॥ १९ ॥

रमैनी २०.

शब्द संधि ले ज्ञानी मूढ । देह कर्म जगत आरूढ ॥
नाद संधिले सपना होय । झांई शून्य सुषुप्ति सोय ॥

ज्ञान प्रकाशिक साक्षी संधि । तुर्यातीत अभास अबंधि ॥
झांई ले बतैं वर्तमान । सो जो तहां परै पहिचान ॥
काल अस्थितिकेभासनसाय।प्रेम प्रकाश लक्ष बिलगाय॥
बिलगै लक्ष अपनपौ जान।आय अपनपौ भेद न आन॥
साखी–आप अपनपौ भेद बिनु,उलटि पलटि अरुझाय
गुरु विन मिटै न दुगदुगी,अनबनि जतन नसाय२०॥

रमैनी २१.

निज प्रकाश झांई जो जान।महासंधि माकाश बखान ॥
सोई पांजिले बुद्धि विशेष । परकाशिक तुर्या अवशेष ॥
विविधि भावना बुद्धि अनरूप।विद्यामाया सोई स्वरूप॥
सो संकल्प वसे जिव आप । फुरी अविद्या बहु संताप ॥
त्रिगुण पांच तत्व विस्तार । तीन लोक तेहीके मँझार ॥
अद्‌बुद कला वर्णि नहिं जाय।उपजै खपै तेहिमाह समाय॥
निज झांई जो जानीजाय । सोच मोह संदेह नसाय ॥
अनजानेकी यही रीति । नाना भांति करै परतीति ॥
सकलों जगत जालअरुझान।बिरला और कियो अनुमान
कर्ता ब्रह्म भजै दुख जाय । कोई आपै आप कहाय ॥
पूरण संभव दूसर नाहिं । बंधन मोक्ष न एकौ आहिं ॥
फल आश्रित स्वर्गहिके भोग। कर्म सुकर्म लहै संजोग ॥
कर्महीन बाना भगवान । सुत कुसूत लियो पहिचान ॥
भांतिन भांतिन पहिरैचीर । युग युग नाचै दास कबीर२१

रमैनी २२.

भासेव जीवरूप जो एक । तेहि भासके रूप अनेक ॥
कोई मगन रूप लौलीन । कोई अरूप ईश्वर मन दीन॥

कोई कहै कर्म रूप है सोय।शब्द निरूपण करे पुनि कोय
सत्यस्वरूप कोई भगवान । कर्ता न्यारा कोई अनुमान ॥
कोई कहै ईश्वर ज्योतिहिजान।आत्माको कोई स्वतःबखान
कोई कहै सब पुनि सबते न्यार ।आपै राम विश्व विस्तार॥
शब्दभाव कोई अनुमान । अद्वयरूप भई पहिचान ॥
डुगडुग रहिके बोलै बात । बोलतहिं सब तत्व नसात ॥
बोल अबोल लखै पुनि जोय।भाव जीवनहि परखै सोय॥
साखी–निजध्यास झांई लहै, सो संधिक भौ भास ॥
प्रथम अनुहार सो कल्पना, सदा करै परकास॥२२॥

रमैनी २३.

लछ चौरासी योनी जेते । देहबुद्धि जानिये तेते ॥
जहां जेहि भासा सोइ सोइरूप। निश्चय किया परे भवकूप
नानाभांति विषयरसलीन्ह ।अरुझिअरुझिजिवमिथ्यादीन्ह
दावा विषय जरै सब लोय ।बाचा चहै गहै पुनि सोय ॥
दृढ विश्वास भरोसा राम । कबहूं तो वह आवै काम ॥
विषय बेकार मांझ संग्राम । राम खटोला कियो अराम॥
घायल बिना तीर तरवार ।सोई अभरण जेहि रिझै भ्रतार
कामिनि पहिर पियासो रचि।कहै कबीर भव बूडत बांचि२३

रमैनी २४.

भव बूडत बेडा भगवान । चढै धाय लामिलौ ज्ञान ॥
थाह न पावै कहै अथाह । डोलत करत तराह तराह ॥
सूझ परै नहिं वार न पार । कहै अपार रहै मँझधार ॥
मांझधारमें कियो विवेक । कहांका दूजा कहांका एक ॥

बेरा आपु आपु भवधार । आपुहि चहै उतरन पार ॥
बिनु जानै जाने है और । आपै राम राम सब ठौर ॥
वार पार नहिं जाने जोर । कहै कबीर पार है ठौर॥२४॥

रमैनी २५.

अक्षर खानी अक्षर बानी । अक्षरते अक्षर उतपानी ॥
अक्षर कर्ता आदि प्रकास । ताते अक्षर जगत विलास ॥
अक्षर ब्रह्मा विष्णु महेश । अक्षर रज सत तम उपदेश ॥
छिति जल पावक मरुतअकाश।ये सब अक्षरमा परकाश॥
दश अवतारसो अक्षर माया । अक्षर निर्गुण ब्रह्म निकाया
अक्षर काल संधि औ झांई । अक्षर दहिने अक्षर बांई ॥
अक्षर आगे करै पुकार । अंटके नर नहिं उतरे पार ॥
गुरुकृपा निज उदय विचार । जानिपरी तब गुरुमुख सार
साखी–जहां ओसको लेश नहीं, बूडे तहां जहान ॥
गुरुकृपा निज परख बल, तब ताको पहिचान ॥२५॥

रमैनी २६.

अक्षर काया अक्षर माया । अक्षर सतगुरु भेद बताया ॥
अक्षर यंत्र मंत्र औ पूजा । अक्षर ध्यान धरावत दूजा ॥
अक्षर पढि पढि जगत भुलाना। अक्षर बिनु नहिं पावै ज्ञाना
बिनु अक्षर नहिं पावै गती । अक्षर बिनु नहिं कारज रती
अक्षर भये अनेक उपाय । अक्षर सुनि शून्य समाय ॥
अक्षरते भव आवै जाय । अक्षर काल सबनको खाय ॥
अक्षर सबका भाखै लेखा । अक्षर उतपति प्रलय विशेषा॥
अक्षरकी पावै सहिदानी । कहहिं कबीर तब छूटै प्रानी ॥

साखी–परखावै गुरु कृपा करी, अक्षरकी सहिदानि ॥
निजबल उदय विचारते, तब होवै भ्रम हानि ॥२६॥

रमैनी २७.

बावनके बन बने तरंग । ताते भासत नाना अंग ॥
उपजे औ पालन अनुसरे । बावन अक्षर आखिर करे ॥
राम कृष्ण दोउ लहरि अपार । जेहि पद नर गहि उतरैपार
महादेव लोमश नहिं बांचे । अक्षर त्रास सवै मुनिनाचे ॥
ब्रह्मा विष्णु नाचे अधिकाई । जाकी धर्म जगत सब गाई ॥
नाचे गण गंधर्व मुनि देवा । नाचे सनकादिक वहु भेवा ॥
अक्षर त्रास सवनको होई । साधक सिद्ध वचे नहिं कोई ॥
अक्षर त्रास लखै नाहिं कोई । आदि भूल वधे सब लोई ॥
अक्षर सागर अक्षर नाव । करणधार अक्षर समुदाव ॥
अक्षर सबका भेद बखान । बिनु अक्षर नहिं अक्षर जान ॥
अक्षर आसते फंदा परे । अक्षर लखेते फंदा टरे ॥
गुरु शिष्य अक्षरलखेलखावै । चौरासी फंदा मुक्तावै ॥
बिन गुरु अक्षर कौनछुडावै । अक्षर जालसे कौन वचावै ॥
संचित क्रिया उदयजब होय । मानुष देह पावै तव सोय ॥
गुरु पारख बल उदय विचार । परखिलेहुजग गुरुमुख सार ॥
हंस आस्ति प्रकाश अपार । गुरुमुखसुखनिज अतिदातार

साखी–अक्षर है तिहु मर्मका, बिनु अक्षर नहिं जान ॥
गुरु कृपा निज बुद्धि बल, परखो धोखा ज्ञान ॥
जहांवाँसे प्रगटे सबै, सो हंस समुझत नाहिं ॥
यह अज्ञान है मानुषा, मन बच ब्रह्म कहाहिं ॥

साखी–ब्रह्म विचारै ब्रह्मको, पारख गुरु परसाद ॥
रहित रहै पद परखिके, जीवका होय उबार ॥ २७ ॥
इति सत्ताईस रमैनी रामरहस साहेबकृत गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥ ६ ॥

निर्णयसार ।

दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्रंथ निर्णय सार ॥
दोहा–वंदनिये गुरु परखको, बार बार कर जोर ॥
दया करण संशय हरण, संतरूप प्रभुतोर ॥ १ ॥
वन्दीछोर कृपाल प्रभु, विघ्न विनाशक नाम ॥
असरन शरण बंदौं चरण, सब विधि मंगल धाम ॥ २ ॥

चौपाई ।

शरण शरण कबीर कृपाला । भक्त सहायक दीन दयाला
जीव उद्धारण नाम तुम्हारा । याहिते आपु संततन धारा
कालजालके फंदा भारी । मेटि कियेहु निज दाससुखारी ॥
तुम सब लायक अंतरयामी । हम नालायक जीव बेकामी
बंदौं गुरुपद दोउकर जोरी । सब संशय मेटहु प्रभु मोरी ॥
निर्णयसार ग्रंथको भाऊ । कहहु यथा उपदेशप्रभाऊ ॥ ३ ॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

कौन जमा है जगत मँझारा । जापर होत सकल बैपारा
बिना जमा बैपार न होई । यह तो विदित जाने सबकोई
कोई ब्रह्मज्ञान बतलावे । कोई योग समाधि लगावे ॥

कोई तीरथ बरत अचारा । कोई काल कर्म विस्तारा ॥
कोई जप तप संयम करई । कोई मूरति पूजा धरई ॥
नाना पंथ नाना गुरुवाई । कौन जमापर रहा चलाई ॥
दोहा—काल कर्म औ कर्ता, कौन जमापर ठहार ॥
योग सांख्य वेदांत मत, कहहु सकल निरुवार ॥ ६ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

कहहिंकबीरसुनुशिष्यसयाना । यहसबभरमजालविधिनाना ॥
जीव जमाएक सांच है भाई । औरों सबै खर्च ठहराई ॥
जीवहि ब्रह्म आतमा होई । जीवहि योग करै सब कोई ॥
जीवहि कर्ता कर्म बनावै । जीवहि कालसमय ठहरावै ॥
चारि वेद औ नाना बानी । कल्पिकल्पिसबजीवउत्पानी ॥
जेते सिद्धांत भये जग सोई । सो सब भास जीवको होई ॥
जीव जमा नहिं होइरे भाई । सब सिद्धांत कौनुठहराई ॥
दोहा कइहिं कबीर विचारिके, ये निर्णय परमान ॥
जीव जमा जाने बिना, सबै खर्चमें जान ॥ ७ ॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी—जो जानेहु जगजीवना, जो जानहु सो जीव ॥
पानी पचावहु आपना, तो पानी मांगि न पीव ॥ ८ ॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

जीव जमा जो कहेउ गोसांई । यह निश्चय हमरेचितआई ॥
जो तुम कहेउ सोइहै सांची । जीव जमा चाहौं प्रभुजाची ॥

हम अजान हैशिष्यतुम्हारा।कहिसमुझावोसकलनिरुवारा
जीव जमा काहेसोकहिये। याकी समुझ कौनविधिलहिये
पांच तत्व गुण तीन शरीरा। यामें जीव कौन गुण धीरा॥
कोई वीर्य जीव ठहरावे। कोई रक्त कोई तेज बतावै॥
कोई श्वासा कोईशून्यहिकहई।नानाबानीजगमेंबहई॥९॥
दोहा—यह तो जानि परे नहीं, जीव कहाधौं आय॥
यह संशय प्रभु मेटिके, सतगुरु होहु सहाय॥ १०॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

यह सब नाशमान है भाई। जीव जमा ये कैसे कहाई॥
जो नासे सो जीव न होई। जीव सदा अविनाशीसोई॥
चिरंजीव जीव कहि दीन्हा।यह सब नाशमान तुमचीन्हा
पांच तत्वका जाननहारा। तीनों गुणका करत विचारा॥
वीर्य रक्त तेज तम स्वासा।सबकोजानिकरत विश्वासा
शून्यहि जानै शून्य नहोई। जाननहार जीव है सोई॥
जो पांचों तत्व जानै भाई। सोकहा आपुतत्वहोयजाई॥
तत्वहि होयकेतत्व समावत।तो पुनितत्वहि कौनबतावत॥
जानहिमात्र जीव है सोई।जानते अधिकऔरनहिंकोई ११॥
दोहा—पांच तत्व यह जगतसब, जानै सोजिव जान॥
कल्पै सोई कल्पना, मानै सो अनुमान॥ १२॥

सत्यशब्द टकसार।

साखी—जागृतरूपी जीव है शब्द सोहागा सेत॥
जर्द बुंद जल कुकुही, कहहिं कबीर कोइ देख॥ १३॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

हे प्रभु जान सबन पर होई । जानतेअधिकऔरनहिंकोई॥
सो कैसे बंधन तर आवा । ठौर ठौर कस आपुबंधावा॥
यह तो धर्म जानके नाहीं । वगरे पकारि बंधावत बांहीं॥
जान जीव अविनाशी होई।तेहि जड बंधनकैसेसमोई१४
दोहा–काहुका किया जीव है, कि है आपुहि आप ॥
कैसे बंधनमें परो, याहि कौन मा बाप ॥ १५ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

याको माय न याको बापा। यह तो स्वतः आपुहि आपा॥
याको कोई नहिं कर्तारा । यह तोसबका सिरजनहारा
माया पुरुष याहि निर्माये।भरमभूलि निज तन विसराये॥
मानि मानि बंधन मेंआवा।निज करतबमें आपुबंधावा१६
दोहा–जस सुवना ललनी फंदो, कीट कुस्यारी मांझ ॥
ऐसी गति या जीवकी, भई दिवसते सांझ ॥ १७ ॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

माय बाप याके कोई नाहीं ।स्वतःआपु कसबंधनमांहीं॥
कैसे निज तन आपु विसारा । भरमभूलका कौनइसारा॥
कौन मानंदी इन प्रभुकीन्हा।भिन्न भिन्न बतलावहुचीन्हा
प्रथमें कौन देह हंसाकी । जाहिदेहते झांई झांकी॥१८॥

दोहा—कौन देह प्रथमें हती, का मानंदी कीन्ह ॥
कैसे भ्रमवश जीव परो, भई सकल मति छीन ॥१९॥

गरु उत्तर ।

चौपाई ।

हेशिष्य तुम पूछेउ भल बाता।तोसे सकल कहौं विख्याता॥
पक्षी देह प्रथम हंसाकी । बीजक टीकामें सब भाखी॥
वह जो यहां अब कहौं बुझाई । तो यह ग्रंथ बहुत बढिजाई
दया क्षमा सत्य धीर विचारा । पांच तत्व हंसाके सारा ॥
याहीकी देह हंसाकी भाई । याहीको ब्रह्मांड रहाई ॥
याही देह हंसाने देखी । उपजो हर्ष निज प्रेम विशेषी ॥
प्रेम आनंद उठा घहराई । ता आनंदमें हंस समाई ॥
गयो समाय भयो आनंदा । बिसरी देह परो भ्रम फंदा ॥
पक्षीते कच्ची भइ भाई । भई स्फूर्ति हंसा सुधि आई ॥
इन जाना मैं भरम भुलाना । पक्षीते हंसा बिलगाना ॥
पिंड ब्रह्मांड सबै भौ कांचा।तामें आपु रहा जिव सांचा॥
कच्चीके प्रतापते भाई । दूसरी इच्छा उठी बनाई ॥
ताते नारिरूप निर्मावा । सब कछु कीन्हा जोमन आवा ॥
तेहि नारिके पुत्र तीनि भयऊ । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नांऊ ॥
तबहिं कल्पि बहु बानिउपाई । कर्ता कारण इच्छा आई ॥
पुन्हि सो रूप छूटिके गयऊ । एक अनंत आपुहि भयऊ॥
यह प्रकार जग भया तमासा।एक अनेक बंध्योसोइ आसा॥
सोई जीवरूप यह भाई । आपन बंधन आप बनाई ॥२०॥

सत्यशब्द टकसार ।

साखी--जहिया जन्म मुक्ता हता, तहिया हता न कोय ॥
छठी तुम्हारी हौं जगा, तू कहां चला बिगोय ॥ २१ ॥

चौपाई ।

मानंदी है तीन प्रकारा । तत्वमसि वेदपद सारा ॥
ये तीनिहुं पदके माने भाई । आवागवनमें जीव रहाई ॥ २२ ॥
दोहा--तत्वमसि पद तीन सो, आवागवनको मूल ॥
सो भासो पद जीवको, सहै घनेरी सूल ॥ २३ ॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

हो प्रभु जीवनके सुख दाता । मेटेउ मोर भरम सब ताता ॥
हम जाना कर्ता कोइ दूजा । ताते भरम बढो बहु पूजा ॥
कर्ता कारण जग बेहाला । अब मोहि जानि परो सब जाला
तत्वमसिपदतीन कहाई । केहि विधिसो मोहिं देहु लखाई २४
दोहा--तत्वमसि पद तीन सो, केहि विधि जानी जाय ॥
हौं अजान जानों नहीं, सतगुरु देहु लखाय ॥ २५ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हे शिष्य तुम बड भागी होई । कहौं विचार सकल विधि सोई
मोहिं बोलनकी सरधा नाहीं । तोर प्रेमवश बोलों भाई ॥
कविता होउं न भांड कहाऊँ । बकवादीके निकट न जाऊँ ॥
गुरुवाई औ मान बडाई । ऋद्धि सिद्धि सब जात नसाई ॥

इनमें सकल जगत अरुज्ञाना। कालकलाकोमर्म नजाना॥
मोको नहिं इन सबते काजा। तुम्हरीभक्तिवशकहौंउपराजा
तत्पद सो ईश्वर कहलाई। त्वंपद नाम जगत जिव पाई॥
असिपदनामब्रह्मअविनाशी। आतमअचलसहजसुखराशी२६
दोहा—तत्पद सोई ज्ञान है, त्वंपद है अज्ञान॥
असिपद एकता ब्रह्म है, जासों कहत विज्ञान॥२७॥

शिष्य प्रश्न।

चौपाई।

हे गुरु तुम हो दीनदयाला। मेटेउ सकल मोर उरसाला
इनके नाम रूप दिखलावो। ठौर ठिकाना मोहि बतावो
कौन ठाम ईश्वरको कहिये। कौन ठाम जगत जिवलहिये
कौन ठाम आतमकहलाई। सकल भेदमोहिं देहु बताई२८
दोहा—तुम सब लायक परम गुरु, मैं अजान मतिहीन॥
शरण आयेके लाज है, सकल बतावहु चीन्ह॥२९॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

सुनहुबाल तुम सकल विचारा। एक एक सब कहौंनिरुवारा
ब्रह्मांड बासब्रह्मांड अभिमानी। ताकोईस सब कहत बखानी
पिंड वास पिंड अभिमानी। ताको जीव कहत सबज्ञानी॥
दोऊका वाचांश मिटावै। गहि लक्षांश एकता पावै॥
सोई असिपद ब्रह्मानंदा। जहां नहिं द्वैत अद्वैतको फंदा॥
ब्रह्मांड ठौर ईश्वरको कहिये। पिंड ठौर जीवको लहिये॥
असिपदठौर आनंदबखानी। जहांकछुकहत बनैनहिंबानी

अबइनके तोहिरूप बताऊं। व्यष्टि समष्टिसकलोंसमुझाऊं
ज्ञानी सो तत्पद कहलावै । अज्ञानी त्वं पद मन भावै ॥
विज्ञानीको असिपद कहिये । परमहंस ऊंचा पद लहिये॥
तत्पद जैसा सिंधु बखाना ।त्वंपद कूप तडागविधि नाना
तत्पद जैसा दुनहुमें पानी ।यह सिद्धांत करत विज्ञानी ॥
नाम रूप मिथ्याकर जानी । आतम एकनिश्चयजसपानी
यामें दोये विधि परमाना । एक परोक्ष विशेषहि ज्ञाना
दूजा सो अपरोक्ष कहाई । सो समान ज्ञान है भाई ॥
द्वैविधिज्ञान द्वै विधिअज्ञाना।द्वैविधिको विज्ञानबखाना॥
निरउपाधिसोअपरोक्षहिज्ञाना।सहउपाधिसोपरोक्षबखाना३०
दोहा-वेद प्रमाण महावाक्यको, कहेउं सकल परमान ॥
अब जो शंका करो शिष्य, सो सब कहौंबखान ॥३१॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

द्वै प्रकार कैसो अज्ञाना । कौनप्रकारद्वै विधिहै ज्ञाना॥
द्वै प्रकार विज्ञान बताई । सो कैसे गुरु मोहिं लखाई ॥
प्रथम बतावहु द्वै अज्ञाना । पाछे पूछब ज्ञान निधाना॥
कौन अज्ञानअपरोक्षकहाई।सोमोहिसकल कहोगुरुराई३२
दोहा-तुम निज सतगुरु सत्य हो, अब हम चीन्हा तोय॥
सकलों भेद बतावहु, संशय रहै न कोय ॥ ३३ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

जो विशेष अज्ञान कहाई । सो अपरोक्ष कहावत भाई ॥
ताकोविधिवत करोंबखाना ।सुनुशिष्यजोअपरोक्षअज्ञाना

विषयनमें आसक्त रहाहीं। जाति पांतिकछुसमझतनाहीं
वेद मर्यादा कबहुं न जाने। पंडितजनकी आननमाने॥
कौनको कुल कौनकी जाती।अस कहि विषयारतउतपाती
खाय कबाब शराबसोरोजा।निशिदिन परनारिनकोखोजा
गावै रस सिंगार बनाई।वेश्यनके घर निशिदिनजाई॥
परनारिनपर तनमन वारै। द्रव्य होय सो सबै बिगारै॥
विषयिनको संग निशिदिनकरई। वाम मता इष्टआचरई॥
कोइज्ञानी तेहि ज्ञान सुनावै।ताहि उलटिके झगरनधावै॥
बाद अन्यथा निशिदिनकरई।सांचहि झूठ झूठ निजधरई॥
कहै ज्ञानी सबज्ञान भुलाना।विषय स्वाद कोईनहिंजाना
जगमें नारी संपति भोगा। इनसम और नहींकछुयोगा॥
मृगनयनी सब सुखकीखानी।ताहि त्यागि भयेब्रह्मज्ञानी॥
इनकी मति बुद्धि सबै हेराई।साधुनके संग गये बौराई॥
बहु विधि रंगनाना विधिरागा।इनको त्यागिकरत वैरागा
कर्महीन दारिद्री अहहीं।घरघर भीख सो मांगतजाहीं॥
इनको कहिये परमअभागी। हमहिं जगतमें हैंबडभागी॥
हम ज्ञानी ये सब अज्ञाना। बहु मत योगज्ञानजिनठाना॥
मूयेपर सब मुक्तिहि होई।नाहक पचि पचि मरै सबकोई
जो कछु है सो देहरे भाई। ताका सेवन करो बनाई॥
इंद्रिन भोग भलीविधिदीजै।बहुत विचार काहेको कीजै॥
मरै फेरको जन्मै आई। जन्मेको कोई देखा भाई॥
बहुरि जन्मना मिथ्याजानो।जीव ब्रह्म सब मिथ्यामानो॥
पांच तत्वकी देह बनाई। अंत पांचमें पांच समाई॥

जैसे वृक्षसे पत्र झराई। बहुरि न वृक्षसे लागे जाई॥
और पत्र वृक्षासे उपजै। ऐसेहि जगत योनि बहुनिपजै
पांच तत्वको वृक्ष अनादी। तामें उपजत बिनसत सादी॥
ताते कहा हमारा मानो। बोध विचार संशयकरिजानो
ताते ज्योंलों तन है भाई। विषय भोग सब करो बनाई॥
इनकाकहाकोई मति मानो।वृद्ध मूढभरमिककरिजानो२४

दोहा–यह अपरोक्ष अज्ञान गति, तोहि कहेउ समुझाय॥
बहिके विषयी बावरे, अंत महा दुख पाय॥२५॥

चौपाई।

अब अज्ञान परोक्ष बताऊं। ताकी रीति सवै समुझाऊं॥
पहिले अपरोक्ष अज्ञान बताई। तामें दोय प्रकारहैभाई॥
परइच्छाते होयअज्ञाना। समानाधिकरण सोइ जाना॥
स्वइच्छा अज्ञानजो होई। विशेषाधिकरण कहावै सोई॥
विशेषाधिकरणजे अज्ञाना।गीतामें भाख्यो भगवाना २६

(अध्याय १४ श्लोक ८)

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्॥
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत॥

टीका।

दोहा–हो तमोयुत अज्ञानते, मोहित सबको हीय॥
आलस निद्रा विकलता, इनसो बांधत जीय॥२७॥

चौपाई।

अब परोक्ष अज्ञान बताऊं। समानाधिकरण जेहि नांऊं॥
कर्ता कोइ दूजा अनुमाना।तेहिते कर्म करहिं विधिनाना॥
मंत्र तंत्र औ देवी देवा। बहुत प्रकार करहिं सो सेवा॥

तीर्थ व्रतअरु मूर्ति अचारा।उपासना कांडको बहु विस्तारा
छौ शास्त्रन विधि बहु विधि जाने।वेद प्रमाण कर्ममनमाने॥
जाति पांतिको जो व्यवहारा ।करहिं भली विधि वृद्धाचारा
कुलाचारमें निपुण गोसांई ।मानहिं अपनी मान बडाई ॥
वेद पुरान कहानी सुनहीं।सो सब मनमें बहुविधि गुनहीं॥
वर्ण आश्रमके कर्म अपारा।सो सब जानि करै निर्धारा ॥
विधि निषेधमा बहु विधि राचे।क्रिया कर्म सब मानतसांचे
गऊ ब्राह्मणका पूजनकरहीं।नीति जानिजगकी आचरहीं॥
यह अज्ञान परोक्ष बखाना।औरों कर्म करत विधि नाना॥
कर्महुमें है दोय प्रकारा । समान विशेष कहत निर्धारा ॥
योग ध्यान समाधि लगाई।ऋद्धि सिद्धि करामात मनाई॥
धन अरु धान्य लक्षमीके काजा।मंत्र तंत्र साधत महाराजा
यंत्र लिखे औ पूजा करई । स्त्री पुत्रादिक वासना धरई ॥
देवी देवताको औराधे । श्राप अनुग्रह साधन साधे ॥
काया कल्पकरे मन लाई । जगमें चाहत बहुत बडाई ॥
स्वर्गादिककी इच्छा मानें । करहिं तपस्या औ अस्नाने ॥
यह प्रकार कर्म विधि नाना।विशेषादि कर्म सो जाना ॥
अब समान कर्म बतलाऊं।एक एक सब कहि समुझाऊं॥
कर्ता निमित्त कर्म जो करहीं।मुक्ति वासना चित्तमें धरहीं ॥
मुक्ति हेतु बडे अनुरागी । कर्म सुकर्म करे कोइ भागी ॥
इह अमुत्र फल भोग विरागा। शम दमादि साधनमें जागा
यही कर्म सामान्य कहावै । मुक्ति वासना मनमें आवै ॥
परोक्ष कर्म कहा विस्तारा।याहि मता भक्तन मन धारा ॥

अपरोक्ष कर्म प्रथम जो कहेऊ।सो सब मत कर्मिष्ठिन गहेऊ॥
कर्मरूप कर्मिष्ठिहि जानो । अकर्मरूप अकर्मी मानो ॥
पर इच्छा कर्म अकर्म जो होई। समानाधिकरण कहावै सोई
स्वइच्छा जो कर्म अकर्मा । विशेषाधिकरणको धर्मा ॥
याकी साख गीतामें भाई । पारथसे भाखी यदुराई ३८॥

(अध्याय १४ श्लोक ७)

रजो रागात्मकं विद्धि, तृष्णासंगसमुद्भवम् ॥
तन्निबध्नाति कौंतेय, कर्मसंगेन देहिनम् ॥ ३९ ॥

टीका ।

दोहा–रजगुण राजसरूप है, तृष्णा संगके हेत ॥
कर्म संग करि जीवको, ऐसे बंधन देत ॥ ४० ॥

चौपाई ।

यह विशेषादि कर्म परोक्षा।साख सुनाई तोहि सब लक्षा॥
अबसुनुसाखपरोक्षसमाना।सामानाधिकरणजेहिमाना४१

(अध्याय १४ श्लोक ६)

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्, प्रकाशकमनामयम् ॥
सुखसंगेन बध्नाति, ज्ञानसंगेन चानघ ॥ ४२ ॥

टीका ।

दोहा–निर्मल अरु प्रकाश करि, सतगुण शांत सुभाय ॥
ज्ञानसंग सुखसंगसे, बांधत जीवहि जाय ॥ ४३ ॥

चौपाई ।

यहि विधि द्वै प्रकार अज्ञाना।परोक्ष औ अपरोक्ष बखाना
याहीको त्वंपद है नाऊं । वेद प्रमाण सकल समझाऊं ॥
द्वै प्रकार अज्ञान कहावा । तामें विशेष कला दुइ पावा ॥

औ पुनि द्वै समान बखाना । यामें बंधे जीव विधिनाना
सोई जीव अज्ञानी होई । द्वैविधिजेअज्ञानसमोई ॥४४॥
दोहा—अज्ञानी जिव याहिते, नाम परो है जान ॥
दुइ प्रकार अज्ञानको, दृढकै लीन्हों मान ॥ ४५ ॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

हे प्रभु अहु जीवन सुखदाता । मेटेउ मोर संशय भ्रमघाता
तुम समानकोआहिदयाला। हतेउभरमबसिकियेउनिहाला
दोउ प्रकार अज्ञान बतावा । तामें चारिकला समुझावा
यामें बंधे जीव अज्ञानी । यह विचार हमरे मन मानी ॥
अब जो विनय करों प्रभुराई । तौन भेद गुरु देहु बताई॥
जीव अज्ञानएकही कहिये।की कछु भिन्न भाव करिलहिये
दोहा—जीव अज्ञानसो भिन्न है, की धौं एकै होय ॥
यह शंका प्रभु मेटिके, देहु सकल भ्रम खोय ॥ ४७ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हे शिष्य सुनहुकहौं विधि सोई। जीव अज्ञानएक नहिंहोई
रोगी रोग एक नहिंभाई।ये तो विदित सब जगत जनाई॥
रोगी भिन्न एक जोहोता ।तोविकलरोगबसिकाहेकरोता॥
रोगी भिन्न रोग है भिन्ना । तामियेजीव:अज्ञानहिचिन्हा
जीवचैतन्य सदा अविनासी।जडआसक्तअज्ञानसोनासी
नास्ति अज्ञान सम्बंधी भयेऊ। ताते नाम अज्ञानी कहेऊ

अज्ञानके सम्बंधते भाई । अज्ञानी नाम जीव कहाई ॥
अज्ञान भिन्न अज्ञानीभिन्ना। इमि जाने सोज्ञानकीचिन्हा
दोहा–जीव और अज्ञानसो, कभी सम्बंध न होय ॥
वह आसक्त जड नास्ति है, यह अविनासी होय ४९

शिष्य प्रश्न ।

सोरठ--हे गुरु दीन दयाल, जीव रहत अज्ञान वश ॥
ताते सदा वेहाल, बहुरि बहुरि जग तन धरै ॥५०॥
किमि अज्ञान होय नाश, कैसे ज्ञान प्रकाशहोय ॥
जीव पावै सुखवास, सोई युक्ति बताये ॥ ५१ ॥
के प्रकार है ज्ञान, सोई विधि समुझाइये ॥
एक कि द्वै परमान, निर्णय सत्य लखाइये ॥ ५२ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हे शिष्य तोहि त्वंपदसमुझावा । द्वै प्रकारअज्ञान बतावा
कर्म उपासना और उपाधी । त्वं पद भयउ वेदकी आधी
अब तत्पदको भेद बताऊं । द्वै प्रकार ज्ञानको भाऊं ॥
एक समान ज्ञान है भाई ।एक विशेष ज्ञान कहलाई ॥
विशेषाधिकरण न्याय जेहिगावै। सोई ज्ञान परोक्ष कहावै
समानाधिकरण है ज्ञाना । सोअपरोक्ष वेद मत जाना
विशेष ज्ञान उपाधि युक्ता । निरुपाधि समानसो मुक्ता॥
विशेष ज्ञानयुत जो जिव होई । वेद ईश कहि गावत सोई
समानज्ञानरत सोइ ज्ञानी। यह निश्चय वेदांत बखानी५३

शिष्य प्रश्न।

दोहा–विशेषाढिकरण है, ज्ञान परोक्ष बखान॥
सोई प्रथम समुझाइये, ईश लक्ष सहिदान॥ ५४॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

हेशिष्य तोहि कहौं समुझाई।जाते संशय सकल नसाई॥
निज तनकेर उपाधि जानै। परउपाधि सकलोंपहिचानै॥
दुखसुख सहितअवस्थातीनी।सब व्यवहारजाने परवीनी॥
तन इंद्री इंद्रीन व्यवहारा।खानिबानि सकलों निरुवारा॥
ये सब मिथ्या जाने रे भाई। इंद्रजालवत देत लखाई॥
सर्व साक्षि में आदि स्वरूपा।ये सब मृगजलवतभ्रमकूपा॥
ये सब नाशमान अनित्या।मैं अविनाशी चैतन नित्या॥
सब असत्य मैं सत्यत्रिकाला।तीनि देह मायाको जाला॥
बारम्बार स्फुरण अस होई। ज्ञान परोक्ष कहावत सोई॥
ज्ञान परोक्ष दोय प्रकारा। ताको सकल करोंनिरुवारा॥
सब सत्ता औ सब सामर्थी।ऋद्धिसिद्धिसहित जेहिबर्ती॥
होनी अनहोनी सब करहीं।षटगुण ऐश्वर्य चित्तमोंधरहीं॥
सोई जीव सिद्ध रे भाई। सोई जगतमें ईस कहाई॥
दूजे निरुपाधि है भाई। ऋद्धिसिद्धि कछु मानतनाहीं॥
ऋद्धि सिद्धि ऐश्वर्य औ देवा।ईश्वर माया नास्तिहैभेवा॥
जगतजाल मृगजलसमआहीं।करनकरावन नहिंमनमाहीं॥
मन मायाकृत नास्ति उपाधी।मैंआस्ति सबहिनकेआदी॥
त्रिगुण उपाधिनास्तिव्यवहारा।मैंसाक्षी सब जाननहारा॥

मोकह जानि सकै नहिं कोई।जो पै विधि हरि शंकरहोई
त्रिगुणातीत सर्वको द्रष्टा । अद्वैत अखंड वेदकोइष्टा ॥
व्यष्टि समष्टि मिथ्या भाई । मैं चैतन्य शुद्ध अधिकाई॥
यहिविधिस्फुरै कालत्रयभाई।सकल अविद्या जातनसाई॥
यहप्रकार जाको होयज्ञाना। सो ज्ञानी है ज्ञाननिधाना॥
यहप्रकार दोय ज्ञान परोक्षा ।अब तेहिकहौंज्ञानअपरोक्षा॥
तीन काल भासे नहिं कोई । सदा एकरस आपै सोई ॥
बिसरे सकलसुषुप्ति समाना। द्वैत स्फुरण त्रिकाल नजाना
ज्ञाता ज्ञानज्ञेय नहिं भाई । ध्याता ध्यान नताहिसमाई॥
सकलों त्रिपट जाय नसाई । अखंड एकरस वृत्तिरहाई ॥
आपन भाव कालत्रयमाहीं। द्वैत उपाधि नताहि समाहीं॥
चिन्मय वृत्तिसदा आनंदा । पूरण ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥
यहि विधि ज्ञानहोयजेहिज्ञानी।सोअपरोक्षहिज्ञानबखानी
याहूमें है दोय प्रकारा । हे शिष्य तोहिकहौं निरुवारा ॥
योग धारण करि मन मारै । अखंड वृत्ति एकरस धारै ॥
ज्ञान सो मध्यमपक्ष कहाई । आगम निगम कहैं गोहराई
श्रवणमननिजध्यासजोकरही।साक्षात्कारवृत्तिनिजधरही
ऐसे करत स्थिर होय जाई । द्वैत भाव कबहूँ नहिंआई॥
ये प्रकार जोकोइ रहि जावै । उत्तम पक्ष वेद तेहि गावै ॥
यहि विधि ज्ञानयुक्त जोजीवू।सो अविनाशीज्ञानीशीवू ९५

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—जानहि ज्ञानहि भेद कस, कहो गुरु दीनदयाल ॥
बार बार बंदन करों, जीवनके रछ पाल ॥ ९६ ॥

चौपाई ।

ज्ञान जान अंतर कछु नाहीं । तदपि संत कछु भेद बताहीं ॥
जान सबनमें बंध रहाई । ज्ञानके उदय मुक्त होय जाई ॥
जानब माहीं होय विशेषा । तबहीं ज्ञानको पावै लेखा ॥
जस मलीन दर्पणको भाऊ । ऐसो जीवको आहि स्वभाऊ ॥
मैल निकारि दर्पणको जाई । तबहीं मुकुर निजरूप देखाई ॥
जैसे दीपक आहि उजारा । ढाकन परे होत अंधियारा ॥
यहिविधि जानहि ढाकु अविद्या । सोनासतजबपायसुविद्या
जैसे सूर्य मेघने ढांका । पाय बयारी बादर फांका ॥
स्वतःभानु प्रगटैउजियारा । यहि विधि जानहि ज्ञानविचारा
ज्ञान जान जो अंतर होई । हेशिष्य तोहि कहा अब सोई ५७

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—ज्ञानहि जानहि भेद नहीं, एक जाति दोउ आहिं ॥
तव प्रसादते जानेऊं, यहमा संशय नाहिं ॥ ५८ ॥

गुरु उत्तर ।

सोरठा—ज्ञान सजाति होय, औ अज्ञान विजाति है ॥
कहेउं सकल विधि सोय, तुमहू ज्ञानेउ नीकिविधि ५९

शिष्य प्रश्न ।

सोरठा—हे गुरु दीन दयाल, ज्ञान भयो जब जीवको ॥
ताकी स्थिति विशाल, काह कसर तामें रही ॥ ६० ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हे शिष्य सुनहु तासुनिरुवारा । सब ज्ञानिनमिलिकीन्हविचारा
तीन देह विस्मृति होयजाई । जानीब दशा शेष रहि जाई ॥

तामें कसर बतावत वेदू । ताते ज्ञानिन कीन्ह निषेधू ॥
केहि विधि कसर सुनो अब सोई । एकोहँ जानीमें होई ॥
बहुस्यामि ताते विस्तारा । परो अविद्याको अधिकारा ॥
यहि विधि कसर जानीवमेंहोई।सब सिद्धांत कहत हैसोई॥
सोई जानीब स्फुरतिको नांऊं।सबल ब्रह्म कोई बतलाऊं॥
कोई मूल माया तेहि कहई ।सब माया जाहीते लहई ॥
सकल करतूत जानीवके माहीं।ताते जानीब कसर रहाहीं॥
स्वजाति विजाति स्वगतको भेदा।तीनों त्रिपुटीहोयनिषेधा
मैं अरु मोरी भावना छूटै । जगत अविद्या चित्तसे टूटै ॥
कहां आहि कहां धौं नाहीं । अस विज्ञान होय जेहिमाहीं
सोई जीवन्मुक्त कहावै ।वेदप्रमाणशास्त्रअसगावै ॥६१ ॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा–कृपा करो शिष्य जानिके, मैं सेवक मतिमंद ॥
निज विज्ञान बताइये, काटो भ्रमको फंद ॥ ६२ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

जानि बूझि जडवतहोयजाई।जानीब नेनीब कछु नरहाई
जैसे उनमत अति मतवारा । नेकु न रहै शरीर संभारा॥
यहिंविधि सहजदशा होयजाई।महदानंद मगनता पाई ॥
भावातीत भाव पहिचाना। कलातीत बर्तै वर्तमाना ॥
अवस्थातीत अवस्था रहई । दशातीत दशा निरबहई ॥
आतम ज्योंका त्योंहि विराजै ।एक अनेक सबै भ्रमभाजै॥
सजाति विजाति स्वगत नहिंभेदा।एकतामेंकोकरतनिषेधा

याहूमें है दोय प्रकारा। सुनुशिष्य तोहिकहों निरुवारा॥
एकै कहबेमात्र विचारा। एकै दशा भई निर्धारा॥
जहां विज्ञान दशा रहि आई। सो विज्ञानी हंस कहाई॥
कहबेमात्र बानीको ज्ञाना। सो मिथ्या विज्ञान बखाना॥
द्वैत भाव कबहुं नहिं आई। एकभाव निशिदिन बर्ताई॥
हे शिष्यअचरज कहो न जाई।कारण कारज आपु रहाई॥
आपुहि बोले आपु बोलावे। आपुहि खेले आपु खेलावे
करै करावै आपुहि आपा। द्वैतभाव मिथ्या संतापा॥
देखेदेखावेआत्मा आपू।विविधि भरम सकलोंजगतापू६३

शिष्य प्रश्न।

दोहा—कछु दृष्टांत बताइये, आतमको समुझाय॥
जाते मोहि निश्चय परे, मैं प्रभु लागत पांय॥ ६४॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

आतमसे कछु भिन्न जो होही। तो दृष्टांत कहों मैं तोही॥
येतो सब दृष्टांत अतीता।ना कछु नित्य न कछूअनीता॥
द्रष्टा दृश्य दर्शन कछु नाहीं।सब कछु आतमरूपकहाहीं॥
नामरूप सब मिथ्या जानो।कहना सुनना मिथ्या मानो॥
जस सुवर्ण भूषण है एका। ऐसो जगत आतमा देखा॥
मृतविकारसबमृत्तिकाजानो।जलविकारसबजलपहिचानो
तैसा जग है आतम विकारू।तो सब आत्मा है निरधारू॥
सबै ब्रह्म कछु न्यारा नाहीं। जो देखो सो ब्रह्म समाहीं॥

ब्रह्महि कहै और कहलावै। ब्रह्महिं बोधै और बोधावै॥
इतनो कहत बनें नहिं भाई।जो अनुभव विज्ञान कहाई॥
आतम एक अखंडहि होई। ऐसेहि कहत बने नहिं कोई॥
एक कहौं तो दूसर होई। कहनहार न्यारा नहिं कोई॥
सबै संभवे आतम माहीं। विधिनिषेध करना कछु नाहीं॥
कहत सुनत कछु बनै न भाई।जस गूँगालीन्होंगुडखाई ६५

शिष्य प्रश्न।

सोरठा--आतम होय बे काज, येता करना चाहिये॥
हो प्रभु तुम गुरुराज, भेद यथार्थ बताइये ॥ ६६ ॥

गुरु उत्तर।

दोहा—आतम होनो कहा है, सदा आतमा आहि॥
अखंड निरंतर एकरस, कहो शिष्य तुम काहि६७॥

शिष्य प्रश्न।

सोरठा—हे गुरु दीन दयाल, ज्ञान विज्ञान जब ना हतो॥
तबहुं आतम कृपाल, विज्ञान पाय अबहीं भयो६८॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

अचरजबात पूछो शिष्य मोहीं।सब वृत्तांत बतावहु तोहीं॥
ज्ञान विज्ञान भयो जब नाहीं।तबहूं आतम स्वयं रहाहीं॥
ज्ञान विज्ञान भयो जब भारी।तबहू आतम सकल विहारी
ज्ञान विज्ञान होय औ जाई।अज्ञानहु बहु बार नसाई॥
आतम जैसा व्योम स्वरूपा।उपजै खपैनअस्थिर रूपा६९

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

अहो गुरुजी कहो समुझाई।ज्ञानविज्ञान काहेको चाही ॥
ज्ञान विज्ञानको कारण कौना। सदाआत्माहैमनभौना७०

गुरु उत्तर ।

दोहा—भ्रांति मिटनके कारणे, सुन शिष्य तू चित देय ॥
ज्ञान विज्ञान प्रकाशिया, यामें नहीं संदेह ॥ ७१ ॥

चौपाई ।

भ्रांति मिटी कि मिटी न जाहीं।तो यह आत्माहैकिनाहीं॥
कहो भ्रांति मिटी नहिं जौलों।आतमा यहकहलायनतौलों
तो एकता दृष्टांत बताये । औ अखंड कहिके समुझाये ॥
अधिष्ठान आत्मा कहिया। सो विचार प्रभु कहंवाँरहिया
सबदृष्टांतदोषितहोयतबहीं।कछुसमविषमबतावहुजबहीं७२

गुरु उत्तर ।

दोहा—भ्रांति मिटी वा ना मिटी, आतम मिटै न कोय॥
आतम अनादि अखंड है,मानि लेहुशिष्यसोय॥७३॥
वेद वचन उपदेश अरु, मिथ्या सब गुरुवाइ ॥
आतम तो मैं एकरस, नीकी बात बताइ ॥ ७४ ॥

चौपाई ।

अरे बाल मैं तोहि बताई । मिथ्या सत्य कछु नहिंभाई ॥
जो कछु होय तो द्रष्टा कहिये।द्रष्टा दृश्य न एको लहिये॥
सब विलास आतमकर भाई।आपुहि खेले आपु खेलाई॥

यामें घटै बढै कछु नाहीं। चूपचाप रहिये निजठाहीं॥
सब बानीको होय गयोअंता।आछुआपन आत्मअनंता॥
ज्योंका त्योंही ब्रह्म विराजै।मुक्त बंध एकौ नहिंछाजै७८

शिष्य प्रश्न।

दोहा—बोलन तो कछु ना रह्यो, दुगदुग रही मनमाहिं॥
मैं जैसेको तैसा रहा, स्थिति प्राप्त कछु नाहिं॥७६॥
कौन दुख छूटा अबै, का उपाधि गइ मोर॥
मैं जैसाका तैसा रहा,अब का विशेषता तोर॥ ७७॥
सकलों मोर विलास भौ, जो तुम्हार उपदेश॥
आवागवन कैसे मिटै, कैसे छुटै कलेश॥ ७८॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

आवागवन दोय बिनानहोई। आतम एक सदा है सोई॥
आवागवन काहेको भाई। मिथ्या भ्रमसब देउ उडाई॥
आतम सदा एकरस जानो।दूजा धोखा कबहुं न मानो॥
भरम बार्ता सबपरमाना।विधि निषेध एकौ नहिंजाना७९

शिष्य प्रश्न।

चौपाई।

मैं तो केवल आतम एका। दूजा भरम कहांसे देखा॥
मैं तो अजर अखंड कहलाया।मिथ्या भरमकहांसे आया॥
जाके मारे मैं बेहाला। सर्बदेशमा दुखकी ज्वाला॥८०॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

भ्रमको और न अधिष्ठाना। भ्रम तेरा तुझहीमें जाना॥
तेरा भ्रम तुझहीमें होई। रज्जू सर्प न्यायवत जोई॥
ज्ञान अज्ञान संभवै तुझहीमें। रूप शुक्तिवत उपजैजन्मै८१

शिष्य प्रश्न।

चौपाई।

हे गुरु तुम मोहि नीकि सुनाई। जानेउंतवप्रसादमनलाई
सर्प भ्रांतिको अधिष्ठाना। रसरी भई सकलविधिजाना॥
तैसेहि आतम अधिष्ठाना। जगत आदिभ्रांतिविधिनाना॥
सोभ्रांतिकिमिछूटिगोसांई। बिनाअधिष्ठानभांतिनहिंआई८२

गुरु उत्तर।

दोहा--तौलों भ्रांति रहत है, ज्यों लों कहिये तू अज्ञ॥
ज्ञान भयो भ्रांति मिटी, आतम अज्ञ न तज्ञ॥ ८३॥

शिष्य प्रश्न।

चौपाई।

सुनिये गुरुराये सुखदाई। ज्ञानसमाधि एकदिशिआई॥
औ सर्ब देशी भ्रांति निहारो। सर्बदेशि आतमहु विचारो॥
एकदेशि है ज्ञान समाधी। सहस्रनमें कोइ कोइजिवसाधी
भ्रांति तो सर्व देशि कहाई। सकलजीवको प्राप्तिगोसांई
अधिष्ठान बिन भ्रांति न होई। अधिष्ठानमेंरहतसमोई८४

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

ज्ञान समाधि भ्रांतिरे भाई । जगत ब्रह्म भ्रांति ठहराई ॥
अध्यारोप और अपवादा । ई सब भ्रांतिकेर विपादा ॥
कहना सुनना भ्रांति हि जानो । पूछनहू भ्रांति अनुमानो ॥
कल्प विकल्प भ्रांति सब होई । आतम सदा एकरस सोई
ज्योंका त्यों तू ब्रह्म अनंदा । पूर्ण समुद्र आनंदको कंदा
कल्प विकल्पऔजगततरंगा।मिथ्याउठतहोत सबभंगा।८५

शिष्य प्रश्न ।

दोहा-प्रलय अंबुवत मैं भया, बहु तरंग मोहिं माहिं ॥
मैंहुं स्वभाविक रहत हौं, सो तरंगसों पाहिं ॥ ८६ ॥
मम तरंग जगरूप सब, केहि विधि होवै शांत ॥
तरंग शांत हुये बिना, मोको कहां निरांत ॥ ८७ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

चित्त बात शांत जब होई।सकल तरंग शांत होय सोई ॥
बिनापौननहिंतरंगउठाहीं।यहतोविदित आहिजगमाहीं८८

शिष्य प्रश्न ।

दोहा-चित्त बात कहांते उठै, कौन थान यहि केर ॥
सतगुरु मोहि बताइये, मिटे चित्तको फेर ॥ ८९ ॥

गुरु उत्तर ।

दोहा-सबको अधिष्ठान तू, तुझ बिन और न कोय ॥
तोहिते दूजा होय तो, शिष्य बताहूँ तोय ॥ ९० ॥

शिष्य प्रश्न।

चौपाई।

सबको अधिष्ठान मैं आपू। मोहिमें रोग सकल संतापू॥
सकल रोगके हमहीं मूला। ममस्वभावते मोहिअनुकूला॥
आतम जगत सनातन ऐसा। रोग स्वभाविक छूटै कैसा॥
छूटेबिना न होइहै काजा। रोग विवश व्याकुलमहराजा॥११॥

गुरु उत्तर।

दोहा–रोग स्वभाविक कौन विधि, छूटत है यह भाय॥
ऐसा समुझि विचारिके, चूपचाप रहिजाय॥ १२॥
रोग असाध्य कहां जाइ है, तुम बिन नाहीं ठांव॥
तुम्हे छाडि फिर रोग सब, काह धरावत नांव॥१३॥
ताते सब विधि तुमहीं हो, और न कछू विचार॥
वोलन चालन थकित भौ, मन चक्कर दै डार॥१४॥

शिष्य प्रश्न।

चौपाई।

हे प्रभु मोपै कह्यो न जाई। जानि परी नहिं कछु अधिकाई॥
प्रथम प्रश्न मैं कीन्ह गोसाई। आवागवन कस जानहिआई॥
केहि कारणयह ज्ञान प्रकासा। आवागवनमें कीन्हनिवासा॥
तब तुम कहा सकल मानेते। तत्वमसि आदि बंधन जेते॥
तब मैं पूछा अहो गोसांई। बंधन सकल बतावहु सांई॥
तब तुम करत चले निरुवारा। तत्वमसि आदिसकल विचारा॥
हम प्रभु श्रवण मनन सब कीन्हा। निजध्यास साक्षातहुचीन्हा॥
चीन्हत चीन्हत हो प्रभुराई। जानते अजान भयो मैं आई॥

कहत कहत तुमहूं गुरुराई । गुरुते आतम आपु कहाई ॥
तुमहूं आतम हमहूं आतम । ये जग सबहीं आत्म सनातन
अब प्रभु कौन मुक्ति ठहराई। कौन दुःख छूटा गुरुराई ॥
यह तो अनादि सिद्धको रोगू।ज्योंका त्योंहि बनाहैभोगू॥
एक विशेपता यामें पाई।कहत कहत आपुहि थकि जाई॥
सुनत सुनत हमहूं थकि गयेऊं।अबगुरु चूपचापहोयरहेऊं९९

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

अब तुम जिन घबरावहु भाई ।पुनि विचार तोहि देहुंबताई
जौन बात हम तुमसे कहिया।तौन बात हृदया नहिं रहिया॥
सुनि निर्णय तुमहूँ घबराया।अंतर कछु थिति नहिं पाया॥
तुम जनि शंका मानहु भाई।पुनि अब तोहि कहौंसमुझाई
प्रथम शिष्य तुम पूछा मोही ।केहि प्रकार मानंदी होही॥
सो तुमको हम प्रथम सुनावा । तत्वमसिका भेद बतावा॥
द्वै प्रकार त्वंपद बतलावा ।कर्म उपासना अज्ञ सुनावा ॥
सबमें द्वै द्वै भांति बताई । पुनि तत्पदकी बात जनाई ॥
ईश्वर औ ज्ञानीको लेखा।समान ज्ञान औ कह्यों विशेषा
ता पीछे असिपद दरसावा ।परमहंस मत सब समुझावा॥
परोक्ष औ अपरोक्ष विज्ञाना । ताके भेद सुनायेउं नाना॥
सुनत भेद तुम भूलेहु भाई । आप अपनपौ गये हेराई ॥
तीन्हिुं पदका जानन हारा।तूहि जान अब करु निरुवारा
तेरो भास तोहिको खावै । तीनों पद ये जीव भरमावै ॥
आवागवनको कारण भाई । तत्वमसि पद तीन बताई ॥
तुम जिन इनको मानहु लेखा।तीनों त्यागो करो विवेका९८

शिष्य प्रश्न।

सोरठा—तुम गुरु दीन दयाल, मैं अजान जानो नहीं ॥
तीनों पदको टाल, चौथा पद मैं कौनहूं ॥ ९७ ॥

गुरु उत्तर।

चौपाई।

हे शिष्यतूतिहुंपदकोभासिक। चौथापदतूपरखविलासिक
तत्वमसि पद तेरो भासू। तू हंस सदा अजर अविनासू॥
याको यह प्रमाण है भाई। बिन भासे कछु कह्यो न जाई ॥
जो तीनों पद मैं बतावा तोहीं। सो तोहे भास भयो कि नाहीं

शिष्य प्रश्न।

दोहा—जेहि विधि आप बतायेऊ, समुझेउं सब गुरुदेव ॥
तीनों पद मोहिं भासिया, परोक्ष अपरोक्ष सो भेव९९

गुरु उत्तर।

चौपाई।

अब तू परखि देखु रे भाई। तीनों पदसे न्यारा रहाई॥
तीनिउ पद जेहि अनुभव भयेऊ। सो अनुभवसे न्यारा रहेऊ
तत्वमसिको अनुभव कर्ता। तत्वमसिसे न्यारा बर्ता ॥
जो तुम्हरे अनुभवमें आवा। सोई रूप आपन ठहरावा ॥
तामें मगन भये तुम भाई। न्यारा मैं ये परख न आई ॥
जो भासे सो मोर स्वरूपा। यह बंधन अंधियारी कूपा ॥
भिन्न अक्षत अरु जानत नाहीं। मानि मानि बंधनके माहीं
याते आवागवन रहाई। बहु प्रकार दुख भुगतहु भाई १००

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—बारबार बंदन करों, हो गुरु परख प्रवीन ॥
मोकहँ भेद बताइये, संशय डारो बीन ॥ १०१ ॥

चौपाई ।

असिपद मांहि काह मैं माना।वहां न मान न संभवै ज्ञाना ॥
एक दोय जहां कछू न बानी। भेद अभेद न तहां बखानी ॥
निर्गुण सर्गुण नहीं विचारा । नाहिं जहां अवस्था चारा॥
तहां मानदी काह बतावा।जहां न मन बानीको भावा१०२

गुरु उत्तर ।

दोहा—हे शिष्य परखो नीकि विधि, मैं सब देहुं बताय ॥
असिपदका निश्चय तोहीं,केहि विधिपारियाआय१०३
मनबुद्धि बानी जहां नहीं,निर्गुण सर्गुण नाहिं ॥
सो तुम कैसे जानिया, मोहि कहो समुझाहिं ॥१०४॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—जिमि गूंगा गुड खात है, स्वाद न कहै बखान ॥
तेहि प्रकार मोको भया, आतम निश्चयमान॥१०५॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हे शिष्यतुम भल मोहि सुनाई।जेहिप्रकारतोहिंभास्यो भाई
जिमि गूंगा गुड खाय अघाई। सकल स्वाद वह जानै भाई
पर कछु कहत बने नहिं बानी। तोकहँ स्वाद भयो वह जानी
स्वादी सदा स्वादसेन्यारा।अहोशिष्य तुम करो विचारा ॥

तेहिप्रकारअसिअनुभवबारा।तूअनुभविता सदानिन्यारा॥
हे शिष्य परखिदेख रे भाई।क्या गूंगा गुडही होय जाई ॥
तिमिअनुभवितासदानिन्यारा।मानिमानिलीन्होंशिरभारा
माने सो बंधन सब भाई । तातेजीवबहुतदुखपाई॥ १०६॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

काह संयोग वियोग कहाई ।न्यारा मिला कछुनगोसाई॥
मैं आत्मा जैसेका तैसा । प्रलय अंबु लघुदीर्घन कैसा ॥
एकदोय मोमें कछु नाहीं।व्यापिक व्याप्य कहों अब काहीं
मैंचैतन्यसबदेशउजारा।ऐसहुकछुकहतबनेनहिंसारा १०७॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

ऐसेहि भास शिष्यतोहिभयऊ।बिनभासेकस निश्चयठयऊ
अति सूक्ष्म दृष्टिकरि देखो।भास मेटि निज परखविशेषो
ज्योंका त्यों परिपूरणजोई ।ऐसो भास कौनको होई॥८॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—ज्योंका त्योंही आतमा, मोको भासत देव ॥
मो बिनु भासिकको अहै, कहो ताहिकोभेव॥ १०९॥

गुरु उत्तर ।

सोरठ—हेशिष्य तू है कौन, भास काहेते परखहू ॥
कहो यथाविधि तौन, जाते आगे सूझि है ॥ ११०॥

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—जो मेरो अनुभव अहै, सोई मेरो रूप ॥
सोई मैं अरु जगत सब,और सबै अंधकूप ॥ १११ ॥

गुरु उत्तर ।

दोहा–सब अनुमत तेहि भासिया, तूतो रहा निन्यार ॥
सो अनुभव तू किमिभयो, हे शिष्य करहुविचार ११२

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

हे गुरु तुम हो दीनदयाला। हरहु कठिन मोर उरसाला ॥
मैंहौं कौन मोहिं नहिजानत।अनुभवभास सोई मैंमानत ॥
तुम जो कहाअनुभवतेन्यारा।सो मैंआपनकीन्ह विचारा॥
मैं अनुभविता न्यार गोसांई । कौनआहुंये नाहि लखाई॥
जौन दिसे सो दूसर होई ।निज स्वरूपकिमिजानबसोई॥
निज स्वरूप करिमानोसोको। तबवह भास परतहैमोको ॥
काहेतेभासेसो नहिंजानो।तातेअनुभवसत्यकरिमानो ११३
दोहा–तुम सबलायक परमगुरु, हम अजान शिष्य तोर॥
काहेते भासे कौन मैं, सोइ बतावहु ठौर ॥ ११४ ॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

याको झांई जानहु भाई । जानि बूझि अचेत कहाई ॥
या झांईका परिया ओटा ।ताते सत्य भासत सबखोटा
यासेंसुरनर मुनि सब अरुझे ।बिन पारख यातेनहिंसुरझे॥
यह सुषुप्ति ज्ञान कहाई । जानि बूझि अजान रहाई ॥
जाको सब विज्ञान बतावे । ज्ञान सुषुप्ति सोईकहावे ११५

शिष्य प्रश्न ।

दोहा–मैं नहिं जानों भेद कछु, तुम दयाल गुरुदेव ॥
कै प्रकारकी सुषुप्ती, मोको कहिये भेव ॥ ११६ ॥

चौपाई ।

द्वै विधि आहिसुषुप्तिविचारा।सोई शिष्यतुमकरुनिरुवारा
एक अज्ञान सुषुप्ति कहाई । दूसर ज्ञान सुषुप्ति भाई ॥
गाढ मूढ जब निद्रा आवै । सो अज्ञान सुषुप्ति कहावै ॥
तत्व प्रकृति बिलय होयजाई । सकलों इंद्री ठौर बिलाई
कछु नाखबरि रहिकहैताता । सुखमें सोयगयो सबराता॥
ये अज्ञान सुषुप्ति बताई । अब सुनु ज्ञानसुषुप्तिको भाई ॥
स्थूल सूक्ष्म कारणकोजाने । तीनिअवस्थातीनअभिमाने
सबको जानि बिसारे आपू । जागृतिमांहि सुषुप्ति थापू ॥
आपन आप भाव मिटिजाई। ज्ञान सुषुप्ति सोईकहाई॥
जानि बूझि सबको बिसरावै।आपन भाव रहन नहिं पावै॥
निजसुख मांझगयो गफिलाई।सोई ज्ञान सुषुप्ति कहाई ॥
अजानपनामेंजो गफिलाई । सोअज्ञान सुषुप्तिकहाई ११७

शिष्य प्रश्न ।

दोहा—ज्ञान सुषुप्ति तुम कही, मैं समुझेउं गुरुदेव ॥
काह विकार तामें अहै, मोहिं बतावहु भेव ॥ ११८॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

हेशिष्य सुनहुयथार्थ विचारा।ज्ञानसुषुप्तिमें सकलविकारा
जिमि अज्ञानसुषुप्तिमेंताता । कछु विकारनजरनहिंआता
पुनि जागृत स्वप्नादिकभाई । यह व्यवहार कहांते आई ॥
जो विकार वहांजडते खोता ।जो जागृत स्वप्नादिनाहोता

तो तुम देखु सुषुप्ति माहीं । कछु विकार नाहिं दरसाहीं॥
बीजरूप ये सकल रहावै । शाखा पल्लव सबै नसावै ॥
ताते फिर फिर उपजे भाई ।फिर फिर जाय सुषुप्तिसमाई
तेहि प्रकारतोहि नजरनआवै।ज्ञान सषुप्ति सोई कहावै ॥
तामें कछु न दिखैविकारा।फिर कहांते प्रगट भयोजगसारा
सकल विकार ब्रह्ममें होई । बीज स्वरूपी रहत समोई ॥
ब्रह्ममें सबै विकार नसावत । तो ये जगत कहांतेआवत॥
सब विकारका मूल गोसांई ।आपहि आप ब्रह्म कहलाई॥
जौन बीज जंहवाँते होई तौन बस्तु तहां जानहु सोई ॥
तैसा जगत ब्रह्म विराजै । ब्रह्म विना जगत कहां छाजै॥
वीज वृक्षको जैसा लेखा । तैसा ब्रह्म अरु जगतविवेका ॥
बीज वृक्ष पृथिवीमें लहिये । ब्रह्म जगतआतममेंकहिये ॥
ताते मिथ्या है सब भासू । छाडि देहु तुम परख प्रकासू॥
ज्ञान अज्ञान सुषुप्ति विचारा।तोर भास तू इनते न्यारा॥
परखिकेत्यागिदेहुसबभासा।हेशिष्यदुखसुखमिथ्याआसा१९

शिष्य प्रश्न ।

दोहा–ये सब छोडा परखिके, हे गुरु कृपानिधान ॥
मोर रूप फिर क्या रह्यो, सो भाखहु परमान १२०॥

गुरु उत्तर ।

दोहा–काहेते तुम छाडेहु, काहेते धर लीन्ह ॥
येतो चिन्ह बतावहु, तुम शिष्य परख प्रवीन १२१॥

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

नाजाना तत्वमसि बंधन । ताते अरुझि रह्यों बहु फंदन॥
निज स्वभाव बसि भूल गोसाईं। ताते बंधन धरेउं बनाई:॥
आप मिले गुरु दीन दयाला।तीनिउ पद परखायेउजाला
तीनिउ पदकी कसर विकारा।तुम्हरी कृपा भयो निरुवारा
अनजाने बंधन गहि लीन्हा।जानि बूझि त्यागन सबकीन्हा

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

बंधन सकल त्याग भौ भाई । पाछे बाकी काह रहाई ॥
सो बाकीका करो विचारा।पावो सार शब्द टकसारा २३

शिष्य प्रश्न ।

सोरठा–हे गुरु दीनदयाल, बाकी तो मैंही रहा ॥
और सकल भ्रमजाल,जानि बूझि त्यागेन सकल२४॥

गुरु उत्तर ।

दोहा--जाते तीहु पद परखिया, परखा सब संसार ॥
सो पारख ढिग है की नहीं,मो प्रति कहु निरुवार २५

शिष्य प्रश्न ।

चौपाई ।

पारख मोमें रहि गुरुराई।मोते नहिं कछु भिन्न देखाई ॥
जो पारखमों मैं नहिं होखा। तो केहि भांतिपरखतेउंधोखा
सोमें पारख सदा रहाही । मैंहू रह्यों पारखके मांही ॥

काल संधि झांईका फेरा । परख प्रतापते सबै निबेरा ॥
स्थूल सूक्ष्म कारणमहाकारण।कैवल्यादिक कीन्हनिवारण
सो पारख कहुं आवै न जाई।भिन्न नहिंकेहि विधि बतलाई
दोहा-मैं पारखमें होय रहां, पारख मोरे माहिं ॥
भास अध्यास औ कल्पना,मोको पावत नाहिं१२७॥

गुरु उत्तर ।

चौपाई ।

सो पारख तव रूप कहाई । जाते धोखा भरम नसाई ॥
पारख भूमि अटल अविनासी।सबके परे भिन्न नहिं भासी
जो कछु भिन्न भास है भाई।सो विजाति नाश होय जाई॥
ब्रह्म जगत अरु तनकी आसा।सबको त्यागि परखमें बासा
सबको परख परखावन सारा।पारखको को परखनहारा॥
पारख विचार अतिशय हैझीना ।जो जानै सो परख प्रबीना
परख भूमिका सदा उजागर।बिन परखे को जानत नागर॥
पारख भूमि काहु नहिं पाई।ज्ञान समीप नाहिं दरसाई॥
जेहि दरसे सोपरखस्वरूपा।सोन परत झांई अंधकूपा ॥
पारखमा जो होय गयो थीरा।तिन पायो गुरु सत्त कबीरा
सर्वोपर गुरु परख रहाई।पारख पर कोई भूमि न झाई ॥
छौ प्रकारकी भूमि कहावै । परख प्रकाशी सबन लखावै॥
छिप्रा गतागत दूजि कहावै।तीजि सौलेष्टता मन भावै ॥
चौथी भूमि सुलीन बताई । पंचई भूमि आप्तु बौराई ॥
छठई सत्त भूमिका भारी । सतई पारख भूमि निन्यारी ॥
सोई भूमि तुम्हारी स्थिति होई।ताको पावै बिरला कोई ॥

पारख पायो परख समाना।तहां न भास अध्यास अनुमाना
परख पारखी एकै जाना।ब्रह्म जगत मिथ्या अनुमाना ॥
यह निर्णय कबीर कृपाला। कहि निरुवारो हंसन जाला॥
जोबीजककीअस्थितिकहाई।सोशिष्यसकलतोहिसमुझाई २८

दोहा—परख साध गुरु परख कबीर,पारख पद पहिचान ॥
पारखके परतापते, सब भ्रमजाला मान ॥ १२९ ॥

चौपाई।

पारख गुरू कबीरकहावै। पारख धर्मदास बतलावै ॥
पारखमें सब संत कहाई। पारख अमरदास गुरु पाई ॥
तहंवाँते सुखलाल कृपानिधी।पारख पाई सकलबीजकविधी
पूरण तिनका चरणको चेरो।कृपादृष्टि उनहिंन प्रभु हेरो॥
हौंमतिमंद सकल विधि हीना।दया कीन्ह पारखपद दीन्हा
सो पारखशिष्य तोहि बतावा।त्रिविधि भरमजालपरखावा
पारख मांहि पारखी बासा।दूसर और रही नहिं आसा॥
गुरु शिष्य पारख कहलाये। दोउ देह जब दूर बहाये॥
पारखमें समता होय जाई। शिष्य भाव ना रहै गुरुवाई॥
देह भावते दास कहावै। पारख भावते एक होय जावै ॥
जे पारखते हम सब परखा।सो पारख दीन्ही तोहि हरखा
पारखमें हम तुम हैं एका। देहभावते भिन्न विवेका ॥
प्रथम विचार गहो तुम जानी।सत्य असत्य करोबिलछानी
छानि छानि सब असत्य उडावो।सांच तत्व तबहींतुमपावो
असत्य नाशमानके माने।बहुविधि भय जीवनको ताने ॥
भयते धीरज छूटे भाई। धीरज गये अधीरता आई ॥

नास्तिअसत्य मानना त्यागो। भय धोखामें कबहुं नपागो॥
अधीरता सब देउ बहाई । तब धीरज आपुहि रहिजाई॥
होनहार सोई तन होई । ताहि मान जिव काहेक रोई ॥
तू अविनाशी सुखमें कहिये। याहि जानि धीरता लहिये॥
शील वचन बोलो मृदु बानी। दुख सुख सहो छाडिअभिमानी
दुख सुख भोग नास्ति सब जानो। शील भावहृदयामेंआनो
दया सदा राखो दिलमाहीं। बिना दया कारज कछु नाहीं॥
ममता गर्भ छाडिके भाई । सदा करो साधुन सेवकाई ॥
साधुनके चरणामृत लीजे । मुख्य पूजा आदरसो कीजे॥
यथा शक्ति पूजा सेवकाई । महा प्रसाद संतनको पाई ॥
तिनके मांझ जो पारखपाये । गुरु मूरति सो संत बताये॥
पारखी गुरू नहीं कछु भेदा। और सकल जगकीन्हनिषेधा
सदा विचार करहु तुम भाई। ज्यों लों देह बिसारिनहिंजाई
पारख ऊपर थिर होय रहना। सकल परखना नाकछुगहना
वर्तमानमें वर्तो भाई । भूत भविष्य सब देउ बहाई ॥
दुख सुखमें आसक्त न होई । वर्णाश्रम माने नहिं कोई ॥
परख विलासी पारखयुक्ता। परख स्वरूप सदा सो मुक्ता॥
सब निर्णयको जोहै सारा । सोई जानो परख विचारा ॥
सोअबसकलोंतोहिबतावा। करुविचारजोतुममनभावा १३०॥
छन्द–निर्णयसारसो ग्रंथ सकलों, तोहि कह्यों समुझायके
परख रहनी परख बानी, परखपद परखायके ॥
तत्वमसिको मानवो, बहु बंधन जीयराको भयो ॥
सो गांसफांस परखाय, पारखपाय गुरुपदतोहीलह्यो ॥

अब परखरूपि कबीर भौ, भ्रमभीर तोरनिरुवारिहै ॥
जो पढई ग्रंथ यह करई निर्णय, परखताकह तारिहै ॥
परखपद ताको मिलै, याको करै अभ्यास हो ॥
सब मिटे बानीकल्पना, अनुमानत्रिविधिभासहो १३१
सोरठा–अष्टादश नौ दोय, चैत्र शुद्ध दशमी तिथी ॥
ग्रंथ समापत होय, परख बोध भौ शिष्यको ॥ १३२॥
साहेब पूर्ण प्रकास, पूर्ण प्रकाशी दास हौं ॥
अब कछु रही न आस, पूरन पारखमें मिल्यो १३३

गुरु स्तुति ।

छन्द–तुम होहु जाहि दयाल सकलों, जाल ताकर नाशिहो
तुमबिना न मिटिहैं काल, सुकृतपालपरखप्रकाशिहो॥
का करौंमैंअस्तुतिआज, सतगुरुकियोबहुतउपकारहो॥
तुम बंदीछोर कबीर साहेब, मेटिया भवभार हो ॥
सबकरो निछावर तोरि, परमगुरु तनमनधनसबखेहहो॥
मन सुरति राखो चरणमें, यह नाशमान है देह हो ॥
परखपदको पाय साहेब, मेटि गयो सब भास हो ॥
ब्रह्म जगत अनेक बानी, रहि न काहुकीआसहो१३४
सोरठा–शरण शरण गुरुराय, बहुत दुखी मोको कियो॥
पूरन बंदत पाँय, सब अपराध छिमा करो ॥ १३५ ॥
मैं नालायक प्रश्न कियो, तुम समुझायउ मोहि ॥
मोंसे बोलत ना बन्यो, छिमा करो प्रभु सोहि १३६॥
इति पूरनसाहेबकृत निर्णयसार ग्रंथ गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

वैराग्यशतक ।
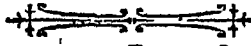
॥ दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्रंथ वैराग्यशतक ॥

दोहा–पूरन परख प्रकाश गुरु, मुख स्वरूप कबीर ॥
बंदत हौं तव चरण युग, हरण कालकी पीर ॥ १ ॥
कालपीर तिनकी मिटी, जिनको दृढ वैराग ॥
तेहिबिनजिवसबदुखित, अति पचिपचिमरहिंअभाग॥
इंद्र दुखी ब्रह्मा दुखी, दुखी विष्णु सब देव ॥
शिव शेषादिक दुखित हैं, बिन वैराग्य न भेव ॥ ३॥
राजा दुखी परजा दुखी, दुखी रंक प्रभु भेख ॥
धनवंत औ निर्धन दुखी, निर्णय करिके देख ॥ ४ ॥
तन धरि सुखिया कोइ नहीं, सब कोइ दुखियालोग॥
बिन वैराग्य ठहरै नहीं, कहा ज्ञान कहा योग ॥ ५ ॥
आशा तृष्णा ना मिटी, मिटेउ न मन अनुराग ॥
कलह कल्पना ना गई, तबलग नहिं बैराग ॥ ६ ॥
सोई अखंड समाधि है, जहां अखंड बैराग ॥
सोई संत सोई साधु है, सोई सिद्ध बड भाग ॥ ७ ॥
बिन वैराग्य न मुक्ति है, बिन वैराग्य न ज्ञान
बिन बैराग्य न भक्ति है, बिन वैराग्य न सान ॥८॥
ताते मुख्य प्रधान है, सबको यह वैराग ॥
गुरुकृपा जापर भई, ते पावत बड भाग ॥ ९ ॥
तिनको चरणोदक सही, तिनको महा प्रसाद ॥
तिनको दर्शन नित्य सही, जिनकी मिटी उपाध१०॥

तिनको बंदत हैं सबै, सुर नर मुनि औ भूप ॥
जिनके दृढ वैराग्य उर, मिटा राग तमकूप ॥ ११ ॥
सनकादि शुक भरत जड,कपिलदेव सो जान॥
और विदेही रघुगण कहैं, ऋषभदेव परमान ॥ १२ ॥
कद्रू कर्दम विदुरजी, ये वैराग्य निधान ॥
अष्टावक्र पुनीत मुनी, किये शास्त्र परवान ॥ १३ ॥
साह शिकंदर बलखके, और भरथरी भूप ॥
गोपीचंद गोरखनमें, सब वैराग्य स्वरूप ॥ १४ ॥
विद्याको भय बादको, तपको क्षय भय होय ॥
द्रव्यको नृप चोर भय, समुझ सयाने लोय ॥ १५ ॥
सकल भोगको रोग भय,कायाको भयकाल॥
सकल साधना इंद्रिन भय,ताते होत बेहाल॥ १६ ॥
तरुणिको भय तरुणता,योगिनको भय नारि॥
स्वर्गिनको भय अवधिको,हृदय देखु विचारि॥ १७॥
मंत्रनको भय यंत्रको, यंत्रनको भय तंत्र ॥
तंत्रनको भय सिद्धको, ताते नाहिं स्वतंत्र ॥ १८ ॥
सिद्धनको भय माया, मायाको भय ज्ञान ॥
भयमान सकल संपति अहै,ताते त्यागहुजान॥ १९ ॥
सज्जनको भय दुर्जन, मित्रनको भय हान ॥
मिलनको भय बिछुरन,आवनको भय जान॥२० ॥
पंडितको भय निंदा, मूरखको भय मार ॥
रणमें भय अतिशत्रुको, कलमेंभय अति नार ॥२१॥

कर्म अकर्महि पुण्य अघ, इष्ट अनिष्टहिजान॥
उपासना विक्षेप भय, ज्ञानको भय अज्ञान ॥ २२ ॥
चतुरनको भय मूरख, सत्यबादिन पाखंड ॥
दुखरूप सकल सुख जगतको,तैसहि सुखब्रह्मंड॥२३॥
बसबो भलो एकांतको,छाडि सकलकी आस ॥
जित अविवेकी नर सकल,कोई नआवै पास॥ २४ ॥
भल बसवो आरण्यको, सरद निशाको चंद ॥
शीतल जल सरितानको,फल भक्षण स्वच्छंद॥ २५ ॥
दोष दृष्टि जबहीं भई, तब उपजो वैराग ॥
दृढ निर्वेद जाको भयो,सोई मुमुक्षु बड भाग॥ २६ ॥
अंत दशा ले आदिमें सोई सांच वैराग ॥
सो सुखिया तीहुं लोकमें,जाको निश्चय त्याग ॥२७॥
कंथा अरु कौपीनहु, जाको मिलै न कोय ॥
वृत्ति इंद्रहुते अधिक, तृप्ति चलित नहिं होय ॥ २८ ॥
अन इच्छा सो मिलत है,भोजन वस्त्र विहार॥
सोई लेत है सुखित होय,राखतकछुनअधार॥ २९ ॥
सज्जनते जाँचै नहीं, दुर्जन ढिग नहिं जाय ॥
प्रारब्ध वर्तमान जो, बरतै सो बरताय ॥ ३० ॥
अन्तदशा लिये आदिमें, सोई करो बखान ॥
सुख ब्रह्मा इंद्रादिको, काक विष्टवत जान ॥ ३१ ॥
देह अंत मृतुक दशा,सो मैं आजहि लीन्ह ॥
कफन पहिरीसमाधिमें,जगविस्मृतिभईचीन्ह ॥ ३२ ॥

मृतुकको मरबो कहा, निर्धन तस्कर भीत ॥
भिक्षुकको अभिमान कहा, त्यागी काको मीत॥३३
दरिद्रताको सब डरें, करें संपतिसों प्रीति ॥
सो दरिद्र हम लीन हैं, अब कहा रीत बे प्रीति ३४॥
हम दारिद्रमें सुखीहैं, संपतिसों दुख मान ॥
भोजन भिक्षा अन्नको, औ नदियन जलपान ॥३५॥
राह बाटकी चौंधरी, जोरी गुदरी कीन्ह ॥
गही तुमरी हाथमें, शयन भूमिपर कीन्ह ॥ ३६ ॥
काहबनबाग आरण्य कहा, काहमंदिरसमसान ॥
अचिंत निद्रा करत हौं, हर्ष शोक नहिं मान ॥३७ ॥
शिला पलंग आरण्य घर, सरद निशाको चंद ॥
पंखा करत बयार सब, हम पौढत स्वच्छंद ३८ ॥
धुनि ध्यान वृत्ति भारजा, केल करत परबीन ॥
लज्जा मान बिसारिके, घरघर भिक्षा कीन ॥ ३९ ॥
विषम वचनसहों जगतके, चहों न धनत्रियभोग ॥
करत ठठोली लोग खल, मोको हर्ष न सोग ॥४०॥
ये मनके मानै सबै, दुष्ट मित्र जग होय ॥
मनहीं जहां बिलाइया, अरी मित्र नहिं कोय ॥४१॥
कोई बोलै कोई ठोलै, कोइ डारै शिरधूर ॥
कोई अस्तुति निंदा करै, कोइ ज्ञानी कोइ कूर ४२॥
मोको काज न काहुसे, काह रंक नृपनाथ ॥
काह इंद्र अज हरि हर, मैं निजज्ञान सनाथ ॥ ४३॥

मैं नहिं जानों जगतसे, मोको सुख दुख होय ॥
काल कर्म ये जड सबै, जड देवादिक होय ॥ ४४ ॥
मैं चैतन्य सब जानता, ई अचेत जडरूप ॥
ई क्या सुख दुख देत हैं, कहते अज्ञ स्वरूप ॥ ४५ ॥
मन मानै कर्म काल ग्रह, मन मानै सब देव ॥
मन मानै जगचक्र सब, चलै न जानै भेव ॥ ४६ ॥
रज सत तमगुण मनसकल, मनके सकलचरित्र ॥
स्वामी सेवक मन सकल, मन मानै अरि मित्र ॥४७
मन मानै वर्ण आश्रम, मन मानै सुत दास ॥
मन मानै त्रिय कुटुम जग, मन मानै दुरपास ४८॥
मन मानै जप योग है, मन मानै तप आस ॥
जो मनको मानै नहीं, सुखि सो साधु निरास ४९॥
मनहिंरोग अरु भोग है, मनहिं पाप अरु पुन्य ॥
मनहिं क्रिया अरु कर्म मन, मनचेतन अरु शुन्य५०
सो मन मैं मानों नहीं, काह भोग कह त्याग ॥
जो है मनको मानबो, सो प्रपंच वैराग ॥ ५१ ॥
मतियनमें भय मतनको, यतियनमें भय नार ॥
यागिनमें भय लोभ है, युद्ध समय भय मार ॥५२॥
जाति पांतिको गृहिनमें, भेषनमें भय भेष ॥
जगत सकल दुखरूप है, निर्णय करिके देख ॥५३ ॥
तृष्णाकी विशेषता, कहांलों करों बखान ॥
देह मरै इंद्रिय थकें, तृष्णा न मरै निदान ५४ ॥

तृष्णा है की डांकिनी,की जीवनको काल ॥
और और निशिदिन चहै,जीवन करत बेहाल ॥५५॥
तृष्णा अग्नि प्रलयकी, तृप्ति न कबहूं होय ॥
सुर नर मुनि औ रंक सब,भस्म करत हैं सोय॥५६॥
निर्धनिक कछु धन चहै, धनिक चहै विशेष ॥
विशेषहु विशेष चहै, होवन चहै नरेश ॥ ५७ ॥
नरेश चहै इंद्रपद, इद्र चहै रणजीत ॥
असुर चहै सुरपति बनन, यह तृष्णाकी रीत ॥५८॥
आशा धन त्रिया पुत्रकी, जीवन आशा होय ॥
आशा स्वर्ग सिद्धि मुक्तिकी,आशा बंधन लोय॥५९॥
विषय थकै इंदिय मरें, आशा मरै न कोय ॥
देह मरै तेउ अमर है, देह धरावत दोय ॥ ६० ॥
आशा सोई यमफांस है, सब जीवन दुख खान ॥
जीव भरमावै ज्ञान हरै, ताते त्यागहु जान ॥ ६१ ॥
भोग विषय औ कुटुम सब,अंत तोहिं तजि जायँ ॥
ताते समुझि विचारिके, तुमहि तजो किन भाय६२॥
अहो मोह महिमा प्रबल; सबको करत बेहाल ॥
ज्ञान हरै संपति हरै, प्राण हरै ततकाल ॥ ६३ ॥
जिनकी आशा लागिहै,तिनते दुखी न और ॥
आशा त्यागि निराश भये, सोई सुखके ठौर ॥६४॥
आदि मध्य अरु अंतमें,आशा दुखकी रास ॥
स्वर्ग नर्क भुगतावै, आशा अपर्बल फांस ॥ ६५ ॥

तातै आशा त्यागिये, देह गेहकी जान ॥
नास्ति सुखके कारणे, क्यों होवै बंधमान ॥ ६६ ॥
केवल मुक्ति आशा रहै, तेऊ है बंधमान ॥
सुखिया सदा निरास पद, सुनु वैराग्य निधान ॥६७॥
आशाते दुख और नहीं, आशा दुखको रूप ॥
जाकी आशा सब छूटिया, सो सुखिया सुखरूप६८॥
क्रोध सबनको काल है, क्रोधहि है जंजाल ॥
शिव दुर्वासा क्रोधवश, बहुते भये बेहाल ॥ ६९ ॥
कपिल मुनिके क्रोधने, मारै सगरके पूत ॥
सनकादिकने क्रोध करि, राक्षस किये हरिदूत॥ ७०॥
तमोगुणको वैराग्य जो, औ तामसयुत ज्ञान ॥
कृष्ण कहत अज्ञान यह, करत जीवकी हान॥ ७१ ॥
तातै क्रोध न कीजिये, है अज्ञान अनूप ॥
समुझि विचारो जगतमें, तू सब तोर स्वरूप॥ ७२ ॥
निजकर लागे निजहि तन, अंगुरि गई निज आंखि ॥
दशन चबाई जीभ निज, काको क्रोध करि भाखि७३॥
तैसे सबहिं विचारिये, क्रोध न करिये भाय ॥
सब तेरे तू सबनका, काको जानि रिसाय ॥ ७४ ॥
भूमि शयन तन बसन करि, भलभक्षत आराम ॥
निशिदिन रहत आरण्यमें, तेहु सतावत काम ॥७५॥
काम नहीं यह काल है, काम अपर्बल बीर ॥
जब उमगत है देहमें, ज्ञानिन करत अधीर ॥ ७६ ॥

जिन गहि जीता कामको, सोइ ज्ञानी सोई सिद्ध ॥
नहिं तो थोथीबात है, घरघर करत असिद्ध ॥७७॥
विषबेली संसारमें, प्रगट भई है नारि ॥
सुर नर मुनि औ देवता, खाइनि सब जग झारि॥७८॥
हाड चाम औ रुधिरमें, मांस चर्ममें सोय ॥
नारि कूपिका नर्ककी, समुझ सयाने लोय॥ ७९ ॥
मासग्रंथि उर रार मुख, रही रोमते छाय ॥
नारि कहत याकोसकल, डांकिन होयजगखाय॥८०॥
ज्ञान हरै क्रिया हरै, बल वीर्य हरै लाज ॥
यश लक्ष्मी कीरति हरै, हरै तप मुक्ति समाज ॥ ८१॥
कछु दिन बिलसतप्रीतिसों, मानत मनमें मोद ॥
तन छूटेपर जाइके, बसी करत निज गोद ॥ ८२ ॥
मनसा वाचा कर्मना, त्याग कीजिये नार ॥
हतै स्वर्ग अपवर्ग सुख, दुखदाई निर्धार ॥ ८३ ॥
बाघिनरूप धरि गायके, वृषभनप्रिय करिमान ॥
सुखकी बेडी माहि है, विश्वासघातिनिजान॥ ८४ ॥
मूत्र रक्त दुर्गंध दृढ, अमेध्य धूपित द्वार ॥
चर्मकुंडमें जो रमै, पचेसो तहां निर्धार ॥ ८५ ॥
कुटिलडिंभ संयुक्त है, सत्य शौच्य नहिंताहि ॥
जीवनके बंधन यही, प्रिय करि मानत ताहि ॥ ८६ ॥
तीन लोककी जननी, सो भग नर्क निदान ॥
तहां जाय जीव रतकरत, अंतहु सोई ठिकान॥ ८७ ॥

जानो नारि नर्क है, निश्चय बंधन मांहि ॥
ना जाने मन काहेको, तहँवाँ दौरो जाहि ॥ ८८ ॥
भग आदि कुच पाशलों, घोर नर्ककी खान ॥
जो नर तहवाँरमतहै,सोजीयतहि नर्कसमान ॥ ८९ ॥
विष्टानर्कको भोगयह,भग जो भया निर्मान ॥
क्यों नहिं जानत चित्ततू,तहां क्यों धावतजान॥ ९० ॥
चर्मकुण्ड दुर्गंध दृढ, भग सो नर्क बखान ॥
देव दैत्य औ नर सकल,खंडचौसबनकोज्ञान॥ ९१ ॥
देहनर्क महाघोरमें, पूरित श्रोणित जान ॥
निर्मान भईबडवामुखी,भगमुखि तिरियाजान॥ ९२॥
भीतर सब विधि नर्क है,बाहर कीन्ह सिंगार ॥
तू नहिं जानत बावरे,ज्ञान विरोधनि नार ॥ ९३ ॥
क्यों नहिं जानत चित्त तू, भग है बंधनरूप ॥
दुर्गंधित अतिशय मलिन,जायपरततेहिकूप ॥ ९४ ॥
ऐसो मलिन विचारिके,ज्ञानिन त्यागो सोय ॥
ताहि जीव नित चाहै, महा विडंबन होय ॥ ९५ ॥
तत्र मूत्र जो रमत है, देव दैत्य नर कोय ॥
ते निश्चय नर्कै गये, संशय करो न कोय ॥ ९६ ॥
अग्निकुंड सम नारि है, घृत समान नर होय ॥
छूवते पिघलत तुरित, ताते बर्जित सोय ॥ ९७ ॥
गुड महुवा और दूधकी, तृतिया मदिराजान ॥
चौथी मदिरा नारि है, मोहा सकल जहान॥ ९८ ॥
मदिरा नारि कुटिलनी, दोउ त्यागिये मीत ॥

अश्वस्थितकरै चित्तको, नक दाइनी नीत ॥ ९९ ॥
नारीयंत्र न त्यागिया,मोहित भयो निदान ॥
ते दृढ बंधनमें परे, धृग ताको सब ज्ञान ॥ १०० ॥
नष्ट चित्तको करत है, घात करत है नास ॥
चिंताको उत्पति करत, नारि रहत जो पास॥१०१॥
सर्वत्र चित्तको रक्षिये, कहुं जाने नहिं पाय॥
सो ज्ञानी दृढ जगत है,जाहि नारि नहिं खाय॥१०२॥
वर्षत मेघ अखंड विधि, हरियर भई बन घास ॥
हम बैठे गिरि कंदरा, कोई न आवत पास ॥१०३॥
खगकुल मृगकुल रहत बन, सोइ हमारे मीत॥
भादों रात अंधारिया, नहिं काहूकी भीत ॥१०४॥
निर्भय निज पदमें रहै, सर्प सिंघ लिये साथ ॥
कहा ग्राम पुर पाटन, कहा धनिक नृपनाथ ॥१०५॥
कोइ न हमारो जगतमें, न हम काहुके मीत ॥
सत्संगति प्रताप बल, रहे मोहगढ जीत ॥१०६॥
धारा वर्षे मेघकी, घटमें वर्षे प्रेम ॥
हम बैठे आनंदमें, राति दिवस नाहिं नेम ॥ १०७॥
ऊपर चमके बिजुली, घटमें ज्ञान प्रकास ॥
अनहद गरजै मेघ जो, छूटि जगतकी आस ॥१०८॥
घट आनंद धारा बहै, ऊपर बहै जो नीर ॥
मोहिं हर्ष नहिं रोग कछु, चहुं दिश बहै समीर१०९॥
पपिया पीउ पीउ करत है, चहुं दिश कुहकत मोर॥
हम बैठे आनंदमें, सुनत श्रवणते सोर ॥११०॥

यहि विधि वर्षा बीतही, आई सरद अनयास ॥
निर्मल बादल होगये, चहुंदिश फूली कास ॥ १११ ॥
देखि सरदकी चांदनी, उत्तम शिला अपार ॥
निर्मल जल सरितानको, अरु आरण्य विहार ॥ ११२ ॥
भूख लगी तब मागिवो, भीख अन्न एकबार ॥
भक्षण करि सरितानको, नीर पीजिये सार ॥ ११३ ॥
नींद लगै तब सोइये, उत्तम थल एकांत ॥
ओढि गुदरी इंद्रि जौं, वृत्ति करिये निरांत ॥ ११४ ॥
चलन फिरन स्वच्छंदसों, काहूकी नहिं आस ॥
राजा रंक समान है, रहै न काहुके पास ॥ ११५ ॥
समसानमें गृह शून्यमें, कि धुनीके पास ॥
की तो ओढे गूदरी, की तो बिछावे घास ॥ ११६ ॥
सरद निशाकी चांदनी, चहुंदिश करत विहार ॥
भूमिशयन बल्कल वसन, कंद मूल फलहार ॥ ११७ ॥
बीति शीत यहि भांतिसों, आयो सरस बसंत ॥
आंबा टेसू फूलहीं, शोभित बन दर्संत ॥ ११८ ॥
शिलापलंग ढिगवसन करि, वापी कूप तडाग ॥
शीतल छाया वृक्षकी, निर्विकल्प बैराग ॥ ११९ ॥
फल पावत उत्तम सरस, पीयत शीतल नीर ॥
गावत उत्तम गीत तहां, त्रिविधि बहतसमीर ॥ १२० ॥
कहा मंदिर संपति कहा, कहा त्रियनके भोग ॥
ये सबहीं छिनभंग हैं, अचल समाधी योग ॥ १२१ ॥
ना काहूसो मांगना, ना काहूको देन ॥

अनइच्छा जो कछु मिलै,सो भोजन करिलेन ॥१२२
जासु मोह सब जीवको, डर उपजतहै जान ॥
सो देही छिनभंग है, ठहरै नाहिं निदान ॥१२३॥
नाशमान जो वस्तु है, सो तो ठहरै नाहि ॥
तासों लोभ न कीजिये, यह निश्चय मनमाहिं॥१२४॥
अविनाशी चैतन्य जो, सबको जाननहार ॥
सो तू निश्चय धारिले,सुखमय अवनिबिहार॥१२५॥
परकाशी प्रकाशते, सबको परखनहार ॥
ना काहूसों कामहै, ताको समुझ विचार॥१२६॥
पूरण अगम अगाधको, थाह लहै नहिं कोय॥
सो गुरु पारखते निकट,बिनगुरु कछु नहिं होय१२७

इति वैराग्यशतक पूरणसाहेबकृत गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥ ६ ॥

कबीरपरचय साखी.

॥ दया गुरुकी ॥अथ लिख्यतेग्रंथसाखीकबीर परचयकी

साखी—कबीर काहू अस कही, कान काग लिये जाय॥
कान न टोवै बावरा, खोजै दहुं दिश धाय ॥ १ ॥
चोर चले चोरी करन, किये साहुका भेष ॥
गह्ले सब जग मूसिया, चोर रहा अवशेष ॥ २ ॥
अवशेषै जग मूसिया, सेंध जो दीन्हों कान ॥
ब्रह्मादि सनकादि जग, दुखिया भये निदान ॥ ३ ॥
कानते मुखमें मुखते करमें, चुटकी चमकै नूर ॥
तीहटा खेती चोरवा, सब पंडित भये मजूर ॥ ४ ॥

हिये मुख नासा श्रवण दृग,कर काख चोरकाभौन॥
कहहिं कबीर पुकारिके, पंडित चीन्हों कौन ॥ ५ ॥
त्याग करनको सब चले, हुवा नहीं वैराग ॥
जो चोरवा जग मूसिया,सो सबकेपीछे लाग ॥ ६ ॥
पूरण कला होयके, चोर देखाई देत ॥
सुर नर मुनि जग आंधरा, चीन्ह न कोई लेत॥ ७ ॥
साहु भरोसे चोरके, सदा करै इतबार ॥
कहहिं कबीर तिहु लोकमें, चोर भया करतार॥ ८ ॥
शब्द करावे साधना, शब्द न चीन्हा जाय ॥
योग जप तप आदि ले, मरै कमाय कमाय ॥ ९ ॥
कोटि साधना करि मरै, ब्रह्म आप जो होय ॥
शब्दके मारे सब मरे, शून्यमें गये बिगोय ॥ १० ॥
ब्रह्म ईश जग आदिलो, हित माने सब कोय ॥
शब्दके मारे सब मरे, चीन्है विरला कोय ॥ ११ ॥
बिन पग परकी चीडिया, भूतल नभ उडिजाय ॥
सब कोई लगे बझावने, बागुर तोरि पराय ॥ १२ ॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंध, विषय बतावै वेद ॥
उपदेशै एक ब्रह्म पुनि,केहि विधि विषय निषेध॥१३
विषय कहै चीन्है नहीं, विषय बतावै ईश ॥
सो विष विषयको पान करि,बडे बडे मुयेमुनीश१३॥
शब्द विषय कहि ब्रह्मउदय, गुरुवन कीन्हाफेर ॥
मातु सुतहि विष देइ जो,तो क्या बसिबालककेर१५॥
शब्द आदि पांचों विषय, करै आचार्य बखान ॥

शब्द विषय ठहरायके, भजन कहैं भगवान ॥ १६ ॥
अपने मुखकी बारता, सुनै न अपने कान ॥
जो ठहरै शब्द विषय, तो विषय ब्रह्म भगवान॥ १७॥
कबीर व्यापक पदमिनी, व्याप रही संसार ॥
ते सुत जाये ब्रह्म एक, ताहि कहै कर्तार ॥ ॥ १८ ॥
कबीर पदारथ पदमिनी, माने तीनो लोक ॥
सोई पद चीन्हे बिना, देत पदारथ शोक ॥ १९ ॥
कबीर पदारथ पद विषय, चीन्है नाहीं कोय ॥
अंध हात जस दर्पण, दिनहिं अंधेरा होय ॥ २० ॥
कबीर पदार्थ पद अर्थ जो, सो तो विषय देखाय ॥
और पदारथ कौन है, पंडित कहो बुझाय ॥ २१ ॥
कबीर अपने रूपको, कहै जो प्राप्ति होय ॥
ऐसा भ्रम जेहि ऊपजा, सो जियरा गया बिगोय॥२२॥
अपनेको जाना चहै, कहै जो ऐसा बोल ॥
कहैं कबीर सो जीयरा, भया सो डामाडोल ॥ २३ ॥
पूर्व आचार्य वेदांतके, निरूप करे अद्वैत ॥
केहि निरूप उपदेशहीं, भीतर भासे द्वैत ॥ २४ ॥
व्यास कहै जग है नहीं, हुवा न कबहूं होय ॥
कहहिं कबीर उपदेश केहि, कारण कहिये सोय॥२५॥
कबीर दीपक एक जो, लेसकै करै अंधेरी दूर ॥
सब अंधेरी सकेरिके, रही गांडितर पूर ॥ २६ ॥
माया बैठी ब्रह्म होय, अद्वैत आवर्ण ॥
जग मिथ्या दरसायके, पैठी अन्तःकर्ण ॥ २७ ॥

कबीर माया रामकी, भई रामते शेष ॥
व्यापक सब कहैं राम है, राम रमामय देख ॥ २८ ॥
कबीर माया रामकी, चढी रामपर कूद ॥
हुकुम रामका मेटिके, भई रामते खूद ॥ २९ ॥
कबीर अक्षर शुद्धमें, निकसै अर्थ न कोय ॥
मात्रा संधि बेकारते, पंडित अर्थी होय ॥ ३० ॥
अक्षर मात्रा संधि मिलि, भासै अर्थ विचार ॥
मात्रा संधि जुदा किये, पंडित होय गवाँर ॥ ३१ ॥
बरण संधि वानी रची, मात्रा भरनी दीन्ह ॥
जगत ईशकी चूनरी, पहिरि कबीरा लीन्ह ॥ ३२ ॥
सूत पुराना जोडते, बैठ बिनत दिय जाय ॥
बरण बीनि वानी किये, जोलहापराभुलाय ॥ ३३ ॥
जो सबके उरमें बसी, ताहि न चीन्है कोय ॥
देवलोकमें उर बसी, ताहूके उर सोय ॥ ३४ ॥
कबीर सब घर अपछरा, देवन दै बरताय ॥
आपकोछरैसो अपछरा, चितवतमोहाजाय ॥ ३५ ॥
परी श्रवण द्वारे सोइ, ताको परा बखान ॥
बसी हियेमें आयके, सोइ पश्यंती जान ॥ ३६ ॥
पश्यंतीसों निश्चय भई, मध्यमा कहिये सोय ॥
बोलै जिभ्या द्वार होय, सो तो वैखरी जोय ॥ ३७ ॥
परी पश्यंती मध्यमा, वैखरी भई जो तीन ॥
कहैं कबीर यह वैखरी, चीन्है सो परबीन ॥ ३८ ॥
श्रवण मनन सो वैखरी, निजध्यासनसाक्षात ॥

परा प्रकाशके ज्ञानको, स्वयं कहै वेदांत ॥ ३९ ॥
श्रवण मनन निजध्यासन, साक्षात्कारजोहोय ॥
परा प्रकाशको ज्ञान यह, चीन्है बिरलाकोय॥४०॥
अंधे परम्परायके, देखो तिनको न्याव ॥
राते शब्द शब्दार्थ करि, गुण प्रकाशको भाव॥४१॥
कबीर काली सुंदरी, भई सो पूरण ब्रह्म ॥
सुर नरमुनि भरमायके, कोइ न जाने मर्म ॥ ४२ ॥
कबीर काली सुन्दरी, भई जगतकी ईस ॥
ब्रह्मादि सनकादि जग, सबै नवावैं शीश ॥ ४३ ॥
कबीर काली सुन्दरी, बैठी ईश्वर होय ॥
ब्रह्मादि सनकादि जग, जोवै मुखसबकोय ॥ ४४ ॥
कबीर काली सुन्दरी, बैठी अल्लह होय ॥
पीर पैगम्बर औलिया, मुजरा करे सबकोय ॥४५॥
कबीर काली सुन्दरी, बैठी होय अल्लाहिं ॥
पढे फातिया गैबकी, हाजिरको कहै नाहिं ॥ ४६ ॥
कबीर काली सुंदरी, कल्मा किये कलाम ॥
पीर पैगम्बर औलिया, पढै सो करे सलाम ॥ ४७॥
कबीर काली सुन्दरी, भई सो अल्लह मीया ॥
पीर पैगम्बर मुनि शिया, दगा सबनको दीया ॥४८॥
झूठ जवाहिरको बनिज, परै सो तबलगपूर ॥
जबलग मिलै न पारखी, घनपै चढै न कूर ॥ ४९ ॥
जो इंद्रिय सो हैं नहीं, हुई न कबहूँ होय ॥
ताको इंद्रिय ज्ञानकरि, पावन चाहैं लोय ॥ ५० ॥

अविनाशी पूरण कहै, व्यापक चेतन जोय ॥
या सब इंद्रिय ज्ञानके, प्राती इंद्रिय होय ॥ ५१ ॥
कबीर इंद्रिय ज्ञानकी, सब कोइ करे भरोस ॥
सुर नर मुनि छलि मारे, बडे बडे बातफरोस ॥५२॥
बातफरोसी करि मुये, सरा न एकौ काम ॥
बातफरोसी ब्रह्म एक, बातफरोसी राम ॥ ५३ ॥
माया बैठी शेष होय, कहै सो ज्ञान अतीत ॥
नेति नेति उपदेश कहि, भई सो शब्दातीत ॥ ५४ ॥
कबीर बरण फेरिके, अवरण भई छिनार ॥
बैठी आप अतीत होय, किये अनंत भ्रतार ॥ ५५ ॥
कबीर बैठी शेष होय, बिना रूप की रांड ॥
गाल बजावै नेति कहि, किये भ्रतारहि भांड ॥ ५६ ॥
कबीर चंचल नारिको, मोहि नहीं इतबार ॥
शेष बताव नेति कहि, बैठी होय हुशियार ॥ ५७ ॥
अध्यारोप जाके जवन, ताहि गले अपवाद ॥
अध्यारोप अज्ञानकी, कोइ न जाने आद ॥ ५८ ॥
अध्यारोपी ब्रह्मको, करे ब्रह्म अपवाद ॥
बानी ब्रह्म न लखि परे, मिथ्या कीन्हों बाद ॥५९ ॥
अव्याकृत दुखरूपको, सब माने मन मोद ॥
ब्रह्मादिकसे बालका, खेलहिं जाके गोद ॥ ६० ॥
डाइन सर्व शक्ति यह, लरिकन कियो बेहाल॥
सुख कलेजा काढिके, गाडे सबहिं पताल ॥ ६१ ॥
तिलई काड जराइके, कोइलामें अंकूर ॥

तैसे संसृति जीवको, अव्याकृत भरिपूर ॥ ६२ ॥
भास जहां जहां जो करै, तहां तहां तम अधिकाय ॥
अव्याकृत दुखरूपको, बोधे सुख दरसाय ॥ ६३ ॥
ज्ञानी हत्या पापको कहैं, मानंत लागै सोय ॥
जल करि मानै अग्निको, तो शीतल काहेन होय॥६४॥
और वृक्ष कहै कल्पतरु, कै मानै अनुमान ॥
सकल पुरावे कामना, तो सांच एकता ज्ञान॥ ६५ ॥
कबीर सम्मल जहरको, मानै खोवा दूध ॥
जो खायेपर गुण करै, तो एकै है सूध ॥ ६६ ॥
तो मैं जानों एकता, आगिसो लो नहाय ॥
जल छूये जो अंग जरै, तो सकलों एक पतियाय॥ ६७॥
आतम ज्ञान उत्तम किये, झूठनके सरदार ॥
कृतमको कर्ता कहैं, पढि गुनि भये लबार ॥ ६८ ॥
केहि उपदेशे आतमा, को कहै आतमज्ञान ॥
कृतम बडा कि कर्ता, कहु पंडित परमान ॥ ६९ ॥
नास्तिक नास्तिक सब कहैं, नास्तिक लखै न कोय॥
कृतमको कर्ता कहै, नास्तिक कहिये सोय ॥ ७० ॥
जाको इष्ट प्रत्यक्ष नहीं, लीन परोक्षहिं होय ॥
कहहिं कबीर पुकारिके, नास्तिक कहिये सोय ॥७१॥
है ताको जाने नहीं, तासों बेमुख होय ॥
नाहीं को जाना चहै, नास्तिक कहिये सोय ॥ ७२ ॥
है ताको जाने नहीं, नाहींको करै मान ॥
कहहिं कबीर पुकारिके, सो नास्तिक अज्ञान॥ ७३ ॥

माया जाको इष्ट है, दाहिन पंथ नहिं सोय ॥
कहहिं कबीर पुकारिके, वामते बामिक होय ॥ ७४ ।
हृदया भासे सर्पजो, रज्जुमें कल्पे सोय ॥
रज्जु लखि मिथ्या कहत है, पुनि रज्जुअहि सतहोय ७५
जो अहि कबहुं देखा नहीं, तेहि रज्जुमें नहिं दरसाय।
सर्पज्ञान जाको भयो, जहां तहां देख भयाय ॥७६।
कबीर जीवको देह करि, माने सो अज्ञान ॥
तन जड जीव जाने नहीं, जीव देहको जान॥ ७७ ।
निर्गुण सगुण करि जीवको, माने मूरख सोय ॥
निर्गुण सगुण देहके, लक्षण जानो दोय ॥ ७८ ।
कबीर लक्षण देहके, निर्गुण सगुण दोय ॥
गुप्त रहै तब निर्गुण, सगुण परगट होय ॥ ७९ ।
अंधा हगै पहाड चढि, मोहि न कोई देख ॥
कहहिं कबीर पुकारिके, आप सरीखे लेख ॥ ८० ।
कबीर आचार्य सब कहैं, नाम रूपको ज्ञान ॥
नाम रूप चीन्हें नहीं, रूप बखानै आन ॥ ८१ ।
बिना रूपका नाम जो, अबतक सुना न कान ॥
बिना रूपको नाम सो, कैसे जगमें जान ॥ ८२ ।
छिनमाही बोधिक भये, ज्ञान कथे अधिकाय॥
छिनमाही संशय भये, दे ठगनी हुदकाय ॥ ८३ ॥
ठगनीके हुदकावते, छिनमें ब्रह्म स्वरूप ॥
छिनमें संशय ऊपजे, ब्रह्म हुवा भ्रमरूप ॥ ८४ ॥
कबीर ठगनी भूतनी, मारि मारि आवै गात ॥

कबहुं संशयते भरी, कबहुं भरी वेदांत ॥ ८५ ॥
कबीर ब्रह्मपिशाच यह, जबर बडा मुंह जोर ॥
बडे बडे ओझा झारन लगे, बकन लागे तेहि ओर८६
कबीर हिंदू तुरुक पर, खेलै एकै भूत ॥
पंडित काजी हारिया, झारें माकी चूत ॥ ८७ ॥
ज्ञाता ज्ञेय अरु,ज्ञान जो, ध्याता ध्येय अरु ध्यान ॥
द्रष्टा दृश्य अरु दरश जो, त्रिपुटी शब्दा भान॥८८॥
लाहल पारख शब्दकी, जो परखे सो पाक ॥
तामें जो हल्ल करै, सोई होय हलाक ॥ ८९ ॥
कबीर शब्दातीतको, शब्द बतावे भेव ॥
शब्द न चीन्हें बावरा, करै शब्दकी सेव ॥ ९० ॥
जो जो सुनै गुनै सोई, देखै कहै बनाय ॥
कहैं कबीर गुण शब्दका, पारख बिन जहंडाय ९१॥
स्वपने सत्य देखायके, जागे मिथ्या होय ॥
कहहिं कबीर छिनारिकी,कला न चीन्हा कोय॥९२॥
हिंदूका गुरु बावना, नित उठि करे प्रनाम ॥
तुरुक मुरीद है तीसका, पांच बखत करें सलाम९३॥
याको आशिष देत नहीं, वाको दुवा न देत ॥
सुर नर मुनि औ पीरऔलिया, रगरें नाक अचेत९४
व्यास देव वेदांतमें, अद्वैतकर करै बोध ॥
कहैं कबीर निर्गुण भये, होय सत्संग विरोध ॥ ९५ ॥
कबीर बाद अद्वैतका, सत्संग विरोधी जान ॥
विमुख होय सत्संगते, चाहै निज कल्यान ॥ ९६ ॥

सत्संगति सुख द्वैतसो, समुझै नहीं गवाँर ॥
बाद करै अद्वैतका, पढि गुनि भये लबार ९७ ॥
बाद करै अद्वैतका, ताको भासै द्वैत प्रमान ॥
कहैं कबीर चीन्हैं नहीं, यह सूक्षम अज्ञान ॥ ९८ ॥
कबीर बाद अद्वैतका, कल्पै व्यास बहूत ॥
तरु लागे अकाशमें, फल खाय बांझके पूत ॥ ९९ ॥
कबीर व्यास वेदांतमें, कहै आतम निर्लेप ॥
उपनिषद बावन केहिकहा, लगाय लगायकलेप १००
जो आतम निर्लेप है, तो उपदेश मिथ्यांत ॥
बिना रोगके औषधी, भयो वैद्यको भ्रांत ॥ १०१ ॥
कबीर चेतन द्वैत है, अद्वैत मुवा जड होय ॥
चेतन मुवा कि जड मुवा, पंडित कहिये सोय १०२॥
कबीर अद्वैत जड मुवा, भास जीवको होय ॥
भास बडा कि भासकर, पंडित कहिये सोय१०३ ॥
एक ब्रह्म अद्वैत जो, व्यास कहै वेदांत ॥
सत्संगति बिन द्वैतके, कबहुं न छूटै भ्रांत ॥ १०४ ॥
उपमा व्यापक ब्रह्मकी, जिमि अकाश सब माहिं ॥
और तरुहिकहै कलपतरु, आस पूजै कि नाहिं १०५॥
प्यास लगि है जलकी, जल जानै सब मांहिं ॥
कहहिं कबीर यह ज्ञानते, प्यास बुझै कि नाहिं १०६
एक ब्रह्म व्यापक जगत, ज्यों सबमांहिअकाश ॥
मैं तोह पूछौं पंडिता, है पदार्थकी भास ॥ १०७ ॥
जो यह ब्रह्म पदार्थ है, काको भासै सोय ॥

को उपदेशै को सुनै, बडा अचम्भा होय ॥ १०८॥
मन बुद्धि बानीके परे, बानी करै निरूप ।
बानी ब्रह्म न लखि परै, गुणअकाशअनुरूप ॥१०९॥
मन बुद्धि बानीके परे, बानी करै निरूप ॥
कहैं कबीर पारख विना, भयाभिखारी भूप ॥११०॥
यह जग जब ना हता, तब रहा एक भगवान॥
जिन देखा यह नजरभरी,सो रहेउ कौनमकान१११॥
कबीर जब दुनियानहीं,तब था एक खुदाय ॥
जिन यह पेखा नजरसे, सो केहि ठौर रहाय ॥११२
जीव ईश्वर ब्रह्म जो, तत्वमसी कहै वेद ॥
कहहिं कबीर यह तीनपद, केहि उपदेशन भेद॥११३॥
जीव ईश माया सहित, कहै अनादिक जोय ॥
कहहिं कबीर यह तीनपद,केहि उपदेशनहोय ॥११४॥
जीव ईश औ माया जो, कहिये जगत अनादि ॥
कहहिं कबीर ताको भयो, गुरु उपदेशन बादि११५॥
एकोहँ बहु स्याम कही, ईश करत उपदेश ॥
एक अनेक आपै भये, कासों कहत संदेश ॥११६ ॥
आपुहि एक अनेक होय, बोलैं ईश सुजान ॥
उपदेशन काको करै, काहि लगा अज्ञान ॥ ११७ ॥
एकोहँ बहु स्याममें, काहि लगा अज्ञान ॥
को मूरख को पंडिता,केहि कारण बहुबान ॥
एकोहँ दुतिया नहीं, महापुरुष कहैं बाक ॥११८॥
जो दिलमें दुतिया नहीं,कासों बोलतहिंताक ११९॥

एकोहँ आपुहि भये, दुतिया दीन्हों काटि ॥
एकोहँ कासों कहै, महापुरुषकी झांटि ॥ १२० ॥
कबीर पांचहु तत्वको, पांच स्वभाव परधान ॥
तामें जो करै एकता, सो निर्गुण अज्ञान ॥ १२१ ॥
षट द्रव्य जैनी मता, ताको यह निर्धार ॥
जीव पुदगल अधर्म धर्म, काल अकाशविचार ॥ १२२ ॥
षट द्रव्य यह मानिके, जैनी चित्त हुलास ॥
कहैं कबीर उपदेश केहि, पूरबकेहि भयेभास ॥ १२३ ॥
जैनी साधन बहु किया, मुक्ति न आई हाथ ॥
जेहिदुखते चाहैं मुक्तिको, सो दुख उनके साथ ॥ १२४ ॥
जैनी साधनमोक्ष हित, करैं कष्ट बहु भांति ॥
जेहिसुख नित साधन करें, होयसो आतमघाति ॥ १२५
जैनि जैन कमाइया, कर्ता ईश विसारि ॥
जो चाहे कृतमको, कारि कारि कर्म फुसारि ॥ १२६ ॥
कबीर जैनी लोभिया, ठगके हाथ बिकाय ॥
मुक्ति अकाशके ऊपरे, सुनि सुनिके ललचाय ॥ १२७ ॥
कबीर तिर्थकर जैनिके, चौबीसों भये मोख ॥
मुक्ति कहैं पुदगल छूटे, ग्रंथकियो किमिचोख ॥ १२८ ॥
भई मुक्ति जेहि जैनिकी, चौबीसों आदिकओर ॥
पुदगल उनकी छुटगई, वचन कहैं केहिठोर ॥ १२९ ॥
ऋषभदेव जेहिबन रहै, तेहि बन लागीआगि ॥
बनहिमें वह जरि मुये, दोष अठारह त्यागि ॥ १३० ॥
जीभ कमान वचन शर, पनिच श्रवण लगि तान ॥

ऋषभदेवसे धनुष्य धर, मारें हैं षट बान ॥ १३१॥
यहि छौ बानके लागते, जैनी भये अचेत ॥
लागी मूर्छा कर्मकी, दुख भोगै सुख हेत ॥ १३२॥
काली कुत्ती ऋषभकी, साधन जुत्ती खाय ॥
चोर अठारह दोषपर, षट मुख झूके धाय ॥ १३३॥
काली बिल्ली ऋषभकी, षट पकवान बनाय ॥
आई यति होय जैनघर, भोजन कछू न खाय॥१३४॥
कबीर जैनीके हिये, बिल्लीकी इतबार ॥
साधन व्यंजन मोक्ष हित, सौपेउ तेहि भंडार॥१३५॥
काली कुत्ती ऋषभकी, अनादि दंत खट चोख ॥
साधन बनही खेदिके, मारै सावज मोख ॥ १३६ ॥
कबीर बानी ऋषभकी, रानी भई सरदार ॥
जैनीके शिर मारिया, साधन दुख पैजार ॥ १३७ ॥
कबीर चोरवा जैन घर, मारै साधन सेंधि ॥
सुख धन मूसे तिनहिको, रहा सकल दुख बेधि॥१३८
ऋषभ आदि जेते जैन, अव्याकृत गुण भूल ॥
जिन षट द्रव्य बुझाइया, हैं सो कारण मूल ॥१३९॥
कबीर जोपै मुक्ति होय, छुधा पिपासा छोडि॥
तो पुनि काहे अहार दै, जैनिकी मैय्या भोडि १४०॥
जैनिकी मैय्या जैन घर, जैनी धर्म कमाय ॥
साधन गुण जानत रही, काहे दूध पियाय ॥१४१॥
वेश्या औ जैनी यती, दो पंथ एकै आहि ॥
मोल खरीदी वेश्या, जतिसो मोल बिसाहि ॥१४२॥

मोल खरीदी मुंडिया, मुये मुक्ति मुकाम ॥
कहैं कबीर यह जगतमें, जैनिके यती गुलाम ॥१४३॥
कबीर तिथकर जैनिके, किये अमोक्षी बाच ॥
मुक्ति कहैं पुदगल छुटे, ग्रंथ किये सब कांच॥१४४॥
मोक्ष मुख चुंमन लगे,छौ घुनि घुनि बजाय॥
मारि तमाचा साधना, पटके जब खिसियाय॥१४५॥
साधन सब लावा लखै, सिद्धि लख सो बाज ॥
शब्द विवेकी पारखी, सिद्धनके शिरताज ॥ १४६ ॥
सेव्य सेव्य सब कोइ कहैं,सेव्य न जानै कोय ॥
सेव्य कहत हैं सेवकहिं, लघुता गुरुता होय ॥१४७॥
कबीर गुरु बिन संप्रदा, देखा और न कोय ॥
और संप्रदा जो कहै, ताहूके गुरु होय ॥ १४८ ॥
कबीर जो बेगुरुमुखी,तेहि ठौर न तीनों लोक॥
चौरासी भरमत फिरै, सो गहि नाना शोक॥१४९॥
विधि निषेध दुइ बातमें, वेद शास्त्र पुरान ॥
भावै कागज ले कहै, भावै मुख परवान ॥ १५० ॥
विधि निषेध दुइ बातमें, सकल बातको जान ॥
वाक्य विलास जहां करै,तहांविधि निषेधकीखान१५१
जैसे पूर्वा पौनसे, फल जल फीका होय ॥
तैसे गुरु उपदेशते, फीका कर्म विलोय ॥ १५२ ॥
ज्ञान विचारत सकल जग, चौरासी दरसाय ॥
एक वृंदाबनको चली, एक खडी होय जाय॥१५३॥
एक ब्रह्म अखंड जो, करैं आचार्य बखान ॥

पूर्व पश्चिमके पंडिता, केहि उपदेशत ज्ञान १५४॥
मन बुद्धि बानीको कहैं, गम्य न ब्रह्ममें होय॥
ब्रह्म एक सो कौन कहै, पंडित कहिये सोय॥१५५॥
वेद नेति जेहि कहत हैं, जहां न मन ठहराय॥
बुद्धि बानीकी गम्य नहीं, ब्रह्म कहा किन्हआय१५६
कबीर बानीके पढे, जगमें पंडित होय॥
बिना बानीके पंडिता, देखा सुना न कोय॥१५७॥
कबीर मग भरमकी नदी, यों अद्वैतको भास॥
प्यासे दौरत मृग मुवा, करि मृगजलकी आस१५८॥
कबीर मरुस्थलको कुंवा, यों अद्वैतको बाद॥
प्यासे मुये मुसाफिर, वर्णत निमजलस्वाद॥१५९॥
प्रतिबिंब जीवहिकहैं, व्यास वेदान्त बखान॥
सुख दुख जेहि व्यापै नहीं, केहि उपदेशत ज्ञान१६०॥
जो यह जीव है नहीं, भास हुवा कहु सोय॥
दुइ अंधरेके नाचमें, काको मोहित कोय॥१६१॥
अनादि सिद्ध जो कहतहैं, मायाजीव अरु ईस॥
कहहिं कबीर अकर्ता बादी, नास्तिकबिस्वाबीस१६२
जो ठहरा अनादि जगत, तो अज्ञान अनादि॥
गुरु आचार्य केहि कारणे,वेदादिक मतबादि॥१६३॥
गोरीपर हरदी चढी, भई सामली रंग॥
सांई ते परदे सुती, छुवै न देती अंग॥ १६४॥
गोरीते कारी भई, सबै मनावै भाग॥
रूपवर्ण गुण कछु है नहीं, भये सोअचलसोहाग१६५

दिलरी गई देसंतरे, लाई केतकी फूल ॥
छुवे तो भँवरा मुवा, सुख कारण दुख मूल ॥ १६६॥
पंद्रह तत्व अस्थूल हैं, नौ तत्व लिंग शरीर ॥
चौबिसमृतुक जेहिसों जीये, सोजिंदाजीवकबीर १६७
कबीर पद्धती रामकी, जगमें माने कोय ॥
राम पुरुष कि इस्त्री, पंडित कहिये सोय ॥ १६८ ॥
पारबती ब्रह्मानी अरु, कहत लक्ष्मी जाहि ॥
इनकी करे उपासना, बामिक कहिये ताहि ॥१६९॥
ब्रह्मशब्दको पंडितन, नपुंसक ठहराय ॥
ताकी इच्छाते जगत, कहत न मूढ लजाय ॥१७०॥
जाना चाहै आतमा, जानै को है सोय ॥
कहु पंडित यह देहमें, आतम एक कि दोय ॥ १७१॥
कबीर एकै आत्मा, केहि उपदेशन होय ॥
को जानै एकै आत्मा, पंडित कहिये सोय ॥ १७२ ॥
जागृतिरूपी देहमें, करै सकल परमान ॥
कारणसूक्ष्म अस्थूलनहीं, तब कहोकहाअस्थान १७३
योगी बडा कि योग बडा, ज्ञाता बडा कि ज्ञेय ॥
द्रष्टा बडा कि दरस बडा, भेदीबडा कि भेद ॥१७४॥
दाता बडा कि दान बडा, कर्ता बडा कि वेद ॥
मान बडा कि मानिक बडा, कहुपंडितयहभेद १७५॥
पांचतत्व औ कालदिग,मन औ आतमजान ॥
उपदेशतन्याव नौद्रव्यकहि, बिनज्ञाताकोज्ञान १७६ ॥
मिमांसाबडाकि जैमिनिबडा,वैशेषिकबडाकिकणाद॥

गौतमबडा कि न्यायबडा,कहू पंडितकोआद ॥१७७॥
सांख्य बडा कि कपिलबडा, पातंजलबडाकिशेष ॥
व्यास बडा कि वेदांतबडा,दुइमा कोअबशेष ॥१७८॥
जैमिनि कणादऔ गौतम, शेषकपिलऔव्यास ॥
षट ढीमरषटजाल विने, बांधेउ जीवन फांस ॥१७९॥
न्यायरूप चीन्है नहीं, करै रूपको बाद ॥
कहु पंडित यह दोयमें, को है किसकी आद॥१८०॥
संधिकमात्रा करिके, अर्थ बूझनकी चाव ॥
जिन्ह संधिकमात्रा कियो, ताकोभयोअभाव॥१८१॥
कबीर कर्ताके किये, संधिक मात्रा अर्थ ॥
कर्ता बडा कि अर्थ बडा,कहु पंडित सामर्थ ॥ १८२॥
कबीर लोभीके गांवमें, ठग नहिं परै उपास ॥
जो जेहि मतको लोभिया, तेहि घर ठगको बास१८३
कर्म इंद्री जड वाक्य जो, ग्रंथन वर्णन कीन्ह ॥
अगम निगम पुराण गुनि,जड उपदेशन दीन्ह॥ १८४
कबीर शब्दको अर्थ करी,शब्दहि आया हाथ ॥
कहहिं कबीर पारख बिना,जहां तहां पटके माथ १८५॥
माया है जग तीनकी, जीव गुरु औ ईस ॥
सकल जीवके अंतरे, व्यापै बिस्वाबीस ॥ १८६॥
जीवकी माया आपदा, ईश्वरकी संसार ॥
गुरुकी माया आवरण, पंडित करहुविचार ॥ १८७॥
कबीर लिंग अस्थूल तन,कारण मांहि विलाय॥
तब आतम कहवाँ रहै, पंडित कहो बुझाय ॥ १८८॥

कबीर माया ईशकी, जीवहुकी छूटी जाय ॥
गुरुमाया छूटब कठिन,आवरण होय रहाय ॥१८९॥
ब्रह्म जीव ईश्वर जगत, शब्दका गुण प्रकाश ॥
कहैं कबीर पारख बिना, होय पदारथ भास॥१९०॥
स्वातीको पपिहा रटत, सबै बोल- मत प्रेम ॥
जो स्वाती पपिहा मिली,पीउका छुटा न नेम १९१॥
जाकी श्रेष्ठता पूर्वते, आई चली मलीन ॥
कहै कबीर सो जीयरा, भया पापका पीन ॥१९२ ॥
कबीर अक्षर बोले होय, अकार अनुसार ॥
अकारके बेकारको, मूढ कहैं कर्तार ॥ १९३ ॥
अक्षर औ निःअक्षरहीं, बोलते संयोग ॥
जो मुख परा सो झूठा,काग श्वानका भोग ॥ १९४ ॥
कबीर यह स्वासा सहित, पांच तत्वकी देह ॥
अस्थापन स्वासा करै, तेहि देह गेहसो नेह ॥१९५॥
त्रिदेवादि आचार्य सब, नेति कहै अवशेष ॥
नेति शब्द प्रकाश गुण, शेष प्रकाशहिदेख ॥१९६॥
शेषआदि बल शेषके, चादर ओढी झीन ॥
जाडेते दूबर भई, कहै भई मैं पीन ॥ १९७ ॥
कबीर नोखी नौनिया, बास नहरनी लीन्ह ॥
नख जटा देह बढायके, आतम डंगन कीन्ह ॥१९८॥
युग युग जो यह संप्रदा, श्री शंकरी दोय ॥
श्रीसों बादी शक्तिके, शंकरी शिवके होय ॥ १९९ ॥
श्री शंकरी संप्रदा, बिन गुरु नाहीं कोय ॥

कहैं कबीर गुरु संप्रदा, शरण गये सुख होय ॥२००॥
कबीर अव्या ईशकी, हत कहैं सब कोय ॥
अव्याकृत बिन ईशता, कहु पंडित किमि होय२०१
अव्यागत तो विष्णुकी, लक्ष्मी काके संग ॥
जेहि चाहै सकल जग, अव्याकृतको अंग २०२ ॥
कबीर महादेवकी, अव्यागत जो होय ॥
नगन रहैं डर कौनके, गिरजा काकी जोय ॥२०३॥
कबीर मोहनी देखिके, हा हा शंकर कीन्ह ॥
कहैं कबीर यह लक्षण, अव्याहतको चीन्ह ॥२०४॥
अव्याहत जो रामकी, सीता अर्ध शरीर ॥
अव्या बिन कैसे भये, दशरथ सुत रघुवीर ॥२०५॥
पूर्ण ब्रह्म कृष्ण जो, अव्याहत किमि कीन्ह ॥
नाचि रिझायो गोपिकन, अव्याहतको चीन्ह २०६॥
कबीर दश अवतारकी, अव्याहत जो होय ॥
जग उत्पति पालन प्रलय, बिन अव्या न होय२०७
चितवन करन जगतकी, ज्योंलों नहीं अति अंत ॥
कहैं कबीर पुकारिके, तौलौं होय न संत ॥ २०८ ॥
कबीर कर्ता ईशको, वेद कहै गुण गाय ॥
जाकी अव्याहत भई, परे सो तासु बलाय ॥ २०९॥
काम बिगारै भक्तिको, ज्ञान बिगारै क्रोध ॥
लोभ बिगारै वैराग्यको, मोह बिगारै बोध ॥२१०॥
कबीर शंकर औ व्यासको, खतरा भयो नसल ॥
जगत प्रतिष्ठा कारणे, आतम कहा असल ॥ २११ ॥

जो जो कछु श्रवण करै, मनन होय पुनि सोय ॥
निजध्यासन साक्षात जो, चीन्हे बिरला कोय॥२१२॥
श्रवण मनन निजध्यासन, साक्षात करै जो कोय ॥
कहैं कबीर चारिउके किये, कृतम कर्ता होय॥२१३॥
सुनै गुनै देखै कहै, चीन्है नहिं गुण रूप ॥
कहैं कबीर पारख बिना, परा प्रकाश भ्रमकूप २१४॥
परमेश्वर वर्णन करैं, इंद्रिन्हका गुन रूप ॥
कहैं कबीर राज तजी, भया भिखारी भूप ॥ २१५ ॥
ब्रह्म जीव ईश्वर जगत, सब आचार्यका ज्ञान ॥
कहैं कबीर पुकारिके, हमरी कही को जान ॥ २१६ ॥
कबीर वृंदाके श्रापते, शालिग्राम अवतार ॥
कहैं कबीर कहु पंडिता, केहि पूजे होय उबार ॥२१७॥
प्रतिमा दारु पषानकी, नख शिख दारु पषान ॥
अस्थापे जेहि देव करि, सो केहि द्वार समान२१८॥
जेते रूप तीहुं लोकमें, शब्दका गुण सोय ॥
जैसे बिगूचा खेतका, रहा पारधी रोय ॥ २१९ ॥
रूप पदार्थ बस्तु गुण, भास करावै बाच ॥
कहैं कबीर परखे बिना, सकल बाद हैं कांच॥२२०॥
कबीर सूत काता करै, तेहि शिर परी है मार ॥
जाहि भरोसे सोय रहा, सो देत न बार उखार२२१॥
ये कबीर सत्संगति करु, देहु कुसंगति टारि ॥
एक ओर नौ मन रेसम, एक ओर चुटकीझारि२२२॥
जैसे परत बेनोरिया, जल जमि भासे स्थूल ॥

तेज लागिगलिहोयजल,त्योंशब्द स्वरूपकामूल२२३
जैसे पाला भास होय, देखत जाय बिलाय ॥
तैसे रूप गुण शब्दको, परखै नहिं ठहराय ॥२२४॥
निंदक ताको जानिये, जाको नहिं पहिचान॥
है कछु और कहै कछु औरे,यह निंदकसहिदान॥२२५
कबीर केहरि सिंघको, कीन्हों कैद सियार ॥
पद शिर नावे मूसको, करै जोहार विलार ॥२२६॥
एक अचंभा देखिया, सर्पहि खाया मोर ॥
देहरी भूंके कूतिया, भीतर पैठा चोर ॥ २२७॥
कबीर छेनी शीतल भई, काटैं ताता लोह ॥
गुरुकेशब्द शीतल भये,छिनमें काटै दुखजगमोह२२८
कबीर सुन्नत मुसलमानकी, हुकुम रांडके होय ॥
मानी हुकुम हरमकी, ईमान ईलाहि खोय॥ २२९॥
जो हरम अल्लाहथी,तो शिरपर हुकुम मंजूर ॥
जो हरम अल्लाह नहीं, तो गये इमान जरूर ॥२३०॥
कौल ईलाही छोडिके, हरम कौल मुरीद ॥
यह दरजा पैगम्बरी, हमरी कौल सहीद ॥ २३१॥
कबीर हुकुम अल्लाहके, छाडि भये सुनकीर ॥
कौल हरमको मानते, तनक न आई पीर ॥ २३२॥
सोई हुकुम हरमकी, उमत निबाहै जात ॥
पैगम्बर हुकुम हरमके, वे दुसमनके बात ॥ २३३॥
मायाके गुण तीन हैं, उत्पति पालन संघार ॥
मायाके दुई रूप हैं, सत मिथ्या संसार ॥ २३४॥

चमगिदुरनके बडेकें, लडुवा भये परधान ॥
निशिमें दोऊ नयनसुख, दिनरविहोयनभान ॥२३५॥
रजगुण तीनप्रकारका; ब्रह्माका गुण सोय ॥
मन इंद्री अरु कर्मसों, उत्पति जगकी होय ॥२३६॥
सतगुण दुई प्रकारका, विष्णुका गुण सोय ॥
मनसों करसों जानिये, पालन जगको होय ॥२३७॥
तमगुण दोय प्रकारका, शिवअभिमानी सोय॥
मनसों करसों जानिये, जग संघारन होय ॥ २३८॥
ब्रह्म जीव ईश्वर जगत, उपजे मनसे सोय ॥
कहैं कबीर सुनु पंडिता, गुणातीत किमिहोय॥२३९॥
बिन दुलहाकी दुलहिनी, सूनी सेज रहिसोय ॥
गये अकारथ सोवना, चली निराशा रोय ॥ २४०॥
जो जीव होता विंदमें, कहैं विचार कबीर ॥
संगति करते शक्तिसों, तबहीं तजत शरीर ॥ २४१ ॥
कबीर जेता साधना, साधन गुण औगूण ॥
कहैंकबीर शब्द बिनपरखै, सकल साधनासून॥२४२॥
है साधन लव लखै, साधन लखैजुं बाज ॥
शब्द विवेकी पारखी, साधनके सिरताज ॥ २४३ ॥
कबीर शून्यको सेयके, होय चहै भवपार ॥
जैसे दीपक चित्रको, करै कौन उजियार ॥ २४४ ॥
जगत पदारथ जाहिको, बूझखडी होयजाय ॥
जैसे बाघ चित्रको, कहो कौनको खाय ॥ २४५ ॥
जग भासत संधिक किये, संधिक भासै ब्रह्म ॥

कहैं कबीर संधिक लखै, होय कोई नहिं भर्म ॥ २४६॥
ब्रह्मादि सनकादि जो, सबका संधिक ज्ञान ॥
कहैं कबीर शिरमौर सो, लखै जो संधिविज्ञान॥२४७॥
रामनामकी औषधी, संधिक विष दियोसान ॥
वह रोगियाभवपान करि, रोगिया वैद्य समान॥२४८॥
ब्रह्मा गुरु सुर असुरके, संधिकविष नहिं जान ॥
मरे सकल औंधायके, संधिक विष करि पान॥२४९॥
उसवासे जग उबरे, विश्वासे मरि जाय ॥
उसवासे विश्वासको, मारा ढोल बजाय ॥ २५० ॥
बोलै बानी होत है, मौन रहे ते श्वास ॥
कहैं कबीर मुख नाशिका, शब्द करैं परकास॥२५१॥
संधिकते सब ईशता, संधिक अर्थ परमान ॥
कहैं कबीर निःसंधि जो, सोभी संधिक जान ॥२५२॥
नाहीं जगतका बीज है, जीवत संग रहाय ॥
करै भरोसा नारिका, मुये संगहि जाय ॥ २५३ ॥
सबकी उतपति जीवसो, जीव सबनकी आदि ॥
निर्जिवते कछु होत नहीं, जीवहैं पुरुषअनादि ॥२५४॥
जीव निरादरको वचन, सब आचार्यकहैंजाहि ॥
कहैं कबीर अचरज बडा, शिव उपदेशत काहि२५५॥
जीव बिना नहिं आतमा, जीव बिना नहिं ब्रह्म ॥
जीव बिना शिवो नहीं, जीवबिना सब भर्म ॥२५६॥
आतमा औ परमातमा, ईश ब्रह्मलों जोय ॥
जीव बिना मुरदा सकल, बूझे बिरला कोय॥२५७॥

ईश ब्रह्म परमातमा, पारब्रह्म जो कोय ॥
यह निर्जीव की जीव हैं, पंडित कहिये सोय॥२५८॥
कबीर जाके वचनमें, जीव अनादर होय ॥
नास्तिक ताको जानिये,गुरुसे बडा सोय ॥ २५९ ॥
जीव अनादर जो कहैं, नास्तिक ताको जान ॥
जीव दया सो मम दया,यह जो कहा भगवान २६०॥
कबीर देह जीव बिनु, तुरतहिं होत दुर्गंध ॥
तत्वनमें तद्रूप हो, नाश होय मति अंध ॥ २६१ ॥
कबीर सूनी सेजपर, सुंदरि सूती जाय ॥
आस लगाये पीवकी, कुहकत रैन गमाय ॥ २६२ ॥
मृग तृष्णाको नीर लखि, ब्रह्मादिक सनकादि ॥
डुबकी मारें रतन हित, किये विविधि मतबादि२६३॥
ब्रह्मादिक सनकादि जग, मृग तृष्णा लखि नीर ॥
तीरथ चले नहावने, जगजात्रा भइ भीर ॥ २६४ ॥
जेहि जलमांहि बडे बडे, गज उंट बहे सब जाहि ॥
कहहिं कबीर गदहा तहां, कहै केता जल आहि २६५॥
ब्रह्म जगत दोउ भास होय, यही चतुष्टके बीच ॥
अंतःकरण मलीन होय, बिना रंगका कीच ॥२६६॥
बुद्धि परे सो आतमा, कहत सयाने लोय ॥
निश्चय दोउपर अपरकी,बुद्धि बिना नहिंहोय॥२६७॥
मन बुद्धि बानी श्रुति कहै, जहां न पहुंचै तीन ॥
फिरि ताको जानन चहैं, ऐसे परम प्रबीन ॥ २६८ ॥
ब्रह्मादि सनकादिको, लागा ब्रह्म पिशाच ॥

नाम रूप मिथ्या कहैं, ब्रह्म कहैं भ्रम सांच ॥ २६९॥
वर्ण आश्रम गुण तीनिको, कहैं बतावैं दोष ॥
अहं ब्रह्म अस्मि कहैं, मूढ कहैं निज मोष ॥ २७० ॥
कहैं वेदांत बनायके, सब मतके शिर मौर ॥
शब्द विवेकी पारखी, सो चीन्हे बंचक पौर॥२७१॥
द्रष्टा भई तिहुं लोककी, मांडी सकलो मांड ॥
सुरनर मुनि दुलहिन भये,दुल्हाह भई एकरांड॥२७२॥
कबीर आतम ज्ञानकी, परी जगतमें शोर ॥
जो पूछो कैसो आतमा, तो देवै दांत निपोर ॥२७३॥
चीन्हनको सो चीन्हे नहीं, आतम चीन्हे मूढ ॥
जो पूछो कैसो आतमा, तब कहै गूँगा गूड ॥ २७४॥
ज्यों गूंगेका गूड है, पूरब गुरु उपदेश ॥
तो चारि पट अष्टदश, किन्ह यह कहा संदेश॥२७५॥
चतुर श्लोकी भागवत, कियो विधिहि उपदेश ॥
जो पूरब गुरु गूंग है, किन्ह यह कहा संदेश ॥२७६॥
जो पूरब गुरु गूंग है, तो गूंगा शिष्य सब तात ॥
पांजी यह गुरु शिष्यकी, किन्ह चलाई बात ॥२७७॥
हिंदू गुरु गूंगा कहैं, मुसलम गोयम गोय ॥
कहैं कबीर जहंडे दोउ, मोह नदीमें सोय ॥ २७८ ॥
गोयमगोय गुरु गूंगको, जो ऐसोही न्याव ॥
कहैं कबीर माते सबै, भांग परी दरियाव ॥ २७९ ॥
जो पै गोयमगोय है, यह अल्लाहकी बात ॥
सीपारा तीस कुरानके,मकरूह होय सबजात २८०॥

कबीर गोयमगोय है, जो पै वह अल्लाह ॥
परदे नाल रसूलसो, कहा कौन सल्लाह ॥ २८१ ॥
अर्थ लगावै शब्दका, शब्द बढावत जाय ॥
बातनकी जुरती करैं, पंडित गाल बजाय ॥ २८२ ॥
कबीर पंडित अधूरिया, बात बनावैं श्लोक ॥
बातन अर्थ लगायके, ठगें सो तीनों लोक ॥२८३॥
पंडित अर्थ लगावहीं, अनरथ होता जाय ॥
कहै कबीर अचरज बडा, अर्थहि अर्थी खाय॥२८४॥
कबीर अर्थ शब्दमें, शब्दसो जाना जाय ॥
अर्थ कौन वस्तु है, पंडित कहो बुझाय ॥ २८५ ॥
श्रुति कहै शब्द आकाश गुण, अर्थहि होय अकास॥
सूने घरका पाहुना, भोजन भया उपास॥ ॥२८६ ॥
जेर जबर औ पेशकारि, यह जो मतन बनाय ॥
यह करीमने जो कहा, मोलना गाल बजाय॥२८७॥
कबीर मायने मतनके, मतनसो जाना जाय ॥
मायने कौन वस्तु है, हजरत कहो बुझाय ॥ २८८ ॥
मीयां मतन बढावहीं, मानै वार न पार ॥
मतन सखुन चीन्हे बिना, मियां भये खुवार २८९ ॥
कहैं कबीर कहुमीयां, मैं पूछत हौं जौन ॥
इलिल्लाह तोमतन भया, इसके मायने कौन ॥२९०॥
कबीर मायने मतनके, मतन कहे जो कोय ॥
यहि दोनोंमें को बडा, हजरत कहिये सोय॥२९१॥
कबीर मारी अल्लाहकी, ताको कहै हराम ॥

हलाल कहै अपनी मारी,यह नादान कलाम॥२९२॥
अपनी बोली आपसो, होत नहीं पहिचान ॥
कहैं कबीर समुझै नहीं, मोह महा बलवान ॥२९३॥
कारण लिंग स्थूल जीव,विश्व तेजस प्राज्ञ ईस॥
त्रिविधिहिंडोला उभय जन,झूलहिं बिस्वाबीस२९४॥
जीव ईशमें भेद बहु, कहत सयाने लोय ॥
बिना जीवकी ईशता, कहु पंडित किमि होय२९५॥
जागृत अव्याकृत बरण, तिहु पुर देत देखाय॥
सो अव्या सुषुप्ति लों, अबरण होय रहाय ॥२९६॥
कबीर वेदांती कहत हैं, अबरण आतम रूप॥
अब यह अबरण बोध दै,डारत भ्रम तमकूप॥२९७॥
कबीर बरण चीन्है नहीं, बर्णहि अबरण होय॥
अबरण जानै वस्तु कछु,मूरख कहिये सोय ॥ २९८॥
मायाको दुइ अंग है, अबरण बरण स्वरूप ॥
भानु प्रकाशी वरणमें, अबरण शाति अनूप ॥ २९९॥
नित्य कहत हैं आत्मा, अनित्य कहत हैं देह ॥
यह दोनोंमें को तरै, कबीर अचंभा येह ॥ ३०० ॥
तत्वमसि पद तीन जो, कहैं सबै सुख भौन ॥
पूरबकिन्ह उतपति किया,सुनै सो पंडित कौन३०१॥
जैसे मनोराजमें, विविधि मनोरथ होय ॥
तैसे बहुत प्रकारके, मतवादी सब कोय ॥ ३०२ ॥
कबीर निगुरा नरनको,संशय कबहु न जाय ॥
संशय छूटै गुरुकृपा, तासु विमुख जहँडाय ॥३०३॥

जेता ज्ञान जग देखिये, होत सबनको अंत ॥
वस्तु प्रलय ना गहत है, सो कबीर निजसंत॥३०४॥
जिभ्या फिरै अनत गली,वरनि सकै पुनि ताहि ॥
सुर नर मुनिपीर औलिया,सकलों मारे जाहि॥३०५॥
अष्टावक्र देवदत्त जो, गर्भहि कथें वेदांत ॥
अवतरै पुनि गर्भमें, जन्म भया पुनि अंत ॥ ३०६॥
पूरव दोऊ चैतन्य रहै, भया किमि गर्भ निवास ॥
उपनिषद् कहिंपितुमातुसो, जगतबीजकिमिनास३०७
द्रष्टा साक्षी वर्णन करै, लाज न मारत गाल ॥
जगकोसाक्षी बनत हैं,सो कहिभयो न त्रिकाल३०८॥
सकल आचार्य कहतहैं, जगमिथ्या दरसाय ॥
मिथ्यामांहि दरसको, व्यापक कहैं बनाय ॥ ३०९॥
कबीर द्रष्टाके निरूपते, द्वै द्रष्टा तब होय ॥
कहैं कबीर कहु पंडिता, द्रष्टा एक कि दोय ॥३१०॥
कबीरसाक्षीके निरूपते, द्वै चेतन तब होय ॥
कहैं कबीर कहु पंडिता, चेतन्य एक कि दोय॥३११॥
कबीर व्यापकके निरूपते, द्वै व्यापक तब होय ॥
कहैं कबीर कहु पंडिता, व्यापक एक कि दोय॥३१२
छौ आचार्य छौ शास्त्रके, कीन्हों शास्त्रप्रचार ॥
कौन शास्त्र वे पढिके, कीन्हों शास्त्रविचार ॥३१३ ॥
कबीर व्यासदेव वेदांतमें, मिथ्यावादी होय ॥
है तासो दीसै नहीं, ताहि निरूपै सोय ॥ ३१४ ॥
मुखिया गौनी लक्षणा, बानी बरनै तीन ॥

कहैं कबीर यह बैखरी, चीन्है सो परवीन ॥ ३१५ ॥
जबते ब्राह्मण जन्मिया, तबते परा धन लोय ॥
दया अक्षर कबहुं नहीं,इन्हते कौन बिछोय॥३१६ ॥
कबीर ज्ञान कृष्णको गीता, पढा चाहैं लोग ॥
कृष्ण कौन गीता पढिके, कीन्ह गीता संयोग ३१७॥
जगत सगाई त्यों लही, चीन्हत नाहीं कोय ॥
ज्यों तेलीके बैल संग, कुंभइनी सति होय ॥३१८॥
छिन माहीं जग सत्य करै, छिनमें मिथ्याभास ॥
दुइ मँडवाके श्वान ज्यों, झांकत परा उपास ३१९ ॥
काल काल सबकोइ कहै,काल न चीन्है कोय॥
कालरूप है कल्पना, करते उपजा सोय ॥ ३२० ॥
करते उपजा काल सोई, चढा सबनके शीस ॥
कहैं कबीर कोइ ना लखै,मानै करि जगदीश ॥३२१॥
जेहिते सब जग ऊपजा, सोइ सबनकीआदि॥
ताकी पारख ना करी, गये कबीरा बादि ॥ ३२२ ॥
ब्रह्मते जग ऊपजा, कहत सयाने लोग ॥
ताहि ब्रह्मको त्याग बिनु,जगत न त्यागनयोग३२३॥
ब्रह्म जगतका बीज है, जो नहिं ताको त्याग ॥
जगत ब्रह्ममें लीन है, कहहु कौन बैराग ॥ ३२४ ॥
चंदसूर्य निजकिरणको, त्यागकौनबिधिकीन ॥
जाकी किरण ताहिमें,उपजि होत पुनि लीन॥३२५॥
सब आचार्य शब्दको, विषय कहैं समुझाय ॥
ब्रह्मआत्मा शब्दविषय,कहत न मूढ लजाय ॥३२६॥

कारण ईश्वर जगतका, कहत निरंतर वेद ॥
वो अविनाशी ये नशुर, कहो पंडित यह भेद ॥ ३२७ ॥
कारण ईश्वर अनीह कहैं, कारजरूप देखाय ॥
यह जो अज्ञ दृष्टांत है, पंडित कहो बुझाय ॥ ३२८ ॥
जगत पदारथ बूझते, ईश अनीह बखान ॥
दिनकरउदय अंधेर होय, यहि उलूकका ज्ञान ॥ ३२९ ॥
कबीर मोहपिनाक जग, गुरु बिन टूटत नाहिं ॥
सुर नर मुनि तोरन लगे, छूवत अधिक गरुवाहिं ३३० ॥
कबीर लघुको गुरु कहैं, गुरु लघु कहैं बनाय ॥
यह अविचारा देखिके, कबीरा नाहिं लजाय ३३१ ॥
साधू ऐसा चाहिये, ज्यों मोतीमें आब ॥
उतरै तो फिरि नहिं चढै, अनादर होयरहाब ॥ ३३२ ॥
ज्ञाननको कहै आतमा, बहु विधि ग्रंथ पुकारि ॥
कहैं कबीर जस भेडिपर, जोलहिनि कियो गोहारि ३३३
कबीर बेंगके मारते, जोलहा रोवै पुकारि ॥
विकलभया दुहुंदिश फिरै, कीजै रामजोहारि । ३३४ ॥
माया तीन प्रकारकी, ताहि करो पहिचान ॥
द्रष्टा आग्रही निर्वचनी, तीजे तुछा जान ॥ ३३५ ॥
निर्वचनी अद्वैत है, द्वैत सो द्रष्टा जान ॥
तीजे विशिष्टा मानते, साधुन हिये प्रमान ॥ ३३६ ॥
यह सरस्वति शिरपरचढी, भईसबहिंशिरताज ॥
कहैं कबीर चीन्हे बिना, माथे मार विराज ॥ ३३७ ॥
एक कर्म है बोवना, उपजै बीज बहूत ॥

एक कर्म है भूंजना, उदय न अंकूर सूत ॥ ३३८ ॥
ईसामसि जो कहत हो, पुत्र खुदाके आहिं ॥
स्त्रीबिन पुत्रनऊपजै, यह प्रसिद्ध जगमाहिं ॥ ३३९ ॥
नारी खुदाकी कौन थी, किन ताको उपजाय ॥
कौनभांतिकेहि तरहसो, कहिये मोहिसमुझाय ३४०॥
तत्व सहित जो खुदा है, तो तुरत नाशहोजाय ॥
तत्व विहीना कहोगे, सो करतव्य नहींसमाय ३४१॥
पांच तत्व ये आदि हैं, कि खुदा आदिहैभाय ॥
की दोनों संयुक्त हैं, येभी कहो वुझाय ॥ ३४२ ॥
कहां वस्तु ये जीव है, जो मिले खुदासे जाय ॥
कहां वस्तु वह खुदा है, कहो निपुण दरसाय॥३४३॥
कबीर मुक्ति बायें दहिने, मुक्ति आगे पीठि ॥
मुक्ति धरती अकाशमें, मुक्ति मेरी दीठि ॥ ३४४ ॥
जमा अघट निघटै नहीं, बतैं शब्द प्रमान ॥
जीव जमा जानै बिना, सबै खर्चमें जान ॥ ३४५ ॥
जीव जमा सत्य सांच है, कहहिं कबीर पुकार ॥
जीव जमा जानै विना, महाकठिनजन्मजार॥३४६॥

इति गुरुदयालदासजीसाहेबकृत कबीरपरचय साखी
गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

ग्यारह शब्द.

॥ दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्याहर शब्द ॥

शब्द १.

पंडित मोहि कहो समुझाई ॥
जगको कर्ता काहि बतावो, कासों सृष्टि उपाई ॥ टेक ॥
मच्छ कच्छ बराह नरसिंहहि, सतयुग वरणहु चारी ॥
बावन परशराम औ रामहि, त्रेता तीन विचारी ॥ १ ॥
कृष्ण बौद्ध द्वापर दुइ वरणहु, महिमा गावहु ताकी ॥
नौ सिक्का वोसूल दफतरमें, कली निकलंकी बाकी ॥२॥
दफ्तर खोलै बाकी बोलै, उगारि न काहू कीन्हा ॥
कर्म पियादा सबके पीछे, संशय मसी मुख दीन्हा॥३ ॥
जब एकौ अवतार न होते, तबकी गति कहु भाई ॥
की पूरब की अगति जीव सब,की बीचहिं सुगति सुपाई४
जगत आदि अवतार मध्यमें, कृतम कर्ता मानी ॥
कर्ता आदि कि मध्य चाहिये, पुत्रहि पिता बखानी ॥५॥
दश चौबीस जगतमें जन्में, जगत कहो किन कीन्हा ॥
कौन रूप कर्ताको कहिये, मोहि बतावो चीन्हा ॥ ६॥
ब्रह्मकि इच्छा जगतकि उतपति, गावो गाल बजाई ॥
ब्रह्म शब्द नपुंसक बरणहु, कौने अकिल चोराई ॥ ७ ॥
एकै ईश सकल घट व्यापिक, श्रुति कहै आवे न जाई ॥
जबहिं जीव यह काया त्यागै, ईशहि अछत गंधाई ॥८॥

ब्रह्मकि छाया बरणहु माया, सो रूप बिहूँन बताई ॥
बिना रूपको छाया नाहीं, शून्य समान सगाई ॥ ९ ॥
बाजीगर सब पोथी पंडित, भानमतीके कह्ला ॥
कहहिं कबीर कोई नहिं चीन्है, सबै लोग कहैं भल्ला ॥ १० ॥

शब्द २.

पंडित संशय गांठि न छोरे ॥
संशय सनकी गांठ परी तेहि, दुबिधा जलमें बोरे ॥टेक॥
जग उतपति कहैं एक ब्रह्मते, पुनि जगमें ब्रह्म बताई ॥
मुक्ति कहैं ब्रह्मके जाने, फिर चौरासी आई ॥ १ ॥
जगको चार खानि चौरासी, बडे बडे कहैं सुजाना ॥
तेहि जगको बैराट बखाने, विश्वरूप भगवाना ॥ २ ॥
नित उतपति नित परलयहोई, जाको जगत ब्रह्मकहोभाई॥
विश्वरूप भगवान भयो तब, चौरासी केहि ठांई ॥ ३ ॥
छिनमें जगको ब्रह्म बतावो, छिनमें ईश बखानी ॥
छिनमें जगतको जीव कहत हो, छिनमें मायामानी॥४॥
जग छूटनको शरण ईशकी, ईश ब्रह्म जग आया ॥
काकी शरण जाय दुख छूटै, मोहि कहो कर दाया ॥५॥
निजहित कोई विदेश गया जो, वहांसे कोई जो आया॥
पूछै कुशल चार विधि बोलैं, कहो कौन थिति पाया॥६॥
ज्ञान कहानी अदबुद बानी, स्थिति विनु भये दुखारी ॥
कहैं कबीर समुझि कहु पंडित, साच एक कि चारी॥७॥

शब्द ३.

संतो साखी सब कोई गावैं ॥
जो कोई साखी ताहि बतावै, सो बादी भरमावैं ॥ टेक ॥
सो बादी कोई चीन्हत नाहीं, ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥
तीनो न्याव निबेरन लागे, कहि साखी उपदेशा ॥ १ ॥
सनकादिक बशिष्ठ व्यास मुनि,नारद शुक मुनि ज्ञानी॥
याज्ञवल्क्य जनक दत्तात्रेय, कहि साखी सहिदानी ॥२॥
अष्टावक्र हस्तामल शंकर, मुनि अगस्ति कपिलादी ॥
गौतम लोमश बालमीक मुनि, सब साखीके बादी ॥३॥
भारद्वाज मुनि गरुड भुशुंडी, बादी ईशहि गावै ॥
साखी बाद चीन्ह परे नहीं, वेदहु नेति सुनावै ॥ ४ ॥
ध्रुव प्रह्लाद आदि भक्त सब, श्रीमत चारिउ भाई ॥
दश अवतारको साखी मानी, तिनहूँ साख बताई ॥ ५ ॥
कश्यप आदि सकल मुनि जेते, बादीमें चित्त दीन्हा ॥
अध्यारोप अपवाद कल्पना,सब काहू मिलि कीन्हा॥६॥
आश्रम वर्णचारि षट दर्शन, वैरागी संन्यासी ॥
हिंदू तुरुक दोउ मिलि गावैं, कहैं साखी अविनासी ॥७॥
बादी साखि शिष्य होय बैठा, बादी रार बढावै ॥
तेहि बादी सुरनर मुनि जहंडे, बादी अंत न पावै ॥ ८॥
विना बादि कोई साखी नाहीं, साखी सबको प्राना ॥
कहैं कबीर साखी शब्द सब, झगरे माँहि समाना ॥ ९ ॥

शब्द ४.

संतो कर्म न चीन्हैकोई ।। ताहिकर्मकरि खोजेसबहीं, पंडित औ दुनियाई ।। टेक ।।

जिन्ह कीन्हो षट चार अष्टदश, सुर नर मुनि पढि भूले ।।
कृतम कर्ता गावन लागे, फिर फिर योनी झूले ।। १ ।।
ज्ञान भक्ति वैराग्य योग करि, साधन करिकरि ध्यावै ।।
कृतम आगे कर्ता नाचै, जहां तहां दुख पावै ।। २ ।।
पांच तत्व त्रिगुण करी कर, तीनो लोक प्रवेशी ।।
कर्ताके गले कृतम फांसी, डारै सब उपदेशी ।। ३ ।।
तुरुक कहैं कून्न फैकून्ना, भई मिटी दुनियाई ।।
ताहि सखुनको चीन्हत नाहीं, अहमक मोलना भाई ।।४।।
काजी सो जो काज करावै, नहिं अकाज सो राजी ।।
जो अकाजकी राह चलावै, सो काजी नहिं पाजी ।।५।।
कलमा बांग निमाज गुजारै, गाफिलको हैं गाई ।।
दोजख पीछे भये दिवाने, खसलत कहैं खुदाई ।। ६ ।।
निराकार बेचून बखानै, जगमें गोता खाई ।।
कहहिं कबीर पंडित औ काजी, दोनों अकिल गमाई ।।७।।

शब्द ५.

संतो जैनीको भ्रम भारी ।।
जैन नाम जाकी जय नाहीं, छौकी राह पसारी ।। टेक।।

जीव द्रव्य पुदगल कहि वरनै, धर्म अधर्म सो चारी ।।
पँचयें काल द्रव्य कहिछठयें, पात्र अकाश विचारी ।।१।।

अपने अपने गुण कर्मनके, ये षट कर्ता मानी ॥
कियो न काहुअनादिनिधानहै,जिन कियोताहिनजानी२
ज्यों पुदगलको त्याग निमित्ते, साधन अमित कमावै ॥
सो पुदगल पाहन मूरति करि, गुरु कहि शीस नवावै॥३॥
बीतराग सर्व पुदगलसे, लिखि सो बानी बाचै ॥
पुदगल शिखर इष्टकहि आगे,नारि पुरुषमिलि नाचै ४॥
जेहि चौबिसकी मुक्ति बतावो, जगसों कहो निराशा ॥
तेहि रथ चढाय रागि कर फेरै, ज्यों नट करैतमाशा॥५॥
क्षुधा पिपासा आदि अष्ट दश, दोष कहैं यह त्यागो ॥
जेहि कारण यह सन्यो दोषमें,तासो निशिदिन पागो६॥
सती देह दुख पलमें त्यागै, भूत लगै तेहि बूझै ॥
जेहि सुख करि साधन करि त्यागै,सो भुतवा नहिं सूझै७॥
दर्शन ज्ञान बीर्य सुखचारी, जीवगुण कहै विचारी ॥
जीव पुदगल सम्बंध नहीं जब,तबकहो काके गुण चारी८
ऋषभ आदि चौवीस तिर्थंकर, ई जो कहैं मोक्षगामी ॥
ई छौ कर्ता क्षयकियो सबनको, अंटके सेवकस्वामी॥९॥
जग उतपति कहैं कियो न काहू, पढि गुनिकहैअनादी ॥
कर्म करे कर्ता नहिं मानै, भये अनीश्वर बादी ॥ १०॥
आठ कर्ममें चार बंध कहै, चार कहै सुख दीठा ॥
जो जग कर्म किये सो नाहीं,कृतम कर्म करावोझूठा ११॥
ये षट द्रव्य केहिको भासै, केहि उपदेश भसावै ॥
सो कर्ता कृतम चीन्है बिना,जहां तहां दुख पावै ॥१२॥
मोक्षको धावत बंधन पावत, ठगसुख लेत चोराई ॥

गरे षट फांस डार डोरियावै, मोक्षमें चोर लुकाई॥१३॥
ये ठगपुरवाआचार्य जैन घर,दुखदिये न चीन्है बैना॥
कहैं कबीर सो ठग चीन्हे बिनु,दुखीभये सब जैना॥१४ ॥

शब्द ६.

संतो पेरक सबको भावै ।
जो पेरे ताहि चीन्हत नाहीं, पेरक और बतावै ॥ टेक ॥
आय परी उरबसी भई जब, ताहि न चीन्है कोई ॥
देवलोकमें परी बतावै, सो तो परी न होई ॥ १ ॥
भक्तन परी भक्तिमें राखा, योगिन योग समाना ॥
परी पेर सब पंडित ज्ञानी, ओटैं वेद पुराना ॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश पेराने, सुर नर मुनि नहिं बांचे ॥
परी पेरमें जेर भये सब, तन धर धरके नाचे ॥ ३ ॥
दश अवतार परीको जाया, फेर जन्मे जो आई ॥
बिना भगकी परी पुरातम, अदबुद रूप बियाई ॥ ४ ॥
परी पेरमें जेर भये सब, सूझै लाभ न हानी ॥
जग मिथ्याकरि करिदरसावै,तब परिया खिसियानी ५॥
परी पेरमें परमहंस भये, खाइन अपने खूसी ॥
काहूके टोके नहिं बोलै, तब उरबसिया रूसी ॥ ६ ॥
कर्म करावै फल फुसलावै, रूप अरूप गर फांसी ॥
डाइन होय भ्रतारहि गल दै, आइ परी परकासी ॥ ७॥
बिना रूपको एक ढोटौना, गोद लिये सुख भारी ॥
बडी बहूसे आशिष माँगै, दै भ्रतारहि गारी ॥ ८ ॥
परी चुहानीं महा लुकानी, घुंघुट काढि अंधेरे ॥
कहैं कबीर परीकन खीदै, पूत भ्रतारहि मारे ॥ ९ ॥

शब्द ७.

सन्तो शब्द न साधै कोई।
और सकल साधै सब कोई, साधतहीं दुख होई ॥ टेक ॥
योगी साधै योग युक्तिसे तपसी तप दुखदाई ॥
ज्ञानी साधै ज्ञान ब्रह्मसों, सो शब्दातीत बताई ॥ १ ॥
वैरागी जग मिथ्या साधै, सपनेहु सत्त न मानै ॥
सोई वरण अवरण होय प्रगटै, मिथ्या चितवनठानै ॥२॥
क्षुधा पिपासा जैनी साधै, जीव दया नहिं जानी ॥
जीवत जीव साधतहिं मारै, मुये मुक्तिको मानी ॥ ३ ॥
मुसलेकी बेपीर साधना, कठिन कहा नहिं जाई ॥
कल्मा पढै छुरीपर साधै, मारैं जीव खुदाई ॥ ४ ॥
जनकादिक जगसत्य करिसाधै, मिथ्यासबसनकादी ॥
सत्य मिथ्या दोउ जगतकल्पना, भये सबै दुखबादी ५॥
त्रिगुण आदि सकल मुनि जेते, जग मानै करि स्वामी ॥
जे जग छला छिनार छतीसी, ताकी करत गुलामी ॥६॥
जेहि साधै जग दुखसे छूटै, ताहि न साधै कोई ॥
जेहि साधै चौरासी भरमे, फिर फिर साधै सोई ॥ ७ ॥
जहां जहां कर्म साधना साधै, तहां तहां जाय बिगोई ॥
कहैं कबीर कोई संत जौहरी, खून चिन्हैगा सोई ॥८ ॥

शब्द ८.

सन्तो मुक्ति यही सब गावै ।
राम कृष्ण अवतार आदि दै, हाथ मरै सो पावै ॥टेक ॥
परशुराम बहु बार क्रोध करि, राजन मारो सबहीं ॥
क्षत्री मारि निःक्षत्री कीन्हों,मुक्ति सुनी नहिं कबहीं॥१॥

बिना क्रोध कोइ मरै न मारै, मुक्ति क्रोधते होई ॥
काहेको यह काम क्रोधको, त्यागन ईष बताई ॥ २ ॥
अपने मुखसे रामकृष्ण कहि, काम क्रोध तजु भाई ॥
मारे मरै मुक्ति होय जो, काहेको दया दृढाई ॥ ३ ॥
बिना ईश जगमें काहुकी, जन्म मरण नहिं होई ॥
जो जग उतपति प्रलय ईशते, तो वह मुक्त न कोई ॥४॥
मारै मरै मुक्ति बतावै, विषयाके अधिकारी ॥
मारै मरै मुक्ति गावै सब, कहैं कबीर पुकारी ॥ ५ ॥

शब्द ९.

संतो राम कहै दुनियाई, कहु कौने गति पाई ॥ टेक ॥
राजा कहै कहैं पुनि वेश्या, कहै चोर औ साहू ॥
हरि चरचा हम घर घर देखा, तरत न देखा काहू ॥ १॥
गावै बाचै संध्या तर्पण, माला फेरै कोई ॥
मन तो फिरत गली गलीमें, ये सुमिरन नहिं होई ॥ २ ॥
पंडित भागवत गीता बाचै, मन मायाके चेरे ॥
सुननहारा अपने गांवके, ज्यों सावज वधिक अहेरे ॥३॥
दो दो कहै हाथ नहिं आवै, दुविधामें दोउ जाहीं ॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, दुविधामें दोउ नाहीं ॥ ४ ॥

शब्द १०.

संतोबीबी बड़ी पदोडी ॥
पादै आप लगावै औरहि, ऐसी मतिकी भोडी ॥ टेक ॥
एक पाद बीबी जो पादी, भया ब्रह्म अविनासी ॥
तेही पाद त्रिदेवा उपजे, तेहि पाद चौरासी ॥ १ ॥

एक पादते चारि अष्टदश, नौ षट आठ बनाई ॥
एकपादते सकल साधना, शम दम आदि झराई ॥ २ ॥
एक पादते चारि अवस्था आदि अंत करि गाई ॥
एक पादते परमधामलों, सातों पुरी बनाई ॥ ३ ॥
एक पादते सृष्टि सुभाविक, पांच तत्त्व अविनाशी ॥
एक पादते कर्ता नाहीं, ऐसे उपज बिनाशी ॥ ४ ॥
एक पाद बीबी जो पादी, भयो अल्लाह बेचूना ॥
एक पादते दुनिया उपजी, कहै कुन्न फैकून्ना ॥ ५ ॥
एक पादते हवा फातमा, भये किताब कुराना ॥
एक पादते रोजा कयामत, ये काजी रहिमाना ॥ ६ ॥
एक पादते तबक चौदहै, एक पाद अल्लाह मुकामा ॥
एक पादते निमाज औ राजा, दोजख बिहिस्त मुकामा ॥७॥
सुर नर मुनि यति पीर औलिया, सुनत पाद बौराना ॥
बीबी पादत ब्रह्मा आदम, आलम सब अकुलाना ॥ ८ ॥
बीबी अदबुद पादन लागी, मीयां सूंघत भये राजी ॥
बीबी पादत पंडित उबरे, उबरे मोलना काजी ॥ ९ ॥
मुख दै पादै कान दै सूंघै, देखि देखि आवै हांसी ॥
दास कबीरके पाद बटोरत, जन्म घनेरे जासी ॥ १० ॥

शब्द ११.

हंसा परख शब्द टकसार ॥
बिन परखे कोइ पार न पावै, भूला यह संसार ॥ टेक ॥
सब संतन मिलि पारख कीन्हा, पारख काहु नहिं पाई ॥
आये थे बैपार करनको, घरहुकी जमा गमाई ॥ १ ॥

सब संतन मिलि बानी छानी, राम भाग दुइ कीन्हा ॥
रा अक्षर पारख करि लीन्हा, म माया तजि दीन्हा ॥२॥
राम रतन प्रहलाद पारखी, जिन पारख दृढ कीन्हा ॥
इंद्रासन सुखासन लीन्हा, सार वस्तु नहिं चीन्हा ॥३॥
शुकदेव मुनि परमपद पायो, आतम लियो न माया ॥
परमातम अजपा जप चेत्यो, न्यारा भेद न पाया ॥ ४ ॥
अब सुनि लेब जौहरी मोटे, खरा खोट नहिं बूझा ॥
गोरख शंभुसम औरको योगी, तिनहूको नहिं सूझा॥५॥
है कोई संत जौहरी जगमें, जो यह शब्दहि बूझै ॥
तीनि लोक औ चारि लोक हैं, सकल ठौर तेहि सूझै॥ ६॥
कहैं कबीर हम सबको देखा, सबै लोभको धाये ॥
जिन्ह गुरु मिले तिन्ह परखायो, ठीक ठौर तिन्ह पाये७॥
इति ग्यारह शब्द गुरुदयालदासजीसाहेबकृत गुरुकी दयासेसंपूर्ण ॥

एकईस प्रश्न ।
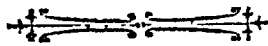
॥ दया गुरुकी ॥ अथ एकईस प्रश्न लिख्यते ॥

प्रश्न–जीव बिन ईशका ज्ञान नहीं, ईश बिन जीवको ज्ञान नहीं, उभय सम्बंध है एकता कैसे होय ॥ १ ॥

प्रश्न–ब्रह्म निर्विकल्प कहते हो, जीवको नानात्व विकार सहित वेद वर्णन करता है, एकता कैसे होय॥२॥

प्रश्न–जीवको प्रतिबिंब कहते हो, तो प्रतिबिंबको दुख सुख नहीं और जीवको दुख सुख होता है ॥ ३ ॥

प्रश्न–ब्रह्मको निरावेब कहते हो तो प्रतिविंव असंभव है ॥ ४ ॥

प्रश्न–कदाचित ऐसा कहा जाय कि नभ निरावेव कहते हैं तिस प्रतिबिंबमें भास होता है, जो ऐसा है तो बिना साबेब परछांही नहीं, तो दोनोंका भास करनेवाला तीसरा चाहिये ॥ ५ ॥

प्रश्न–पांच तत्त्वोंका उपजना बिनसना वेद गावते हैं और साबेब कहते हैं, इसीको निराबेब कैसे मानिये॥६॥

प्रश्न–ब्रह्मको सर्वज्ञ वेद गावते हैं और सर्वदेशी कहते हो, जीवको अल्पज्ञ एकदेशी कहते हो, प्रतिबिंव न्याय कैसे बने ॥ ७ ॥

प्रश्न–महातत्व साबेब वेद गावते हैं, ब्रह्मको निराबेव कहते हो, दृष्टांत दुर्लभ नहीं होता ॥ ८ ॥

प्रश्न–प्रतिबिंब न्याय जीवको कहते हो सो एकदेशी सूर्य चंद्र इत्यादिक साबेव तिसका प्रतिबिंब घटजल सहित दूसरा होताहै, तिसको मनुष्य आदि देखतेहैं, प्रतिबिंबको प्रतिबिंब नहीं देखता, दृष्टांत असंभव ॥ ९ ॥

प्रश्न–ब्रह्म निराबेब सर्वदेशी और प्रतिबिंब साबेब एकदेशी, ब्रह्मको निर्विकार वर्णन करते हो और जीवको विकार सहित गावते हो, जो कदाचित् प्रतिबिंब भी मानिये, तो प्रतिबिंबको कोई उपदेश नहीं करता, याते प्रतिबिम्ब असंभव ॥ १० ॥

प्रश्न—जब जब ईश्वरके अवतार भये तब तब वेद त्रिदेव आदि सबने अस्तुति ठानी, संपूर्ण जीव ईश हैं तो विशेषता क्यों बखानी ॥ ११ ॥

प्रश्न—जीवको स्वर्ग नर्क चौरासी भरमना वेद गावते हैं, जीव परतंत्र ईशके अधीन है, अतिशय दीन वर्णन गावते हो, और ईश स्वतंत्र मायाधीश, जो जीवको ईश मानिये तो पूर्व निर्णय मिथ्या वात ॥ १२ ॥

प्रश्न—ईश सामर्थ्यवान् जो चाहैसो करे, और जीव नासामर्थ्य, कछुला चार, बनता नहीं, एकतो कैसे मानिये १३॥

प्रश्न—परमात्मा प्रभुजीके उरमें भृगु मुनिके चरणकी चिह्न परी सो सर्व अवतारोंमें भान भई, सर्व जीव ईश्वर हैं तो सबकेउरमें काहे न भान भई ॥ १४ ॥

प्रश्न—रावणकी मुक्ति वर्णन करते हैं फिर रावण शिशुपाल होयके क्यों अवतरा ॥ १५ ॥

प्रश्न—भगवानके समीप हनुमतादिक भिन्न भिन्न मुक्ति वेद गावते हैं, जो एकही हैं, तो भिन्न भिन्न मुक्ति काहे भई १६

प्रश्न—क्षीर नीर मिला रहै हंस भिन्न भिन्न करता है, तिसको एक कैसे मानिये ॥ १७ ॥

प्रश्न—इसीमें सिद्धांत मालूम होता है, जिसप्रकार सुषुप्तिमें इंद्रिय आदि व्यवहार लीन होता है, फिर कुछ काल गये व्यवहार लिये उठता है ॥ १८ ॥

प्रश्न—तिस तरह भगवानके स्वरूपमें जो चाहे वे तरहकी मुक्ति है तिस करके लीन रहते हैं, परंतु पृथक पृथक

मुक्ति लिये रहते हैं, फिर भिन्न भिन्न होय संसारी होतेहैं॥ १९

प्रश्न–ब्रह्मको निरुपाधि आकाशवत् वर्णन करतेहो, घट मठ इत्यादि उपाधि उसीके भीतर कहते हो, तो ये उपाधि असाध्य कैसी होय ॥ २० ॥

प्रश्न–ब्रह्मको निराबेब निरीह कहते हो फिर इच्छा और अविद्या कबसे वर्णन करते हो, ये युक्ति असंभव होतीहै २१

इति रामदास साहेब कृत एकइस प्रश्न गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

पारख विचार ।

॥ दया गुरुकी ॥ अथ लिख्यते ग्रंथ पारख विचार ॥

गुरु कहते हैं कि हे शिष्य तू वह देहमें कौन है सो कह, शिष्य कहता है हे साहेब, मैं आपकी दयासे सब विचार करके परखताहूं तो मैं पारखी हूं।हे शिष्य! पारखी काहे सो कहिये।हे साहेब! जो देह आदि काल संधि, झांई; ये जालको परख सो पारखी। हे शिष्य तू परखता काहेसे हे साहेब पारखसे । हे शिष्य! पारख तुझमें कि तू पारखमें। हे साहेब! मैं पारखमें हुवा तब पारख सहजहीं मेरेमें है । हे शिष्य ! तूतो यह देहमें नखसे शिखापर्यंत भरा है चैतन्य और पारख कहां रहती है। हे साहेब! मैं तो सदा देहसे न्यारा पारखी, पारखमें रहताहूँ। मैं देहमें भराहूं, ऐसा कहा जाय, तो क्या मैं नाकमें हूं कि कानमें हूँ, कि मूंडमें, कि नाभिमें, कि पांवमें, कि आंखमें, कि हाथमें, कि-

जीभमें, कि पांच तत्वोंमें, कि मैं दश इंद्रियोंमें, इनकीसबकी पारख मैं करताहूँ। तो मैं इनते न्यारा हू पारखमें। पारख भूमिका सबसेन्यारी। सो पारख और मैं कछु दोय नहीं। मैंही पारखी। हे शिष्य तू तो पारखी, पारखरूप, सबसे न्यारा, और यह देहमें कौन है। जो पांवमें कांटा गड़ै तो दुःख किसको होताहै। औ शिरमें चोट लगी तो कौन जानता है। शिष्य कहता है कि हे साहेब ! यह शरीर मेरे करतव्यसे बना है सो इसमें मेरी सत्ता है जाको जान कहते हैं; द्रष्टा कहते हैं और चैतन्य कहते हैं, सो मेरी सत्ता, तासे सब मैं जानता हूँ यह देहका सुख दुख आदि। देहमें विचार होता है, ज्ञान होता है, कल्पना होती है और अनुमान होता है, सो सब मेरी सत्तासे होता है यह देहमें मेरी सत्तामात्र है और कछु नहीं। मैं तो सदा पारखी। विचार करे तोभी मैं पारखी और चुप बैठा तोभी मैं पारखी और कछु नहीं। गुरु कहते हैं हे शिष्य, चोला जब छूटेगा तब तूं कहां रहेगा। हे साहेब ! आपकी दयासे अब मेरेको जाना आना नहीं। मैं पारखी पारख रूप। अब देह छूटै तोभी मैं पारखी और चोला रहैतोभी पारख, पारख भूमिपर सदा हूँ कछु देहमें मैं नहीं। देह छूटै तो क्या और रहै तो क्या देहमें सत्तामात्र हूँ जिसते देहका व्यवहार सबजानता हूँ, सो सत्ता मेरी मेरे पास है। चोला साबूत है तबलग चोलेमें है और चोला छूटा तब मेरी सत्ता मेरे पास। जैसा मैंने करतव्य बनाया सो करतव्यसे

मेरी सत्ता रही और करतव्य नाश हुवा तब मेरी सत्ता मेरे पास है आगे कछु करतव्य कल्पना नहीं जामें मेरा द्रष्टा जायगा तो आपकी दयासे द्रष्टा पारखी हुवा तब पारख भूमिका पर रहा । आवागवनसे रहित हुवा । दृष्टांत ॥ संतो जागत नींद न कीजै ॥

साखी–पारख पारखी एक है, भिन्न भेद कछु नाहिं ॥
देह विलास करि भेद है, सो गुरु दियो दरसाहिं॥ १॥

इति पारखविचार अस्थिति गुरुकी दयासे संपूर्ण ॥

॥ गुरु अर्पणमस्तु ॥
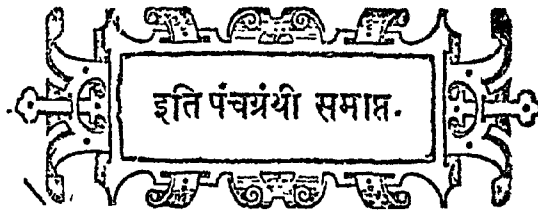
पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस–बम्बई.